॥ अथ प्रथमः सर्गः प्रारभ्यते ॥



चोत्रीस अतिशयवंत, पांत्रीस वाणी गुणधारक, बार गुणे गुणवंत, हरिवंशमां चंद्रना जेवा देदीप्यमान, अंजन जेवी श्याम जेनी कान्ति छे अने इंद्रादिक सुरासुर जेने पूजी रह्या छे, एवा वीशमा तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतस्वामीना तीर्थमां जन्मेला सुश्रावक बळदेव (पद्मनाभ) श्रीरामचंद्रजी तथा तेमनी पतिव्रता स्त्री सीता सती, वासुदेव श्री लक्ष्मणजी, तथा प्रतिवासुदेव रावण विगेरेनां चरित्रो कथारूपे विस्तारथी वर्णवुं छुं.

सगर चक्रवर्त्तीनो अधिकार—स्त्रीरत्न सुकेशानुं पाणीग्रहण.

आ जंबुद्वीपना भरतक्षेत्रमां बीजा तीर्थंकर श्री अजितनाथ स्वामीना तीर्थने विषे पृथ्वीनी मुकुटमणि विनिता नामनी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशने विशाळ छत्रनी पेठे शोभावनार तथा जगतना क्लेशने हरनार सगर नामे चक्रवर्ती राजा थयो. एक वखत अश्वक्रीडा निमीते सर्व कळामां कुशळ ते सगरराजा पोताना परिवार सहित घोडा उपर बेसीने वनमां गयो. त्यां तेने चारे दिशाए अश्वनी पांचे गतीमां फेरवतां ते पांचमी प्लुत नामनी गती वखते लगामना तावामां न रहेतां जेम कोई भुतना आवेशे गमे तेम प्रवर्ते तेम आकाश मार्गे उड्यो. क्षण वारमां जेम कोई राक्षस कोईनुं हरण करी नासतो होय तेम ते घोडो सगरराजाने पोतानी पीठपर लइ उडतां एक मोटा वनमां आव्यो. राजा क्रोधायमान थइने पोतानी बंने जंघाओ तेना पेट सरसी दाबी राखी, लगाम खेंची, कुदको मारी जमीन उपर उतरी पड्यो, के तरतज घोडानी गति रोकाइ अने ते पृथ्वी उपर पड्यो; तेनी दरकार न राखतां राजा त्यांथी चाली निकळ्यो. केटलेक दूर गया पछी सूर्यना किरणोए पुरेलुं अने पृथ्वी उपर प्रसरेली चंद्रनी कांति जेवुं शोभायमान एक सुंदर सरोवर तेना दीठामां आव्युं, त्यां विसामो खावा सारु ते थोभ्यो. पछी वनना हस्तिनी माफक तेणे ते सरोवरमां स्नान कर्युं; अने तेना स्वादिष्ट, स्वच्छ, शीतळ अने कमळ जेवा सुगंधीवाळा पाणीनुं पान करी, बहार निकळी तट उपर आवी उभो रह्यो. आम तेम जुए छे एटलामां त्यां एक तरुणी स्त्री, जेनुं नविन कमळना जेवुं मुख छे, नीला कमळदल जेवां जेना चक्षु छे, जळना तरंगना जेवुं जेनुं लावण्य छे, चक्रना जेवा गोळाकार जेना बे स्तन छे, फुलेलां राता कमळना जेवा जेना हाथ तथा पग छे, एवी देहधारी सरोलक्ष्मी जेना जोवामां आवी. आवी सुरूपा स्त्रीने निहाळीने ते पोताना मनमां विचार करवा लाग्यो के, "आ ते शुं अप्सरा छे? के व्यंतरी छे? के नाग कन्या छे? के कोइ

विद्याधरी छे?" आवी सामान्य स्त्री तो न होय! केमके आ स्त्रीनुं दर्शन कर्याथी जेवो आनंद थाय छे तेवो आ सुंदर सरोवरना निर्मळ जळथी थतो नथी. एटलामां ते गजगमनीए पण पोताना कमळदल जेवां बंने नेत्रोवडे राजाने जोयो. परस्पर बंनेनो दृष्टी मेळाप थतां कामे पीडाती ते कामीनीनी राजा उपर नयनप्रीति बंधाइ, अने भान भुली होय तेम तेना अंग उपरनां वस्त्रोनी शुद्धि न रही तथा संध्या समये कमलिनीनी पेठे तेनी मुखमुद्रा शोकातुर देखावा लागी, तेथी त्यां आवेली तेनी सखीओए तेनां वस्त्रो समारीने तेने एक कोराणे बेसाडी. सगरराजा पण तेणीना उपर मोहित थइ कामे पीडाणो थको तळावनी पाळ उपर आम तेम फरवा लाग्यो; एटलामां तेनी पासे ते स्त्रीनी एक दासी आवी नमस्कार करी, हाथ जोडी तेने कहेवा लागीः—

"हे स्वामिन्! भरतक्षेत्रमां वैताढ्य पर्वत उपर लक्ष्मीने प्रिय एवा गगनवल्लभ नामना नगरमां, अलकापुरीमां कुबेरनी पेठे प्रसिद्ध त्यांना विद्याधरोनो सुलोचन नामे राजा हतो. तेने नीतिनिपुण सहस्रनयन नामे एक पुत्र तथा जगतनी स्त्रीओमां मुकुटमणिरुप एवी एक सुकेशा नामनी पुत्री छे. ते पुत्रीनो जन्म थतां एक नीमीतीआए तेनां चिन्हो उपरथी जणाव्युं के, ते चक्रवर्त्ती राजानी स्त्री थशे. ए कन्यानी सुंदरता तथा लावण्यनी कीर्त्ति सांभळी रथनुपुर नगरना पूर्णमेघ राजाए तेनुं पाणीग्रहण करवा सारु सुलोचनराजा पासे तेनी मागणी करी. तेनुं मागु सुलोचनराजाए स्वीकार्युं नहीं, तेथी ते सुकेशानुं बळात्कारे पण हरण करवानी इच्छाथी युद्ध करवा आव्यो अने सुलोचनने मार्यो; जेथी तेनो महात्मा पुत्र सहस्रनयन द्रव्य तथा परिवार सहित पोतानी बेनने लेइ अहीं नाशी आवी रह्यो छे.

"वळी हे स्वामिन्! आपने आ सरोवरमां क्रीडा करतां जोइने सुकेशा कामे पीडाणी थकी भान भूली आकुळ व्याकुळ थइ छे, तेनुं शरीर ग्रीष्म ऋतुनां तापमां बळता मसेवानी माफक भीजाइ गयुं छे, धातुनी तपावेली पुतळीनी पेठे ए प्रमथी ते माथासुधी तपेली जणाय छे, शियाळाना दहाडामां टाढ वायाथी जेम रुंवाटां उभां थाय तेम तेनां सर्व रोमांच खडां थइ गयां छे, कफवडे जेम गळु भराइ जाय तेवी एना कंठनी व्यवस्था थइ छे, भय पाम्याथी जेम ध्रुजे तेम ए कमलनयनीनुं तन कंपे छे, रोगीना शरीरनी पेठे एनो पीळो वर्ण थइ गयो छे, शोकातुरना नयनमां जेम नी भराइ आवे तेम तेनी आंखो आंसुथी भराएली देखाय छे, अने जेवी योगी पुरुषो मननी वृत्ति एकाग्रपणे ध्येय पदार्थमां लागी रहे तेवीज एना अंतःकरणनी वृ लागी रही छे. उपर प्रमाणे तेनी स्थिति थइ छे, माटे हे राजा! ए स्त्री ज्यांसु जीवे त्यांसुधी तमे तेनुं रक्षण करो."

सगरराजाने दासी उपर प्रमाणे कहे छे, एटलामां आकाश मार्गथी सहस्रनयने आवीने ते चक्रवर्त्तीने नमस्कार करी यथायोग्य आदरसत्कार पूर्वक तेने पोताने स्थानके तेडी गयो, अने पोतानी बेन सुकेशारूप स्त्रीरत्न आपीने तेने प्रसन्न कर्यो. पछी तेओ बंने जण विमानमां बेसी वैताढ्य पर्वत उपर गगनवल्लभ नगरमां आव्या. त्यां इंद्र जेवा पराक्रमवाळा चक्रवर्ती सगरराजाए सहस्रनयनने सर्व विद्याधरोनो अधिपति करीने तेना बापनी राजगादी उपर बेसाड्यो, अने पोते सुकेशाने लेइने अयोध्यामां गयो. त्यां ते पोतानी राजलक्ष्मी सहित सुखरुप रहेवा लाग्यो.

एकदा प्रस्तावे सुरासुरे पूजित एवा श्री अजितनाथ भगवान अयोध्या नगरीना उपवनमां समोसर्या. त्यां इंद्रादिक देवता तथा सगर चक्रवर्त्यादिक राजा वीगेरे परिषद्मां आवी जिनेंद्रने वंदनादि करीने यथायोग्य स्थानके बेठा. पछी श्री अजितनाथ भगवान देशना देवा लाग्या, ते वखते वैताढ्य पर्वत उपर सहस्रनयने पोताना बापने मारनार पूर्णमेघने मारवाथी तेनो पुत्र घनवाहन भयनो मार्यो अतिशय कांपतो त्यांथी नाशीने शरण रहेवाना हेतुथी समवसरणमां आव्यो. त्यां श्रीअजित जिनेंद्रने नमस्कार करी प्रदक्षणा देइने, जेम कोइ वटेमार्गु थाक्यो थको झाडनी छाया मळवाथी विश्रांती पामे तेम जिन चरणनुं शरण मळ्याथी ते शांत थयो. तथापि क्रोधावेशे पोताना वैरीने उद्देशी ते कहेवा लाग्यो के, "तेने हुं पाताळमांथी खेंची लावीश, स्वर्गमां जशे तो त्यांथी पण हेठळ पाडीश, मारा पोताथी नहीं बने तो कोइ मोटा पुरुषनो आश्रय लेइने पण तेने मार्या विना रहीश नहीं." एम ते बोले छे, एटलामां तेने मारवा सारु शस्त्र सहित सहस्रनयन पण त्यां आव्यो. त्यां तेणे घनवाहनने बेठेलो दीठो, पण श्री भगवानना महात्म्यथी तेना कोपनी शांति थइ अने तेनी आंखोमां आंसु आव्यां. पछी ते भगवानने नमस्कार करी प्रदक्षिणा देइ यथायोग्य आसने बेठो. ए प्रसंगे सगरराजा श्री अजितनाथ भगवंतने पुछवा लाग्यो के, पूर्णमेघ अने सुलोचन वच्चे वैर थवानुं कारण आप कृपा करी कहेशो.

पूर्णमेघ अने सुलोचनना पूर्व भव–वैर संबंध.

श्री भगवंते योग्य प्रश्न जाणी जणाव्युं के, "हे राजन्! पूर्वे आदित्याभ नामना नगरमां एक भावन नामे शाहुकार रहेतो हतो. ते पोताना हरीदास नामना पुत्रने सर्व दोलत सोंपी वेपार सारु देशावर गयो. त्यां घणुं द्रव्य कमाई केटलेक दहाडे रातनी वखते ते पोताना नगरमां आवी पहोंच्यो. स्त्री पुत्रादिकने जलदी मळवानी इच्छासाथी ते कमाइ लावेलुं धन एक ठेकाणे मूकी कुवखतेज कुवाटे थइ घरमां

पेठो. तेना दीकरा हरीदासे तेने न ओळखतां "आ कोई चोर हशे" एवी भ्रान्तिथी कांइपण विचार न करतां तरवारथी मार्यो. भावने जाण्युं के मारा पुत्रेज मने शत्रु थइ मार्यो, तेनो द्वेष तेना मनमां रह्या छतां ते मरण पाम्यो. पछी हरीदासे चोकसी करी मुख जोतां पोतानो बाप जणायाथी घणो पश्चाताप कर्यो; पण करे शुं! भावि कोइथी मटती नथी, एम मन वाळी तेणे तेनुं मेतकार्य वीगेरे कर्युं. पण ए घोर कर्मनुं शुळ तेना मनमां रही गयुं. केटलाक दहाडा पछी हरीदास पण मृत्यु पाम्यो. ए बन्नेना जीव दुःखरुप योनीमां जन्म धरतां थकां कोइक पुन्यानुयोगे भावननो जीव पूर्णमेघ थयो अने हरीदासनो जीव सुलोचन थयो. एवी रीते ए बंन्नेनी वच्चे माणांतिक वैर थवानुं कारण पूर्व जन्मनुं घोर कृत्य छे ते आ भवमां संबंधरुप थयुं."

फरी चक्रवर्त्तीए पूछ्युं के, हे जगदुद्धारक देवाधिदेव! पूर्णमेघ तथा सहस्त्रनयननो संयोग अने एमना वैरनुं कारण शुं छे तेमज सहस्त्रनयननी मारा विषे मीति शा कारणथी थइ, ए कृपा करी कहेशो.



पूर्णमेघ, सहस्त्रनयन तथा सगरनो संबंध.

श्री अजितनाथ स्वामी कहे छेः—"हे राजाधिराज! पूर्वे तुं दानशील रंभक नामनो परिव्राजक हतो. शशि तथा आवळी नामे तारे बे शिष्य हता. आवळी गुरुभक्त होवाथी शशि करतां तने वधारे प्रिय हतो. शशि कठोर मननो हतो. तेणे एक वखत आवळीनी गाय चोरी जइ वेची. ते वातनी आवळीने खबर पडवाथी ते बेउ वच्चे महा भयंकर लडाइ थइ, तेमां शशिने आवळीए जीवथी मार्यो. तेनो जीव घणा काळ फरीने पूर्णमेघ थयो. आवळीनो जीव सहस्त्रनयन थयो अने रंभक परिव्राजकनो जीव दानना योगे करी आ तुं सगरराजा थयो. आ ममाणे एमनो संबंध तथा वैर थवानुं कारण छे, तेमज सहस्त्रनयन साथे तारी मीति पूर्व जन्मनी छे."



राक्षस वंश तथा लंका अने पातालंकाना राज्यनी स्थापना.

उपर मुजब परिषद्मां भाषण चाले छे एटलामां त्यां बेठेला राक्षसोना राजा भीमे उठीने अति प्रेम सहित घनवाहनने आलींगन कर्युं अने तेने कहेवा लाग्यो के, पूर्व जन्ममां पुष्कर द्वीपना भरतक्षेत्रमांना वैताढ्य पर्वत उपर कांचन नामना नगरमां हुं विद्युद्दंष्ट्र नामे राजा हतो. ते भवमां तुं मारो अत्यंत प्रिय पुत्र हतो, तेमाटे हे पुत्र

आज तने जोतांज हुं अतिशय हर्षवान थयो छुं. हवेथी आ भवमां पण हुं तने पुत्रपणे मानुं छुं, माटे मारुं सर्व सैन्य तथा द्रव्यादिक लेइने समचोरस सातसें जोजन विस्तीर्ण, सर्व द्वीपोमां मुकुटमणिरूप राक्षस नामना द्वीपनी वच्चोवच सुमेरुनी पेठे शोभायमान, नव जोजन उंचो तथा पांचसें जोजन परिधिनो गोळाकारे एक त्रिकुट नामनो पर्वत छे, ते उपर में एक सुवर्णमय लंका नामनी नगरी हमणांज वसावी छे. जेने सोनानो कील्लो छे, जेथी ते देवथी पण न जीताय तेवी छे, तेमां घरो पण हीमनांज छे, तेमज एने तोरणो पण कनकनां बांधेलां छे; तथा तेनाथी पेली तरफ छ जोजन दूर अति दुर्गम तथा मने परमप्रिय सवासो जोजन समचोरस पाताललंका नामनी नगरी पण मेंज वसावी छे. तेने निर्मळ स्फटिक रत्ननो किल्लो छे, अने जे रमणीय घरोवडे शोभी रही छे. ते बने नगरीओ आजथी में तने आपी. हवे मारूं आ पेलुं लाव लश्कर लेईने तेनुं राज्य तुं कर अने त्यांनो अधिपति था. आ सुरासुरने पूज्य तीर्थनाथनुं दर्शन कर्यानुं फळ तने तत्काळ प्राप्त थयुं, एम समज. एम कहीने तेणे घनवाहनने नव रत्नोनो हार तथा राक्षसी विद्या आपी. घनवाहन ते लेईने श्री तीर्थंकर भगवानने नमस्कार करी पोताने कृतकृत्य मानीने राक्षस द्वीपमां जइ बेउ लंकानुं राज्य करवा लाग्यो. ते दिवसथी राक्षस द्वीपना राज्यवडे तथा राक्षसी विद्याना योगे तेनो वंश राक्षस कहेवावा लाग्यो.

एवी रीते श्री अजितनाथ स्वामीना तीर्थमां भरतक्षेत्रना राक्षस द्वीपमांनी लंका तथा पाताललंकामां राक्षस वंशनो मूळ पुरुष घनवाहन नामे महा बुद्धिवान इंद्र जेवो पराक्रमी राजा थयो, जे पोताना शत्रुओना वळने जीतीने निःशंकपणे केटलाक काळ सुधी बंने लंकानुं राज्य करीने पोताना महा राक्षस नामना पुत्रने सर्व संपत्तिनो मालीक करी श्री अजितनाथ भगवान पासे दिक्षा लेइ मोक्षे गयो. महा राक्षस पण घणा काळ सुधी राज्य करी पोताना देवराक्षस नामना पुत्रने सर्व सोंपी दिक्षा लेईने सिध्धिपद पाम्यो.



वानर द्वीप–वंश किस्किंधा राज्यधानीनी स्थापना.

अनुक्रमे राक्षस द्वीपना असंख्य अधिपति थया पछी श्री श्रेयांस भगवानना तीर्थमां कीर्तिधवळ नामे राक्षसोनो राजा थयो. ते वखते वैताढ्य पर्वत उपर मेघपुर नामना नगरमां अतिंद्र नामनो विद्याधरोनो राजा हतो. तेनी श्रीमती नामनी स्त्रीना उदरथी एक श्रीकंठ नामे पुत्र तथा एक देवांगना जेवी रूपवान देवी नामनी पुत्री हइ. ते कमळनयनी कन्यानी सुंदरता सांभळीने रत्नपुरना पुष्पोत्तरराजाए पोता-

नो पद्मोत्तर नामना पुत्र सारु तेनी मांगणी करी. पद्मोत्तर गुणवान तथा शीलवान हतो तोपण अतिंद्रे तेने कन्या आपी नहीं, अने कीर्तिधवळ वेरे तेने परणावी. पुष्पोत्तरराजा ए वात सांभळीने अतिंद्र तथा तेना पुत्र श्रीकंठ साथे द्वेष करवा लाग्यो.

एक वखते श्रीकंठे मेरुपर्वतथी पाछा आवतां लक्ष्मी जेवी रुपाळी तथा पुर्णिमाना चंद्र जेवा मुखवाळी पुष्पोत्तर राजानी पद्मा नामनी कन्याने दीठी. तेणीने जोतांज तेने काम विकार उपज्यो अने बंनेनी दृष्टी मळतांज तेमनी प्रीति बंधाइ. विक्षित कमळना जेवा मुखवाळी ते पद्मा, श्रीकंठना सामी उभी रहीने विवाहमां जेम वरना गळामां वरमाळा घाले छे तेम दृष्टीना कटाक्षरूप मणिका मोहेली मदनवाणरूप माळाज जाणे तेना गळामां घालती होयनी! एवां तेओनां रस भर्यां चिन्हो जोइने तेनी एक दासी मोटेथी पोकार करवा लागी के, "पद्माने कोई अजाण्यो पुरुष हरण करी जाय छे." ते सांभळी पोतानी कन्या उपर करुणा बुद्धिए करीने सैन्य सहित पुष्पोत्तर राजा पुत्रीने छोडावी लाववा दोड्यो. श्रीकंठ पद्माने लेइ घणो उतावळो नाशीने कीर्त्तिधवळ राजाने शरणे आव्यो, ने पद्मानुं हरण कर्यानी वात तेने जणावी. पाछळथी पुष्पोत्तर राजाए, जेम कल्पांतनो समुद्र पाणीथी दशे दीशाओ भरी मुके छे, तेम त्यां आवीने पोताना सैन्यवडे त्यांनी दशे दीशाओ घेरी लीधी. ए वात कीर्त्तिधवळे सांभळीने पुष्पोत्तर राजाने कहेवराव्युं के, विचार कर्या वगर लडाइ करवाने तुं शा माटे आव्यो छे? तारी कन्या कोइने पण आपवानी हतीज, तो ते पोतानी खुशीथी श्रीकंठने परणी तेमां तेनो शो अपराध छे? एमां कांइ अपराध नथी. माटे एटलाज सारु परस्पर लडी मरवुं ए बन्नेने योग्य नथी. तारे ते पोतानी कन्याने तेनी इच्छा प्रमाणे परणाववी ए सौथी श्रेष्ठ छे. पद्माए पण दासीद्वारा पोताना बापने कहाव्युं के, हुं मारी राजी खुशीथी श्रीकंठने वरी छुं, तेणे एणे बळात्कारे हरण कर्युं नथी. आथी पुष्पोत्तरनो गुस्सो उतरी गयो. कह्युं छे के, "विचारवाळा माणसनो क्रोध जलदी जतो रहे छे." पछी अति हर्षथी श्रीकंठ साथे पद्माने परणावीने पुष्पोत्तर राजा पोताना नगरमां गयो.

त्यार पछी कीर्त्तिधवळे श्रीकंठने कह्युं के, वैताढ्य पर्वत उपर तारा घणा वैरी छे, तेथी तुं अहींआंज रहे; अथवा आ राक्षस द्वीपनी पासे आथमणी दिशामां त्रणसें जोजनना प्रमाणनो वानर नामनो मारो द्वीप छे, तेमज बर्बरकुल तथा सिंहलद्वीप प्रमुख बीजा पण मारा द्वीपो छे, तेमांना गमे ते द्वीपमां राजधानी करीने तुं मारी नजीक रहे. जो के मारी सहायता छतां वैरीनी तने जरा पण बीक नथी, तोपण तुं दूर गयाथी आपणो वियोग थशे, माटे तारे अहींज रहेवुं ए मने सारुं लागे छे. कीर्तिधवळनी पोता उपर घणी प्रीति जोइने श्रीकंठे वानर द्वीपमां रहेवानी इच्छा जणावी.

कीर्त्तिधवळे ते मान्य करीने त्यां किस्किंधा नामनी नगरी वसावी, राज्यनी स्थापना करी, ते उपर श्रीकंठने बेसाडी तेने आखा वानर द्वीपनो अधिपति कर्यो.

श्रीकंठे किस्किंध पर्वत उपर फरतां मोटा शरीरवाळां मनोहर फळने खानारां घणां वांदरां दीठां तेथी तेणे पोताना राज्यमां थाळी पिटावी के, " कोईए वांदरांने मारवां नहीं, तेमने अन्नपाणी विगेरे आपतां रहेवुं." तेथी त्यां रहेनारा लोको वांदरां उपर प्रीति करीने तेमने सुखी करवा लाग्या. कह्युं छे के, " यथा राजा तथा प्रजा." ते दिवसथी त्यांना लोको कौतुकवडे, चित्रपट उपर, छत्र उपर, ध्वजा उपर, तथा माटी विगेरेनी जणसो उपर वांदरांनांज सर्व चित्रो करवा लाग्या. ते चिन्होवडे तथा वानर द्वीपना राज्यवडे त्यांना रहेवासी विद्याधरो (विकल्पे करी नर) वानर नामे विख्यात थया. श्रीकंठने वज्रकंठ नामे पुत्र थयो, ए युद्धकळामां अति निपुण तथा महा पराक्रमी हतो.

एकदा समये नंदीश्वर द्वीपमांना शाश्वत जिनेंद्रनी यात्रा करवा सारु जनारा मार्गस्थ देवोनी पाछळ केटलाएक भवीक लोकोने अति भक्ति सहित चाल्या जतां श्रीकंठे दीठा. तेमने जोई, एने एवो भाव उपज्यो के, हुं पण एमनी साथे यात्रा करवा जाऊं. पछी ते विमानमां बेसी यात्रा करवा सारु निकळ्यो. रस्तामां जतां जेम पहाड आववाथी नदीनो वेग अटकी जाय तेम मानुषोत्तर पर्वत उपर तेनुं विमान अटकी गयुं. जेथी ते विचार करवा लाग्यो के, मारो मनोरथ पूर्ण करवामां विघ्न पडवानुं कारण शुं हशे? के में पुर्व जन्ममां थोडुं तप कर्युं छे? ए प्रमाणे विचारतो दिक्षा लेई महातप करी सिद्धिपद पाम्यो.



मुनिसुव्रत स्वामीना तीर्थमां वानरद्वीप अने राक्षसद्वीपमां थएल राजानुं वर्णन.

ए प्रमाणे वानर द्वीपमां श्रीकंठथी वज्रकंठादिक केटलाएक राजा थइ गया पछी श्री मुनिसुव्रत स्वामीना तीर्थमां घनोदधि नामे राजा थयो. तेमज राक्षस द्वीपमांनी लंका नगरीमां कीर्त्तिधवलादिक केटलाएक राजा थइ गया पछी तडित्केश नामे राजा थयो. ए बंनेने घणी मित्राचारी हती. एक वखत तडित्केश पोतानी श्रीचंद्रा नामनी प्रिय स्त्री सहित नंदन वनमां क्रीडा करवा गयो. त्यां सुखरुप क्रीडा करतां एक वांदराए झाड उपरथी उतरी श्रीचंद्राना स्तनो उपर नखेवतीं वलुरा कर्या. ते जोइने तडित्केश घणो गुस्से भरायो. कह्युं छे के, " स्त्रीनो पराभव कोइथी सहन थतो नथी." पछी राजाए वांदराने एक बाण मार्युं. जे तेना शरीरमां

लाग्याथी ते महा दुःखित थतो बे त्रण कुदका मारी त्यांथी थोडेक दूर एक साधु तप करतो हतो तेनी सामे जइ पड्यो. साधुए तेना उपर दया लावी परभवना भाता रुप तेने नवकार मंत्रनुं स्मरण कराव्युं. जेना योगे करी ते उदधिकुमार नामना देवताओमां भुवनपति देव थयो. त्यांथी तेणे पोतानो पूर्व भव निहाळी पोताना परम उपकार मुनि पासे आवी तेनी वंदना स्तवना करी. कह्युं छे के, " सत्पुरुषोने अवश्ये साधु वंदना करवा योग्य छे, तेमां पण वळी जेणे पोता पर उपकार कर्यो होय तेनी तो विशेषे करी वंदना भक्ती करवीज जोईए " आंहीं तडित्केश क्रोधावेशे पोताना योद्धाओ सहित ते वनमांनां वांदरांओने मारवा लाग्यो. आ वातनी ते भुवन पति देवने ज्ञानवळे करीने खबर पडवाथी ते महा क्रोधायमान थतो आवी, वांदरांनुं रुप धारण करी, तडित्केश तथा तेना योद्धा राक्षसो उपर झाड तथा पत्थरोनो वरसाद वरसाववा लाग्यो. आ उपद्रवथी तडित्केश घणो व्याकुळ थयो. तेणे दिव्य प्रयोगथी उदधिकुमार देवतानी वात जाणी तेथी ते तेनी पासे आवी तेने वंदना करी तेनी पूजा करवा लाग्यो; अने पुछ्युं के, तुं कोण छे? शा माटे मने दुःख दे छे? में तारो शो अपराध कर्यो छे? ते सांभळी देवता शांत थयो, अने पोतानुं मरण तथा मुनिए संभळावेला मंत्रनुं सामर्थ्य तेने कह्युं. पछी देवता तथा तडित्केश ते साधु पासे आवी वंदना करी तेमने पुछवा लाग्या के, हे स्वामीन्! अमारा बेनी वच्चें वेर थवानुं शुं कारण छे ते कृपा करी जणावशो. मुनिए जणाव्युं के, " हे तडित्केश! तुं पूर्व भवमां सावत्थी नगरीना राजाना प्रधाननो दत्त नामे पुत्र हतो, अने वांदरानो जीव काशी नगरमां पारधी हतो. दत्त दिक्षा लइने एक वखत काशीमां जतो हतो ते वखते पारधीने पोताना काम उपर जतां ते सामो मळ्यो. साधु वेशथी अपशुकन मानी पारधीए दत्त मुनिने बाण मार्युं, तेज वखते ते काळ करी महेंद्र नामना देवलोकमां देवपणे उपज्या. त्यां आयुष पुरु करी त्यांथी चवीने आ तुं तडित्केश नामे लंकाधिश थयो छुं. पारधी पण तेज दिवसे वीजळी पडवाथी मरण पामी नरकमां गयो. त्यांथी ते घणा काळ सुधी संसारमां भटकी वांदरो थयो, जे तारा प्रयोगे मरण पामी नवकार मंत्रना स्मरणथी आ उदधिकुमार देव थयो छे. आवी रीते तमारुं पूर्व जन्मनुं वेर छे." ते सांभळी देवता शांत थई मुनिने नमस्कार करी पोताने स्थानके गयो; तडित्केशराजा मुनिने नमस्कार करी घेर जई पोताना सुकेशी नामना पुत्रने राज्य आपी, दिक्षा लेई मोक्षे गयो. तेमज किस्किंधानो राजा घनोदधि पण पोताना किस्किंधी नामना पुत्रने राज्य आपी दिक्षा लेई मोक्षे गयो.

वैताढ्य पर्वत उपर रथनुपुर नामना नगरमां अशनिवेग नामे विद्याधरोना राजाने विजयसिंह तथा विद्युद्वेग नामना बे पुत्रो थया. ते बंने जाणे तेनी बे भुजा

ओज होयनी! एवा थया. तेमज ते पर्वत उपर आदित्य नामना नगरमां माल्यवान नामे विद्याधरोनो राजा थयो. तेने श्रीमाला नामनी कन्या हती. तेना स्वयंवरमां विजयसिंह तथा किस्किधानो राजा किस्किधी वीगेरे अनेक राजाओ आव्या हता. श्रीमालाने तेनी दासीए तमाम राजाओने तेओना गुणनुं वर्णन करी देखाड्या, पण ते सर्वने मुकीने किस्किधीना सामे आवी उभी रही, ते जाणे समुद्रनी पासे भागीरथी आवीने उभी रही होयनी! एवी देखावा लागी. पछी तेना गळामां वरमाळा आरोपी, ते जाणे हवे पछी थवाना तेनी भुजानां आलिंगनने वास्ते कबुलातज देती होयनी! आवी रीते श्रीमाळा किस्किधीने परणी. ते जोइने सिंहना जेवुं जेनुं पराक्रम छे, एवो विजयसिंह राजा क्रोधवडे भृकुटी चडावीने बोलवा लाग्यो के, "आ चोरनी पेठे दुर्नय करनारा विद्याधरोने प्रथमथीज हांकी मुक्या छतां हमणां आंहीं कोण बोलावी लाव्यो? ए दुष्ट, कुलदुषक तथा दुराचारी विद्याधरोने पशुनी पेठे आज हुं मारीश." एम कही उभो थयो. तेने जोइ बीजा वांदरा, राक्षसो तथा वैताढ्य पर्वत उपर रहेनारा विद्याधरो पण गर्जना करी ऊठी उभा थया. ते बंनेनुं परस्पर युद्ध थवा लाग्युं. जेमां, हाथीनी सामे हाथी, घोडानी सामे घोडा, रथनी सामे रथ, पाळानी सामे पाळा, एम पोत पोतानी योग्यता प्रमाणे तेओ लडवा लाग्या. ते वखते कल्पांत काळनी पेठे जमीन उपर लोही तथा अस्थिना चीकळ विना बीजुं कांइ देखातुं नहोतुं. आ प्रमाणे युद्ध थाय छे, एटलामां किस्किंधी राजाना नाना भाइ अंधके महावेगथी दोडीने, जेम कोइ झाडनी डाळ उपरथी फळ, तोडे तेम, एकज बाणे करीने विजयसिंहनुं माथुं उडावी दीधुं. तेने मुओ जाणीने तेनुं सर्व सैन्य चारे दीशाए पलायन करी गयुं. कह्युं छे के, "जेने नायक नहीं तेने शौर्य क्यांथी? सेनापती वीना सैन्य सुन्य जाणवुं." पछी किस्किंधी राजा जयलक्ष्मी जेवी श्रीमालाने साथे लेइने परिवार सहित पोताना नगरमां गयो.

अशनिवेग राजा पोताना पुत्र विजयसिंहनुं मरवुं सांभळीने अकाळे वज्रपातनी पेठे किस्किंधी राजानी साथे लडवा सारु तेना नगर समीपे आव्यो. ते जोइने तेने हठाववा सारु किस्किंधी राजा, लंकाना सुकेशी राजा तथा अंधक वीगेरे परिवार सहित नगरथी वहार निकळ्यो. पछी लडाइ शरु थइ, तेमां अशनिवेग राजाए अंधकनुं माथुं कापी नांख्युं. ते जोइने राक्षसोनुं तथा वांदरानुं लश्कर दशे दिशाए नाठुं. तेमज वैरीनुं बळ वधारे जाणीने किस्किंधी राजा तथा लंकानो सुकेशी राजा वीगेरे पण पोतानो स्त्रीआदिक परिवार लेइने पाताललंकामां नाशी गया. पोताना पुत्रने मारनार अंधक राजाना मृत्युथी तथा पोताना वैरीओ नाशी जवाथी अशनिवेग राजा शांत थयो, अने निर्घात नामना विद्याधरने लंका तथा किस्किंधाना

राज्य उपर बेसाडीने पोते पोताना नगरमां गयो. त्यां केटलाएक काळ सुधी राज्य कर्या पछी तेने एक साधुनो समागम थयो. तेना उपदेशथी तेणे पोताना सहस्रार नामना पुत्रने राज्य गादीए बेसाडी दिक्षा लीधी.

पाताललंकाना सुकेशी राजाने तेनी इंद्राणी नामनी स्त्रीने पेटे माली, सुमाली तथा माल्यवान नामना त्रण पुत्र थया; अने किस्किंधी राजाने तेनी श्रीमाला नामनी स्त्रीने पेटे आदित्यरज तथा रुक्षरज नामना बे पुत्र थया. एक वखत किस्किंधी राजा सुमेरुनी यात्रा करवा सारु गयो हतो, त्यांथी पाछा फरतां मधु पर्वत उपर एक मनोरम्य वन जोईने विसामो खावा सारु उतर्यो. त्यां तेणे नवी किस्किधा नामनी नगरी वसावी अने पोताना परिवार सहित त्यांज रह्यो. ते जेम कैलास पर्वत उपर कुबेर शोभे छे तेम दीपवा लाग्यो.

सुकेशी राजाना त्रणे पुत्रोए, पोताना पितानुं राज्य शत्रुए छीनवी लीधुं छे एवुं जाण्युं तेथी प्रज्वलित अग्निनी पेठे क्रोधायमान थइने लंकामां आवी, महा पराक्रमवडे निर्घात नामना त्यांना विद्याधर राजाने मारी नांख्यो अने मोटो पुत्र माली लंकानी राज्यगादीए बेठो. ते वखते किस्किधा नगरीनो राजा आदित्यरज थयो.



इंद्राजानो जन्म तथा तेनी राज्यस्थापना–संपत्ति.

वैताढ्य पर्वत उपर रथनुपुर नगरमां सहस्रार राजानी स्त्री चित्तसुंदरीना गर्भमां देवलोकथी भ्रष्ट थएला कोइ देवताना जीवे प्रवेश कर्यो. तेना सामर्थ्यवडे चित्तसुंदरीने इंद्रनी साथे भोग करवानी इच्छा थइ. ते पूर्ण न थवाथी तेनुं शरीर दिवसे दिवसे सुकावा लाग्युं. पोतानी स्त्रीनी आवी हालत जोइने सहस्रारे तेनुं कारण पुछ्युं. जो के ते, कहेवा लायक नहोतुं तोपण चित्तसुंदरीए नाइलाजे ते जणाव्युं. पछी सहस्रारे विद्याना योगे इंद्रनुं रुप धारण करीने तेनी इच्छा पूर्ण करी. पछी पूर्व दिशाएथी जेम सूर्य निकळे तेम पुरे मासे ते स्त्रीना उदरथी एक महा पराक्रमी पुत्र अवतर्यो. ते पेटमां छतां तेनी माताने इंद्रनी साथे संभोग करवानी इच्छा थइ हती तेथी तेनुं नाम इंद्र पाड्युं. तेने यौवनावस्थामां आवतां तेना पीताए विद्याधरोनी घणी कन्याओ परणावी अने तेने राज्य सोंपी पोते दिक्षा लीधी.

ते इंद्राजाए सर्व देश तथा सर्व विद्याधरोने पोताना स्वाधीनमां करी लीधा अने पोतानी सर्व संपत्ति इंद्रना जेवी करी. जेम के, "चार दिग्पाल, सात सैन्य, सात तेना अधिपती, त्रण सभा, वज्र नामनुं अस्त्र, ऐरावत हाथी, रंभादिक वेश्या, बृहस्पति मंत्री तथा नैगमेषी नामनो सेनापति." ए प्रमाणे पोतानी सर्व संपत्ति इंद्रना

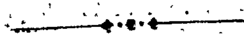
जेवी करीने त्यांना विद्याधरो सहित राज्य करतो छतां ते पोताने इंद्र कहेवराववा लाग्यो. एना चार दिग्पालनां नाम नीचे प्रमाणे हता:—पूर्व दिशानो दिग्पाल, ज्योतिष्यपुरना राजा मयुरध्वजनी स्त्री आदित्यकीर्तिना उदरथी जन्मेलो सोम नामनो विद्याधर हतो; पश्चिम दिशानो दिग्पाल, मेघपुरना राजा मेघरथनी स्त्री वरुणाना पेटे जन्मेलो वरुण नामे विद्याधर हतो; उत्तर दिशानो दिग्पाल, कांचनपुरना सुरराजानी स्त्री कनकावतीने पेटे जन्मेलो कुबेर नामे विद्याधर हतो; अने दक्षिण दिशानो दिग्पाल, किस्किंधाना राजा कालाग्निनी स्त्री श्रीप्रभाना उदरथी उत्पन्न थएलो यम नामे विद्याधर हतो. इत्यादिक सर्व संपत्ती सहित इंद्रराजा राज्य करवा लाग्यो.



लंकाना मालीराजा तथा इंद्रराजानुं युद्ध.

इंद्रराजानी उपर मुजबनी संपत्ति लंकानो मालीराजा सहन करी शक्यो नहीं, तेथी ते पोताना भाइओ, प्रधानो, महापराक्रमी मीत्रो तथा वानर द्वीपना माणसो सहित इंद्रराजानी साथे युद्ध करवा सारु तेना नगर तरफ जवा निकळ्यो. ते वखते तेने अपशुकन थया, ते जोइने तेना भाइ सुमालीए तेने जवानी ना कही. ते न गणकारतां मालीराजा पोताना बाहुबळना गर्वे करी इंद्रने जीतवा सारु वैताढ्य पर्वत उपर गयो. तेनी साथे लडवा सारु इंद्रराजा पण पोताना ऐरावत हाथी उपर बेशी हाथमां वज्र धारण करी पोताना चार लोकपाल सहित नगरथी बहार निकळ्यो. पछी बंने लश्कर वच्चे मोटुं युद्ध थवा लाग्युं. तेमां रथनी सामे रथ, घोडानी सामे घोडा, हाथीनी सामे हाथी तथा पाळानी सामे पाळा, एवी रीते एक बीजानी साथे लडवा लाग्या. जेमां पर्वत उपरथी जेम शिखर पडे तेम रथो पडवा लाग्या, वायराथी वादळ वीखराइ जाय तेवी हाथीओनी दशा थइ, जमीन उपर माणसोनां माथा पडवा लाग्या, कोइना पग तुट्या तो कोइना हाथ कपाया. ए प्रमाणे बंने राजाना लश्करो एकबीजानो नाश करवा लाग्या. ते जोइने इंद्रराजाए युद्ध करतो छतां घणो क्रोध चडवाथी पोताना शस्त्र तथा अस्त्रथी मालीराजाने वेरी लेइ तेनुं माथुं कापी नांख्युं. मालीराजाने मुवो जाणीने तेनुं सर्व सैन्य पाताललंकामां नाशी गयुं. पछी इंद्रराजा राक्षसोनी लंका तथा तेमनी राक्षसी विद्यानुं हरण करी विश्रवा विद्याधरनी स्त्री कौसीकाना उदरथी जन्मेला वैश्रवण नामना राजाने लंकानुं राज्य आपी पोताना नगरमां आव्यो.

न
वी
ए
वे.




लंका.
पाताळ लंका.
कैकसी.
दशमुखः

॥ रत्नश्रवा अने कैकशीनुं पाणीग्रहण ॥

सुमाली राजानी स्त्री प्रीतिमतीना उदरथी रत्नश्रवा नामे पुत्र उत्पन्न थयो. ते यौवन अवस्थामां आव्यो त्यारे कोइ विद्या साधन करवाना हेतुथी कुसुम नामना उद्यानमां जइ एकांतस्थानमां बेशी, नाशाग्रे दृष्टी करी, पर्वतनी पेठे स्थीर थइ, जपमाळा धारण करीने जप करवा लाग्यो. त्यां एक समये कोइएक विद्याधरनी कन्या पोताना पीतानी आज्ञाथी तेना सामे आवी उभी रहीने कहेवा लागी के, "हुं मानवसुंदरी नामनी महाविद्या तने प्रसन्न छुं" ते सांभळीने जपमाळा जमीन उपर मुकी रत्नश्रवाए आंखो उघाडी जोयुं तो एक नवयौवन विद्याधरीने पोतानी सामे उभी रहेली दीठी. तेने पुछवा लाग्यो के, "हे कन्यका, तुं कोण छुं ? कोणी पुत्री छुं ? अने आंहीं शा सारु आवी छुं ?" त्यारे तेणीए जवाब दीधो के, "कौतुकमंगल नामना नगरमां व्योमबिंदु नामनो एक विद्याधर छे, तेने कौशिका तथा कैकशी नामे बे कन्याओ छे, तेमांनी कौशिकाने यक्षपुरना राजा विश्रवा साथे परणावी छे, जेनो पुत्र वैश्रवण नामनो विद्याधर हमणा लंकानुं राज्य करे छे, अने कैकशी हुं पोते छुं. कोइक निमित्तथी मारा पिताए वचने करी मने आपने सोंपी दीधी छे, तेथी हुं आंहीं आवी छुं. आप मने अंगीकार करो. तेनुं आवुं बोलवुं सांभळीने रत्नश्रवा मनमां विचार करवा लाग्यो के, हुं ध्यानमां छतां जेणे मने कह्युं के, "हुं मानवसुंदरी नामनी महाविद्या तने प्रसन्न छुं." ते विद्या नहीं, पण ते साक्षात् मानवसुंदरी नामनी विद्याज हती. हवे हुं कृतकृत्य थयो. एम विचारीने रत्नश्रवाए पोताना भाईओ विगेरेने त्यां बोलावी कैकशी साथे लग्न कर्युं अने त्यांज पुष्पपुर नामनुं नगर वसावी स्त्री सहित उपभोग भोगववा लाग्यो.

दशमुख (रावण) नो जन्म.

एक वखत कैकशीए स्वप्नमां हाथीनुं गंडस्थळ तोडनारो सिंह दीठो. आ वात राजाने कहेवाथी तेणे कीधुं के, "तने एक महापराक्रमी पुत्र थशे." पछी रत्नश्रवा चैत्यनी पूजा करवा लाग्यो. कैकशी राणीने गर्भ रहाथी तेनी वाणी निष्ठुर थवा लागी. एक वखत कैकशी अरीसामां मुख जोती हती, तेमां कोई महा भयंकर रुप तेना जोवामां आव्युं. तेना गर्भना प्रभावथी ते इंद्र राजाने पण आज्ञा करवानी इच्छा करवा लागी, तथा पोताना गुरु विगेरेने नमस्कार करवानुं मुकी दीधुं अने शत्रुना मस्तक उपर पग देवानी तेनी मरजी थवा लागी. एम करतां पुरा मास थएथी

पूर्णमा तीला शुभ दिवसे सारा लग्ने शुभ मुहुर्त्ते तेणीए साडाबार हजार वर्षना आयुष्यवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. माताना उदरथी बहार आवतांज ते बाळके पोताना वडीलोने मळेलो नवरत्ननो हार जे करंडीआमां राखेलो हतो ते घणी चालीकीथी हाथेथी उपाडी पोताना गळामां घाल्यो. ते जोई कैकशी राणी आश्चर्य पामीने कहेवा लागी के, आ नव रत्नोना हारने अद्यापि सुधी कोईपण उपाडवाने समर्थ नहीं थवाथी अमारा वडीलोने तेने हजार नागे करी रक्षण करेला निधिनी पेठे जाळवी राखी पूज्यो, तेने एक लीलामात्रमां आ बाळके जन्मतांज उपाडीने पोताना गळामां घाल्यो. ए तेनुं बाहुबळ जरूर अगाध जणावे छे. गळामां नांखेला हारमांना नवे रत्नोमां ते बाळकना मुखनुं प्रतिबिंब पड्याथी तेनुं नाम दशमुख राख्युं.

एक वखत कोई प्रसंगानुसार रत्नश्रवा विचार करवा लाग्यो के, ज्यारे मारो बाप सुमाली मेरु पर्वत उपर चैत्यवंदन करवा गयो हतो त्यारे तेने चार ज्ञानवाळा मुनिए आ हार विषे हकीकत पूछतां जणाव्युं हतुं के जे पोताने हाथे उपाडीने हार पोताना गळामां घालशे ते प्रतिवासुदेव (अर्द्धचक्री) थशे. माटे मारो आ दशमुख नामनो पुत्र अर्द्धचक्री थशे, एवो तेणे निश्चय कर्यो.

केटलाएक काळ पछी कैकशी राणीए सूर्यनुं स्वप्न जोई गर्भ धारण करी पूर्ण मासे पुत्र प्रसव्यो, जेनुं नाम भानुकर्ण अथवा कुंभकर्ण राख्युं.

त्यार पछी चंद्रमाना स्वप्नना चिन्हे करी कैकशी राणीए विभीषण नामना त्रीजा पुत्रने जन्म आप्यो.

कैकशीए छेल्ला चोथा गर्भमां चंद्रनी कांतिनी पेठे नखनी कांतिवाळी चंद्रनखा अथवा शूर्पनखा नामनी कन्याने जन्म आप्यो.

उपर जणावेला रत्नश्रवा राजानी राणी कैकशीना उदरथी जन्मेला दशमुख कुंभकर्ण तथा विभीषण, (त्रणे भाईओ) ना शरीरो सोळ धनुष्य प्रमाणना उंचाइमां थयां. ते त्रणे भाईओ यथेच्छ क्रीडा करता थका पृथ्वी उपर विचरवा लाग्या.

॥ दूहा ॥

प्रथम सर्ग पूरो थयो, राम चरित्रनी मध्य ॥
राक्षस वानर वंशनी, उत्पत्ति आवी सद्य ॥ १ ॥
लंक अने पाताल लंक, रावण जन्म जणाय ॥
हेमचंद्र वाणि सुणी, प्राणी पावन थाय. ॥ २ ॥

इति श्रीहेमचंद्राचार्यविरचिते त्रिषष्ठि शिलाखा पुरुषचरिते महाकाव्ये संगमपर्वणि राक्षसवानरवंशोत्पत्ति रावणजन्मवर्णनो नाम प्रथमः सर्गः १

॥ अथ द्वितीयः सर्गः प्रारभ्यते ॥

—००:००:००—

लंकानुं राज्य लेवा रावणने थएली इच्छा अने विद्या साधन.

एक दिवस रावण पोताना भाइओ सहित बेठो हतो, तेवामां आकाशमार्गे जतुं एक विमान तेना दीठामां आव्युं, तेथी तेणे पोतानी माताने पूछ्युं के, आ विमानमां कोण छे ? त्यारे कैकशीए कह्युं के, ए वैश्रवण नामे सर्व विद्याधरोना राजा इंद्रनो मोटो योद्धो अने मारी मोटी वहेननो पुत्र छे. तारा पितामहना भाइ मालीराजाने इंद्रे युद्धमां मारी तेनी लंकानगरीनुं राज्य तेने सोपेलुं छे. ते सांभळीने लंकानुं राज्य लेवानी रावणनी मरजी थइ. कैकशी, रावणनो आ अभिप्राय समजीने तेने कहेवा लागी के, हे मारा वहाला पुत्र ! पूर्वे श्री अजितनाथ स्वामीनी परिषद्मां भीमेंद्र नामना राजाए त्यां बेठेला एक घनवाहन नामना विद्याधरने पोतानो पूर्वभवनो पुत्र हतो, एवुं जणावी तेणे वसावेली लंका तथा पाताल लंकानुं राज्य अने आ नवरत्नोनो हार तथा राक्षसीविद्या आपी हती. घनवाहनने पोतानो पुत्र मानी राज्यगादीए बेसाडी भीमे दीक्षा लीधी. ए घनवाहन राजा आपणा कुळनो मूळ पुरुष छे. तेनी सर्व संपत्ति क्रमे करी तारा पितामह सुमाली राजा सुधी चाली. तेनुं राज्य इंद्र राजाए लेइ लीधुं, तेथी ते पाताल लंकामां नाशी जइ, हजु सुधी त्यां राज्य करे छे. अने लंकामां तारा वैरीओ सुखे करी सुखभोग भोगवे छे. तेनुं शुल हजी सुधी तारा बापना मनमां छे. हवे एवो दहाडो क्यारे आवशे, के हुं तने लंकाना राज्य उपर बेठेलो जोइश ? लंकाने लुंटनाराने तारा हाथवडे बंधीखाने नांखेला हुं क्यारे जोइश ? अने त्यारेज हुं पुत्रवती स्त्रीओमां शिरोमणी थइ एम समजीश. हमणां तो ए सर्व मारा मनना मनोरथ आकाशनां फूल जेवा छे. एवुं कैकशीनुं भाषण सांभळीने त्यां बेठेलो बिभीषण नामनो तेनो नानो पुत्र कहेवा लाग्यो के, हे माता ! तुं खेद कर नहीं. आ दशकंठनी तने खबर नथी. आनी आगळ ए इंद्र, वैश्रवण, बीजा विद्याधरो, राजाओ, देवताओ अने मनुष्यो, ए सर्व तणसला जेवा छे. ते तो रह्यो, पण आ एकलो कुंभकर्णज सर्व पृथ्वीने वश करवाने समर्थ छे, अने हुं पण आपणा सर्व वैरीओने मारवानी हिंमत धरावुं छुं. एवा महा शुरवीर तारा पुत्रो छतां तुं खेद शा सारु करे छे ? बिभीषणना मुखथी एवां हिंमतनां वचनो सांभळीने कैकशी राणी मनमां जरा खुशी थइ. एटलामां होठ पीसी रावण कहेवा लाग्यो के, " हे जननी, तें जे तारा हृदयमां शल्य धारण कर्युं छे ते काढी नांख, अने वज्रना जेवी कठण था. हुं मारा एकज

पूर्णमा तीना शुभ दिवसे सारा लग्ने शुभ मुहुर्ते तेणीए साडाचार हजार वर्षना आयुष्यवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. माताना उदरथी बहार आवतांज ते बाळके पोताना वडीलोने मळेलो नवरत्ननो हार जे करंडीआमां राखेलो हतो ते घणी चालाकीथी हाथेथी उपाडी पोताना गळामां घाल्यो. ते जोई कैकशी राणी आश्चर्य पामीने कहेवा लागी के, आ नव रत्नोना हारने अद्यापि सुधी कोईपण उपाडवाने समर्थ नहीं थवाथी अमारा वडीलोने तेने हजार नागे करी रक्षण करेला निधिनी पेठे जाळवी राखी पूज्यो, तेने एक लीलामात्रमां आ बाळके जन्मतांज उपाडीने पोताना गळामां घाल्यो. ए तेनुं बाहुबळ जरूर अगाध जणावे छे. गळामां नांखेला हारमांना नवे रत्नोमां ते बाळकना मुखनुं प्रतिबिंब पड्याथी तेनुं नाम दशमुख राख्युं.

एक वखत कोई प्रसंगानुसार रत्नश्रवा विचार करवा लाग्यो के, ज्यारे मारो बाप सुमाली मेरु पर्वत उपर चैत्यवंदन करवा गयो हतो त्यारे तेने चार ज्ञानवाळा मुनिए आ हार विषे हकीकत पूछतां जणाव्युं हतुं के जे पोताने हाथे उपाडीने हार पोताना गळामां घालशे ते प्रतिवासुदेव (अर्द्धचक्री) थशे. माटे मारो आ दशमुख नामनो पुत्र अर्द्धचक्री थशे, एवो तेणे निश्चय कर्यो.

केटलाएक काळ पछी कैकशी राणीए सूर्यनुं स्वप्न जोई गर्भ धारण करी पूर्ण मासे पुत्र प्रसव्यो, जेनुं नाम भानुकर्ण अथवा कुंभकर्ण राख्युं.

त्यार पछी चंद्रमाना स्वप्नना चिन्हे करी कैकशी राणीए विभीषण नामना त्रीजा पुत्रने जन्म आप्यो.

कैकशीए छेल्ला चोथा गर्भमां चंद्रनी कांतिनी पेठे नखनी कांतिवाळी चंद्रनखा अथवा शूर्पनखा नामनी कन्याने जन्म आप्यो.

उपर जणावेला रत्नश्रवा राजानी राणी कैकशीना उदरथी जन्मेला दशमुख कुंभकर्ण तथा विभीषण, (त्रणे भाईओ) ना शरीरो सोळ धनुष्य प्रमाणना उंचाइमां थयां. ते त्रणे भाईओ यथेच्छ क्रीडा करता थका पृथ्वी उपर विचरवा लाग्या.

॥ दूहा ॥

प्रथम सर्ग पूरो थयो, राम चरित्रनी मध्य ॥
राक्षस वानर वंशनी, उत्पत्ति आवी सद्य ॥ १ ॥
लंक अने पाताल लंक, रावण जन्म जणाय ॥
हेमचंद्र वाणि सुणी, प्राणी पावन थाय. ॥ २ ॥

इति श्रीहेमचंद्राचार्यविरचिते त्रिषष्ठि शिलाखा पुरुषचरिते महाकाव्ये संगमपर्वणि राक्षसवानरवंशोत्पत्ति रावणजन्मवर्णनो नाम प्रथमः सर्गः १

॥ अथ द्वितीयः सर्गः प्रारभ्यते ॥



लंकानुं राज्य लेवा रावणने थएली इच्छा अने विद्या साधन.

एक दिवस रावण पोताना भाइओ सहित बेठो हतो, तेवामां आकाशमार्गे जतुं एक विमान तेना दीठामां आव्युं, तेथी तेणे पोतानी मातानें पूछ्युं के, आ विमानमां कोण छे ? त्यारे कैकशीए कह्युं के, ए वैश्रवण नामे सर्व विद्याधरोना राजा इंद्रनो मोटो योद्धो अने मारी मोटी बहेननो पुत्र छे. तारा पितामहना भाइ मालीराजाने इंद्रे युद्धमां मारी तेनी लंकानगरीनुं राज्य तेने सोपेलुं छे. ते सांभळीने लंकानुं राज्य लेवानी रावणनी मरजी थइ. कैकशी, रावणनो आ अभिप्राय समजीने तेने कहेवा लागी के, हे मारा वहाला पुत्र ! पूर्वे श्री अजितनाथ स्वामीनी परिषद्मां भीमेंद्र नामना राजाए त्यां बेठेला एक घनवाहन नामना विद्याधरने पोतानो पूर्वभवनो पुत्र हतो, एवुं जणावी तेणे वसावेली लंका तथा पाताल लंकानुं राज्य अने आ नवरत्नोनो हार तथा राक्षसीविद्या आपी हती. घनवाहनने पोतानो पुत्र मानी राज्यगादीए बेसाडी भीमे दीक्षा लीधी. ए घनवाहन राजा आपणा कुळनो मूळ पुरुष छे. तेनी सर्व संपत्ति क्रमे करी तारा पितामह सुमाली राजा सुधी चाली. तेनुं राज्य इंद्र राजाए लेइ लीधुं, तेथी ते पाताल लंकामां नाशी जइ, हजु सुधी त्यां राज्य करे छे. अने लंकामां तारा वैरीओ सुखे करी सुखभोग भोगवे छे. तेनुं शुल हजी सुधी तारा बापना मनमां छे. हवे एवो दहाडो क्यारे आवशे, के हुं तने लंकाना राज्य उपर बेठेलो जोइश ? लंकाने लुंटनाराने तारा हाथवडे बंधीखाने नांखेला हुं क्यारे जोइश ? अने त्यारेज हुं पुत्रवती स्त्रीओमां शिरोमणी थइ एम समजीश. हमणां तो ए सर्व मारा मनना मनोरथ आकाशनां फूल जेवा छे. एवुं कैकशीनुं भाषण सांभळीने त्यां बेठेलो विभीषण नामनो तेनो नानो पुत्र कहेवा लाग्यो के, हे माता ! तुं खेद कर नहीं. आ दशकंठनी तने खबर नथी. आनी आगळ ए इंद्र, वैश्रवण, बीजा विद्याधरो, राजाओ, देवताओ अने मनुष्यो, ए सर्व तणखला जेवा छे. ते तो रह्यो, पण आ एकलो कुंभकर्णज सर्व पृथ्वीने वश करवाने समर्थ छे, अने हुं पण आपणा सर्व वैरीओने मारवानी हिंमत धरावुं छुं. एवा महा शुरवीर तारा पुत्रो छतां तुं खेद शा सारु करे छे ? विभीषणना मुखथी एवां हिंमतनां वचनो सांभळीने कैकशी राणी मनमां जरा खुशी थइ. एटलामां होठ पीसी रावण कहेवा लाग्यो के, " हे जननी, तें जे तारा हृदयमां शल्य धारण कर्युं छे ते काढी नांख, अने वज्रना जेवी कठण था. हुं मारा एकज

हाथे करी इंद्रादिक शत्रुओने संहारवाने समर्थ छुं. परंतु क्रमे करी आवेली विद्यानी साधना कर्या पहेलां ते मारा शत्रुओ उपर चलाववाने हुं इच्छतो नथी. माटे मने आज्ञा आप के, हुं विद्या साधी तारा मनना मनोरथ पूर्ण करुं." पोताना पुत्रनां एवां शूरवीरपणानां वचनो सांभळीने तेना मातापिताना नेत्रोमां हर्षनां आंसु आव्यां अने तेना मस्तक उपर चुंबन करी विद्या साधन करवा जवानी आज्ञा आपी. रावण गदगदित कंठे पोताना भाइओ सहित त्यांथी निकळीने एक महाभयंकर वनमां गयो.

ज्यां मोटा वृक्षोनी नीचे केटलाएक मदोन्मत्त सिंह मोटा श्वासोश्वास सहित गर्जना करी रह्या छे, केटलाएक पोताना पुंछडावडे जमीनने झपाटा मारे छे, अने उलुक विगेरे पक्षीओ महा भयंकर किररर किररर शब्द बोले छे. एवा महा भयंकर वनमां रावण पोताना भाइओ सहित तपस्वीनी पेठे जटा वधारीने हाथमां जपमाला लेइने नाशाग्रे नजर राखीने, धोळां वस्त्र धारण करीने, दृढासन वाळीने दश कोटी हजार जपे करी सिद्ध थनारो षोडशाक्षरी जप करवा बेठो. त्रणे भाइओए सर्व कामने देवावाळी एवी अष्टाक्षरी विद्यानी साधना एक प्रहरमां करी.

एक समये जंबुद्वीपनो सुर नामे राजा, पोतानी स्त्रीओ सहित वनक्रीडा करवा निमित्ते ज्यां रावणादिक त्रणे भाईओ तप करता हता त्यां आव्यो, अने तेओने ध्यानमां बेठेला जोई तेमना तपमां विघ्न करवा सारु तेणे पोतानी स्त्रीओने तेमनी पासे मोकली. तपस्वीओनुं रुप जोइने वधी स्त्रीओ पोतानुं भान भूली तेमना उपर मोहित थइ कामे पिडाती तेओने निर्विकारी, निश्चल तथा मौनी जाणीने अति मधुरवाणीवडे विनववा लागी के, " भो भो जटाधरो, अमारी सामे तो जुओ, देवताओ पण जेनुं रुप जोइ पोतानुं मान मूके एवी अमे प्रत्यक्ष तमारा उपर प्रसन्न थइ छतां बीजी ते कइ मोटी सिद्धि छे? विद्यानी सिद्धि कर्याथी शुं वळवानुं छे? अमारी साथे स्वतंत्रपणे क्रीडा करवाथी सर्व विद्या, सर्व मंत्र, तथा सर्व सिद्धि मळ्याथी पण विशेष आनंद थशे."

एवी रीते ते स्त्रीओए तेओने मोहित करवा सारु घणा उपायो कर्या तोपण तेओ जरापण चलायमान थया नहीं. त्यार जंबुद्वीपनो अधिपति यक्ष तेमने कहेवा लाग्यो के, हे मूर्खो, आ ध्यानरुप महा कष्टे करी साध्य वस्तुने तमे शा सारु ध्यायी रह्या छो? आ क्रिया करवाने तमने कोई दुरात्मा धुतारोए फसाव्या छे. माटे आ ध्यानरुप दुराग्रह मूकीने तमे आंहीथी जाओ. तमने कांई इच्छा होय तो ते मारी पासे माग्याथी मळशे. इत्यादिक यक्षे पण घणा उपायो कर्या तथापि तेओ जरापण चलायमान थया नहीं, तेथी ते क्रोधे भराइ बोल्यो के, हुं प्रत्यक्ष देव तमारी सामे उभो छुं, छतां तेने मूकीने तमे कोनुं ध्यान धरो छो? हवे आ ढोंग मूकीने जे जोईए ते

मारी पासे मांगी ल्यो, नहींतो बळात्कारे हुं तमारुं ध्यान मुकावीश. आवो भय बताव्याथी पण ज्यारे तेओ न डग्या त्यारे ते मोटा भयंकर किलकिलाट शब्द करवा लाग्यो. मोटा मोटा पर्वतोनां शिखरो उपाडीने तेमना सामे फेंकवा लाग्यो. सिंह, रींछ, तथा वाघ विगेरे घातकी जनावरोनां स्वरूप धारण करीने बीवरावचा लाग्यो, परंतु ते चळ्या नहीं. पछी तेणे कैकशी, रत्नश्रवा तथा चंद्रनखानां मायावी रुप बनावी तेमने बांधी लावी तेओनी सामे नाख्यां. ते मायावी त्रणे जणां आंखोमां आंसु लावी रडतां रडतां कहेवा लाग्या के, "हे पुत्रो! पारधी जेम पशुने मारे छे तेम तमारी सामे आ निर्दय अमने बांधीने मारे छे, माटे हे रावण! तुं जलदी उठीने अमारुं रक्षण कर. शा सारु तुं अमारी संभाळ लेतो नथी? एटलो बधो तारो अहंकार क्यां गयो? हे कुंभकर्ण! तुं पण सांभळतो नथी के? अमारी आवी अवस्था करतां छतां तुं निश्चित थइ केम बेठो छो? वळी हे विभीषण! तुं तो कांइक दया कर. अमारा विपेनी तारी एटली बधी भक्ति क्यां गइ? पण ए तमारो वांक नथी. अमारां कर्मज फर्यां जणाय छे, नहींतो पुत्रो शत्रुने केम सहन करे?" इत्यादिक घणे प्रकारे विलाप कर्या तोपण तेओ ध्यान चुक्या नहीं. त्यारे यक्षे मायावी त्रणे जणानां मार्थां कापी नाख्यां. एवा दारुण कर्मथी पण ज्यारे तेओ चंचल न थया त्यारे तेणे कुंभकर्ण तथा विभीषणनां कृत्रिमरुप करीने रावणनी सामे तेमनां माथां कापी नांख्यां, तोपण रावण रंजमात्र समाधिथी खस्यो नहीं. पछी तेणे मायावी रावण करीने तेनुं मस्तक कुंभकर्ण तथा विभीषणनी सामे कापी नांख्युं, तेथी तेओ कांइक ध्यानथी खशी गया. जो के तेओ जरापण बीन्या नहीं तोपण केवळ भाइनी भक्तिना प्रेमथी यत्किंचित् चंचल थया. परंतु परमार्थ जाणनारावाळो रावण पर्वतनी पेठे अडग रह्यो. ते वखते आकाशमां "साधु साधु" एवी वाणी थइ. सर्व व्यंतर तथा किन्नर विगेरे देवताओ आकाशमांथी फुलोनो वरसाद वरसाववा लाग्या. ए प्रसंगे एक हजार विद्या सर्व एकठी मळीने रावणनी सामे आवीने उभी रही. तेमांनी केटलीक विद्यानां नाम नीचे प्रमाणे छेः—



रावणे साध्य करेली विद्यानां नामो.

प्रज्ञप्ति, रोहिणी, गौरी, गांधारी, नभःसंचारिणी, कामगामिनी, अणिमा. लघिमा, अक्षोभ्या, मनस्तंभनकारिणी; सुविधाना, तपोरुपा, दहनी, विपुलोदरी, शुभप्रदा, रजोरुपा, दिनरात्रिविधायिनी, वज्रोदरी, समाकृष्टी, अदर्शनी, अमरा, अनलस्तंभिनी, तोयस्तंभिनी, गिरिदारुणी, अवलोकिनी, वन्हि, धारा, धीरा, भुजंगिनी, वारिणी, भुवना, अवध्या, दारुणी, मदनाशिनी, भास्करी, रुपसंपत्ति,

रोशानी, विजया, जया, वर्द्धनी, मोचनी, वराही, कुटिलाकृती, चित्तोद्भवकरी, शांतिकौबेरी, वश्यकारिणी, योगेश्वरी, बलोत्साहा, चंडा, अभिती, मधर्षिणी, दुर्निवारा, जगत्कंपकारिणी तथा भानुमालिनी विगेरे एक हजार विद्याओ रावणने पूर्व जन्मना कर्मे करी थोडाज दिवसमां साध्य थइ.

संवृध्दि, जृंभिणी, सर्वापहारिणी, व्योमगामिनी तथा इंद्राणी ए पांच विद्याओ कुभकर्णने प्राप्त थइ.

सिद्धार्था, शत्रुदमनी, निव्याघाता तथा खगामिनी ए चार विद्याओ बिभीषणने मळी.

रावणनी प्रथम स्वयंप्रभ नगरपर राज्यस्थापना.

एवी रीते ते त्रणे भाइओने विद्याओ मळी ते जोइने जंबुद्वीपना अधिपति यक्षे भय पामी रावण पासे पोते करेला अपराधनी क्षमा मांगी. कह्युं छे के, " मोटा पुरुषनो अपराध कर्यो छतां तेनी आगळ नम्रता करवी एज तेनो प्रतिकार छे." पछी तेणे ते वनमां स्वयंप्रभ नामनुं नगर वसाव्युं अने तेमां रावणनुं राज्य स्थापीने ते पोताने स्थानके गयो.

रावण अने मंदोदरी विगेरेनुं पाणीग्रहण
तथा
इंद्रजीत अने मेघवाननो जन्म.

रावणने विद्या मळ्यानुं सांभळीने रत्नश्रवा तथा कैकशी पोताना परिवार सहित त्यां आवी अति आनंदवडे रहेवा लाग्या. पछी रावणे सोळ उपवास करी चंद्रहास नामनुं खड्ग धारण कर्युं. ते समये वैताढ्य पर्वत उपर सुरसंगीत नगरमां विद्याधरोना राजा मयनी स्त्री हेमवतीना उदरथी जन्मेली मंदोदरी नामनी कन्या उपवर थइ हती. मय राजाए ते कन्याने माटे योग्य वरनी घणी तपास करी केटलाएक विद्याधरोना कुंवरोना गुणो जोया, परंतु ते कन्याने योग्य कोइपण न जणायाथी तेणे महा चिंतातुर थइ पोताना प्रधानने पूछ्युं, त्यारे ते कहेवा लाग्यो के, चिंता करवानुं कांइ कारण नथी. सहस्र विद्यासंपन्न तथा देवताओने पण भय पमाडनार, एवो दशानन नामे रत्नश्रवानो पुत्र छे, तेनी बरोबरी करनार कोइपण विद्याधर मळनार नथी. तेज तमारी पुत्रीने योग्य वर छे. माटे तेनी साथे मंदोदरीने परणावो. प्रधाननुं एवुं बोलवुं सांभळीने प्रथम मय राजाए स्वयंप्रभ नगरमां जासुद मोकल्यो

अने पाछळथी पोते पण पोताना परिवार तथा सैन्य सहित रावणने पोतानी पुत्री परणावा सारु त्यां आव्यो. तेनुं कहेण कबुल करीने मंदोदरीने पोताने घेर लाववा सारु सुमाली प्रमुख रावणना वडिलोए सामैयुं कर्युं. पछी लग्ननो शुभ दिवस जोइने ते बंनेने परणाव्यां. विवाहनुं सर्व कार्य थइ रह्या पछी मय राजा परिवार सहित पोताना नगरमां आव्यो अने रावण पोताना नगरमां मंदोदरी सहित घणा दहाडा अति आनंदवडे सुखभोग भोगववा लाग्यो.

एकदा क्रीडा करवा सारु मेघरथ नामना पर्वत उपर रावण गयो. त्यां तेणे सरोवरमां स्नान करती विद्याधरोनी एक हजार कन्याओ दीठी. ते कन्याओए पण रावणने जोयो. अन्योअन्य दृष्टी मेलाप थतां ते हजारो कन्याओ कामे पीडाती थकी रावणने कहेवा लागी के, हे स्वामिन्! तुं अमारो पति था. रावणे ते मान्य करी तेओनी साथे गांधर्व लग्न कर्यां अने ते सर्वेने पोताना विमानमां बेसाडी त्यांथी चाली निकळ्यो. आ सर्व हकीकत ते कन्याओनी दासीओए तेमना पिताने कही. तेथी तेओ घणा क्रोधायमान थइ रावणने मारवा सारु दोड्या. तेमने आवता जोइ ते हजारो स्त्रीओ रावणने कहेवा लागी के, हे स्वामिन्! आ विमान तमे जल्दीथी हांकी जाओ, केमके घणा विद्याधरो छे तेमांनो एकज अमरसुंदर जो आवी पहोंचशे तो तेने जीतवो कठण छे, तो पछी कनकबुद्धादिक सर्व पोताना परिवार सहित आवशे तो तेमने केम जीती शकाशे? स्त्रीओनां आवां वचन सांभळी रावण उपहास्य युक्त कहेवा लाग्यो के, हे स्त्रीओ! तमे हजी मारुं बाहुबळ जोयुं नथी, ते तमने हुं आज बतावीश. एटलामां सर्व विद्याधरोए आवीने मेघ जेम वरसाद करे तेम शस्त्र तथा अस्त्रवडे रावणने ढांकी दीधो. रावणे पोताना पराक्रमे करी तेमना सर्व शस्त्र तथा अस्त्र हथीयारो वडे तोडी नांखी प्रस्वापन नामना अस्त्रथी तेओने मोह पमाडीने पशुनी पेठे नागपासथी बांधी लीधा. ते जोईने आश्चर्य पामी ते सर्व स्त्रीओए रावण पासे पितृ भिक्षा मांगी. ते मान्य करीने रावणे तेओने छोड्या. पछी तेओ रावणनो उपकार मानी पोताना नगरमां गया. रावण ते हजारो स्त्रीओने साथे लेई पोताना स्वयंप्रभ नगरमां आव्यो. ते वखते घणा हर्षथी लोकोए तेने करभार आप्यो. त्यां सुखरुप रहेतां केटलाएक काळ पछी तेनी मंदोदरी राणीना पेटे अनुक्रमे इंद्र जेवा पराक्रमवाळा इंद्रजीत तथा मेघवान नामना बे पुत्रो जन्म्या.

——०००००——

कुंभकर्ण तथा बिभीषणनां पाणीग्रहण.

कुंभकर्णनुं लग्न कुंभपुरना राजा महोदरनी स्त्री रूपनयनाने पेटे जन्मेली विद्युल्लता जेवी कांतिवाळी तथा कुंभना जेवा बे स्तने करी शोभित, तडिन्माला नामनी कन्या साथे थयुं.

बिभीषण वैताढ्य पर्वतनी दक्षिण खुणमां आवेला ज्योतिपपुर नामना नगरना राजा वीरनी स्त्री नंदवटीने पेटे जन्मेली पंकजश्री नामनी कन्याने परण्यो.

—o:o:o—

रावण तथा वैश्रवण वच्चे थएलुं युद्ध.

त्यार पछी कोई एक समये पोताना वडाओनुं वैर संभारीने कुंभकर्ण तथा विभीषण लंकामां जई वैश्रवण राजाने उपद्रव करवा लाग्या. तेथी अकळाईने वैश्रवणे दुतद्वारा सुमाली राजाने कहेवराव्युं के, पोतानी शक्ति न जाणतां रावणना नाना भाईओ मनमां शुरवीरपणानो अभिमान आणी कुवाना देडकानी पेठे मारी लंका नगरीमां तोफान करे छे. तेनी आजपर्यंत में क्षमा करी, परंतु हवे हुं ते खमी शकतो नथी; माटे तेओने समजावीने तमे बोलावी ल्यो. नहीं तो अगाउ जेवा मालीना हाल थया हता तेवाज हाल तेमना थशे. मारा बळथी शुं तमे अजाण्या छो? दूतनुं आवुं बोलवुं सांभळीने त्यां बेठेलो रावण क्रोधायमान थई कहेवा लाग्यो के, ए वैश्रवण कोण छे? ए कोनो सेवक छे? बीजाने खंडणी आपे छ छतां ते आटलो बधो गर्व शा उपर राखे छे? बीजाए आपेलुं राज्य करतो छतां तेने आटली बधी मगरुरी करतां लाज नथी आवती! तूं दूत होवाने लीधे हुं तने मारतो नथी. माटे जो तने तारो जीव वहालो होय तो तुं अहींथी सत्वर नाशी जा. दुते लंकामां जइ ए सर्व वृत्तांत वैश्रवणने निवेदन कर्युं. पाछळथी रावण पोताना सैन्य सहित लंका समीप आव्यो. ते खबर सांभळीने तेनी साथे लडवा सारु वैश्रवण परिवार सहित नगरथी बहार निकळ्यो. बंनेनी वच्चे परस्पर युध्द थतां रावणे वैश्रवणने जीती लीधो.

—:o:—

वैश्रवणनुं दिक्षा लेवुं तथा मोक्षे जवुं.

युद्धमां हार थवाथी वैश्रवण विचार करवा लाग्यो के, इंद्रराजाने हुं शुं मों बतावुं? कह्युं छे के, जे पुरुष वैरीने हाथे जीतायो तेणे पृथ्वी उपर जीवतो रहेवुं ए धिक्कार भरेलुं छे. वळी अनेक अनर्थोने आपनारुं आ राज्य करवामां शो फायदो छे? तेथी बेहत्तर छे के, मोक्षनुं द्वार जे दीक्षा, ते ग्रहण करीने सदा सुखी थवुं. जो के आ कुंभकर्ण तथा विभीषण मने अपकार करनारा होवा छतां आ वख-

ते तेओ मारा परम उपगारी थया. ते विना मने आवी बुद्धि क्यांथी सुजत. रावणने पण परममित्र जाणवो जोईए, के जेथी आ वैराग्य उपज्यो. एम विचार करी वैश्रवणे पोताना शस्त्र अस्त्रादिक जमीन उपर फेंकी देई तत्वनिष्ठ थइ पोतेज पोताना मने करी साधु दीक्षा लीधी. ते सर्व जाणीने, रावण हाथ जोडी नमस्कार करी तेने कहेवा लाग्यो के, हे वैश्रवण, तूं मारो मोटो भाइ छे, माटे माराथी तारो जे कांई अपराध थयो होय ते माफ करी निर्भयपणे आ लंकानुं राज्य तुं कर. बीजी घणी पृथ्वी पडी छे, त्यां हुं जईने राज्य करीश." रावणनां एवां वचनो सांभळीने वैश्रवण कांई पण न बोलतां मौन धारण करी तप करवा बेठो अने पछी तेज भवमां मोक्षे गयो.

लंका राज्यगादीए रावणनुं बेसवुं.

वैश्रवणनी एवी अवस्था जोइने रावणे विचार्युं के, ते हवे आ संसारने अंगीकार करनार नथी, तेथी तेणे तेनी आगळ हाथ जोडी नमस्कार करी पोताना अपराधनी क्षमा करावी. पछी तेनुं पुष्पक विमान लेइ लंका नगरीनुं राज्य करवा लाग्यो. एक समये ते विमानमां बेशी संमत पर्वत उपर अर्हत् प्रतिमानां दर्शन करवा रावण गयो हतो, त्यांथी वंदनादिक करी पाछा फरतां सैन्यना कलकलाट शब्दनी पेठे एक वनना हाथीनो शब्द तेणे सांभळ्यो. तेने जोइने घणो खुशी थतो एक दूत रावणने कहेवा लाग्यो के, ए हस्तिरत्न आपणी संपत्ति योग्य छे. ते हाथी केवो छे ? जेना मोटा दंतूशळो छे, जेना पीळां नेत्रो छे, गंडस्थळ ऊंचुं छतां जेमांथी मदनो झरणो वही रह्यो छे, ए सात हाथ ऊंचो तथा नव हाथ लांबो छे. एवा मदोन्मत्त हस्तिने वश करीने रावण तेना उपर बेठो. तेनुं नाम भुवनालंकार राख्युं. पछी तेने बंधन स्तंभे बांधीने रावण त्यांज रात रह्यो. बीजे दिवसे सवारना उठीने त्यांज तेणे राजसभा करी, ते वखते एक चोपदारनी साथे मारे करी जरजर थएलो पवनवेग नामनो विद्याधर आवी रावणने नमस्कार करी कहेवा लाग्यो.

रावण तथा यमराजा वच्चे थयेलुं युद्ध—यमराजनुं हारी जवुं.

हे दशकंठ, किस्किंधी राजाना आदित्यरज तथा ऋक्षराज नामना बे पुत्रोने यमराजाए तेनी साथे युद्धमां हार्याथी बांधीने पोताना बंधीखानामां नाख्या छे. तेओ परंपराना तारा सेवक छे, तेथी तेमने नर्करुप बंधीखानेथी छोडाव. सेवकना शल्य माटे स्वामीए शोच करवो योग्य छे. ए हकीकत सांभळी कोपायमान थइ रावण बोल्यो के, हे पवनवेग, मारा सेवकोने दुःख देवानुं फळ ते यम हमणांज

पामशे. एम करी पुष्पक विमानमां बेसी पोताना सैन्य सहित रावण किष्किंधा नगरीमां आव्यो. त्यां महा भयंकर जीवने पीडा देनार सात नरको जोइने परम धार्मीक रावणने घणो क्रोध चढ्यो तेथी तेना केटलाएक रक्षकोने मारीने पोताना सेवको तथा बीजा सर्वने छोडी मुक्या. आ वातनी खबर पडतांज रावणनी साथे युद्ध करवा माटे यम पोताना सैन्य सहित महा कोपायमान थइ नगरथी बहार निकल्यो. बंनेनी परस्पर लडाइ थइ तेमां हाथीनी साथे हाथी, घोडानी साथे घोडा, रथनी साथे रथ, पाळानी साथे पाळा, एम एक बीजानी योग्यता मुजब लडवा लाग्या. यमराजाए मुद्गरदंड जेवो मोटो दंड रावण उपर नांख्यो, तेना रावणे पोताना बाणवडे कटके कटका करी नाख्या. पछी बाणोनो वरसाद करी रावणने ढांकी दीधो त्यारे रावणे पण तेमज कर्युं. यमे घणा उपायो योज्या पण ते फाव्यो नहीं, अने रावणना बाणथी पीडा पामतो त्यांथी नाशीने रथनुपुर नगरमां इंद्रराजानी पासे आव्यो. इंद्रने यथायोग्य नमस्कार करीने ते बोल्यो के, हे स्वामिन्! तमारो आपेलो यमपणानो अधिकार मारे जोइतो नथी. हालमां एक रावण नामनो राजा यमनो पण यम पेदा थयो छे. तेनी साथे कोइनुं पण चाल्तुं नथी. तेणे मारा नगरमां आवी नरकना रक्षकोने मारी त्यांना सर्व प्राणी मात्रने छोडी मुक्या. तेनी साथे युद्ध करतां जेम तेम जीव लइने हुं अहीं नाशी आव्यो छुं. तेणे वैश्रवणने जीतीने लंका नगरी तथा पुष्पक विमान लेइ त्यांनुं राज्य पोताना स्वाधीन कर्युं छे. आ बधुं सांभळीने महा कोपायमान थइ, इंद्रराजा पोतानुं लश्कर लेइ रावणनी साथे युद्ध करवा जवाने नगरथी बहार निकल्यो. त्यारे तेना शाणा प्रधानोए तेने कीधुं के, रावण महा बळवान छे, तेनी साथे युद्ध करवाथी आपणे बीलकुल फावी शकवाना नथी. प्रधानोनुं आवुं बोल्युं सांभळीने इंद्रराजा युद्ध करवा जवानुं मांडी वाळी, यमराजाने सुरसंगीतक नामनुं नगर आपी पोताना नगरमां पाछो आव्यो. रावण आदित्यरजने किष्किंधानुं तथा ऋक्षरजने ऋक्षपुरनुं राज्य आपी पोताना भाइओ समेत लंकामां आवी पोताना वडीलोनुं संपादन करेलुं राज्य करवा लाग्यो.

वालीराजानुं राज्यगादीए बेसवुं विगेरे.

आदित्यरजनी स्त्री इंदुमालिनीना उदरथी एक वाली नामनो महा बळवान पुत्र पेदा थयो. ते दररोज चारे समुद्रनी प्रदक्षिणा चैत्योनी वंदना करवा लाग्यो. तथा बीजो सुग्रीव नामनो पुत्र तथा श्रीप्रभा नामनी एक कन्या तेने थइ. केटलाक काळ पछी आदित्यरज राजाए पोताना वाली नामना पुत्रने महा पराक्रमी बळवान जाणीने पोतानुं राज्य आप्युं अने पोते दीक्षा लइ तप करी मो

वालीए पोताना नाना भाइ सुग्रीवने न्यायवंत तथा पराक्रमी जाणी युवराज ठराव्यो पोते राज्य करवा लाग्यो.

ऋक्षरज राजानी स्त्री हारिकांताना उदरथी नल तथा नील नामना बे पुत्र पेदा थया.

—— :o: ——

खर विद्याधर तथा चंद्रनखानुं लग्न.

एक वखत चैत्यवंदना करवा सारु मंदोदरीने साथे लेइ हाथी उपर बेसीने रावण मेरु पर्वत उपर गयो हतो. ते तकनो लाभ लेइ दुषण नामना विद्याधरनी स्त्री मेघप्रभाना पेटे पेदा थयेलो खर नामे विद्याधर रावणनी बेन चंद्रनखा (सुर्पनखा) नुं हरण करीने पाताललंकामां गयो. त्यां चंद्रोदर नामे आदित्यरजनो पुत्र राज्य करतो हतो तेने उठाडी मुकी पोते राज्य करवा लाग्यो. आ वृत्तांत सांभळीने रावण महा कोपायमान थइ खर विद्याधरने मारवा माटे जवानी तैयारी करवा लाग्यो. ते वखते मंदोदरी तेने कहेवा लागी के, हे पति! आ अनुकुळ वखते क्रोध केवो ? ए कन्या कोइने पण आपवानी तो हतीज. त्यारे ते पोतानी राजी खुशीथी परणी तेमां शुं अयोग्य छे ? दुषणनो पुत्र खर विद्याधर महा पराक्रमी, चंद्रनखाने योग्य वर छे. तेथी मधानो विगेरेने मोकली सलाह संपथी तेना लग्न करी देवाथी कीर्त्ति थशे, अने पाताललंकानुं राज्य पण तेनेज करवा द्यो. एवां मंदोदरीनां नीतिनां वचनो सांभळीने रावण विचार करे छे, एटलामां कुंभकर्ण तथा विभीषणे पण कह्युं के, ए कामने माटे द्वेष न करवो एज सारुं छे. पछी रावणे मय तथा मारीच नामे बे विद्याधरोने खर विद्याधरनी पासे मोकली चंद्रनखाने परणावीने पहेरामणीमां पाताललंकानुं राज्य आप्युं. ते सर्व मान्य करीने खर विद्याधर स्त्री सहित त्यां सुखभोग भोगववा लाग्यो.

खर विद्याधरे पाताललंकामांथी चंद्रोदरने कहाडी मुक्या पछी ते वनमां जइ तप करी मरण पाम्यो. तेनी स्त्री अनुराधा तेनी साथे वनमां गइ हती, ते गर्भवती होवाथी तेणीने पूरे मासे सिंह समान नयादि गुणवाळो विराध नामे पुत्र जन्म्यो. ते युवावस्थामां आवतां सर्व कळा शिखी निर्भयपणे पृथ्वीपर विचरवा लाग्यो.

रावणराजाए वालीराजा पर मोकलेलो दूत-तेनुं कहेण तथा वालीराजाए वाळेलो जवाब.

एक वखत लंकामां रावणनी समक्ष कोइ कथाना प्रसंगे वालीराजाना पराक्रमनी वात थइ. ते तेनाथी सहन न थवाथी तेणे वालीराजा पासे दूत मोकल्यो. तेणे जइ वालीराजाने नमस्कार करी कह्युं के, हुं रावणनो दूत छुं, तेणे मने तमोने

जे कांइ कहेवाने मोकल्यो छे ते हुं कहुं छुं, ते सांभळोः—" अमारा पूर्वज कीर्त्तिधवलराजाए शत्रुना भयथी रक्षण करीने तमारा पूर्वज श्रीकंठने अति स्नेह साथे वानर द्वीपनुं राज्य सोंप्युं, त्यारथी अमारा तमारा बंने पक्षो विषे परम स्नेह थयेलो छे अने तेज दिवसथी तमारो तथा अमारो सेव्य सेवक भाव छे, माटे तुं अमारी जेम वने तेम सेवा कर. एम करवुं ए आपण बंनेने योग्य छे." दुतनां आवां वचनो सांभळीने वालीराजा घणो क्रोधायमान थयो. परंतु ते मनमांज राखीने तेने कहेवा लाग्यो के, "राक्षस कुळ तथा वानर कुळनो परंपरानो संबंध छे, ए वात खरी छे अने ते हजी सुधी पण चाल्यो आवे छे. संपत्ति तथा विपत्तिना वखते परस्पर एक बीजाने साहाय्य करवी ते स्नेहनुंज कारण छे, पण सेव्य सेवक भाव नथी. सेव्य सेवक भावरुप संबंध तो देव, गुरु तथा साधु विगेरेमांज होय छे, बीजे ठेकाणे एवुं कहेवुं ते व्यर्थ छे कोण जाणे के केवा भ्रमथी तारो स्वामी एवो बकवाद करे छे? माटे हे दुत, तुं जइने तेने कहेजे के, वानर कुळ सेवक, अने राक्षस कुळ सेव्य छे, एवुं स्वप्नमां पण न जाणवुं. एवा खोटा तर्कथी आपणो परंपरानो स्नेह तोडवाने तुं तत्पर न था. तेम छतां जो नहीं माने तो तेनुं कर्युं ते भोगवशे. पण हरेक कार्य करतां पहेलां पोतानी शक्तिनो विचार करवो एज उचित छे. वळी हे दुत! मारा उपर अपवाद आवे तेथी हुं तेना सामे थवानो नथी, पण जो ते मारुं कांई नरसुं करशे तो फक्त हुं तेनो प्रतिकार करीश. स्नेह तोडवानी पहेल हुं कदी पण करनार नथी. तारो स्वामी पोतानी शक्ति विचारीने तेने बेशक जे कांई करवुं होय ते करे. हवे तुं पाछो जा."

रावण तथा वालीराजा वच्चे थयेलुं द्वंद्व युद्ध—रावणनुं हारी जवुं—वालीराजाए चारित्र लेवुं—सुग्रीवनुं गादीए बेसवुं.

एवां वाली राजाना वचनो सांभळीने दुते लंकामां जइ रावणने सर्व वृत्तांत विदित कर्युं, ते सांभळीने कोपायमान थइ, सर्व सैन्य लेई, पुष्पक विमानमां बेशी, युद्ध करवा माटे रावण किस्किधा नगरी समीप आव्यो. वाली राजाए ते वात जाणी तेथी ते पण सैन्य सजी नगर बहार निकळ्यो. परस्पर युद्ध थतां बंने लश्करो एक बीजाना अंग उपर मोटा झाडो उपाडीने फेंकवा लाग्या. जेमां घणा प्राणीओनो ाण वळी गयो. ते जोई वालीराजा रावणने कहेवा लाग्यो के, हे दशकंठ, तुं मोटो ाहु पराक्रमी छे ते हुं जाणुं छुं, पण श्रावक छतां निर्दय थवुं योग्य नथी. युद्धमां ाणा जीवो मरे छे तेथी नर्कनी प्राप्ती थशे. माटे सैन्यनी लडाई बंध करीने आपण ाने परस्पर लडीए ए योग्य छे. एवुं सांभळीने सर्व धर्मने समजवावाळो तथा सर्व ुध्धमां निपुण एवो रावण वालीनी साथे द्वंद्व युद्ध करवा लाग्यो. परस्पर एक बीजा-

मां शस्त्र तथा अस्त्र लीलामात्रमां तोडी नांखवा लाग्या. ए प्रमाणे दारुण युध्ध चालतां रावणना सर्व हथीयारो निष्फळ गयां त्यारे ते महा क्रोधमां आवी चंद्रहास खड्ग लेई वालीने मारवा दोड्यो. ते वखते तेने वालीए मूळ सहित झाड उखेडे तेम उपाडी काखमां घाली क्षणवारमां चार समुद्र फेरवी लावी जमीन उपर फेंकी दीधो. तेथी रावण शरमींदो पडी गयो. ते जोई वाली तेने कहेवा लाग्यो के, हे दशकंठ, सर्व भावना जाण त्रैलोक्यपूज्य श्री वितराग देव शिवाय जगतमां मारे कोई नमस्कार करवा योग्य नथी. तें गर्व कर्यो तेथी तारी आवी अवस्था थइ. में तारा पूर्वना उपकारो याद करी तने मुकी दीधो हतो. सर्व पृथ्वीना राजाओने हुं जीतनारो छतां एक कोरे बेशी रहीने तने सर्व सोंपी दीधुं हतुं, नहींतो आटली बधी हकुमत तने क्यांथी मळत? जे वनमां सिंह निवास करे छे ते वनमां हाथी शुं रही शकशे के? तेम तुं पण आंही रही शकत नहीं. परंतु मने वगा राज्यनी इच्छा नथी. तेथी तुं निःशंकपणे राज्य कर. हुं हवे दीक्षा ग्रहण करीश, अने मारो लघु बांधव सुग्रीव किस्किधानुं राज्य करशे. ते तारी आज्ञा मानशे, तेनी तुं खबर लेतो रहेजे.

वाली राजाए उपर प्रमाणे कही सुग्रिवने राज्य सोंपी गगनचंद्र नामना मुनि पासे दीक्षा लीधी. केटलोक काळ तप करी विचरतां वाली मुनिने अणिमा नामनी लब्धि (सिध्धि) मळी. त्यार पछी ते अष्टापद पर्वत उपर जईने देहोत्सर्ग काउसग्ग ध्यान करवा लाग्या. एकेक मासना उपवासे पारणुं करवुं, एवुं ते पोताना शरीरने कष्ट देवा लाग्या.



वाली मुनिनुं महात्म्य--दशमुखनुं रावण नाम पडवुं.

किस्किधा नगरीमां सुग्रीव राजाए पोतानी श्रीप्रभा नामनी बेनने रावण साथे परणावी, अने चंद्रहास नामना वालीराजाना महा पराक्रमी पुत्रने युवराज पदवी आपी. श्रीप्रभाने लेईने रावण लंकामां गयो. त्यारपछी तेणे केटलाएक विद्याधरोनी कन्याओ साथे लग्न कर्यां. एक वखत नित्यालोक नगरना राजा नित्यालोकनी कन्या रत्नावळीने परणवा सारु रावणने जतां रस्तामां अष्टापद पर्वत उपर तेनुं विमान अडक्युं. तेथी ते क्रोधमां आवी नीचे उतर्यो. तो त्यां वाली मुनिने काउसग्ग ध्यानमां उभा रहेला दीठा. तेथी ते कहेवा लाग्यो के, हे मुनि, हजी सुधी पण तें कपट मुक्युं नथी के? आ तप करतां कपट केवुं? पण कांई चिंता नहीं, हवे तुं मारी भुजानुं बळ जोजे. तें जे आ कार्य कर्युं तेनो बदलो तने आज मळशे. अगाउ तें मने मारा खड्ग सहित काखमां घाली समुद्रो फेरवी आवी फेंकी दीधो हतो, तेवीज रीते तने आ पर्वत सहित उपाडीने क्षार समुद्रमां नांखी देउं तोज हुं रावण खरो?

एम कहीने ते पर्वतना तळे जमीन खोदीने तेमां पेसी हजार विद्यानुं स्मरण करीने हाथे वती ते पर्वतने उपाडवा लाग्यो. ते वखते मोटा दारुण शब्दो थवा लाग्या ते सांभळीने तथा रावण आ पर्वत उपाडे छे एम जाणीने वाली मुनि तेने कहेवा लाग्या. हे दुर्मति रावण! "हजी सुधी तने अक्कल नथी आवी के? आ दुष्ट कर्म करीने तने शो फायदो थवानो हतो? नाहक अनेक प्राणीओनो नाश शा सारु करवो जोईए?"

वाली मुनी उपर प्रमाणे रावणने कही विचार करे छे के, आ पर्वत उपाडवाथी भरतेश्वरे करावेलां अति उत्कृष्ट तीर्थना चैत्यनो नाश थवा विपेनो पण ए कांईज विचार करतो नथी. मेंतो सर्वसंग मूकी देई राग द्वेषनो त्याग करेलो छे. आ शरीर विषे मारी निस्पृहता छे, तोपण चैत्यनी तथा बीजा प्राणीओनी रक्षा करवा सारु, राग द्वेष धारण कर्या विना एने थोडी पण शिक्षा करवी जोईए. एम धारी वाली मुनिए पोताना पगना अंगुठावडे ते पर्वतने किंचित दाब्यो. तेथी काचवो जेम पोतानुं अंग संकोचे तेम रावण वचवा माटे पोतानुं अंग संकोचवा लाग्यो. भारना योगे तेना मुखमांथी लोही निकळवा मांडयुं, तेथी ते मोटेथी बुम (रव) मारवा लाग्यो. ते दिवसथी ते रावण कहेवायो. पछी तेना दीन वचनो सांभळीने वाली मुनिए थोडीक शिक्षा करी तेने छुटो कर्यो. रावण निस्तेज थइ त्यांथी निकळी पश्चात्ताप करतो वाली मुनि पासे आवी हाथ जोडी नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, "हे महा मुनि, में वारंवार आपना अपराध कर्या तेनी आपे मने क्षमा करी, तेथी हुं आपनो मोटो आभारी थयो छुं. हवे कदी पण हुं आपनो अपराध करनार नथी. वळी आज मारो प्राण बचाव्यो तेथी तमे मारा पितारुप छो. हवे कोईपण वखत हुं आवुं निष्ठुर कर्म करीश नहीं." एम कही त्रण प्रदक्षिणा करीने रावणे वाली मुनिने नमस्कार कर्यो. वाली मुनिनुं महात्म्य जोइने आकाशमां देवताओए "साधु, साधु" शब्दो उचारी तेमना उपर फुलोनी वृष्टि करी.



रावणे अष्टापदपर करेलुं नाटक—तेने धरणेंद्रे अमोघविजया विद्याशक्तिनुं आपवुं—वाली मुनिनुं मोक्षे जवुं.

पछी रावण वाली मुनिने वंदना नमस्कार करीने अष्टापद उपर भरतराजाए बंधावेलां चैत्य जुहारवा गयो. त्यां पोताना खड्गादिक सर्व हथीयारो मुकीने, देव जुहारी, पोतानी स्त्रीओ सहित ऋषभादिक जिनेश्वरनी अष्ट प्रकारे पूजा करी वीणा वगाडवा लाग्यो. खरेखरो रंग जामतां वीणानो तार तुट्यो, ते वखते रावणे पोताना

हाथमांथी एक नाडी कहाडी तेमां जोडी देइ प्रथमनी पेठेज वगाडवा मांडी. मूर्छना सहित, शुद्ध ग्राममां आणीने आलाप सलाप साथे ते एवी मधुरताथी गावा लाग्यो के, त्यांना सर्व लोक छक थइ गया. तेमज तेनी स्त्रीओ पण नृत्य करती कोकील कंठे गायन करती हती तेथी सर्वजन आनंदित थया.

ते वखते नागराज धरणेंद्र देव जुहारवा त्यां आव्यो हतो. ते रावणनी भक्ति जोइने खुशी थइ तेने कहेवा लाग्यो के, हे दशकंधर, तें एवुं मधुर गायन कर्युं के जेने बीजी कांइपण उपमा आपी शकाय तेम नथी. वळी तेमां श्री अर्हत् परमात्माना गुणोनुं वर्णन छे, तेथी ते विशेष स्तुतिपात्र छे, तारी श्री अर्हत् विषे घणी भक्ति जोइने हुं तारा प्रत्ये प्रसन्न थयो छुं. जो के तें श्री वितराग देवना गुणोनुं स्तवन कर्युं, तेनुं फळ तो मोक्षज छे, तोपण हजी तारी वासना गइ नथी तेथी तुं मारी पासे कांइक मांग. ते सांभळी रावण बोल्यो के, हे नागेंद्र ! आ देवाधिदेवना गुणोनुं स्तवन कर्याथी तुं खुशी थयो माटे तने धन्य छे. श्री अर्हत् परमात्मा विषे एवो भाव राखवो ते योग्यज छे. वळी हे नागराज, मने आपनारो जे तुं, तेनी भगवंतने विशे पूर्ण भक्ति छे तेमज लेनारनी पण तेवीज भक्ति होवाथी विशेष आनंद थयो छे, तेज बस छे. रावणनां एवां युक्तिनां वचनो सांभळीने नागेंद्रे कीधुं के, हे रावण ! तें घणुं सारुं कह्युं. तुं इच्छा रहित होवाथी हुं राजी थयो छुं, तोपण मारुं वचन व्यर्थ न थाय, एम जणावीने अमोघविजया नामनी विद्याशक्ति रावणने आपी ते पोताने स्थानके गयो. रावण पण चैत्यवंदन करीने त्यांथी निकळी, नित्यालोक नगरमां जइ रत्नावळी साथे लग्न करी लंकामां गयो. वाली मुनि पण काळेकरी सुरासुरने अप्राप्य एवुं केवळज्ञान पामी, जन्म मरण देनारा कर्मोनो नाश करीने सिद्धानंत चतुष्पद रुप मोक्षे गया.



सुग्रीव तथा तारानुं लग्न.

वैताढ्य पर्वत उपर ज्योतिपपुर नामना नगरमां ज्वलनसिंह नामे विद्याधर राजाने श्रीमती स्त्रीने पेटे पेदा थएली एक तारा नामनी कन्या हती. तेने जोइने मोहित थइ चक्रांक विद्याधरना पुत्र साहसगतिए तेना पिता पासे दुत मोकली तेनी मांगणी करी तथा वालीना भाइ सुग्रीव राजाए पण ते कन्यानुं मांगु कर्युं. तेथी ज्वलनसिंहे ज्योतिषीने पूछ्युं के, साहसगति तथा सुग्रीव ए बंने जणा पराक्रमी तथा रुपवान छे माटे तेमांथी मारी कन्या कोने आपुं ? ज्योतिषीए कह्युं के, साहसगतिनुं आयुष्य थोडुं छे अने सुग्रीवनुं घणुं छे. हवे तमारी मरजीमां आवे तेने कन्याद्यो. ते सांभळी ज्वलनसिंहे पोतानी कन्या सुग्रीवने परणावी. साहसगति ए वात जांणीने

दिवसे दिवसे सुकावा लाग्यो, अने भूतना आवेशे करी जेम कोइ पुरुष बके तेम ते बकवा लाग्यो के, हे तारा ! हुं तारा मुखनुं क्यारे चुंबन करीश ? तारा कुंभ जेवा स्तनोंने हुं मारा आ हाथवडे क्यारे ग्रहण करीश ? आ मारी भुजाओवडे हुं तने क्यारे आलिंगन दइश ? अने तारा अरुण वर्णना होठनी साथे मारा होट हुं क्यारे मेळवीश ? अरे ! ए तरुणी नवयौवन स्त्रीनुं हरेक प्रकारना छळे करीने पण हुं हरण करीश. एवा बकवा करतो साहसगति रुप फेरवनारी विद्या मेळववानुं चिंतवन करीने हिमवान पर्वत उपर जइ सेमुखी नामनी विद्या साधवाने एक गुफामां बेठो.

रावणनुं दिग्विजय करवा निकळवुं—सहस्रांशु साथे थयेलुं युद्ध.

आंही लंकामांथी पृथ्वी दिग्विजय करवा सारु रावण निकळ्यो, ते जेम पूर्व दीशाथी निकळतो सूर्य शोभे छे तेम शोभवा लाग्यो. ते फरतां फरतां द्वीपांतरोमां रहेनारा सर्व विद्याधर राजाओ, तेओना देशो तथा केटलीएक जमीन पोताना स्वाधीन करीने पाताललंकामां आव्यो. त्यांथी ते इंद्रराजाने जीतवा सारु खरदुषण तथा सुग्रीवादिक सैन्य साथे लेइने चाल्यो. रस्तामां जतां रेवा नदी आवी, तेना कीनारा उपर पडाव राखी, रेवामां स्नान करी पुष्पादिके जिनेश्वर भगवाननी पूजा करवा मांडी. ते वखते रेवा नदीमां पूर आववाथी पूजानी सर्व सामग्री तणाइ गइ, तेथी जाणे कोइए पोतानुं माथुं कापी लीधुं होयनी ! एवुं रावणने लाग्युं. पछी ते घणो क्रोधायमान थइ द्वेष सहित बोलवा लाग्यो के, अरे ! आ नदीना पाणी, आजे आवा समये आटलुं वधुं तने कोणे वधार्युं छे? मारी जिनेश्वर भगवाननी पूजा करवानी सामग्रीनो कया दुष्टे नाश कर्यो? कोइ देवता छे के माणस छे? कोइ राक्षस छे के वानर छे? (पोताना योद्धाना सामे जोइने) जे होय तेने बांधी लावो. ते वखते एक विद्याधरे आवी तेने कह्युं के, हे स्वामिन्, सहस्रांशु नामे घणो पराक्रमी तथा हजारो राजा जेना तावामां छे एवो माहिष्मति नगरीनो राजा आ रेवा नदीने सेतु बांधीने तेमां पोतानी स्त्रीओ सहित जळक्रीडा करे छे. तेणे पोताना रक्षणार्थे नदीना बंने तटो उपर हथीयारो सहित केटलाक योद्धाओ उभा राख्या छे. ते सेतुबंधना योगे करीने नदीनुं पाणी वध्युं छे अने पूजामां विघ्न थवानुं कारण पण तेज छे. तेनी स्त्रीओना वापरेलां फुलो आ पाणीमां तरता देखाय छे; अने तेओनां अंग उपर लगाडेलां कस्तुरी आदिकनां विलेपनो धोवाई गयाथी नदीनुं पाणी डोळाई गयुं छे. एवुं सांभळीने क्रोधावेशे पोताना सुभटोने बोलावीने रावणे कह्युं के, हे योध्धाओ! जेम काजळना योगे सफेद कपडाने दुषण छे, तेम आ मरणने शरण जनारा राजाना अंगवडे दुषित थएला पाणीवीमारी

देवपूजा निष्फळ निवडी. माटे तमे त्यां जइने, सहस्रांशुना शुरवीरपणुं माननारा सुभटोने मुसकेटाट बांधी मारी पासे लावो. रावणनी आज्ञा थतांज तेना केटलाक राक्षस योध्धाओ झडपथी जइने रेवा नदीना तट उपर रहेला सहस्रांशुना साथे युद्ध करवा मवी गया. ते जाणे, एक वनना हाथीओ उपर बीजा वनना हाथीओ पड्या होयनी! रावणना योद्धाओ आकाशमां रहीने पृथ्वीपर रहेला सहस्रांशुना योध्धाओने महा दुःख देवा लाग्या. ए वात जाणीने क्रोधे करी जेना हाथ ध्रुजी रह्या छे, एवो सहस्रांशुराज ध्वजा धरीने पोताना सेनानीओने धैर्य देवा लाग्यो, पछी जेम सुर नदीमांथी इंद्रनो ऐरावत हाथी निकळे, तेम रेवा नदीमांथी सहस्रांशु राजा बहार निकळ्यो. किनारे आवीने धनुष्य तैयार करी, वायु जेम रुने उडावे, तेम ते बाणे करीने आकाशमां रहेला राक्षसोने उडाववा लाग्यो. तेथी त्रास पामीने सर्व राक्षसो नाशी गयां. ए वातनी खबर पडतांज रावण त्यां जइने सहस्रांशु उपर बाणोनो वरसाद वरसाववा लाग्यो. एक बीजाने सहन न करनारा एवा महा बळवान अने अति गंभीर रावण तथा सहस्रांशुनुं केटलीक वार सुधी युध्ध थयुं. पछी रावणे विचार्युं के, आ साहस्रांशु राजा केवळ बाहु बळे करी जीतावानो नथी. तेथी तेणे विद्या फोरवीने सहस्रांशुने मोहित करी जेम कोई हाथीने बांधे तेम बांधी लीधो. छतां तेनुं शुरवीरपणुं जोईने ते पोताना मनमां कहेवा लाग्यो के, जो के में तेने बांध्यो तो खरो, तोपण ते अजीत छे, एमां संशय नथी. पछी तेने पोताना सैन्यमां लेई गयो. त्यार पछी मनमां राजी थतो रावण सभामां सिंहासन उपर बेसे छे, एटलामां त्यां एक शतबाहु नामनो चारण मुनि आव्यो. तेने जोतांज रावणे उठीने शीस नमावी, आ अर्हत्‌गुणोमां उत्तम पुरुष छे, एम जाणीने, तेने योग्य आसन उपर बेसाडी नमस्कार करी पोते जमीन उपर बेठो. पछी साक्षात् मुर्तिमान विश्वासरुप, जगतने आश्वासन देवावाळा ते मुनिए रावणने धर्म लाभ दीधो. त्यारे बे हाथ जोडी रावणे मुनिने पुछ्युं के, महाराज! आपनुं आंहीं पधारवुं केम थयुं छे? मुनी बोल्याः—" हे रावण! हुं माहिष्मति नगरीनो शतबाहु नामे राजा हतो, त्यां केटलोक काळ राज्य करी, असार संसार जाणी मारा सहस्रांशु नामना पुत्रने राज्य सोंपी मोक्ष मार्गे जवाना भाता रुप आ मुनि मत में लीधुं छे. " ए सांभळी पोतानुं माथुं हलावी रावण बोल्यो के, हे पूज्यपाद, ए तमारो पुत्र छे के? मुनिए कह्युं, हा. फरीथी रावण बोल्योः—हे मुनिंद्र! हुं पृथ्वी दिग्विजय करतो आ नदीना तट उपर पडाव करी, परमात्मानी पूजा करवा बेठो. एटलामां आ तमारा पुत्रे स्नाने करी डोळेला पाणीनुं पुर आव्याथी मारी पूजानी सामग्री वगडीने नणाइ गइ. तेथी क्रोधावेशे तेनी साथे युध्ध करी हुं तेने बांधी लाव्यो छुं, पण हवे मने एम समजाय छे के, तेणे ते अज्ञाननाथी कर्युं छे.

तमारो ए महात्मा पुत्र जिनेश्वरनी पूजानो भंग न ज करे. एम बोली, रावणे सहस्रांशुने त्यां बोलावी लीधो. लज्जा पामतो सहस्रांशु सभामां आवी मांथु नीचुं घालीने पोताना पिता मुनींद्रने नमस्कार करवा लाग्यो. ते जोइने रावणे कीधुं के, हे सहस्रांशु, तुं शा सारु लजवाय छे ? आजथी तुं मारो भाइ छे. आ शतबाहु मुनीश्वर जेवो तारो पिता छे, तेवोज हुं मारो समजुं छुं. हवे तुं अहींथी जलदी जइने तारुं राज्य निर्भयपणे कर. बीजी पण केटलीएक पृथ्वी हुं तने आपुं छुं, ते लेइने अमने त्रणे जणाने तुं पोताना भाइनी पेठे समज. एम कहीने तेने मूकी दीधो. त्यारे ते रावणने कहेवा लाग्यो के, आ राज मारे शा सारु जोइए ? मारे तो आ शरीरनो पण खप नथी. जे व्रत मारा पूज्य पिताए ग्रहण कर्युं छे, ते आ संसाररुप समुद्रमांथी तारनार छे. तेनोज आश्रय लीधो कामे आवशे. माटे आजथी में पण एज मार्ग ग्रहण कर्या. जेने मोक्षनी इच्छा छे तेने ए शिवाय बीजो कोइपण उपाय नथी. एम कहीने तेणे पोताना पिता पासे दीक्षा लीधी, अने पोताना अजरेंद्र (अनरण्य) नामना मित्रोने पोते दीक्षा लीधानी हकिकत एक चाकर साथे कहावी मोकली ते सांभळी अजरेंद्र मनमां विचार करवा लाग्यो के, में तथा सहस्रांशुए प्रथम सलाह करी हती के आपणे बंने साथे दीक्षा लेइशुं. तेथी ते प्रतिज्ञा आजे पूर्ण करवी जोइए. पछी तेणे पण पोताना दशरथ नामना पुत्रने राज्य आपी मुनिव्रत ग्रहण कर्युं. त्यार पछी रावण शतबाहु तथा सहस्रांशुने नमस्कार करीने सहस्रांशुना पुत्रने राज्यगादी उपर बेसाडी विमानमां बेशी आकाश मार्गे चालतो थयो.

रावणे मरुतराजाने करावेलो हिंसायज्ञनो त्याग.

तदनंतर लाकडीओना मारे करी पीडातो नारद मुनि रावण पासे आवी कहेवा लाग्यो के, अन्याय छे ! अन्याय छे ! हे राजा, राजपुर नामना नगरमां मरुत् नामे मिथ्यादृष्टि राजा छे; तेणे ब्राह्मणोना बोलवा उपर विश्वास राखीने यज्ञनो आरंभ करी तेमां होमवा सारु पशुओ लावी बांध्या छतां ते मोटी बुमो पाडता हता. ते सांभळीने मने दया आव्याथी हुं आकाशथी नीचे उतर्यो, अने त्यां जइ ते राजा तथा ब्राह्मणोने पुछ्युं के, आ तमे शुं करो छो ? त्यारे मरुत् राजाए जवाब दीधो के, आ ब्राह्मणे बतावेला यज्ञनो में आरंभ कर्यो छे. तेमां देवताओने तृप्त करवा सारु पशुओने होमवा ए योग्य छे. स्वर्गे जवा वास्ते ए मोटो धर्म कह्यो छे. माटे हुं पशुनो यज्ञ करुं छुं. ए बधुं सांभळीने में कह्युं के, हे मरुत् राजा, एवा यज्ञथी कांई फळ थतुं नथी, तेमज देवताओ पण प्रसन्न थता नथी, उलटा तेओ द्वेषी थाय छे. शास्त्रमां जे यज्ञ कह्यो छे ते तुं सांभळः—"आ शरीर रुप वेदीमां यज्ञ करनारो

आत्मा छे, तप रुप अग्नि छे, तेमां घृत रुप ज्ञान छे, कर्म रुप इंधन छे, तेमां होमवा सारु क्रोधादिक पशु छे; सत्य रुप यज्ञ स्तंभ छे; सर्व प्राणीओनी रक्षा करवी ते दक्षिणा छे; ज्ञान दर्शन अने चारित्र, ए त्रिवेदी छे " एवो महा उत्कृष्ट यज्ञ छतां आ नष्ट कर्मने श्रेष्ठ मानीने इष्ट संपादन करवा सारु भ्रमिष्ट थइ शा माटे कष्ट सहन करो छो? वेदमां पण एज यज्ञने मान्य करेलो छे. तमे तो केवळ ढोंग लेई बेटा छो. ए पशुवध यज्ञ रुप युक्ति ते शुं मुक्तिनुं साधन थशे के? एथी तो नर्कज मळे. जेओ चंडाळनी पेठे दयाहिन थइने दीन बकराओने यज्ञमां मारे छे, तेओ निश्चे मुवा पछी घोर नर्कमां पडे छे ते माटे हे मरुत् राजा, तुं उत्तम वंशमां उत्पन्न थएलो तथा बुद्धिमान छतां आ नर्क रुप क्रिया केम करे छे? हवे तुं ए छोडी दे. बिचारा निरपराधी प्राणीओने मार्याथी जो स्वर्गे जवातुं होय तो थोडाज दिवसमां आ जीवलोक शून्य थइ जाय. हे रावण! में ज्यारे ए प्रमाणे कह्युं, त्यारे त्यां बेठेला ब्राह्मणोए कोपायमान थइ उठीने मने लाकडीओ वती मार्यो. त्यांथी नाशीने हुं तारी पासे आव्यो छुं. हे रावण! बिचारा निरपराधी पशुओने ब्राह्मणो मारे छे, तेनुं तुं रक्षण कर अने हुं पण तारे शरणे छुं.

नारदनुं कहेवुं सांभळीने ते जोवा सारु रथमां बेसीने रावण मरुत् राजाना नगर समीपे आव्यो. रावणने आव्यो जाणी मरुत् राजाए सत्कार पूर्वक तेने तेडी लावी योग्य आसन उपर बेसाड्यो. पछी क्रोधावेशे रावण तेने कहेवा लाग्यो के, हे मरुत् राजा, आ नर्कमां लेई जनारी क्रिया तुं शा सारु करे छे? त्रण जगतना हितार्थे सर्वज्ञ पुरुषोए अहिंसा रुप धर्म कह्यो छे, तेनो त्याग करीने आ लोकमां तथा परलोकमां अनर्थ करनारो यज्ञ तुं शा माटे करे छे? हवेथी यज्ञ करवानो त्याग कर. तेम छतां जो करीश तो मारी पृथ्वीमां रही शकीश नहीं, मारो गुन्हेगार थइश, तथा मरीने नर्के जइश. रावणनुं एवुं भाषण सांभळीने मरुत् राजाए यज्ञ करवानो निषेध कर्यो. केमके आखा विश्वने भय बतावनारी जे रावणनी आज्ञा, ते दुर्लंघ्य होवाथी तेणे मान्य करी. बीजा सर्व राजाओए पण ते दिवसथी अहिंसारुप धर्म कर्यो. त्यार पछी रावणे नारदने पुछ्युं के, पशुओना प्राण लेनारो यज्ञ करवानुं कोणे कह्युं छे? त्यारे ते कहेवा लाग्यो केः—

—:o:—

यज्ञ विधानमां 'अज' शब्दनो खोटो अर्थ 'बकरो' कहेनार वसुराजानो कथा.

हे रावण ! शुक्तिमति नामनी विख्यात नगरीमां अनेक राजाओ थइ गया पछी श्री मुनिसुव्रत स्वामीना तीर्थमां अभिचंद्र नामे राजा थयो. तेने वसु नामे पुत्र हतो, अने तेज नगरमां रहेनार क्षीरकदंबक नामना ब्राह्मणने एक पर्वत नामनो पुत्र हतो. ते क्षीरकदंबक उपाध्याय पासे हुं, वसु तथा पर्वत ए त्रणे जणा भणता हता. एक दिवस अमो रात्रे कामथी थाकी सुता पछी बे चारण मुनिओ आकाश मार्गे जतां परस्पर वात करवा लाग्या के, आ उपाध्यायना त्रण शिष्योमांथी एक स्वर्गमां अने बे नर्कमां जशे. ते सर्व अमारा गुरुए सांभळ्युं तेथी ते मनमां विचार करवा लाग्या के, मारा भणावेला शिष्यो नर्कमां जाय ते सारुं नहीं. परंतु भावी आगळ निरुपाय ! तोपण कोण नर्कमां अने कोण स्वर्गमां जशे तेनी परिक्षा करवी जोइए.

पछी उपाध्याये लोटना त्रण कुकडा बनावीने अमो त्रणे शिष्योने बोलावी एकेक कुकडो आपीने कह्युं के, आ कुकडाने ज्यां कोइ देखे नहीं त्यां मारी आवो. ते लेइने हुं नगर बहार घणो दूर एक शुन्य प्रदेशमां जइ विचार करवा लाग्यो के, अहीं आ कुकडो पोते देखे छे, तेमज हुं तथा सर्व खेचरो, लोकपाल अने ज्ञानी पण देखे छे. एवुं कोईपण स्थळ नथी के ज्यां कोई कोईने देखे नहीं. फक्त गुरुए दयाळु तथा परोपकारी होवाथी अमारी परिक्षा लेवा सारु आ काम कर्युं जणाय छे. एम विचार करीने हुं ते कुकडाने गुरु पासे पाछो लाव्यो अने तेने न मारवानुं कारण निवेदन कर्युं. ए उपरथी गुरुए धार्युं के आ शिष्य स्वर्गे जशे. पछी गुरुए मने अति प्रीति सहित आलिंगन कर्युं. वसुए तथा पर्वते कुकडाने लेई एक शुन्य प्रदेशमां जई अहीं कोई देखतुं नथी एम विचारीने त्यां मारी आवी गुरुने कह्युं के, ज्यां कोईए दीठुं नहीं त्यां अमे कुकडाने मार्यो. ते सांभळीने गुरुए तेमने कीधुं के, रे मूर्खो, तमे पोते तथा बीजा खेचरादिक घणा देखतां छतां तेने तमे केम मार्यो ? माटे तमे पापी छो. एवो शाप आपी खेद थवाथी गुरु बोल्या के, में एमने अमस्ता भणाव्या, ए बंनेने विद्यानुं फळ क्लेश मात्र छे. स्वच्छ पात्रमां गुरुना उपदेशनो सारो उपयोग थाय छे, ने मलीन पात्रमां व्यर्थ जाय छे. जेम वरसादना पाणीथी शुक्तिमां मोती पाके छे अने बीजे ठेकाणे खारुं पाणी थाय छे, तेम आ मारो पुत्र पर्वत तथा राजानो पुत्र वसु, मने वहाला छतां नर्कगामी थया. माटे मारे हवे आ घरमां रहीने शुं करवुं छे ? एवो वैराग्य आव्याथी क्षीरकदंबक उपाध्याये दीक्षा लीधी.

पर्वत सर्व शास्त्रमां निपुण हतो तेथी ते तेना बापनुं उपाध्यायनुं काम चलावा लाग्यो. हुं मारे स्थानके गयो. अने अभिचंद्र राजाए वसुने राज्य सोंपी दीक्षा ग्रहण करी. वसु राजा पृथ्वी उपर सत्यवक्ता तरीके प्रसिद्ध थयो, तेथी ते पण हमेशां साचुं बोलवा लाग्यो. जो तेम न करे तो कीर्त्तिनुं रक्षण शी रीते थाय ? कोइ एक वखत एक पारधी मृगया करवा सारु वनमां गयो हतो, त्यां एक हरणने तेनी हरणी सहित जोइ तेणे बाण मार्युं ते बाण तेना बांसाना भाग उपर लाग्याथी व्यर्थ गयुं. बाण शाथी व्यर्थ गयुं ते जोवा सारु पारधी तेनी पासे गयो तो त्यां एक अधर स्फटिक शिला तेनी नजरे पडी. तेना उपर हाथ फेरवी ते जोवा लाग्यो. तेथी तेने मालम पड्युं के पृथ्वीनी छाया जेम चंद्रमां पडे छे तेम बीजे ठेकाणे फरनारा हरणनुं प्रतिबिंब आ शिलामां पडेलुं तेना उपर मारुं बाण लागवाथी ते व्यर्थ गयुं. आ स्फटिक शिला वसु राजाने योग्य छे, एम धारीने तेणे राजा पासे आवी सर्व हकीकत कही संभळावी. वसु राजाए ते शिला मंगावी लइ पारधीने घणुं द्रव्य आप्युं. पछी तेणे कारीगरोने बोलावी ते शिलामांथी एक सिंहासन करावी तेमने मारी नंखाव्या. कह्युं छे के, " राजा लोको कदी पण कोईना थता नथी. " ते सिंहासन जोनाराने पृथ्वीथी उंचु देखातुं हतुं तेथी लोकोमां विख्याति थइ के वसु राजाना सत्यना सामर्थ्य वडे तेनुं सिंहासन अधर रहेलुं छे. वळी तेना सत्यना प्रभावे देवताओ संतुष्ट थइने तेने साह्य करे छे. एवी रीते वसु राजानी कीर्ति फेलातांज सर्व लोको तेनाथी भय पामवा लाग्या.

त्यार पछी एक दिवस हुं शुक्तिमति नगरीमां गयो. त्यां उपाध्यायने घेर तेनो पुत्र पर्वत केटलाएक छोकराओने भणावतो में दीठो. तेमां ते यज्ञ करवानो उपदेश देवानी साथे बकरां विगेरे होमवानुं कहेतो हतो. एवुं तेनुं बोलवुं सांभळीने में तेने कह्युं के, हे भाइ, आ तुं भ्रांति वडे शुं बके छे ? अज शब्दनो अर्थ एम थतो नथी, तेनो अर्थ तो बीजा धान्यनी उत्पत्ति न थाय तेवुं त्रण वर्षनुं धान्य थाय छे. आपणा गुरुए ते अर्थ आपणने सारी रीते समजावेलो छे छतां तुं केम भुली गयो ? त्यारे पर्वत मने कहेवा लाग्यो के, हे नारद, मारा पिताए मने अज शब्दनो अर्थ बकरो बतावेलो छे, अने निघंटमां पण एमज कह्युं छे त्यारे में कह्युं के, हरेक शब्दनी अर्थ कल्पना मुख्य अने गौण होय छे. तेमांनी गौण अर्थ कल्पना गुरुए आपणने कही छे. गुरु धर्मनो उपदेश देनारा, अने श्रुति धर्म स्वरुप छे, तेनो विश्वास न करतां तेथी विरुद्ध काम तुं शासारु करे छे ? एथी पुन्यने बदले पाप थनार छे. एवुं सांभळी ते मारो तिरस्कार करी बोल्यो के, तारा कहेवा प्रमाणे गुरुए अर्थ कह्यो नथी. बकरो तो मेष शब्दनो अर्थ छे. गुरुए कहेला शब्दार्थने फेरवी पोतानो धर्म मूकीने अहंकारे

करी मिथ्या भाषण करतां डंडनो पण भय तने थतो नथी ? माटे हवे तुं तारो मत स्थापन कर, अने हुं मारो स्थापुं छुं. जेनो साचो हशे ते चालशे. एमां जे हारे तेनी जीभ कापी नांखवी. अने आपण बंने वच्चे आपणा स्वाध्यायी वसु राजाने साक्षी करवो. तेनुं आवुं बोलवुं सांभळीने में ते मान्य कर्युं. कह्युं छे के, साचुं बोलनारामां अभिमान राखवो जोइए नहीं.

पछी अमे बंने जण त्यांथी उठ्या. ते वखते पर्वत तेना घरमां गयो, त्यारे तेनी मा तेने कहेवा लागी के, हे पुत्र ! तारा बापे तो अज शब्दनो अर्थ त्रण वर्षनुं धान्य कह्यो छे, जे में ते कहेती वखत घरना काममां छतां सांभळ्युं हतुं. तें अहंकारे करी तेनो अर्थ फेरववानुं पण कर्युं छे ते योग्य नथी. कह्युं छे के, " विचार कर्या विना कार्य करनारो पुरुष विपत्ति पामे छे. " त्यारे पर्वते कीधुं के, मारुं ए बोलवुं केवळ अविचारनुं खोटुं छे, ए वात खरी; पण हवे ए वचन सत्य थाय तेवो उपाय कर. नहीं तो हुं घणो दुःखी थइश. पुत्रने घणी पीडा थशे माटे ते टाळ्या विना छूट-कोज नथी-एम निश्चय करीने तेनी माता वसु राजा पासे गइ. वसु राजा तेनो आदर सत्कार करी कहेवा लाग्यो के, हे माताजी, आज में साक्षात् क्षीरकदंबक गुरुना दर्शन कर्यां, एवो भाव तमने जोतांज मारा मनमां उपज्यो छे. हुं तमने शुं आपुं ? अने तमने शानी इच्छा छे ? त्यारे गुरुपत्निए कह्युं के, हे राजा ! मने पुत्र भिक्षा आप. पुत्र विना बधुं शून्य छे. धन धान्य तथा पुस्तको विगेरे पुत्र विना शा कामनां ? एवां तेनां वचनो सांभळीने वसु राजा बोल्यो के, हे माताजी, ए पर्वत मने पाळना तथा पूजा करवा योग्य छे. केमके गुरु पुत्रनी पासे गुरुनी पेठे वर्तवुं एवी श्रुति छे. तेने कोणे पीडा करी छे ? कोनुं मोत आव्युं छे ? हे जननि ! मारा भाइने कोण मारनार छे ? ने तेने शुं दुःख छे ? ते मने कहे. त्यारे तेणीए नारदनुं आववुं, प्रसंगे तेनुं भाषण थवुं, अज शब्दना अर्थ विषे थयलो वाद, ते विषे बंनेए करेलुं पण, तथा ते बाबत राजाने साक्षी राख्या विगेरेनी तमाम हकीकत कही संभळावी, ते दीन वाणीए कहेवा लागी के, हे राजा, ' अज ' शब्दनो अर्थ तारे ' बकरो ' कहेवो जोइए, नहींतो मारा पुत्रने घणुं दुःख थशे. कह्युं छे के, " मोटा पुरुषो परोपकारार्थे प्राण आपे छे, तो वाणी ते शा हिसाबमां छे ! " वसु बोल्योः—हे माताजी, हुं खोटुं केम बोलुं ? कह्युं छे के " प्राण जाय तोपण सत्य-वक्ता पुरुषोना मुखमांथी असत्य भाषण निकळतुं नथी. " वळी कह्युं छे के, हरेक पुरुषे कदीपण जुठुं बोलवुं नहीं. " इत्यादिक वाक्यो तथा धर्मने बाध आवे एवा कार्य शिवाय तमे जे कांइ कहेशो ते हुं कबुल करीश. हे मातुश्री, गुरुनी वाणी अन्यथा कर्याथी माहा पाप लागे छे, तो पछी खोटी साक्षी पुर्याथी जे थाय तेनुं तो

पुछवुंज शुं ? एटलुं कहेतां छतां गुरुपत्निए क्रोधातुर थइ कह्युं के, गुरुपुत्रनुं वचन साचुं कर ! तेथी तेणे ते कबुल कर्युं. पछी पर्वतनी माता राजी थती पोताने घेर गइ.

वीजे दिवसे हुं तथा पर्वत राजानी सभामां गया. त्यां महा गुणवंत हंस जेम खीर अने नीर जुदुं करे छे तेम सारासारनुं विवेचन करनारा सभ्य पुरुषो बेठेला हता, अने जेम नक्षत्र गणोमां चंद्रमा शोभे, तेम अधर रहली स्फटिक शिला उपर बेठेलो वसु राजा शोभतो हतो. ते वखते अमो बंने जणाए अति उमंगभेर साथे जइने अमारी सर्व हकीकत जाहेर करी जणाव्युं के, अमारा गुरुए 'अज' शब्दनो अर्थ बताव्यो छे ते विषे अमारे वाद थवाथी तेनो न्याय करावचा माटे अमे अहीं आव्या छीए. हे राजा, तुं सत्यवादी छे तेथी अदल इन्साफ करीश एवी अमारी संपूर्ण खातरी छे. पृथ्वी अने आकाशनी वच्चे जेम सूर्यनी साक्षी छे तेम अमारा बेनी वच्चे तुं साक्षी छे. ब्रह्मांडमांनी घट पटादिक सर्व वस्तु केवळ सत्यना योगे वर्ते छे, सत्यवडे वरसाद वरसे छे, तेमज देवता पण सत्ये करीनेज प्रसन्न थाय छे. वळी तने आटलुं वधुं राज्य संपादन थएलुं छे ते पण सत्यनोज प्रभाव छे. माटे अमो बंने वच्चे थएला विवादमां तुं जे साचेसाचुं जाणतो होय ते कहे. आपण त्रणे जण, गुरु पासे भणतां 'अज' शब्दनो अर्थ शुं शिख्या छीए ? ने ते शब्दनो अर्थ शुं छे ? ते अपक्षपातपणे कहे. वसु राजाए मृत्युने वश थइ, सत्य कोरे मूकीने कह्युं के, 'अज' शब्दनो अर्थ गुरुए बकरो कह्यो छे.

वसु राजाए तदन जुठी साक्षी आप्याथी अंतरिक्ष रहेला देवताओए कोपायमान थइ तेनी स्फटिक शिला भांगी नांखी, सभामां बेठेला सर्व पुरुषोना देखतां तेने जमीन उपर पटक्यो; तेथी ते मरीने नर्के गयो. तेमज तेना पुत्रो पृथुवसु, चित्रवसु, वासव, शक्र, विभावसु, विश्वावसु, सुर तथा महासूरने पण देवताओए मारी नांख्या. ते आठे पण नर्कमां गया. नवमो पुत्र सुवसु नाशीने नागपुरमां अने दशमो पुत्र मकरध्वज नाशीने मथुरामां गयो.

यज्ञमां पशुवधनो प्रचार करावनार पर्वत तथा महाकाल असुरनी कथा.

ते वखते लोकोए पर्वतने निर्भ्रंछी गाम बहार कहाडी मूक्यो. त्यां आगळ तेने महाकाल नामनो असुर मळ्यो. रावणे पूछ्युं के, ते महाकाल असुर कोण हतो? त्यारे नारदे कह्युं के, हे रावण, चारणयुगल नगरना अयोधन राजानी स्त्री दितीने पेटे सरुपवान सुलसा नामनी कन्या जन्मी हती. तेना स्वयंवरमां देशदेशना राजा आव्या हता, जेमां सगर नामे राजा सर्वथी श्रेष्ठ हतो. तेना हुकमथी तेनी मंदोदरी

नामे दासी अयोधन राजाने घेर जई रही. एक वखत दितीराणी क्रीडा करवा कदली वनमां जइ सुलसा साथे वात करवा बेठी हती, ते सांभळवा सारु मंदोदरी दासी तेमनी पाछळ जइ एक झाडने ओठे छुपाइ रही. दिती पोतानी दीकरीने कहेवा लागी के, आ स्वयंवर विषे मारा मनमां एक मोटुं दुःख छे, ते मटाडवुं तारा स्वाधीन छे, ते सांभळः—ऋषभदेवना पुत्र भरतने सूर्य नामनो तथा बाहुबळने सोम नामनो पुत्र थयो. सोम राजाना (चंद्र) वंशमां तृणबिंदु नामे राजा मारो भाइ थयो, तथा सूर्यवंशमां तारो पीता अयोधन राजा थयो. तेनी सत्ययशा नामनी बहेनने तृणबिंदु साथे परणावी तेने मधुपिंग नामनो पुत्र छे, तेनी साथे तारुं लग्न करवानी मारी इच्छा छे. स्वयंवरमां तने जे वर गमशे तेनी साथे तारो पिता परणावशे. ए वात मारा मनमां खटक्यां करे छे. मारुं ए दुःख मटाडवानी तारी मरजी होय तो तुं मधुपिंगने पसंद करजे. सुलसाए मातानुं वचन मान्य कर्युं. आ वात मंदोदरीए सगर राजाने कही. सगर राजाए पोताना विश्वविभूति नामना उपाध्यायने ए वृत्तांत जणाव्यो. ए मोटो कवि हतो तेथी तेणे "राजलक्षण संहिता" नामनो ग्रंथ बनावी जुना कागळो उपर लख्यो. तेमां सगर राजाने सर्व राजलक्षण संपन्न अने मधुपिंगने राजलक्षण हिण जेवो जणावीने ते पुस्तकने पुराणनी पेठे पेटीमां घाली ते स्वयंवर मंडपमां आव्यो. राजानी आज्ञा लेइ तेणे ग्रंथ वांचवानो आरंभ कर्यो, एटलामां सगर राजा घांटो कहाडी बोल्यो के, "आ उपाध्याय राजलक्षण रुप पुस्तक वांचे छे ते प्रमाणे जेनामां लक्षण न होय तेने सभामांथी बहार कहाडी मुकवो." पछी जेम जेम ते पुस्तक वंचातुं गयुं तेम तेम मधुपिंगनुं मन व्यग्र थतुं चाल्युं. आखरे ते पोताने राजलक्षण हिन जाणीने चिंताग्रस्त थइ त्यांथी उठी गयो. सुलसाए सगर राजाने वरमाळा आरोपी. पछी ते बंनेनां उत्साह पूर्वक लग्न थया केडे सर्व राजाओ पोतपोताने स्थानके गया. मधुपिंग माठुं लाग्याथी बाळ तप करी मरण पामी साठ हजार देवतानो स्वामी महाकाल नामे असुर थयो. ते अवधिज्ञाने करी सुलसाना स्वयंवरमां विना प्रयोजने सगर राजाना कृत्यथी पोते अपमान पाम्यानुं जाणी तेनुं वैर वाळवा तेने तथा तेना संबंधीओने मारवा माटे तेओनां छिद्रो जोतो शुक्तिमति नदी पासे आवी ब्राह्मणने वेशे पर्वतने मळी तेने कहेवा लाग्यो के, हे पर्वत, शांडिल नामे हुं तारा पितानो मित्र छुं. पूर्वे हुं तथा तारो बाप क्षीरकदंबक बंने जण एकज उपाध्याय पासे साथे भण्या छीए. हमणां नारद तथा बीजा लोकोए मळी तने निर्भ्रंछी कहाड्यानी मने खबर पडी, तेथी हुं तारी सहायता करवा सारु आव्यो छुं. मंत्रनी शक्तिवडे आखा जगतने मोहित करवानी हुं हिंमत धरावुं माटे तुं लगारे चिंता न कर. पछी ते आखा जगतने मोहित करी, लोकोने अ-

नेक व्याधीओ तथा पीडाओ उत्पन्न करवा लाग्यो, अने पर्वते तेनी सलाहथी तेओनी शांति करवा मांडी. एवी रीते अपकार तथा उपकार करीने तेओए लोकोमां पोतानो मत स्थापन कर्यो.

शांडिले एक वखत सगरराजाना नगरमां जइ त्यांना लोको, राणीओ तथा सभासदो विगेरेने महादारुण रोगो उत्पन्न कर्या. तेथी सगरराजाए महा चिंतातुर थइ तेनुं निवारण करवाने लोकोना कहेवाथी पर्वतने बोलाव्यो. तेणे शांडिलना कहेवाथी रोगनी शांति करी. ते वखते असुरे आकाशमां रही एवी वाणी करी के, " जे आ पर्वतनो मत अंगीकार करशे ते सर्व रोग रहित थशे." एथी लोकोनो पर्वत उपर दृढ विश्वास चोट्यो. पछी ते पोतानो मत चलाववा सारु यज्ञ करवानो उपदेश देवा लाग्यो. ते एवी रीतः—सौत्रामणि यज्ञमां मद्यपान करवानो, गोमेध यज्ञमां गायनो वध करवानो, मातृमेध यज्ञमां मातानो वध करवानो तथा पितृमेध यज्ञमां पितानो वध यज्ञ वेदीमां करवानो दोष नथी. तेमज काचवाना वांसा उपर अग्नि स्थापन करीने तेमां बकरानुं हवन करवुं श्रेष्ठ छे, तथा हरेक यज्ञमां पशुओने मारवा अने मांस भक्षण करवुं योग्य छे. इत्यादिक उपदेशे करी सगरराजाने पोताना मतमां आणीने तेना हाथे कुरु आदिक क्षेत्रमां घणा यज्ञो कराव्या पछी तेणे राजसुयादिक यज्ञो कर्या. हिंसक यज्ञोनुं कारण मात्र पर्वतनो उपदेशज नहीं परंतु पेला असुरे वेदमांथी पण यज्ञमां पशुओने मारवानुं कहाडी बताव्युं. त्यारथी केटलाएक बिचारा डुंगरामां रहेनारा भोळा लोको पण नाना यज्ञो करी तेमां पशुओने मारवा लाग्या. हे रावण! एवुं घोर कर्म जोइने दिवाकर नामना एक विद्याधर पासे जइने में कह्युं के, आ पशुओनुं तुं रक्षण कर. एवुं सांभळीने तेणे सर्व पशुओ हरण कर्या. ए कृत असुरे जाण्युं, तेथी ते अति अधर्मीए विद्याधरनी विद्या निष्फळ करवा सारु श्री ऋषभदेवनी मूर्त्ति स्थापी. पछी ते विद्याधरनो उपाय चाल्यो नहीं. ते जाणीने निरुपाये शोकातुर थइ हुं पण जतो रह्यो. पछी ते असुर (महाकाल) कपटवडे कोइ प्रसंगे सुलसा सहित सगरराजानो अग्निमां होम कराव्यो; पोताने कृतकृत्य मानी राजी थतो पोताने स्थानके गयो. ए प्रमाणे पर्वत पछी सर्व ब्राह्मणो हिंसात्मक यज्ञो करवा लाग्या छे ते तुं बंध कराव. नारदनुं ते कहेवुं रावणे मान्य करीने मरुत राजा पासे तेनी माफी मंगावी, अने नारदनो घणो आदर सत्कार करी तेने विदाय कर्यो. त्यारे मरुत् राजाए रावणने पूछ्युं के, तारी सहायतावडे मने आ घोर कर्ममांथी छोडावनार ए कोण छे? रावणे कह्युं के, सांभळः—

——•ooo•——

नामे दासी अयोधन राजाने घेर जई रही. एक वखत दितीराणी क्रीडा करवा कदली वनमां जइ सुलसा साथे वात करवा बेठी हती, ते सांभळवा सारु मंदोदरी दासी तेमनी पाछळ जइ एक झाडने ओठे छुपाइ रही. दिती पोतानी दीकरीने कहेवा लागी के, आ स्वयंवर विषे मारा मनमां एक मोटुं दुःख छे, ते मटाडवुं तारा स्वाधीन छे, ते सांभळः—ऋषभदेवना पुत्र भरतने सूर्य नामनो तथा बाहुबळने सोम नामनो पुत्र थयो. सोम राजाना (चंद्र) वंशमां तृणविंदु नामे राजा मारो भाइ थयो, तथा सूर्यवंशमां तारो पीता अयोधन राजा थयो. तेनी सत्ययशा नामनी बहेनने तृणविंदु साथे परणावी तेने मधुपिंग नामनो पुत्र छे, तेनी साथे तारुं लग्न करवानी मारी इच्छा छे. स्वयंवरमां तने जे वर गमशे तेनी साथे तारो पिता परणावशे. ए वात मारा मनमां खटक्यां करे छे. मारुं ए दुःख मटाडवानी तारी मरजी होय तो तुं मधुपिंगने पसंद करजे. सुलसाए मातानुं वचन मान्य कर्युं. आ वात मंदोदरीए सगर राजाने कही. सगर राजाए पोताना विश्वविभूति नामना उपाध्यायने ए वृत्तांत जणाव्यो. ए मोटो कवि हतो तेथी तेणे " राजलक्षण संहिता " नामनो ग्रंथ बनावी जुना कागळो उपर लख्यो. तेमां सगर राजाने सर्व राजलक्षण संपन्न अने मधुपिंगने राजलक्षण हिण जेवो जणावीने ते पुस्तकने पुराणनी पेठे पेटीमां घाली ते स्वयंवर मंडपमां आव्यो. राजानी आज्ञा लेइ तेणे ग्रंथ वांचवानो आरंभ कर्यो, एटलामां सगर राजा घांटो कहाडी बोल्यो के, " आ उपाध्याय राजलक्षण रुप पुस्तक वांचे छे ते प्रमाणे जेनामां लक्षण न होय तेने सभामांथी बहार कहाडी मुकवो." पछी जेम जेम ते पुस्तक वंचातुं गयुं तेम तेम मधुपिंगनुं मन व्यग्र थतुं चाल्युं. आखरे ते पोताने राजलक्षण हिन जाणीने चिंताग्रस्त थइ त्यांथी उठी गयो. सुलसाए सगर राजाने वरमाळा आरोपी. पछी ते बंनेनां उत्साह पूर्वक लग्न थया केडे सर्व राजाओ पोतपोताने स्थानके गया. मधुपिंग माठुं लाग्याथी बाळ तप करी मरण पामी साठ हजार देवतानो स्वामी महाकाल नामे असुर थयो. ते अवधिज्ञाने करी सुलसाना स्वयंवरमां विना प्रयोजने सगर राजाना कृत्यथी पोते अपमान पाम्यानुं जाणी तेनुं वैर वाळवा तेने तथा तेना संबंधीओने मारवा माटे तेओनां छिद्रो जोतो शुक्तिमति नदी पासे आवी ब्राह्मणने वेशे पर्वतने मळी तेने कहेवा लाग्यो के, हे पर्वत, शांडिल नामे हुं तारा पितानो मित्र छुं. पूर्वे हुं तथा तारो बाप क्षीरकदंभक बंने जण एकज उपाध्याय पासे साथे भण्या छीए. हमणां नारद तथा बीजा लोकोए मळी तने निभ्रंछी कहाड्यानी मने खबर पडी, तेथी हुं तारी सहायता करवा सारु आव्यो छुं. मंत्रनी शक्तिवडे आखा जगतने मोहित करवानी हुं हिंमत धरावुं छुं, माटे तुं लगारे चिंता न कर. पछी ते आखा जगतने मोहित करी, लोकोने अ-

नेक व्याधीओ तथा पीडाओ उत्पन्न करवा लाग्यो, अने पर्वते तेनी सलाहथी तेओनी शांति करवा मांडी. एवी रीते अपकार तथा उपकार करीने तेओए लोकोमां पोतानो मत स्थापन कर्यो.

शांडिले एक वखत सगरराजाना नगरमां जइ त्यांना लोको, राणीओ तथा सभासदो विगेरेने महादारुण रोगो उत्पन्न कर्या. तेथी सगरराजाए महा चिंतातुर थइ तेनुं निवारण करवाने लोकोना कहेवाथी पर्वतने बोलाव्यो. तेणे शांडिलना कहेवाथी रोगनी शांति करी. ते वखते असुरे आकाशमां रही एवी वाणी करी के, " जे आ पर्वतनो मत अंगीकार करशे ते सर्व रोग रहित थशे." एथी लोकोनो पर्वत उपर दृढ विश्वास चोट्यो. पछी ते पोतानो मत चलाववा सारु यज्ञ करवानो उपदेश देवा लाग्यो. ते एवी रीतः—सोत्रामणि यज्ञमां मद्यपान करवानो, गोमेध यज्ञमां गायनो वध करवानो, मातृमेध यज्ञमां मातानो वध करवानो तथा पितृमेध यज्ञमां पितानो वध यज्ञ वेदीमां करवानो दोष नथी. तेमज काचवाना वांसा उपर अग्नि स्थापन करीने तेमां बकरानुं हवन करवुं श्रेष्ठ छे, तथा हरेक यज्ञमां पशुओने मारवा अने मांस भक्षण करवुं योग्य छे. इत्यादिक उपदेशे करी सगरराजाने पोताना मतमां आणीने तेना हाथे कुरु आदिक क्षेत्रमां घणा यज्ञो कराव्या पछी तेणे राजसुयादिक यज्ञो कर्या. हिंसक यज्ञोनुं कारण मात्र पर्वतनो उपदेशज नहीं परंतु पेला असुरे वेदमांथी पण यज्ञमां पशुओने मारवानुं कहाडी बताव्युं. त्यारथी केटलाएक विचारा डुंगरामां रहेनारा भोळा लोको पण नाना यज्ञो करी तेमां पशुओने मारवा लाग्या. हे रावण! एवुं घोर कर्म जोइने दिवाकर नामना एक विद्याधर पासे जइने में कह्युं के, आ पशुओनुं तुं रक्षण कर. एवुं सांभळीने तेणे सर्व पशुओ हरण कर्या. ए कृत असुरे जाण्युं, तेथी ते अति अधर्मीए विद्याधरनी विद्या निष्फळ करवा सारु श्री ऋषभदेवनी मूर्त्ति स्थापी. पछी ते विद्याधरनो उपाय चाल्यो नहीं. ते जाणीने निरुपाये शोकातुर थइ हुं पण जतो रह्यो. पछी ते असुर (महाकाल) कपटवडे कोइ प्रसंगे सुलसा सहित सगरराजानो अग्निमां होम करावी, पोताने कृतकृत्य मानी राजी थतो पोताने स्थानके गयो. ए प्रमाणे पर्वत पछी सर्व ब्राह्मणो हिंसात्मक यज्ञो करवा लाग्या छे ते तुं बंध कराव. नारदनुं ते कहेवुं रावणे मान्य करीने मरुत राजा पासे तेनी माफी मंगावी, अने नारदनो घणो आदर सत्कार करी तेने विदाय कर्यो. त्यारे मरुत् राजाए रावणने पूछ्युं के, तारी सहायतावडे मने आ घोर कर्ममांथी छोडावनार ए कोण छे? रावणे कह्युं के, सांभळः—

इत्यादिक प्रभवनुं पश्चात्ताप भरेलुं बोलवुं सांभळीने वनमालाए पाछी आवीं सर्व वात राजाने कही संभळावी. मित्रनी सत्यता सांभळी राजा अत्यंत राजी थयो. अहीं प्रभव दीलगीरी करतो हाथमां खड्ग लेई मरवा तैयार थयो. एटलामां सुमित्रे आवी तेने कह्युं के, हे मित्र, सहसा कर्म कदी पण करवुं नहीं. आ खड्ग तुं नाखी दे, तोपण तेणे न मूक्युं तेथी राजाए पडावी लीधुं. ते वखते तेणे महा लज्जायमान थइ माथुं नीचुं घाल्युं. ते जाणे पृथ्वीमां पेसवानोज विचार करतो होयनी ! एवो जणायो. ते जोइने राजाए तेने घणी प्रकारे समजावी तेनो वसवसो दूर कर्यो. पछी केटलोक काळ पूर्वनी पेठे मित्रभाव राखी वर्ततां राजा दीक्षा लेइ मुवा पछी इशानदेव थयो. त्यांथी चवीने मथुराना स्वामी हरिवाहन राजानी स्त्री माधवीने पेटे तुं मधु नामनो पुत्र थयो छुं, अने प्रभव घणा काळ सुधी भवमां भटकीने विश्वासु राजानी स्त्री ज्योतिर्मतिने पेटे कुमार नामनो पुत्र थयो. त्यां उत्कृष्ट तप कर्याथी मरीने आ हुं चमरेंद्र थयो छुं. एम कहीने तेणे मने आ त्रिशुळ आप्युं हे राजन् ! आ त्रिशुळ बे हजार जोजन दूर जइने पोतानुं काम करी पाछुं आवे छे.

उपर प्रमाणे मधुकुमारनुं भाषण सांभळी, तेनी भक्ति जोइ, तथा तेने शक्तिवान जाणीने रावणे पोतानी मनोरमा नामनी कन्या तेने परणावी. त्यार पछी अढार वर्ष सुधी दिग्विजय करीने ते मेरु पर्वत उपर गयो. त्यां पांडुक वनमां अति उत्कंठा सहित सर्व संमति लेइ चैत्यवंदन करवा आव्यो; अने अर्हत् परमात्मानी पूजादिक करवा लाग्यो.

रावणे मेळवेली आशाली विद्या, सुदर्शनचक्र तथा नलकुबर दिग्पालनो कीधेल पराजय.

पछी रावणे सैन्य सहित पोताना कुंभकर्णादिक भाईओने इंद्रराजाना नलकुबर नामना दिग्पालने पकडवा सारु तेना दुर्लंघ्य नामना नगर तरफ मोकल्या. सो जोजन विस्तीर्ण, आशाली विद्या वडे जेने अग्निमय कील्लो, ज्यां सर्व अग्निमय यंत्रो अने ज्यां पोताना परिवार सहित नलकुबर राजा अग्निनी पेठे शोभी रह्यो छे, एवुं ते नगर निहाळीने कुंभकर्णादिक रावणना योद्धा, जेम ग्रीष्म ऋतुमां उंघमांथी उठेलो पुरुष सूर्यनी सामुं जोई शके नहीं तेम, तेना सामुं जोई शक्या नहीं. अने ते जीती शकाय एम नथी एवुं धारी खिन्न थता तेओ रावणनी पासे पाछा आव्या; अने सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. ते सांभळतांज सर्वने लेई रावण पोत त्या गयो. अने जोयुं तो तेमना कहेवा प्रमाणेज दीठुं; तेथी विचारवा लाग्यो के, आ किल्लो केम

लेवाशे ? एटलामां रावण उपर आसक्त थयेली उपरंभा नामनी नलकुवर राजानी स्त्रीए मोकलेली एक दासी त्यां आवी कहेवा लागीके, हे रावण ! मूर्त्तिमान जयश्री जेवी नलकुवर राजानी स्त्री उपरंभा तारा उपर मोहित थइने तने चाहे छे. तारा गुणोवडे जेनुं अंतःकरण हराई गयुं छे, एवी ते उपरंभा केवळ शरीरे करी त्यां रही छे, पण तेनुं मन तो तारी पासे छे. तेनो स्वीकार कर्याथी आ किल्लानुं रक्षण करनारी आशाली विद्याने तुं पोताना आत्मानी पेठे वश करीश, अने तेथी नलकुवर सहित आ नगर तथा तेमां देवे राखेलुं सुदर्शन चक्र पण तने मळशे. एवुं दासीनुं बोलवुं सांभळीने रावणे स्मित हास्य करी विभीषण सामुं जोयुं. त्यारे विभीषण बोल्यो के, " हे दूती, तें जे कह्युं, ते ठीक छे, ने अमारे मान्य करवा योग्य छे. " एवुं मोघम कहीने तेणे दासीने रजा आपी. ते वखते रावण क्रोध करीने कहेवा लाग्यो के, हे भाइ, आपणा कुळाचारथी विरुद्ध काम तें केम अंगीकार कर्युं ? हे मूर्ख, आपणा कुळमां जन्मेला पुरुषोए परस्त्री तरफ मन पण दीधुं नथी, तेम छतां ते कर्म तें कबुल कर्याथी, युद्धमां शत्रुने पीठ बतावबा जेवुं थयुं. जे शब्द आपणा कानने पण कलंक चडावे, ते तें वाणीथीकेम कहाड्यो ? हे विभीषण, तारी एवी बुद्धि केम थइ छे ? त्यारे विभीषण बोल्योः—हे पूज्य, कोप करवानुं कांइ कारण नथी. जे विशुद्ध अंतःकरणवाळा पुरुषो छे, तेमने वाणीथी कलंक लागतुं नथी. आशाली विद्या तने मळे अने नलकुवर वश थाय एटला माटेज हुं एम बोल्यो छुं, तेनो अंगीकार करवा विषे मारुं बोलवुं थयुं नथी. पोतानुं कार्य सिद्ध करी हरेक युक्तिथी तेने समजाववे. एवी रीते विभीषण कहे छे, एटलामां आलिंगन करवाने अति आतुर उपरंभा त्यां आवी अने नगरनुं रक्षण करनारी आशाली नामनी विद्या रावणने आपी. तेथी त्यां यंत्रवडे रहेला सर्व शस्त्र तथा अस्त्र नाबुद थयां. पछी ते विद्याना योगे ते अग्निमय किल्लानुं हरण करीने पोताना सैन्य सहित रावण दुर्लंघ्य नगरमां पेठो. त्यारे नलकुवर राजा तेनी साथे युद्ध करवाने तैयार थयो. तेने आवतांज जेम चामडानी धमणने हाथमां झालीये तेम विभीषणे तेने पोताने हाथे पकडी लीधो. तेमज देव तथा असुरने अजय एवुं इंद्र संबंधी जे दूर्धर सुदर्शनचक्र, ते पण लेइ लीधुं, तेथी लाचार थइ नलकुवर रावणने नम्यो. ते जोइने रावणे राजी खुशीथी तेनुं नगर तेने पाछुं आप्युं. पछी उपरंभाने बोलावीने ते उचित वचनो कहेवा लाग्यो. हे उपरंभा, मने नमनार आ तारा पतिनुं तुं सेवन कर. तें मने आशाली विद्या आपी तेथी तुं मारी गुरुरूपे थई. मारे तो सर्व परस्त्री मा, बहेन समान छे. कांइक पाछळ हटीने तुं तारा कुळ तरफ नजर कर. कामध्वज राजानी स्त्री सुंदरीने पेटे तुं जन्मी छे. ते तारा माता पिता तथा कुळने तुं कलंक न

लगाड, एवी विपरीत बुद्धि तुं मूकी दे. एम कहीने तेणीने नलकुवर राजाने स्वाधीन करी. पछी नलकुवर राजाने साथे लेइने सैन्य सहित रावण रथनुपुर नगरमां गयो.

रावण तथा इंद्रराजा वच्चे थयेलुं दारुण युद्ध—इंद्रराजानुं केद पकडावुं.

रावण आव्यानुं जाणीने महा बुद्धिमान सहस्रार राजा पोताना पुत्र इंद्रने कहेवा लाग्यो केः—हे पुत्र, अमारा वंशमां तुं महा पराक्रमी थयो, ने पोताना बळे करी बीजा राजाओने जीतीने तें स्वकुळने श्रेष्ठ कर्युं. ते केवळ तारा पराक्रमनोज प्रताप छे, तोपण आ वखते कांइक मारुं बोलवुं सांभळवुं जोइए. केवळ पराक्रम क्यांक दुःखनुं कारण थाय छे. मात्र पराक्रमवडे सिंहादिक पशुओना नाश थइ शके छे. आ पृथ्वीपर एकथी एक बळवान थाय छे. हुं सर्वथी बळवान छुं एवो अहंकार कोइथी पण न थाय. तेमज आ वखते सर्व वीरोमां श्रेष्ठ एवो एक रावण नामे महा शूरवीर उत्पन्न थयो छे, जेणे पोताना पराक्रमवडे सूर्य जेवा पराक्रमी सहस्रांशुने बांध्यो, लीला मात्रे करी जेणे कैलास पर्वत उपाड्यो, मरुत् राजाना यज्ञने जेणे तोड्यो, जंबुद्वीपनो स्वामी यक्षेंद्र जेनुं अंतःकरण फेरवी शक्यो नहीं, श्री अर्हत्‌जिननी सामे पोताना हाथनी नाडी कहाडी वीणामां तार करीने जेणे मधुर गायन कर्युं, तेथी प्रसन्न थएला धरणेंद्र तरफथी त्रिभुवनने जीतवावाळी अमोघ शक्ति नामनी विद्या जेने मळी, पोतानी बे भुजानी पेठे जेने बे भाइओ छे, सुकेशी राक्षसना कुळमा जे सूर्यनी पेठे शोभे छे, जेणे लीलामात्रे यमराजाने नसाड्यो, वैश्रवण, लोकपाल तथा वालीना भाइ सुग्रीवने जेणे पोताना सेवक कर्या, अग्निमय किल्लावाळा दुर्लंघ्य नगरमां पेसीने जेना भाइ विभिषणे नलकुवर राजाने बांधी लीधो, एवो प्रलय काळना अग्नि जेवो रावण तारा उपर चडी आव्यो छे. ते नम्रता रुप अमृत वृष्टिथी शान्त थशे. ए शिवाय बीजा कोइ पण उपायथी ते शान्त थनार नथी. तेने तारी रुपिणी नामनी महा सुरुपवान कन्या आप. जेथी तेनी साथे तारे प्रीति बंधाशे. एवां पोतानां पितानां वचनो सांभळीने इंद्रराजा महा क्रोधातुर थइ बोल्यो. हे तात ! जेने आपणे मारवा योग्य, तेने कन्या केम अपाय ? एनी साथे आपणुं वैर आजनुं नहीं, पण वंश परंपरागतनुं छे. पूर्वे मारा पितामह विजयसिंहे पकडीने मार्यो हतो, ते शुं तमे भुली गया ? एना पितामह मालीनी में जेवी अवस्था करी हती तेवीज तेनी पण करीश. माटे हे तात, आप डरो नहीं, मनमां धीरज धरो. तमे पोताना पुत्रनुं पराक्रम शुं जाणता नथी ? ए प्रमाणे बाप दीकरानुं भाषण चाले छे, एटलामां रावणे आवी रथनुपुर नगरने घेरो घाल्यो. प्रथम रावणे संधि सारु इंद्रराजा पासे एक दूत मोकल्यो. ते आवी युक्तिथी तेने समजाववा लाग्यो के, हे इंद्र,

सखीओ

मंदोदरी

रावण

युद्ध

इंद्रराजा

रावण

आ पृथ्वी उपर जे राजाओ विद्या अने बाहु बळे करी महा गर्वित छे, ते पण रावणने करभार (खंडणी) आपे छे. तारु स्मरण न आव्याथी अने तारी नम्रताए करी आटलो वखत गयो. हमणां तारो भक्ति करवानो वखत छे, माटे तेनी भक्ति कर अगर शक्ति बताव. जो तुं भक्ति तथा शक्ति हीन थइश तो खचित दीनता पामीश. ते सांभळी इंद्र कहेवा लाग्योः–हे दूत, जे साधारण राजाओ हता, तेमणे तेनी सेवा करी तेथी ते उन्मत्त थइ मारी पासे सेवा करावबा इच्छे छे, ते न इच्छवुं जोइए. आज दिवस सुधी तो रावणनो वखत जेम तेम सुखे गयो, पण आ वखत एनो काळरुप थयो छे, एम समज. तुं हवे अहींथी जइने तारा स्वामीने भक्ति करवानुं अगर शक्ति बतावनानुं कहे. जो ते भक्ति अगर शक्ति नहीं बतावे तो नाश पामशे. दूते रावण पासे आवी सर्व वृत्तांत कह्यो. ए सांभळीने महा कोपायमान थइ युद्ध करवा सारु सैन्य सहित रावण उत्साहपूर्वक तत्पर थयो. इंद्र राजा पण सैन्य लेइ रथनुपुरमांथी बहार निकळ्यो. कह्युं छे के, " जे वीरपुरुष छे ते बीजा शूरवीरनो अहंकार सहन करता नथी. " पछी युद्धनो आरंभ थयो. तेमां सामंतनी सामे सामंत, सैनीकनी सामे सैनीक, तथा सेनानी सामे सेनानी, एवी रीते परस्पर लडवा लाग्या. संवर्त्तकमेघ तथा पुष्करावर्त्तमेघनी पेठे बेउ सैन्य तथा राजाओनुं युद्ध थवा लाग्युं. ते वखते इंद्रराजाना योद्धाओए एटलां बधां बाण छोड्यां के, जाणे वरसादज वरसतो होयनी ! ते जोईने, भुवनालंकार हाथी उपर आरुढ थएलो रावण हाथमां धनुष्य धारण करी मारवा मंडी गयो. सामे इंद्र पण तेवीज रीते मारवा लाग्यो. कोई कोईथी हठे नहीं. बंने राजा वच्चे एवी हणमार थयाथी तेमना हाथीओ एक बीजाने वळगी दंतुशळ भोकवा लाग्या. ते एवा जोसथी लडता हता के, तेमना दांतोमांथी अग्निना तणखा निकळवा लाग्या. पछी जेम विरहीणी स्त्रीना हाथमांथी कंकण निकळी जाय तेम तेमना दांतोमांना सोनाना कंकणो पृथ्वी उपर पड्या. दांतो भागी गयाथी क्षीण थएला तेओना शरीर तथा गंडस्थळमांथी मदनी धारानी पेठे लोहीनी धारा वहेवा लागी. तेमना उपर बेठेला रावण तथा इंद्र राजा, एक बीजाने क्षणमां भालाथी, तो क्षणमां बाणथी तथा मुद्गल वडे मारवा लाग्या. पछी ते बंने शूरवीरो एक अगन्यास्त्र, तो बीजो मेघास्त्र मूकी परस्परनां अस्त्रो तोडवा लाग्या. एवी रीते उत्सर्ग तथा अपवादनी पेठे करतां करतां तेओ पासे आवी गया. ते वखते रावणे हाथी उपरथी कुदको मारी, इंद्रना हाथी उपर चडी जइ, तेना मावतने मारी, इंद्रने पकडी लीधो. ते जोइ राक्षस वीर सहसारे इंद्रना सैन्यने घेरी लेवाथी ते चारे दीशा तरफ नासवा लाग्युं. कह्युं छे के, " सैन्यनो स्वामी जीतायाथी सर्व पदाति जीताया एम समजवुं. " पछी रावण इंद्रने पोतानी छावणीमां लेइ गयो. पछवाडे नायक विनाना

रहेलुं विद्याधरोनुं सर्व सैन्य रावणने स्वाधीन थयुं. त्यारपछी त्यांथी निकळीने रावण लंकामां आव्यो. त्यां जेम पोपटने पांजरामां पूरे तेम तेणे इंद्रने बंदीखानामां नाख्यो.

रावणे इंद्रराजानो करेलो छुटकारो.

पछी इंद्रराजानो पिता सहस्रार पोताना दिग्पालो सहित लंकामां आवी रावणने नमस्कार करी, हाथ जोडी, विज्ञप्ति करवा लाग्यो के, जेणे लीलामात्रे करी कंकरनी पेठे कैलास पर्वतने उपाड्यो, तेणे अमने जीत्याथी कांईपण लाज नथी, तेमज तेनी प्रार्थना करवाथी पण अमे लाजता नथी. माटे हे रावण, हुं एटलुं मागुं छुं के, इंद्रने छूटो करी मने पुत्र भिक्षा आप. ते सांभळी रावणे तेने कह्युं के, मारा कहेवा मुजब ए पोताना परिवार सहित काम करे तो हुं एने छोडी मूकुं. ते काम ए के,—घरमांथी जेम झाडु कहाडवामां आवे छे तेम घडी घडी लंका नगरीमांथी ते झाडु कहाडी जेटलो कचरो पड्यो होय तेटलो बहार कडाडीने साफ करे, तथा रस्ते रस्ते सुगंधिमय पाणी छांटे, अने सारां सारां फूलो गुंथीने मारी नगरीमांना सर्व देवस्थानोमां जोईती माळाओ पूरी करे. एम दररोज कर्याथी हुं प्रसन्न थइ तेने तेनुं राज्य पाछुं आपीश. सहस्रारे ते सघळुं कबुल कर्युं. त्यारे रावणे तेने छोडीने भाईनी पेठे तेनो सत्कार कर्यो. पछी त्यांथी निकळी सहस्रार तथा इंद्र पोताने घेर आव्या. पण इंद्र मनमां घणोज खीन्न थइ कहेवा लाग्यो. कह्युं छे के, “ तेजस्वी पुरुषने निस्तेज थवाथी मरवा करतां पण वधारे दुःख थायछे. ”

इंद्रराजानो पूर्वभव—तेनुं दीक्षा लेवुं तथा मोक्षे जवुं.

कोइ एक समये रथनुपुरमां निर्वाणसंगम नामे ज्ञानवान मुनि आव्या, तेमने वंदना करवा सारु इंद्रराजा तेमनी पासे गयो. त्यां जइ नमस्कार करी बेठा पछी तेणे मुनिने पूछ्युं के, हे महाराज रावणे मारो पराभव कया कर्मे करी कर्यो, तेमज पाछो तेणे सत्कार कर्यानुं कारणभूत कर्म कयुं छे ? मुनि कहे छे, हे इंद्र ! सांभळः—अरिंजय नगरना विद्याधर राजा ज्वलनसिंहनी स्त्री वेगवतीने पेटे पेदा थएली अहिल्या नामनी कन्याना स्वयंवरमां देशेदेशना विद्याधर राजाओमां चंद्रवर्तपुरनो स्वामी आनंदमाली, तथा सूर्यावर्तपुरनो स्वामी तडित्प्रभ नामना विद्याधर राजाओ आव्या हता. तेमांना आनंदमालीने अहिल्या परणी तेथी तडित्प्रभ पोतानो पराभव थयो समजी तेनी साथे द्वेष करवा लाग्यो. आनंदमाली केटलोक काळ सुखभोग भोगवी वैराग्य उत्पन्न थवाथी दीक्षा लेइ, व्रत तपादिक करतो मोटा मोटा मुनिओनी साथे विचरवा लाग्यो. विहार करतां एक दिवस ते रथावर्त नामना पर्वत उपर गयो. त्यां कोई प्रसंगे तेने तडित्प्रभ राजाए ध्यानमां बेठेलो देखीने अहिल्याना विवाहना द्वेषे करी बांधीने मार्यो, तथापि ते पोताना ध्यानथी डग्यो नहीं.

एवुं अघोर कृत्य जोईने सर्व साधुओमां श्रेष्ठ एवां एक तेना कल्याण गुणधर नामना भाइए तडित्प्रभ उपर तेजोलेश्या मूकी, तेथी ते पडाणो; त्यारे तेनी स्त्री सत्यश्रीए साधु पासे प्रार्थना करी, तेथी तेना क्रोधनी शान्ति थइ अने तेजोलेश्या समेटी लीधी तेथी ते बळ्यो नहीं. एवी रीते ध्यानमां बेठेला निरपराधी साधुने दुःख दीधाथी तडित्प्रभ मुवा पछी केटलाक भव भटकीने आ भवमां सहस्रार राजानो पुत्र तुं इंद्र थयो. तारो रावणने हाथे पराभव थयो तेनुं कारण पूर्व जन्ममां तें निर्दोषी महापुरुषनो तिरस्कार कर्यो हतो ते छे. कह्युं छे के "जे कर्म कर्युं होय तेनुं फळ कोईक दिवसे पण मळे," एवी सर्व प्राणीओनी स्थिति छे. इंद्रथी ते कीडी सुधी सर्व कर्माधीन छे. ए प्रमाणे पोतानो पूर्व भव सांभळीने वैराग्य उत्पन्न थवाथी पोताना दत्तवीर्य नामना पुत्रने राज्यगादीए बेसाडी, इंद्राजा दीक्षा लेई, उग्र तप करी मोक्षे गयो.

रावणे अनंतवीर्य मुनि पासे इच्छा रहित स्त्रीनी साथे रममाण न थवा लीधेली प्रतिज्ञा.

एक वखत अंनतवीर्य नामना मुनिने वांदवा सारु रावण मेरूपर्वत उपर गयो. त्यां मुनिने नमस्कार करी योग्य आसने बेठो. मुनि धर्मदेशना देवा लाग्या. तेमनां अमृत तुल्य वचनो सांभळी रावण घणो राजि थयो. व्याख्याननी समाप्ति थया पछी रावणे मुनिने पूछ्युं के, हे भगवान, मारुं मोत कोना हाथे थशे? ते कृपाः करी कहो. त्यारे मुनिए कह्युं के, हे रावण, परस्त्रीना दोषे करीने वासुदेवना हाथे तारुं मृत्यु थशे. तारा देहांतनी वखते तुं महा विपत्तिमां पडीश. एवां मुनिनां वचनो सांभळीने ते मुनि महाराजनी सामेज रावणे प्रतिज्ञा करी के, "आजथी मारा विषेनी इच्छा रहित स्त्रीनी साथे हुं कदी पण रममाण थइश नहीं." पछी मुनिने नमस्कार करीने पुष्पक विमानमां बेसी ते लंका नगरीमां गयो.

चोपाइ.

राम चरित्र आ रुडो ग्रंथ, सुधो शिव मारगनो पंथ;
दशकंधर दिग्विजय कह्यो, परमारथ जाणीने लह्यो. १
हेमाचार्य महा मोटा कवि, भाखी वार्ताओ नवनवी;
बीजो सर्ग अहीं पूरो थयो, शास्त्रनुसारे अनुभव्यो. २

इत्याचार्य श्रीहेमचंद्रविरचिते त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरिते महाकाव्ये सप्तमपर्वणि रावणदिग्विजयो नाम द्वितीय सर्गः २

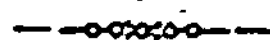
थायज. माटे हे मित्र, ए इच्छा पडती मूकीने जलदी आपणा नगरमां जइए तो सारुं. कोइ भोजन घणुं सारुं छतां जो ते पोताने भावतुं न होय तो शा कामनुं ? एवी रीते घणे प्रकारे भाषण करी ते चालवा लाग्यो. त्यारे प्रहसित बोल्यो, मोटा पुरुषे ग्रहण करेली वस्तु मूकीदेवी योग्य नथी, तो पोताना वडाओए ग्रहण करेली वस्तुने शुं मूकी देवी के ? एतो मोटुं लांछन छे. गुरुए कांइ अघटीत काम कर्युं होय अथवा पोतानी कोइ चीज पैसा लइने वेची होय छतां मोटा पुरुषोए गुरुभाव नहीं मूकतां ते मान्य करवा योग्यछे. तारा मनमां जे दुःख थाय छे ते केवळ तारा प्रारब्धनो दोष छे. बिचारी अंजनसुंदरीनो लेशमात्र अपराध नथी. तारां तथा एनां मावीत्रो जगप्रसिद्ध होवाथी जो तुं लग्न कर्या विना पाछो जइश तो तेओ घणी लज्जा पामशे. एवां पोताना मित्रनां शीखामणनां वचन सांभळीने किंचित् विचार करी पवनंजय मनमां दुःख धरतो त्यां रह्यो.

निर्धारेला शुभ दिवसे पवनंजय तथा अंजनानुं पाणीग्रहण थयुं. माहेंद्र राजाए प्रल्हाद राजानो घणो सत्कार कर्यो. सर्व कार्य थइ रह्या पछी वरवहुने लेइने परिवार सहित प्रल्हाद राजा पोताना नगरमां आव्यो. तेणे अंजनसुंदरीने रहेवा सारु सात मजलानो अति रमणीय मेहेल आप्यो. लग्न दिवसथीज पवनंजये कोइपण वखत अंजनाने बोलावी नहीं, तेथी ते नगरमां एक अंजना शिवाय सर्व आनंदीत थइ रह्या. कह्युं छे के, " जे मानी पुरुष छे तेने थोडुं पण अपमान थाय तोपण ते कदी भुलता नथी. " पवनंजये द्वेष राखी अंजना साथे बोलवानुं बंध कर्युं तेथी तेणी महा शोकसागरमां पडी गइ. तेनी आंखोमांथी पाणी तो सुकायज नहीं, चंद्र विनानी रातनी पेठे तेना मुखनी कांति थवा लागी, पलंग उपर सुती छतां ऊंघ आवे नहीं, अने मनमां संताप थवाथी आमतेम पडीने जेम तेम रात काढवा लागी. ते जाणे एक रात वर्ष रुप थइनेज आवी होयनी ! एवी जणाववा लागी. दिवसे मनमां विचार करती बेठी, चरण वच्चे माथुं घालीने पतिना चहेरानुं चित्र काढी, तेनी सामे जोइ तेणीए धैर्य धरी केटलाएक दिवस काढ्या. एवी तेनी अवस्था जोइ तेनी दासीओ अति मधुर वचनो बोली तने समजावती, तोपण हेमंतऋतुमां भुले चुके पण कोकीला बोले नहीं तेम ते मौन धरी कांइ पण जवाब वाळती नहीं. एवी महादुखनी दशामां तेनो त्रिकाळ काळ जवा लाग्यो.

रावणे प्रल्हादनी मांगेली साह्य.

एक दीवस प्रल्हादराजानी पासे रावणे मोकलेलो दुत आवीने कहेवा लाग्यो के, हे राजा ! दुर्मति वरुण, राक्षसनाथ रावणनी आज्ञा नहीं मानता तेनी साथे

हमेशां द्वेष राखी उलटो कहे छे के, रावणे मारी आज्ञा मानवी. हुं ज्यारे तेनी पासे गयो त्यारे ते उद्धताइथी मने कहेवा लाग्यो के, "अरे! रावण ते कोण छे? तेनाथी शुं थवानुं छे? ते इंद्र, ते कुबेर, तेमज ते सहस्रांशु हुं नथी, वळी मने मरुत् पण न समजतो? रखे मने यम जाणतो हो? ते पण हुं नथी! कैलास पर्वतथी पण मने जुदो ज जाणजे! मारुं नाम वरुण छे. देवताओए आपेलां रत्नोनां योगवडे अभिमानी थइ पडेला दुर्बुद्धि रावणना अंगमां गर्व न समातो होय तो ते मारी सामे आवे, के तेनो घणा दहाडानो मातेलो गर्व हुं एक घडीमां उतारुं." इत्यादिक तेनुं बोलवुं में रावण पासे आवीने निवेदन कर्युं. तेथी क्रोधायमान थइ वरुणनी साथे युद्ध करवा सारु रावणे आवी तेना नगरने घेरो घाल्यो. आ वातनी वरुणने खबर पडतांज ते, राजीव तथा पुन्डरीक नामना पोताना वे पुत्रोने साथे लई महा कोपायमान थतो रक्त लोचने नगरथी बहार आवी रावणनी साथे युद्ध करवा लाग्यो. ए दारुण युद्धमां रावणना बनेवी खरदूषणने वरुणना वे पराक्रमी पुत्रो बांधीने लइ गया, त्यारे राक्षसोनुं सर्व सैन्य दशे दिशातरफ नासवा लाग्युं. ते जोइने पोताने कृतार्थ मानीने वरुण पाछो नगरमां गयो. रावणे पोतानुं सैन्य वीखराइ गयेलुं जोइ तेनी सहायता करवा सारु मने आंही मोकल्यो छे; माटे तेने मदद करवाने तमारे चालवुं जोइए.



पवनंजयनुं रावणनी मददे जवुं तथा अंजनासुंदरीनो करेल स्विकार.

दुतनुं बोलवुं सांभळीने रावणने मदद करवा सारु प्रल्हादराजा पोतानुं सैन्य सजीने तैयार थयो. ते वखते तेनो पुत्र पवनंजय बोल्यो के, हे पिताजी! तमारे जवानुं शुं प्रयोजन छे? हुं जइने रावणनो मनोरथ पूर्ण करी आवीश. हुं पण तमारो पुत्र छुं! एवी रीते जेम तेम करी पोताना पिताने समजावीने पवनंजय रावणने मदद करवा सारु त्यांथी निकळ्यो. ते वखते पोतानो पति परदेश जाय छे एवुं सांभळीने तेनी स्त्री अंजनासुंदरी जेम कोइ देवी झडपथी आकाशथी नीचे उतरे तेम माळपरथी नीचे उतरी, पुतळीनी माफक बारणाना थांभलाने अंग टेकीने पतिने जोवानी तथा ते तेणीने आज तो जरुर बोलावशे, एवी इच्छाथी अनमीश नजरे उभी रही. ते वखते तेणी प्रतिपदाना चंद्रमा जेवी तेज रहित देखावा लागी, तथा नेत्रो उपर माथाना केश पडवाथी ते एक विचित्र वेशवाळी जणावा लागी. जेना कपाल उपर कंकु आदिक कांई पण टीलामां आवतुं नहोतुं, तथा जेना होठ उपर तंबोळनी लाली पण जराए देखाती नहोती, जेनी आंखोमांनुं पाणी मुख उपर वही रह्युं हतुं, तथा जे केड उपर हाथ राखीने

उभी रहेली होवाथी तेनी शिथिलतानुं सूचन दर्शावती हती, एवी महा खराब स्थितीथी उभी रहेली अंजनाने पवनंजये दीठी, तेथी ते मनमां कहेवा लाग्यो के, आ स्त्री केवी निर्लज छे? तेनामां बुद्धितो नथीज? पछी भय ते क्यांथी होय? अरे ! एने विषे में प्रथमज जाणी लीधुं हतुं, पण पितानी आज्ञा पाळवा सारु में एनी साथे लग्न कर्युं. पवनंजय पोताता मनमां एवा नष्ट विचार करी रह्यो छे, एटलामां अंजना तेनी पासे आवी, तेना पगमां माथुं धाली, बे हाथ जोडी विनंती करवा लागी के, हे प्राणनाथ, आप सर्व लोकनी साथे बोल्या तथा मळ्या, तथापि मारी साथे लगार पण न बोलवानुं कारण शुं छे? अरे! ते तो रह्युं, पण हवे हुं एक विनंती करुं छुं, ते आप स्वीकारशो, ते ए के, मने कोईपण वखते भुली जशो नहीं; तेमज कार्य करी, जलदी पाछा पधारशो. तमारुं कल्याण थाओ, एवो हुं आशीर्वाद दउंछुं. एवां महा दीनताभरेलां वचनो बोलनारी विचारी निष्पापी अंजनाने कांईपण पत्युत्तर न देतां तेनो अनादर करीने पवनंजय चालतो थयो. अंजना पति वियोगना दुःखथी शोकातुर थइ, पोताना मेहेलमां आवी, धब दइ जमीनपर पडी, पवनंजये त्यांथी निकळीने संध्या समये मानसरोवर उपर जइ मुकाम कर्यो, त्यां तेणे धणीना वियोगथी पीडाती एक चकवीने दीठी; जे पोताना आणेला कमळतंतु खाती नथी, थंडीमां जेने गरमी लागी रही छे, चंद्रमा जेने भडका जेवो जोवामां आवे छे, अने जे करुणामय उंचास्वरे रुदन करी रही छे, एवी ते चकवीनी दुर्दशा जोइने पवनंजय मनमां विचार करवा लाग्यो के, आ चकवी आखो दहाडो तेना धणीनी साथे क्रीडा करे छे. फक्त एक रातनो वियोग थयो, ते एनाथी सहन थतो नथी, तो मारी स्त्रीने में परणवाना दिवसथी तजी दइ बीलकुल बोलावी नथी, तेमज आज निकळती वखते ते मारी पासे आवी तोपण में तेने परस्त्रीनी पेठे अनादर कर्यो, तेथी मारा दुःखरूपी डुंगर तळे दबाइ रहेली विचारी अंजना उपर वियोगरुपी आ बीजो पर्वत में मूक्यो. एटलुं बधुं दुःख ते शी रीते खमी शकशे? मारी सोबतनुं सुख आज दिवस सुधी तेने खबरज नथी. कोण जाणे हवे तेनुं शुं थशे? मारा अविवेकने धिःकार छे, खचित्! हवे ते तपस्विनी मरण पामशे. (जरजरीत नेत्रे आंखमां आंसु आव्यां छे) अरेरे!! विचारी ए निर्दोषी पतिव्रतानो आज दीवस सुधी में जे अनादर कर्यो, ए पापना योगे कोण जाणे मारी केवी गति थशे? इत्यादिक शोक करीने ते सर्व वृत्तांत तेणे पोताना मित्र प्रहसितने कह्यो. कह्युं छे के, "पोतानुं दुःख कहेवाने पात्र मित्र विना बीजो कोई नथी." ते सांभळीने प्रहसिते कह्युं के, हे पवनंजय, तारा वियोगथी तथा तें करेला तिरस्कारथी ते कमळनयनी जरूर आजे मरण पामशे. हे मित्र! हजी पण तेनुं आश्वासन करवाने तुं योग्य छे. त्यां जइ तेनी साथे मधुर भाषण करीने पछी पोता-

नां काम सारु जवुं जोईए. पोताना मनमां हतुं तेवुंज तेना मित्रे कह्युं, तेथी ते तेने साथे लइने पोताने घेर आवी, अंजनाना बारणा आगळ उभो रही प्रथम प्रहसितने तेनी पासे मोकल्यो. ते जइ जुवे छे तो, थोडा पाणीमां जेम माछलुं तरफडे, तेम ते पलंग उपर लोटी रही छे; हेम पड्याथी जेम कमळने पीडा थाय, तेम तेने चंद्रनी कान्तिवडे पीडा थइ रही छे; अंतःकरणमां थएला संतापथी तेना गळाना हारमांना मोती फुटी रह्यां छे; मोटा मोटा श्वासोश्वास लेवाथी जेना माथाना वाळ उडी रह्या छे; विरहथी थएला त्रासने लीधे हाथमांना कंकणोने फोडी रही छे; वसंततिलका जे तेनी सखी ते तेने वारंवार धैर्य दइ रही छे; नेत्रो तथा हृदय जेनां शून्य थइ रह्यां छे; एवी लाकडानी पेठे पलंग उपर पडेली अंजनासुंदरीने खराब स्थितिए पहोंचेली तेणे दीठी. तेमज अंजनसुंदरीए प्रहसितने पण दीठो. तेथी अकस्मात् व्यंतरनी पेठे आ कोण आव्यो ! एम बोली ते कांइक भय पामी. परंतु धैर्य धरी बोली केः—

अरे तुं कोण छे ? अहीं आववानुं कारण शुं ? तुं कोइ परपुरुष छे, छतां आवी अवस्थामां पडेली मने जोवा सारु परस्त्रीने घेर केम आव्यो छुं ? एवुं तेने कहीने तेणे पोतानी सखी वसंततिलकाने कह्युं के, आनो हाथ झालीने एने बहार कहाडी मूक. हुं चंद्र जेवी निर्मळ छतां एने जोवाने योग्य नथी. वळी हे पुरुष ! आ घरमां मारा पति पवनंजय शिवाय बीजा कोइने आववानो अधिकार नथी छतां तुं आव्यो, माटे तुं कोण छे ? ते कहे. त्यारे प्रहसित नमस्कार करी बोल्यो के, आजे हुं मारु मोटुं भाग्य समजुं छुं के, में तने जेमनी तेम जोइ. घणा दिवसथी थएलो पवनंजयनो वियोग एक घडीकमा टळी जइ तमो बंनेनो आनंद सहित समागम थशे. कामदेव अने वसंतऋतुनो जेवो मित्रभाव छे, तेवीज मारे अने पवनंजयने मित्रता छे; तेणे मने आगळथी मोकल्यो छे, अने पोते पाछळथी आ आव्यो एम समज, जेथी अंजना तेने कहेवा लागी के, हे परपुरुष, फोकट मारी मश्करी करीने तुं मने शा सारु पजवे छे, मश्करीनो आ वखत नथी. पण अरे ! तेमां तारो दोष नथी, एतो मारा पूर्व कर्मनाज विपाक छे. जो तेम न होत तो मारो कुलीन पति मने तरछोडतज नहीं. लग्न दिवसथी आज बार वर्ष थयां पतिए मारो परित्याग कर्या छतां हजु सुधी हुं पापिणी आ पृथ्वीपर जीवुं छुं ! आवां तेनां दुःखदायक वचनो बहार उभा रहेला पवनंजये सांभळ्या, जेथी तेनी आंखोमां आंसु आव्यां अने धीरज नहीं धरी शकवाथी ते एकदम उतावळो अंदर गद्गदित कंठे बोल्यो के, हे स्त्री, तुं परमनिर्दोष छतां में मुर्खे लग्नना दिवसथी ते आज पर्यंत तने दोषित गणी तारी उपेक्षा करी. ते केवळ मारी अज्ञानताज छे; तथापि मारा दोषे करी तारी आटली बधी दुर्दशा थइ छतां में तने आज जीवती जोइ ए हुं मारुं पूर्ण

भाग्य समजुं छुं. आवी रीते पोताना पतिने पश्चाताप करतो जोइ अंजनासुंदरी पलंगपरथी हाथ झाली झट उठी. तेने पवनंजय जेम हाथी सुंढवडे लतानुं ग्रहण करे छे, तेम पोताना करकमळे झाली साथे लेई पलंगपर बेठो, अने मधूर वाणीथी कह्युं के, हे मारी प्यारी स्त्री, तुं निरपराधी छतां में क्षुद्रबुद्धिए तने घणुं दुःख दीधुं, तेनी मने क्षमा कर. आवां तेनां प्यारनां वचनो सांभळीने अंजना कहेवा लागी के, हे प्राणप्रिय पति ! आम कहेवुं आपने योग्य नथी. एटलु बोलतां ते अति आनंदमां आवी थकी गमे तेम वर्तवानी इच्छा करवा लाग्याथी प्रहसित तथा वसंततिलका त्यांथी जतां रह्यां, अने पवनंजय तथा अंजनाए एकांतस्थळमां यथेच्छ क्रीडा करतां चार प्रहर रात्री गाळी, ते जाणे एक प्रहरज वित्यो होय एम जणाइ.



पवनंजये अंजनासुंदरीने मेळाप थया संबंधे नीशानी तरीके पोतानी वींटीनुं आपवुं.

सवार थतां पवनंजये अंजनाने कीधुं के, हे प्रिया, आंहीं वधारे वार थवाथी मारा पिताने खबर पडशे माटे हवे हुं जय करवा जवुं छुं. आजथी तुं तारा मनमां रंचमात्र खेद न करतां तारी सखी सहित सुखरुप रहेजे; रावणनुं काम करी हुं जलदी पाछो आवीश. ते सांभळी अंजना बोली के हे स्वामिन् ! आपना बाहुबळथी ए काम सिद्धज छे, परंतु जो मारा जीवनी खप करता हो तो जेम बने तेम जलदीज पाछा पधारजो, केमके आजे में ऋतुस्नान करेलुं होवाथी जो मने गर्भ रह्यो तो दुष्ट लोको मारा उपर दोषारोपण करशे; तो पछी मारी शी वले थशे ? पवनंजये दुष्ट लोकोने खोटो अपवाद पण मूकवानी जगा न जडे माटे जलदीज आववानुं जणावी, आजे आंहीं आव्यानी निशानी तरीके पोताना नामनी वींटी तेने आपीने कह्युं के, ज्यारे काम पडे त्यारे बतावजे. एवी रीते अंजनाने समजावी पवनंजय पोताना मित्र सहित मानस सरोवर उपर गयो. त्यांथी आकाश मार्गे पोताना सर्व सैन्य सहित लंकानगरीमां जइ तेणे रावणने नमस्कार कर्यो, एटले तरुण सूर्य जेवी कांति सहित रावण पोताना सैन्य सहित पवनंजयने साथे लेइने पातालमां वरुणनी नगरी पासे आव्यो.



अंजनासुंदरी उपर मुकवामां आवेल आरोप तथा तेने पीयर विदाय करवुं.



आंही तेज दिवसे अंजनाए गर्भ धारण कर्यो. तेना प्रतापथी तेना सर्व अवयवो शोभायमान देखावा लाग्या, मुख तथा गाल लाल थवा लाग्या, स्तनोना मुखनो रंग काळो थवा लाग्यो, गति अत्यंत मंद थइ, नेत्र स्वच्छ निर्मळ थयां तेमज तेना शरीर उपर बीजां पण केटलाएक गर्भनां चिन्हो देखावा लाग्यां. ते जोइने तेनी सासू केतुमति तेने धिःक्कारीने कहेवा लागी के, हे अंजना! बंने कुळने कलंक करनारुं तें आ केवुं आचरण कर्युं छे? हे पापिणी, तारो पति देशांतरे गयो छतां तुं केम गर्भवती थइ छुं? मारा पुत्रे तने आज दिवस सुधी तरछोडी मूकी छे ते तारो दोष जोइनेज मूकी छे, तेनो दोष बीलकुल नथी. तुं आवी दुश्चारिणी छुं ते अमे आज दिवस सुधी जाण्युं नहोतुं. एवी रीते सासूना वाग्बाणथी अपमान पामेली अंजनाए विचार करीने पोतानी पासे पोतानो पति आव्यानी निशानी माटे जे वींटी तेने आपी हती, ते तेणे सासूने बतावी. ते जोतांज तेनी खातरी थइ अने ते लजवाइ, छतां ते कळवा न देतां बोली के, हे पापिणी, जेणे आज दिवस सुधी तारुं नाम पण लीधुं नथी तेनी साथे तारो संयोग केम थयो? आ निशानी बतावीने अमने फसावे छे के शुं? जे तारा जेवी व्यभिचारिणी स्त्रीओ होय छे तेओ एवी फसाववानी युक्तिओ घणी याद राखे छे. हवे तुं मारा घरमांथी हमणांज निकळी तारुं दिल चाहे त्यां जा. तारा बापने घेर जइ रहे, अमारुं घर तने रहेवा योग्य नथी. एवी रीते तेनो तिरस्कार करीने ते राक्षसी जेवी निर्दय सासूए तेने तेना बापने घेर पहोंचाडी आववानो सेवकोने हुकम कर्यो. सेवकोए अंजनाने तेनी दासी वसंततिलका सहित रथमां बेसाडी माहेंद्र राजाना नगर समीपे लावी उतारी मूकी. ते वखते ते विचारी अनाथ अबळाओने जे दुःख थयुं ते सेवकोथी जोइ खमायुं नहीं, तेथी तेमनी आंखोमां पाणी भराइ आव्युं, पण ते विचारा शुं करे. चाकरे धणीना हुकम प्रमाणे चालवुंज जोइए. निरुपाये सेवको अंजनानी क्षमा मांगी तेने नमस्कार करी त्यां मूकी पाछा फर्या.

एवा प्रसंगे संध्या समय थवा आव्यो, ते जाणे अंजनासुंदरी महा दुःखरूप समुद्रमां डूबी थकी डचकां खावा लागी ते जोवाइ न शकवाथीज सूर्य आथमी गयो होयनी! केमके, "साधुथी साधुनी विपत्ति जोवाती नथी." पछी रात्र पडी एटले त्यां आगळ महा भयानक घुवड, कोल्हा, वृक विगेरे घणा पशुओनी बूमो संभळावा लागी. वळी जेम राक्षसोनी चींचीआरी थती होय तेम कान फूटी जाय तेवा व्याघ्रोना

शब्दो सांभळवामां आव्या. एवा शब्दो सांभळती भयभीत थइ थकी अंजनाए जेम तेम महा दुःखे करी ते रात त्यां कहाडी. प्रातःकाळे उठीने लजवाती लजवाती भीखारणीनी पेठे ते पोतानी सखी सहीत पोताना बापना घर आगळ आवीने उभी रही.

—∞:::∞—

अंजनासुंदरीने तिरस्कारयुक्त तेना पितानुं कहाडी मुकवुं.

त्यांना द्वारपाळोए तेनी आवी अवस्था निहाळीने तेनी खबर जलदीथी जइने राजाने कही. राजा तेनो वृत्तांत सांभळी लज्जा पामी नीचुं मुख घाली मनमां विचार करवा लाग्यो के, स्त्रीओनां चरित्रो अचिंत्य छे, अरे ! कुळने कलंक लगाड नारी व्यभिचारिणी अंजना मारे घेर आवी, तेथी मारा कुळने कलंक लाग्युं. जेम सफेत वस्त्र उपर लगारेक काजळ लाग्या ते कपडुं दूषित थाय छे, तेम एणे मारा कुळने दूषण लगाडयुं. एवो चिंताग्रस्त उतरी गयेलो राजानो चहेरो जोइने तेनो पुत्र प्रसन्नकीर्ति कांइपण विचार न करतां बोली उठयो के, एने जलदी आंहींथी काढी मूको, एणे आपणा कुळने कलंक लगाडयुं. जे आंगळीए साप डश्यो होय ते आंगळी शुं बुद्धिवान लोको कापी नथी नांखतां ? पुत्रनां आवां वचनो सांभळतां राजाने महा उद्वेगमां पडेलो जोइ त्यां बेठेलो महोत्साह नामे मंत्री तेने कहेवा लाग्यो के, राजा, सासूथी दुःखित थएली कन्याने पिताना घर शिवाय बीजुं कोईपण शरण नथी. एनी सासू केतुमती घणी खराब छे, ए विचारी निरपराधी छतां कांईपण अपराधारोपण करीने एने कडाडी मूकेली जणाय छे. ज्यां सुधी एना दोषनी बराबर खबर पडे त्यां सुधी एने छानी रीते आपणां घरमां राखवी जोईये. एवुं मंत्रीनुं बोलवुं सांभळीने राजा बोल्यो के, हे मंत्रि; तारी वात साची छे, ठेकाणे ठेकाणे सासूओ तो एवीज होय छे, तो पण आ कन्याना चिन्हो उपरथी जणाय छे के, ए एनीज तकसीर होवी जोईए. हमणां जो हुं एने मारा घरमां राखुं तो एनो पति एना पण उपर वधारे क्रोधायमान थशे अने आपणी साथे द्वेष राखशे. एना पति पासेथीज एणे गर्भ धारण कर्यो छे, एवुं शा उपरथी जाणीये ? माटे मारा धारवा प्रमाणे सर्वथा ए कन्या तकसीरवार छे; केमके, ते शिवाय सासू वहुने आवा समये कहाडी मूके नहीं, माटे एने आंहींथी जलदी कहाडी मूकवी जोइए. घणुं दुःख जोवा करतां एकज दुःख जोवुं ते सारुं छे. राजाना मुखमांथी आवा उद्गारो निकळतांज द्वारपाळोए अंजनाने त्यांथी कहाडी मूकी.

———

अंजनानुं चाली निकळवुं, शोक तथा अमीतगति मुनिनुं मळवुं.

:o:

ए प्रसंगे ते विचारी निरपराधी नारीने एटलुं वधुं दुःख थयुं के ते नगरना लोको ते जोई न शकवाथी पोते बहु रुदन करवा लाग्या. ए उपरथी अंजनासुंदरीना संतापना मापनो अनुभव बुद्धिमाने करी लेवो. जे वखते ते रस्तेथी चालवा लागी ते वखतनी तेनी स्थिति जोईने लोको कर्मनी गतिने याद करवा लाग्या. वळी जेनुं चित्त डोळाई गयुं छे, जे भूख अने तरसथी लेवाई गई छे, थाक लागवाथी जे दीन जेवी देखाय छे, नासिकामांथी जे मोटा मोटा श्वासोश्वास नांखे छे, जेनी आंखोमांथी आंसुनो प्रवाह चाली रह्यो छे, पगमां कांटा वागवाथी लोहीनी धारा वही रही छे, चालती वखते पगले पगले अटकी जाय छे तथा दरेक झाडनी नीचे जे विसामो खाय छे, एवी अंजनानी बूरी दशा देखीने तथा तेने सखी साहित पगे चालती जोइने जाणे दश दिशा रडती होयनी! एवी देखावा लागी. वळी ते जे जे गाममां जाय त्यांथी तेने राजाना सिपाइओ काढी मूके; तेथी ते निराश थइ विचार करवा लागी के, आ पृथ्वी पर मारे रहेवानुं कोइपण ठेकाणुं नथी. पछी ते एक महा भयंकर वनमां पर्वत उपर जइ झाडनी नीचे बेसीने विलाप करवा लागी. मारा कर्म! तारुं में एटलुं वधुं शुं बगाड्युं हतुं के जेथी तुं आज मारो शत्रु थइ पड्यो छे ? ओ मारा पिता ! तमोए पण विचार कर्या विना मने काढी मूकीने महा दुःखरुप दंड कर्यो के? शास्त्रमां तो प्रथम अपराध जोइने पछी दंड करवानुं कह्युं छे. हे केतुमति सासू ! तारा कुळने कलंकथी बचाववा तें मने घरमांथी काढी, एम कर्या विना जरुर कलंक लागत के ? वळी मारा बापे मारा सासरा साथे स्नेह तूटी द्वेष थवानो भय विचारी मारो तिरस्कार करी पोतानी पासे मने न राखी; ए बधो मारा प्रारब्धनो दोष छे. जे स्त्री सासूथी दुःख पामे छे तेने माता विना बीजुं कोइपण धैर्य देनारुं नथी. दीकरी उपर मातानी घणी ममता होय छे, एवो स्वभाविक नियम छतां पण मारी माता तो सर्वथी दुश्मन थइ! अरे! मने चार मीठां वचनोथी तो समजाववी हती. खरे, पिताथी पण अरे माता तुं घणी निर्दय थइ! हे भाई! तारा उपर हुं शो दोष मुकूं? केमके पिता हयात छतां पुत्र उपर शो रोष? हे मारा प्राणप्रिय पति! तुं तो केवळ निर्दोषी छुं, केमके तने ए वातनी कंई पण खबर नथी अने तुं दूर छुं. माटे तारा उपरतो कांईपण धोखो रखाय नहीं. परंतु एटलुं तो खरुं के मारा पूर्व जन्मना माठां कर्मना विपाके करी आ समये तारा शिवाय सर्व परिवार मारा शत्रुरुपे थयां छे. (आंखमांथी अखंड आंसुनी धारा पडती छतां देवने याद करे छे.) हे कर्म! जळ विना माछली न जीवे तेम पति विना स्त्री एक घडी पण जीवती रहेवी न जोईए; तेम छतां मने अभागणीने आटला दश-

डा सुधी तें केम जीवती राखी? अद्यापि मने केम मोत आवतुं नथी? मारा जेवी भाग्यहिन स्त्री आ पृथ्वीपर बीजी कोई पण नहीं होय. जगतमां जेटलां हीनकर्मी प्राणीओ छे, ते सघळांमां मने मुकुटमणि रूप गणीए तो चाले. इत्यादिक ते एवा विलापो करवा लागी के, जाणे घडीकमां प्राण मूकी देशे. ते वखते तेनी सखी वसंततिलका तेने धैर्य दई कहेवा लागी के, हे स्वामिनि! सारां अथवा नरसां कर्म जे उदये आव्यां होय, ते भोगव्या विना छूटको नथी. शोक कर्याथी कांइ दुःखनी निवृत्ति थनार नथी. एवी रीते समजावीने तेने लई आगळ चालती थई. केटलेक दूर गया पछी एक गुफा तेमना दीठामां आवी. तेमां तेओए एक अमीतगति नामना मुनिने ध्यानमा बेठेलो जोई तेने नमस्कार करीने तेना सामे आवी बन्ने जणीओ बेठी. केटलीक वारे साधुए समाधी उतारी त्यारे तेनी सामे बेठेली दुःखनी मारी बे अबळाओ तेना जोवामां आवी; तेथी तेणे पोताना बे हस्त ऊंचा करी तेओने धर्मलाभ रूप आशिष दीधी. त्यारे वसंततिलकाए भक्ति सहित नमस्कार करीने तेने अथेति सुधी अंजनानो हेवाल कही संभळाव्यो, अने पूछयुं के, आना गर्भमां कोण आव्यो छे? आनी आवी अवस्था थवानुं कारण शुं? अने ए कया कर्मथी आवी दुःखी थई छे? ते कृपा करी जणावशो. तेना उत्तरमां मुनिए जणाव्युं केः—

अंजनासुंदरी तथा तेना गर्भ (हनुमन)नो पूर्वभवनो वृत्तांत तथा तेनुं श्राविका थवुं.

आ जंबुद्वीपमांना भरतक्षेत्रमां मंदर नामना नगरमां प्रियनंदी नामनी वाणीआनी स्त्री जयाने पेटे प्रियंदम नामनो सर्व इंद्रीओने जीतवावाळो पुत्र जन्म्यो हतो. ते एक दिवस क्रीढा निमित्ते वनमां गयो हतो, त्यां स्वाध्याय ध्यानमां बेठेला निर्मळ बुद्धिना केटलाएक साधुओ तेना जोवामां आव्या. तेमनी पासे जइने तेणे धर्मदेशना सांभळी, तेथी तेने भाव उत्पन्न थवाथी सम्यक्त्वादिक गुणोने धारण करी, मुनिओने निदान आपी, संयमी थइ, आयुष्य पूर्ण थये काळ करी, इशान देवलोकमां देव थयो. त्यांथी चवीने मृगांक नगरमां हरिश्चंद्र राजानी स्त्री प्रियंगुलक्ष्मीने पेटे सिंहचंद्र नामे पुत्र थयो. त्यांथी काळकरी श्री विमळनाथ स्वामीना तीर्थमां वैताढ्य पर्वत उपर अरुण नामना नगरमां सुकंठ राजानी स्त्री कनकोदरीने पेटे सिंहवाहन नामे पुत्र थयो. ते केटलोक काळ राज्य करी लक्ष्मीधर नामना मुनि पासे दीक्षा लेई, उग्र तप तपी, काळ करी लांतक नामना देवलोकमां देवपणे उपन्यो. त्यांथी चवीने आ तारी बाइ अंजनाना उदरमां आव्यो छे. ए बाळक महा गुणवान, सर्व विद्याधरोनो स्वामी, मोक्षगामी, तेमज सर्व पाप रहित छे."

"कनकपुर नगरना राजा कनकरथने कनकोदरी. तथा लक्ष्मीवती नामनी बे राणीओ हती. तेमां लक्ष्मीवती श्राविका होवाथी ते पोताना घरमां रत्नना जिनबिंब स्थापीने तेनी सवार सांज वंदन, पूजन, नमस्कारादि भक्ति करती हती. एक वखत तेनी शोकय कनकोदरीए द्वेष बुद्धिए करी ते अर्हत् भगवाननी प्रतिमाने कोई न जाणे एवी रीते लेइ जइ, अपवित्र कचरामां दाटी. ते जयश्री नामे साध्वीए फरतां फरतां त्यां आवी पहोंचवाथी दीठी. तेथी तेणीए धिःकारीने कह्युं के, अरे! अभागिणी, आ तें शुं कर्युं? साक्षात् अर्हत् भगवाननी प्रतिमाने आ अपवित्र कचरामां दाटतां तारा हाथ केम न भांग्या? आवा घोर कर्म करी तुं अनेक भव भटकवाने पात्र थई. एवां ते साध्वीनां हितशिक्षानां वचनो सांभळीने तेने घणो पश्चाताप थवाथी तेणे ते प्रतिमाने त्यांथी कहाडी, निर्मळ जळवडे नवरावी स्वच्छ करीने घणे प्रकारे तेनी स्तुति करती थकी ज्यांथी लावी हती त्यां जइ पाछी पधरावी. अने तेज दिवसथी ते जैनधर्म अंगीकार करी सम्यक्त्वनो आश्रय स्वीकारी श्राविका थइ; पछी केटलेक काळे आयु पूर्ण थये त्यांथी काळ करी सौधर्म नामना देवलोकमां देवी पणे उपनी. त्यांथी काळ करी चवीने माहेंद्र राजानी कन्या अंजना नामे आ तारी सखी थइ. एणे उपर जणाव्या प्रमाणे जिनेश्वर भगवाननी प्रतिमानी आशातना करी हती, ते घोर कर्मनुं फळ आ वखते उदय आव्युं छे; तेमज ते मारुं कर्म करती वखते तें एने मदद करी हती, तेथी तुं पण एनी साथे दुःख देखे छे. ते कर्म भोगव्या विना छुटकोज नथी, जेमांनुं हाल सुधीमां घणुं भोगवाइ गयुं छे, अने थोडुं भोगववानुं बाकी रहुं छे. आजथी तमे जैनधर्म अंगीकार करो, जेथी दरेक भवमां शुभ कर्मनी प्राप्ति थशे, अने आ भवमां पण हवे तमारे चिंता करवी नहीं. ए बाइनो मामो आंहीं आवीने एने पोताना घेर तेडी जशे अने त्यारपछी थोडाक दिवसमां एनो पति पण एने मळशे." ए प्रमाणे अमीतगति मुनि अंजना अने तेनी सखी वसंततिलकाने कही तथा तेओने जैनधर्म अंगीकार करावीने आकाश मार्गे जता रह्या.

अंजनासुंदरीने पुत्र (हनुमान) नो प्रसव तथा तेना मामानो मेळाप.

त्यारपछी ज्यां ते बिचारी अबळाओ बेठी हती त्यां तेमनी सामे एक मोटो विकाळ, पृथ्वी उपर पूंछडुं पछाडवाथी जाणे जमीनने फाडतो होयनी एवो, मुखमांथी पाडता बराडाथी जाणे दशे दिशा भराइ जती होयनी एवो, कोइ हाथीने मारीने तेनुं लोही पी आव्याथी जेना मुख उपरना लाल छांटा हजी गया नथी एवो, जेना बंने नेत्रो जाणे दीपकना तेजने जीती आव्या होयनी एवो, वज्रकंदना

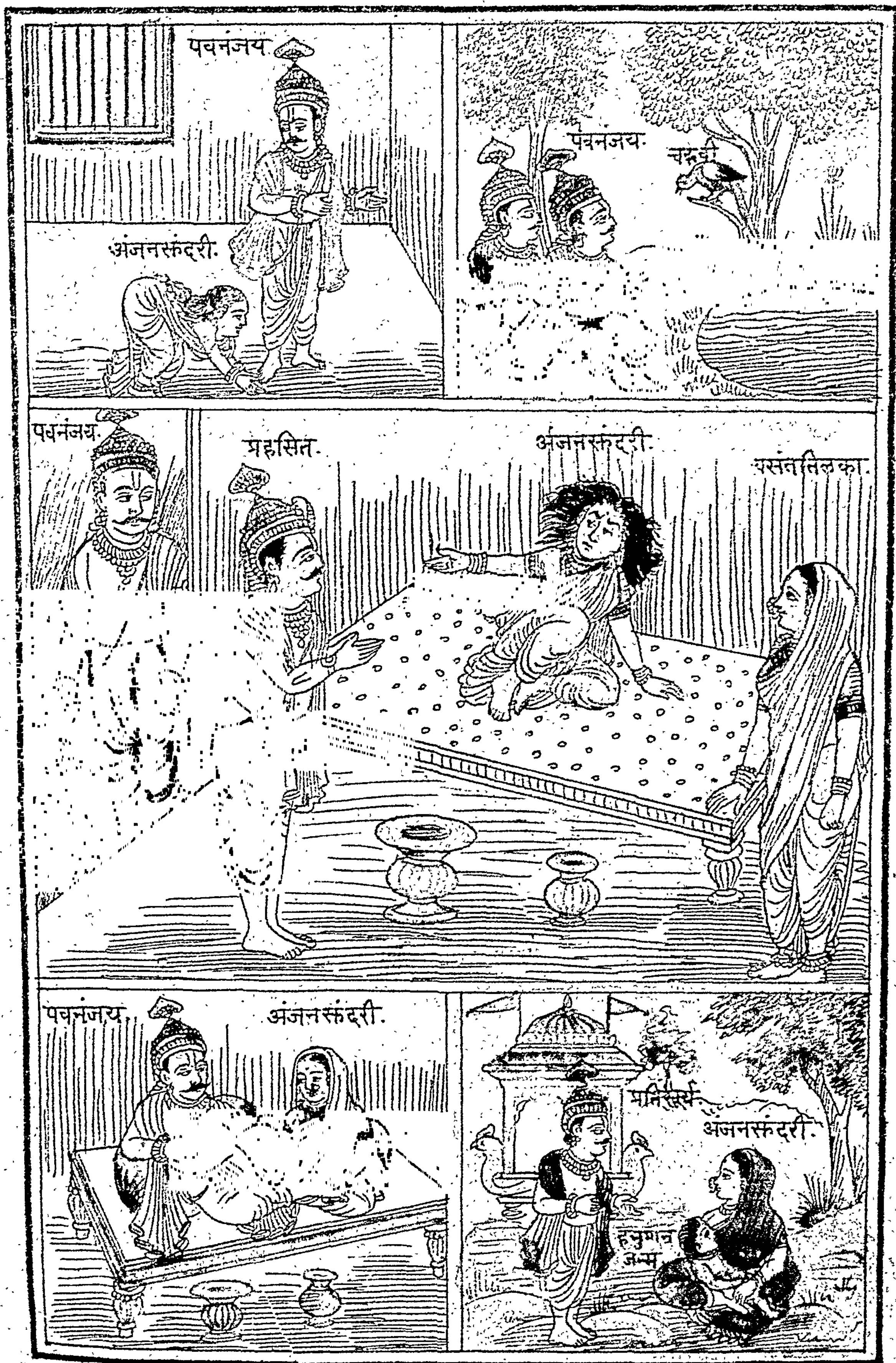
जेवी जेनी दाढो छे एवो, कर्वतना जेवा जेना दांत छे एवो, गळाना पाछला भागना वाळ जाणे अग्निमय होयनी एवो, जेना नखो लोढाना बनावेला होय एवो तथा जेनुं हृदय पत्थरने पण लज्जायमान करतुं होय एवो महा भयंकर रुपवाळो सिंह आवतो देखीने तेओ भयनी मारी कांपवा लागी. तेओ बंने एवी तो बीनी के जाणे जमीनमां ज पेसती होयनी! ते वखतने हरिणीए सिंहने दीठानी वखतनी उपमा योग्य छे. ते प्रसंगे त्यांनी गुफाना स्वामी मणिचूल गंधर्वे आवीने अष्टापद पशुनुं रुप धारण करीने ते सिंहने मार्यो. पछी ते अबळाओने दीलासो देवा सारु पोताना मूळ रुपे थइ श्री अर्हत् भगवानना गुणोनी स्तुति करवा लाग्यो. मणिचूले धैर्य देवाथी अंजनासुंदरीए सखी सहित त्यां रही श्री मुनिसुव्रत स्वामीनी प्रतिमानी स्थापना करी. ते तेनी पूजा भक्ति करवा लागी, एम करतां केटलोक काळ व्यतीत थया पछी पूर्ण मास थये चैत्र वद ८ रविवारने दिवसे अंजनासुंदरीए, सिंहण जेम सिंहने जन्म आपे, तेम वज्र, अंकुश तथा चक्रादिक चिन्हे चिन्हित पगवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. ते वखते तेनुं प्रसूत कर्म तेनी सखी वसंततिलकाए कर्युं.

ते पुत्रनुं महा तेजस्वी मुख निहाळीने अंजनासुंदरी महा दुःख धरती तेने पोताना खोळामां लेइने बोलवा लागी, ते वखते तेनी आंखो आंसुथी भराइ आवी, ते जाणे पोताना दुःखनुं सूचनज ते बाळकने करती होयनी! वळी ते एवा करुणाजनक स्वरथी रडवा लागी के, तेनुं रुदन ते गुफाथी सहन न थवाने लीधे ते गुफाज जाणे रडती होयनी! एवो *भास थयो.

आ वखते तेनी एवी तो स्थिति थइ के, तेना कंठमांथी अवाज पण निकळी शकतो नहोतो तोपण ते पोताना पुत्रनी सामे जोइने तेने कहेवा लागी के, "हे महात्मन्, हे मारा प्रिय पुत्र, तुं महा प्रारब्धवान छतां मज अभाग्यणी स्त्रीना उदरमां आव्याथी ज्यां कोइ मनुष्य प्राणीनुं नामज न मळे एवा महा भयंकर वनमां में तने जन्म आप्यो. अरे! जेना जन्म वखते चक्रवर्ती जेवो महोत्सव करवो जोइए, तेनी आजे एक भीखारी जेवी दुर्दशा छे! हे मारा प्राणप्रिय पुत्र, तारो जन्म महोत्सव हुं शावडे करुं? एटलुं बोली मोटेथी रुदन करवा मांडे छे, एटलामां तेमनी पासे एक प्रतिसूर्य नामनो विद्याधर आव्यो, अने अति मधुर वाणीवडे तेओने तेमना दुःखनुं कारण पूछवा लाग्यो; जेथी वसंततिलकाए कांइक रुदन रोकीने तेने अंजनासुंदरीना लग्न दिवसथी ते पुत्र जन्म सुधीनो सर्व वृत्तांत निवेदन कर्यो. तेनी हकीकत सांभळतां सांभळतां प्रतिसूर्यनी आंखोमां पाणी भरावा लाग्युं अने आखरे ते सांभळवुं

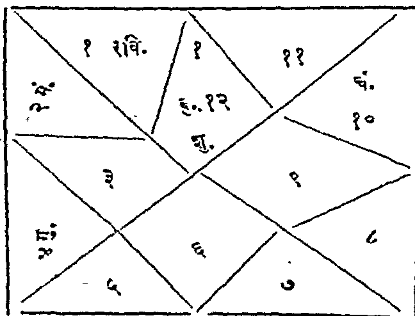
---

* आ उत्प्रेक्षा देवालयो अने गुफा आदिकमां प्रतिध्वनि थाय छे तेने अनुसारे ग्रंथ कर्त्ताए मूकी छे.


पवनंजय.
अंजनसुंदरी.
पवनंजय.
पवनंजय.
प्रहसित.
अंजनसुंदरी.
वसंततिलका.
पवनंजय.
अंजनसुंदरी.
अंजनसुंदरी.
हनुमान जन्म

सहन न थइ शकवाथी रडी पड्यो. थोडी वारे कांइक विचार करीने ते बोल्यो के, हे दुःखरुपी समुद्रमां बुडेली बाइओ ! हुं कोण छुं, ते तमे जाणता नथी. हनुपुरनो राजा चित्रभानुनी स्त्री सुंदरीमालाने उदरे उत्पन्न थयेलो हुं प्रतिसूर्य नामे विद्याधर छुं. (वसंततिलकाना सामे जोइने) आ तारी अंजना सखीनी मातानो हुं मानसवेग नामनो भाइछुं. आवा समये एने में आज दीठी तेथी हुं मारुं मोटुं भाग्य समजुं छुं. दैवयोगे आ वखते जो हुं आंही आव्यो न होततो आ बिचारी रांकडीनी शी वले थात ! एम बोली तेणे घणो दिलासो दीधो. अंजनासुंदरी शुद्धिमां आवी, अने आ मारो मामो छे एम जाण्युं तेथी ते प्रथमना करतां पण विशेष रडवा लागी, केमके एवो स्वभाविक नियम छे के, दुःखनी वखते पोतानो हेतु मळवाथी दुःखनुं पुनः स्मरण थाय छे. तेना मामाए तेने धीरज देइ छानी राखी अने तेनी साथे आवेला कोइ निमित्तिआने ते बाळकना जन्म लग्न विशे पूछ्युं. निमित्तिआए नीचे मुजब जन्म कुंडळी कहाडी कह्युं के,

हनुमाननी जन्म कुंडळी.



आज चैत्र वद ८ ने दिवसनो स्वामी सूर्य छे, श्रवण नक्षत्र छे, मेष लग्नो सूर्य उच्च भवने, मकरनो चंद्र मध्य भवने, वृषभ राशीनो मंगळ मध्य भवने, मीननो बुध मध्य भवने, कर्कनो गुरु त्रिकोण उच्च स्थानके, मीननो शुक्र उच्च स्थानके, तेमज शनी पण एज स्थानके छे, मीन लग्न अने ब्रह्म योग छे, ए बधा घणा शुभकारक छे. आ बाळक मोटो पृथ्वीपति अने महा धर्मात्मा थशे. वळी ते आज भवमां मोक्षे जशे. निमित्तिआए आ प्रमाणे तेनुं भविष्य अति उत्तम बताव्याथी प्रतिसूर्य विगेरे सर्वे घणा खुशी थया.

अंजनासुंदरीनुं प्रतिसूर्य साथे बाळक सहित जवुं, बाळकनुं विमानमांथी पर्वतपर पडवुं तथा तेनुं हनुमान नाम पाडवुं.

—०—०:०:०—०—

पछी ते पोतानी भाणेजी अंजनासुंदरीने तेना बाळक तथा सखी सहित पोताना विमानमां बेसाडीने त्यांथी पोताना नगर तरफ जवा माटे नीकळ्यो, आकाश मार्गे चालतां ते विमानने रत्नोनी घुघरीओ बांधेली हती, तेनी राती कान्ति जमीन उपर तथा विमाननी आसपास पडवा लागी, ते जोइने ए बाळक एने लेवा सारु उतावळो थयो, तेथी ते तेनी माता अंजनासुंदरीना खोळामांथी उछळीने एक शिखरना पर्वत उपर जइ पड्यो. ते जाणे आकाशमांथी वज्र पड्यो होयनी ! पर्वत उपर एना पडवाथी पथ्थरना ककडे ककडा थइ गया. अंजनासुंदरी बाळक नीचे पडी जवाथी घाड स्वरे रुदन करती छाती कूटवा लागी. प्रतिसूर्य बाळकने लेवा माटे विमानमांथी नीचे उतरी पर्वत उपर गयो, तो त्यां ते बाळकने कांइ पण वाग्या वगरनो जमनो तेम त्यां पडेलो दीठो. त्यांथी तेने ऊंचकी लइने विमानमां आवी अंजनासुंदरीने आप्यो तेथी ते घणी खुशी थइ. पछी विमानने पवन वेगे चलावी ते पोताना हनु नामना नगरमां आव्यो अने बाळक सहित पोतानी भाणेजीने नीचे उतारी. ते वखते ते जाणे के कोइ कुळदेवी होयनी ! एवी देखावा लागी. पछी तेनी मामीए आवी तेने घरमां तेडी जइने तेनो सारी रीते आदर सत्कार कर्यो. जन्म्या पछी तरतज प्रथम ए बाळक हनुपुरमां आव्यो तेथी तेनी माताए एनुं नाम हनुमान पाड्युं, तथा विमानमांथी पडतां शैलने तोड्यो, तेथी तेनुं बीजुं नाम श्रीशैल राख्युं. दिवसे दिवसे ते बाळक मोटो थतो हनुपुरमां जेम मानसरोवरना कमली वनमां राजहंसना बाळको क्रीडा करे तेम यथेच्छ क्रीडा करवा लाग्यो. अंजनासुंदरी हमेशां तेना उपर तेनी सासूए मूकेलो दोष क्यारे निवारण थशे, एवो विचार करती त्यां दिवस निर्गमन करवा लागी.

—०—०:०:०—०—

पवनंजयनुं अंजनासुंदरीनी शोध माटे नीकळवुं तथा अग्निमां प्रवेश करवानुं पण लेवुं विगेरे.

रावणनी मददे पवनंजय गयो हतो, तेणे वरुणनी साथे सलाह करीने तेनी पासेथी खरदूषणने छोडावीने रावणने राजी कर्यो. पछी तेने लंकामां पहोंचतो करीने तेनी आज्ञा लई ते पोताना नगरमां आव्यो. पोताना माता पिता विगेरेने नमस्कार करीने तथा वरुण साथे सलाह करावी खरदूषणने छोडावी

रावणने राजी कर्यानी सर्व हकीकत निवेदन करीने ते अंजनाना महेलमां आव्यो. त्यां तेने कांति रहित चंद्रमानी पेठे तेनुं घर निस्तेज मालम पड्युं, तेथी ते शोकातुर थयो. एटलामां त्यां आगळ एक स्त्री तेनी नजरे पडी. तेथी तेने पूछवा लाग्यो के, हे स्त्री, जेनी मुखमुद्रा जोवाथी मनने आनंद थाय अने जेनुं दर्शन नेत्रोने अमृततुल्य लागे, एवी मारी अंजना क्यां गई? स्त्रीए जणाव्युं के, हे पवनंजय, तारा गया पछी केटलेक दिवसे अंजना गर्भवती थइ छे एवुं मालम पडवाथी तारी माताए तेने दूषण दई कहाडी मूकवाथी पापरूपी तारा सेवको तेने विमानमां बेसाडी लई जई तारा ससराना माहेंद्र नगरनी भागोळे मूकी आव्या.–एवुं सांभळतांज ते स्त्रीनी शोध करवा सारु कबुतरनी पेठे वायु वेगे माहेंद्र नगरमां गयो. त्यां तपास करतां तेने स्त्रीनो पत्तो मळ्यो नहीं, तेथी कोई एक स्त्रीने पूछयुं के, मारी अंजना अहीं आवी हती के नहीं? तेणीए कह्युं के, ते पोतानी सखी सहित अहीं आवी हती, परंतु तेना दुःशीलपणाने लीधे तेना पिताए तेने कहाडी मूकी. ए शब्दो एने वज्राघात जेवा लाग्या. पछी त्यांथी नीकळी ते तेनी शोध करवा सारु पोताना प्रहसित मित्रने साथे लई पर्वतो तथा वनोमां फरवा लाग्यो, तथापि कांइपण पत्तो मळ्यो नहीं. तेथी ते शापवडे भ्रष्ट थएला देवतानी पेठे खेद पामीने प्रहसितने कहेवा लाग्यो के, अंजनानी में आटली बधी शोध करी तोपण हजु सुधी तेनो कांइ पत्तो मालम पडतो नथी. छतां पण हजु तेनी केटलेक स्थळे शोध करवानी मारा मनमां उत्कंठा छे, ते मुजब शोध करतां छतां पण जो ते मने नहीं मळे तो हुं अग्निमां प्रवेश करीश. आ वृत्तांत तुं मारा माता पिताने कहेजे. एम कही तेणे प्रहसितने विदाय कर्यो. तेणे आदित्यपुरमां जइने तेना पिता प्रल्हाद तथा तेनी माता केतुमतिने पवनंजयनी सर्व हकीकत जणावी. ते सांभळीने तत्काळ मूर्छा पामी जमीन उपर पडी. दासी वर्ग विगेरेए उपचार करवाथी केटलीक वखते ते कांईक शुद्धिमां आवी बोलवा लागी.

पवनंजय चीतामां पडवा करतो साहस, तेना पितानुं मळवुं विगेरे.

हे प्रहसित, अग्निमां प्रवेश करवानो पवनंजये पाको निश्चय कर्यो छे के? त्यारे तुं ए तारा परम प्रिय मित्रने एवी स्थितिमां एकलो वनमां मूकीने अहीं शा सारु आव्यो! अरे! एमां बीजा कोईनो दोष नथी. ए विपरीत कार्यनुं कारण हुंज अभागणी छुं. में पापिणीए विचारी निर्दोषी वहुने विना प्रयोजने कहाडी मूकी, तेथीज आ खोटा परिणामना चिन्हो दीठामां आवे छे. वे [illegible] उपर में खोटो दोपारोपण कर्यो, तेनुंज मने आ फळ मळे छे. कहुं [illegible] ळ भावे पुन्य

अथवा पाप कर्युं होय तेनुं फळ तत्काळ प्राप्त थाय छे." एवी रीते विलाप करती केतुमति मोटेथी रुदन करवा लागी. प्रल्हाद राजाए तेने नाना प्रकारे समजावी छानी राखी, पुत्र तथा पुत्रवधूनी शोध करवा सारु देशोदेश दुतो मोकल्या; तेमज पोते पण सैन्य लेई निकळ्यो. ते केटलेक दिवसे फरतां फरतां भूतवन नामना वनमां जई पहोंच्यो. त्यां तेणे पोताना पुत्र पवनंजयने चिता रची तेनी आगळ उभो रही, नीचे मुजब बोलतो सांभळ्यो. "हे वन देवताओ, विद्याधरेंद्र प्रल्हाद तथा केतुमतिनो हुं पुत्र छुं; अंजना नामनी मारी पतिव्रता स्त्री निर्दोषी छतां तेने में कुबुद्धिए लग्न दिवसथी त्याग करी घणुं दुःख दीधुं. केटलाक काळ पछी में कर्मानुयोगे रावणना काम माटे जवा सारु घेरथी निकळतां तेनो तिरस्कार करी प्रयाण कर्युं. परंतु प्रथम मुकाम थतांज दैवयोगे हुं मारो दोष समज्यो तेथी पश्चाताप करतो त्यांथी रात्रे मारा मित्र प्रहसितने साथे लेइ जेम कोइ न जाणे तेम नगरमां पाछो आवी मारी स्त्रीना महेलमां हुं गयो अने त्यां तेनी साथे रममाण थयो. सवार थतां मारा पितादिक कोइने पण खबर न पडवा देतां मारा आव्यानी निशानीरुप मारी वींटी तेने आपीने हुं त्यांथी निकळीने ज्यां अमे मुकाम कर्यो हतो त्यां पाछो गयो. मारी स्त्री ते दिवसथी गर्भवती थइ, तेना उपर दोषारोपण करीने मारी मातुश्रीए तेने कहाडी मूकी छे. रावणनुं काम करी हुं घेर आव्या पछी ए वातनी मने खबर पडतांज त्यांथी निकळी घणे स्थळे में तेनी शोध करी पण ते मळी नहीं. कोण जाणे ए क्यां छे? एवी रीते ते विचारी केवळ निर्दोषी छतां तेने आवुं संकट आवी पड्युं छे, जे हुं सहन करी शकतो नथी. तेने दुःख थवानुं कारण मात्र मारुं अज्ञान छे. मारा जेवो पति जीवतो छतां तेनी स्त्री दुःख पामे, तेथी मने धिःकार छे. एवा पश्चातापे करी सर्व पृथ्वी उपर में तेनी शोध करी, पण जेम रत्नोनी खाणमां रत्न शोध्युं मळे नहीं तेम तेनो क्यांय पण पत्तो मळ्यो नहीं. हवे जो हुं जीवतो रह्यो तो ए निर्दोषी सद्‌गुणी स्त्रीनो विरह मने जन्मांत सुधी सालशे, माटे ए जीव्याथी मरवुं भलुं छे. एम जाणीने आ मारा शरीरने आ अग्निमां बाळी नांखुं छुं. हवे पछी ते मारी स्त्री जो तमारा दीठामां आवे तो तेने कहेजो के, तारो पति पवनंजय तारा वियोगे करी बळी मुवो. ए प्रमाणे कहीने ते चितामां पडवा सारु ऊंचो उछळी कुदको मारवा जाय छे ते वखते त्यां आवेला प्रल्हादराजाए तेनो बोलेबोल सांभळ्यो हतो तेणे घणी झडपथी जइ तेने पोतानी बाथमां घाल्यो.

पवनंजय एकदम चकित थइ बोल्यो के, स्त्रीना वियोगथी थएला दुःखनो प्रतिकार जे आ मृत्यु, तेमां आ विघ्न केवुं? ते वेळा प्रल्हादनी आंखोमां पाणी भराइ आव्युं अने ते कहेवा लाग्यो के, ए हुं तारो पापी पिता छुं. तारी निर्दोषी स्त्रीने कहाडी मूकी, तेनुं कारण मात्र तारी मातानुं करेलुं अघटित कृत्य छे. तुं महा बुद्धि-

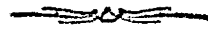
मान छतां आवुं घोर कर्म करवा योग्य नथी. तारी स्त्रीनी शोध करवा सारु में हजारो विद्याधरोने देशेदेश मोकल्या छे, तेओ पाछा आवे त्यांसुधी तुं विलंब कर. ए प्रमाणे प्रल्हाद पोताना पुत्रने समजाववा लाग्यो. अंजनानी शोध करवा सारु गयेला विद्याधरो फरता फरता हनुपुरमां आवी पहोंच्या. त्यां तेमणे प्रतिसूर्यनी पासे पवनंजयनो सर्व वृत्तांत कहेतां जणाव्युं के, ते ज्यारे रावणनुं कार्य करी पाछो आव्यो त्यारे तेणे अंजनासुंदरीनी हकीकत जाणी तेथी ते तत्काळ तेनी शोध करवा निकळ्यो; परंतु तेनो कोइपण स्थळ पत्तो मळ्यो नहीं, तेथी तेणे अग्निमां प्रवेश करी बळी मरवानो निश्चय कर्यो छे. आ वात त्यां पासे बेठेली अंजनाए सांभळी तेवीज गाढ स्वरे बोली के, आ विष जेवां वाक्यो मारा हृदयमां पेसतांज हुं नष्ट थइ छुं. एम कही मूर्छा खाइ पृथ्वीपर ढळी पडी. पछी तेनी सखीओए चंदननुं पाणी तेना अंग उपर छांटी तथा पवन नांखी तेने सज्ज करी. केटलोक वखत वीत्या पछी ते सावध थइ उठीने दीनस्वरे रडतीं रडती बोली केः—पतिव्रता स्त्री पतिना शोकथी अग्निमां प्रवेश करे; केमके, स्त्रीए पति विना जीवती रहेवुं ए दुःखनुं कारण थाय छे, ए योग्य छे. पण हजारो स्त्रीओने भोगववावाळा भर्त्तांए एक स्त्रीने माटे आटलो बधो शोक करवो ए उचित नथी. स्त्रीना वियोगथी पुरुषे अग्निप्रवेश करवो ए अयोग्य छे. माटे हे मारा प्राणप्रिय पति आवुं अघटित कृत्य तमे केम आदर्युं छे ? हुं स्त्री छतां मारा विरहनी वेदना वेठती आज दिवस सुधी जीवती रही, तो तमे पुरुष छतां आटली बधी हिम्मत केम हारी गया छो ? आपण बेनी वच्चे नीलमणि तथा काचमणि जेटलुं अंतर छे. हुं अल्प सत्व छुं, अने तमे तो महा सत्यवान छो ए वातमां मारा सासू ससरानो तेमज मारा मावापनो दोष नथी. केवल मज अभागणिना कर्मनोज दोष छे.



प्रल्हाद, पवनंजय, प्रतिसूर्य अने अंजना विगेरेनुं मळवुं, तथा हनुपुरमां जवुं.

आ प्रमाणे अति शोक करती अंजनाने निहाळीने प्रतिसूर्य तेना पोताना विमानमां बेसाडी पवनंजयनी शोध सारु हनुपुरथी निकळ्यो. ते फरतां फरतां ज्यां भूतवनमां चीता रची पवनंजय बळी मरवा तैयार थयो हतो त्यां आवी पहोंच्यो. तेने प्रहसिते दीठो, तेवोज ते प्रल्हाद पासे जइ कहेवा लाग्यो के, पुत्र सहित अंजनाने तेनो मामो विमानमां बेसाडी आंहीं तेडी लाव्यो छे. एटलामां विमान पासे आवतांज अंजनासुंदरीए नीचे उतरी प्रल्हादने नमस्कार कर्यो. पछी प्रतिसूर्य पण प्रल्हादराजाने घणी प्रीतीवडे मळ्यो. हनुमानने प्रल्हादराजा पोताना खोळामां बेसाडी

गद्‌गद कंठ थयो थको प्रतिसूर्यनी सामे जोईने कहेवा लाग्योः–हे प्रतिसूर्य राजा, कुटुंब सहित दुःखरूप समुद्रमां डुबनारो जे हुं, तेने तें घणी कृपा करीने उगार्यो, तेथी हुं मारुं मोटुं भाग्य समजुं छुं. मारा संतानने कारणभूत जे आ विचारी निर्दोषी साध्वी, तेने में नाहक कहाडी मूकी. परंतु तें एनुं सारी रीते रक्षण कर्युं तेथी तने धन्य छे. दुःखना वखते समुद्रनी पेठे तुं पाछो फर्यो, तेथी हुं तारो आभारी थयो छुं. ए बधुं जोईने पवनंजयना कोपनी शांति थइ गइ ने ते मनमां रांजी थयो. पछी सर्व विद्याधरो त्यांथी निकळी अति उत्साहपूर्वक पोतपोताना विमानोमां बेसीने हनुपुरमां आव्या. महेंद्रराजा पण घणो उतावळो त्यां आवी पहोंच्यो तथा अंजनानी सासू केतुमती देवी तथा भाइओ वीगेरे पण त्यां आव्या. पछी त्यां मोटो ओत्सव कर्यो. ए बधुं थइ रह्या पछी सर्व विद्याधरो पोतपोताने स्थानकें गया. मात्र अंजना तथा पुत्र सहित पवनंजय त्यांज रह्या. हनुमान पोताना पिताना हाथ तळे त्यां उछर्यो. आस्ते आस्ते ते विद्या शिखतां सर्व शस्त्र शास्त्रोमां कुशळ थयो. क्रमे करी सूर्य समान कांतिवाळो हनुमान यौवनावस्था पाम्यो.



रावण तथा वरुणराजा वच्चे थयेलुं युद्ध वरुणराजानुं पकडावुं तथा तेना छुटकारो–हनुमाननुं तेनी मददे जवुं विगेरे.

लंकामां रावण वरुणनी मित्रतामां दूषण उपजावीने क्रोधायमान थइ तेने जीतवा सारु स्थेम नामना पर्वत उपर गयो. तेणे जे जे विद्याधरोने बोलाववा सारु दूतो मोकल्या हता ते सर्व आवीने तेने मळ्या. तेमज पवनंजय तथा प्रतिसूर्य पण तेनी पासे आववाने निकळ्या. ते वखते हनुमान तेमने कहेवा लाग्यो के, हुं छतां तमारे जवानी जरुर नथी. हुं शत्रुओने जीती आवीश. पासे तीक्षण शस्त्र छतां जोइ हाथे करी मारशे के? हुं बाळक छुं तेथी तमे मारा उपर दया आणता हशो, परंतु पराक्रममां वयनुं प्रमाण नथी. ए प्रमाणे मोटा आग्रहथी तेमने रोकीने तथा तेमनी रजा लेइने हनुमान रावणनी मददे जवा सारु निकळ्यो. ए वखते तेना पिताए तथा मामाए तेनुं मस्तक चुंबन कर्युं. तेनी साथे हजारो गमे सैन्य निकळ्युं. तेने लेई महा पराक्रमी हनुमान रावणना सैन्यमां आवी पहोंच्यो. तेने जोई जाणे पोतानो जय ज आवी मळ्यो होयनी! एम मानी रावण मनमां राजी थयो. हनुमाने रावणने नमस्कार कर्यो, त्यारे रावणे तेने पोताना खोळामां बेसाडी तेनो घणो आदर सत्कार कर्यो. पछी तेने साथे लेई पोताना सैन्य सहित रावण पातालमां वरुण राजानी नगरी समीप आवी पहोंच्यो. रावण आव्यो

जाणीने वरुण पोताना बे पुत्रो सहित सैन्य लेई नगर बहार निकळ्यो. त्यां वरुणना पुत्रो प्रथम रावणनी साथे युद्ध करवा लाग्या अने वरुण सुग्रीवादिक शूरवीरोनी साथे लडवा लाग्यो. महा पराक्रमी वरुणना पुत्र पोताना नेत्रो रातां करीने जेम डुक्करने कुतरां दुःख दे, तेम रावणने दुःख देवा लाग्या. एटलामां जेम सिंह हाथीनी सामे आवे तेम महा क्रोध करता हनुमाने तेमनी सामे आवी पोतानी विद्याना सामर्थ्यवडे तेओने पशुनी पेठे बांधी लीधा. ए वातनी वरुणने खबर पडतांज ते कोपायमान थयो थको जेम हाथी रस्तामांना झाडो तोडी पाडे तेम सुग्रीवादिक सुभटोने दूर करीने हनुमान उपर दोड्यो. तेने जेम नदीना वेगने पर्वत रोके, तेम रावणे बाणोनो वरसाद करी वच्चे अटकावी मुक्यो. ते वखते वळदनी सामे वळद तथा हाथीनी सामे हाथी लडे तेम रावण तथा वरुण परस्पर लडवा लाग्या. ए प्रमाणे लडतां लडतां रावणे वरुणने व्याकुळ करी, पूर्वे कुदको मारी इंद्रराजाने बांधी लीधो हतो, तेमज तेने बांधी लीधो. ते वखत सर्व सैन्यमां जय जयकार शब्द थवा लाग्यो. पछी रावण पोताना स्थानक उपर गयो. त्यारे वरुणराजाए पोताना पुत्रो सहित तेने नमस्कार कर्यो. तेथी रावणे तेओने छोडी मूक्या. कह्युं छे के, "मोटा पुरुषोनो कोप मात्र नम्रताए करी जाय छे." पछी वरुणराजाए हनुमानने महा पराक्रमी जोइने तेने पोतानी सत्यवती नामनी कन्या आपी. त्यार पछी रावण पोताना सैन्य सहित लंकामां आव्यो. त्यां तेणे पोतानी चंद्रनखा बेननी कनककुशला नामनी कन्याने हनुमान साथे परणावी. सुग्रीवे पोतानी पद्मरागा नामनी कन्या अने हरिनील विद्याधरे मालिनी नामनी कन्या तेने आपी. तेमज बीजा हजारो विद्याधरोए पोतानी हजारो कन्याओ तेने परणावी दीधी. पछी अति आनंदवडे रावणनी रजा लेइने पोतानी सर्व स्त्रीओ सहित हनुमान हनुपुरमां आव्यो तेमज सुग्रीवादिक बीजा विद्याधरो पण रावणनी रजा लेइ पोतपोताने स्थानके गया.

मनहरछंद.

रामचंद्र चरित्रनो, तृतीय सर्ग पूरो थयो;
पवनंजय अंजनानो, संबंध सबळ कह्यो;
हनुमान जन्म लह्यो, वरुणनो मद दह्यो;
हेम सूरी मुख थकी, करुणारस भाव छयो.

इत्याचार्यश्रीहेमचंद्रविरचिते त्रिषष्ठिशिलाकापुरुष चरिते महाकाव्ये सप्तमपर्वणि हनुमानजन्म नाम तृतीयः सर्गः ३

अथ श्री चतुर्थ सर्गः प्रारभ्यते.

जनकराजानो जन्म—वज्रबाहु तथा मनोरमानुं परणवुं—मुनि गुणसागरनुं मळवुं—अने तेओ विगेरेनुं दीक्षा लेवुं.

मिथिला नामनी नगरीमां हरिवंशने विषे वासवकेतु नामना राजानी स्त्री विपुलाने पेटे जनक नामे घणो प्रख्यात पुत्र पेदा थयो. ते पोतानी प्रजाने पुत्रनी पेठे पाळी पोतानुं जनक नाम दीपावतो हतो, तेथी पृथ्वी उपर तेनी घणी विख्याती थइ.

अयोध्या नामना नगरमां श्री ऋषभदेव स्वामीथी चालेली वंश परंपरामांना आदित्य वंशमांना केटलाक राजाओ मोक्षे अने केटलाक स्वर्गे गया. ए प्रमाणे अनुक्रमे वंशावळी चालतां वीशमा तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतस्वामीना तीर्थने विषे एक विजय नामे राजा थयो. तेनी स्त्री हिमचूलाने पेटे वज्रबाहु तथा पुरंदर नामना बे पुत्र थया. वज्रबाहु नागपुर नामना नगरना राजा इभवाहननी स्त्री चूडामणिने पेटे पेदा थएली मनोरमा नामनी कन्याने परणी, तेने तथा पोताना साळा उदयसुंदरने साथे लेइ जतां रस्तामां उदयाचल पर्वत उपर बेठेला गुणसागर नामना एक मुनिने तेणे दीठा. सूर्य समान जेनी कांती छे, मोक्ष मार्गना साधनभूत तपना तेजवडे जे शोभी रह्या छे, एवा ते मुनिने निहाळीने मोर जेम मेघने जोइ राजी थाय तेम ते मनमां घणो राजी थयो, अने त्यां आगळ पोतानो घोडो उभो राखी ते बोल्यो केः—

" आंहीं कोइ महामुनि वंदना करवा योग्य छे. चिंतामणिनी पेठे महा पुन्यानुयोगे आज मने एनां दर्शन थयां छे." वज्रबाहुनुं एवुं बोलवुं सांभळीने तेनो साळो उदयसुंदर तेने कहेवा लाग्यो के, केम तमारा दीक्षा लेवाना भाव थया छे के शुं? त्यारे तेणे जणाव्युं के, हा, मारा मनमां एमज छे. जेथी उदयसुंदरे फरी मश्करीथी कह्युं के, हवे विलंब शा सारु करवो जोइए, ए काममां हुं पण तने सहाय छुं. त्यारे वज्रबाहुए तेने कीधुं के, तुं पोतानी प्रतिज्ञानो भंग करीश नहीं. उदयसुंदरे कह्युं ठीक छे, भंग नहीं करुं. पछी ते घोडा उपरथी उतरी सर्वने साथे लेईने पर्वत तरफ चाल्यो. आ प्रमाणे वज्रबाहुनो दृढ निश्चय जोई उदयसुंदरने धास्ती लागवाथी ते तेने कहेवा लाग्यो के, हे वज्रबाहु राजा, हुं तो केवल तमारी साथे मश्करी करतो हतो, तमारे दीक्षा लेवी जोईए नहीं. मारा बोलवाने धिःक्कार छे. आपण बेनी वच्चे जे बोलवुं थयुं छे ते मात्र मश्करीनुंज छे, एमांनं कांइ पण साचुं समजवुं नहीं. वीवाहना गीतोनी पेठे मश्करी पण साची

समजवी नहीं. हवे पछी तुं अमारा सर्व दुःखमां सहाय थईश. आ वखते अमारा कुळना सर्व मनोरथनो तुं त्याग कराव नहीं. हजी तो तारा हाथमां विवाह कंकण छे, छतां तुं मश्करीमां बोलेली वातने साची समजी दीक्षा लेवानो जे विचार करे छे ते आ वखतने योग्य नथी. स्त्री परणवानुं फळ जे उपभोगादिक, तेने तुं ओचिंतुं केम मूकी दे छे? जो तुं हमणांज दीक्षा ग्रहण करीश, तो जेने संसारना सुखनी हजी सुधी कांइ पण खबर नथी एवी मारी बेन मनोरमा तारा विना शी रीते जीवी शकशे? उदयसुंदरनुं आवुं बोलवुं सांभळीने वज्रबाहुए तेने कीधुं के:–हे उदयसुंदर, आ मनुष्य जन्मरूप झाडनुं चारित्र लक्षणरूप फळ छे. तें जे मश्करीमां कह्युं ते जेम छीपमां स्वाती नक्षत्रनुं बुंद मोतीनुं कारण थाय छे, तेम ए तारुं बोलवुं मोक्षनुं कारणभूत थयुं. तारी बेने पण मारी साथे दीक्षा लेवी जोइए. जो ते एम नहीं करे तो हवे पछी हुं एनी साथे भोग भोगवनार नथी. मारे तो ए मोक्षने मार्गे जवुं छे, तेमां अटकाव करवो ते तने योग्य नथी अने वळी जो मारी वात माने तो तुं पण मारी साथे दीक्षा ले. क्षत्रीए पोते करेली प्रतिज्ञा अवश्य पाळवी जोइए, ए स्वकुळनोज धर्म छे. ए प्रमाणे बोली ते आगळ चाल्यो अने गुणसागर मुनि पासे आवी झट दीक्षा लई लीधी, एटले तेनी स्त्री मनोरमा, उदयसुंदर तथा बीजा पचीश कुमारोए पण तेनी साथे दीक्षा ग्रहण करी.

कीर्तिधरराजा तथा तेना पुत्र सुकोशलनो प्रबंध.

वज्रबाहुना पिता विजयराजाए पोताना पुत्रे दीक्षा लीधानी वात सांभळी तेथी ते मनमां विचार करवा लाग्यो के, मारो पुत्र बाळक छतां तेणे दीक्षा लीधी, अने में तो हजु सुधी वैराग्यनुं ग्रहण कर्युं नथी, माटे मारे पण मोक्षना साधनरूप दीक्षा लेवी जोइए. एवो निश्चय करी पोताना पुरंदर नामना पुत्रने राज्यगादीए बेसाडी निर्वाणमोक्ष नामना मुनि पासे विजयराजाए दीक्षा लीधी. पुरंदरे पण पोताना पृथ्वी नामनी स्त्रीने पेटे जन्मेला कीर्तिधर नामना पुत्रने राज्य सोंपी केटलेक काळे क्षेमकर नामना मुनि पासे दीक्षा लीधी. कीर्तिधर राजा पोतानी सहदेवी नामनी स्त्रीनी साथे इंद्र इंद्राणीनी पेठे सुख भोग भोगवतो एक दिवस दीक्षा लेवानुं मनमां धारीने पोताना मंत्रीओने कहेवा लाग्यो के, मारे हवे दीक्षा लेवी छे, ए विषे तमारो शो अभिप्राय छे. मंत्रीओए कीधुं के, हे राजा, तुं पुत्र रहित होवाथी तने व्रत लेवानो अधिकार नथी. तेम छतां जो तुं दीक्षा लेइश तो पछी आ पृथ्वीनो स्वामी कोण छे? माटे तने पुत्र थाशे थाय त्यां सुधी तुं व्रत लेवानो विलंब कर. मंत्रीओनुं एवुं बोलवुं सांभळीने कीर्तिधर राजा केटलाक काळ सुधी गृहवास रह्यो.

त्यार पछी तेनी सहदेवी राणीने पेटे सुकोशल नामे पुत्र जन्म्यो. परंतु पोतानो स्वामी ए वात जाणी दीक्षा लेशे एवा भयथी सहदेवी राणीए पुत्र प्रसव्यानी हकीकत छुपावी पोताने पेटे पुत्री पेदा थइ छे एम जणाव्युं. तथापि ए छुपी न रहेतां राजाना जाणवामां आवी. कह्युं छे के "सूर्य उग्यो छावडे ढाक्यो रहेतो नथी." पछी कीर्तिधर राजाए पोताना पुत्र सुकोशलने राज्य उपर वेसाडी पोते मोक्षनुं साधन संपादवाने विजयसैनक नामना आचार्य पासे दीक्षा लीधी. महा तप तपतो गुरुनी आज्ञाए करी कीर्तिधर मुनि विहार करवा लाग्यो.

कोइएक वखत फरतां फरतां ते मुनि मासोपवासनुं पारणुं करवा सारु मध्यान्ह वेळाए अयोध्या नगरीमां आव्या. तेमने रस्तामां जतां सहदेवी राणीए दीठा. तेणीए तेमने ओळख्या के आ मारो पति छे. एणे ज्यारे दीक्षा लीधी त्यारेज हुं पति विनानी थइ. वळी जो आ मारो पुत्र सुकोशल एना वापने जोइने दीक्षा लेशे तो हुं पुत्र विनानी थइश, तो पछी मारुं जीवतर शा कामनुं ! ते माटे यद्यपि आ निरपराधी, व्रतधारी तथा पति छे; तथापि पुत्रना कल्याण माटे एने नगरथी वहार काढी मूकवो योग्य छे. पछी तेणीए कोइ अन्य दर्शनीओनी पासे मुनिने नगरथी वहार काढी मुकवो योग्य छे. पछी तेणीए कोइ अन्य दर्शनीओनी पासे मुनिने नगरथी वहार कढावी मूक्या. कह्युं छे के, " लोभी माणसने विवेक होतो नथी. " ए सर्व वातनी सुकोशलनी धावमाताने खवर पडवाथी ते रुदन करवा लागी, तेथी सुकोशले तेनुं कारण पूछ्युं. त्यारे तेणे जणाव्युं के, हे पुत्र, तारो पिता कीर्तिधर राजा तने वाळपणमां राज्य उपर वेसाडी दीक्षा लेइ विचरतो विचरतो आज गौचरी सारु अहीं आव्यो हतो, तेने जोइने तुं दीक्षा लेइश एवी शंका लावीने सहदेवी राणीए एने अन्य दर्शनीओनी पासे नगरथी वहार कढावी मुक्यो. ए मासोपवासना पारणा सारु आवेला मुनिने एमनेएम कढावी मुक्या तेथी हुं रडुं छुं. आ वात सांभळतांज सुकोशल राजा पोताना पिता मुनि पासे गयो. तेने नमस्कारादि करी तेनी पासे दीक्षा मांगी. ए प्रसंगे तेनी चित्रमाला नामनी गर्भवती स्त्री, प्रधानो सहित त्यां आवी तेने कहेवा लागी के, हे स्वामिन्, आ राज्य तजवाने तमे योग्य नथी. विगेरे तेणीए घणुं कह्युं, त्यारे राजाए तेनो सर्व अभिप्राय समजी तेने कीधुं के, हे स्त्री, आगळ आवनारा काळने माटे वर्तमानकाळमां उपचार करवो जोइये. ते माटे आजथी हुं तारा गर्भस्थ पुत्रने राज्य उपर वेसाडुं छुं. ए प्रमाणे स्त्रीने कही तथा वीजा जे लोको आव्या हता तेमनी साथे मीठे वचने वोलीने तेणे पोताना पिता मुनि पासे दीक्षा लीधी. पछी ते वंने मुनिओ उग्र तप करता आ पृथ्वी तलने विषे साथे विचरवा लाग्या.

सहदेवी पुत्रवियोगे दुःख पामीने रौद्रध्यानवडे मरीने एक पर्वतनी गुफामां वाघण थइ. एक वखत फरता फरता ते वंने पिता पुत्र मुनिओ राग रहित पृथ्वीत-

ळने पावन करतां स्वाध्याय ध्यानमां तत्पर थएला एक पर्वतनी गुफामां एकाग्र चित्ते रह्या हता. तेमने पेली यमदूती जेवी वाघणे दीठा. तेवीज ते दूरथी जेम मित्रने जोइ मित्र दोडे, तेम म्होडुं फाडी ते मुनिओने खावा सारु दोडी. बंने मुनिओ तेने आवती जोइने धर्मध्यान धारण करी कायोत्सर्गे उभा रह्या. एटलामां वीजळीनी पेठे ते वाघण आवीने सुकोशल मुनि उपर तुटी पडी, तेने जमीन उपर पाडी, तीक्षण नखवडे तेनी चामडी चटचट फाडवा लागी. जेम मारवाड देशनो पंथी तरश्यो थको पाणी मळवाथी घणो राजी थाय, तेम ते क्रूर वाघण अति प्रीतिवडे मुनिनुं लोही पीने राजी थवा लागी. जेम कोइ भीखारिणी फळादिकने मुखवडे तोडीने खाय तेम ते मुनिनुं मांस दांतोवडे तडतड तोडीने खावा लागी. वळी जेम हाथी पोताना दांतवडे शेरडी कडकावीने खाय, तेम ते मुनिना हाडोने चावी चावीने खावा लागी. जो के ते हिंसारी वाघणे विचारा निर्दोषी मुनिना एवा बुरा हाल कर्या, तोपण ते क्षमाश्रमण साधु महाराजे जरा पण दीलगीर न थतां आ वाघण मारां कर्म खमाववाने साधनरूप थइ, एवो तेवो उपकार मान्यो. पण तेना उपर बीलकुल रोष आण्यो नहीं. एवी रीते शुकल ध्यान ध्यातां तेनां सर्व रोमांच खडां थइ गयां अने अंतगढ केवळी थइ ते मोक्षपद पाम्या. वाघण ज्यारे मुनिने खाई रहेवा आवी त्यारे तेना दांत उपरनी सोनानी रेख तेना जोवामां आवी. ते जोता वेंतज तेने मुर्छा आवी. पछी थोडीवारे ते शुद्धिमां आवी त्यारे तेने हैयापो करतां ते निमित्तथी जातिस्मरण ज्ञान थयुं; तेथी ते पस्तावो करीने पोताने धिःक्कारवा लागी. अरे हुं महा पापिणी छुं. में पोताना पुत्रनुं भक्षण कर्युं. ए अघोर पापथी कोण जाणे मारी केवी गति थशे? एवी रीते तेणे घणे प्रकारे पश्चाताप कर्यो. कीर्तिधर मुनिए तेनो मनोभाव जाणी लेई तेने धर्मोपदेश दीधो. वाघणे ते सर्दहीं अनशनव्रत धारण कर्युं अने मरीने जुगलीआमां जन्मी. कीर्तिधर मुनि क्रमेकरी केवलज्ञान पामी जन्मजरा मृत्युनो भय निवारी, काळ करी, मोक्ष पद पाम्या.



नहुष तथा तेना पुत्र सौदासनो प्रबंध.

सुकोशल राजानी स्त्री चित्रमालाने पेटे पुत्र पेदा थयो तेनुं नाम हिरण्यगर्भ पाड्युं. पूर्वे कह्या प्रमाणे ते गर्भमांथी राज्यपद पाम्यो हतो. ते ज्यारे यौवनावस्था पाम्यो त्यारे मृग जेवा नेत्रोवाळी मृगावती नामनी कन्या साथे परण्यो. तेने पेटे एक पुत्र जन्म्यो तेनुं नाम नहुष राख्युं. केटलाक काळ पछी हिरण्यगर्भ राजाए पोताना केश सफेद थएला जोइ आ संसारना बदलाता स्वरुप उपर वैराग्य पामी पोतानी वृद्धावस्था परिपूर्ण थये धर्म साधन थइ शकशे नहीं एम जाणी नहुषने राज्य

ते वखते त्यांनो अपुत्रीओ राजा मरण पाम्यो हतो तेथी त्यांनां मंत्री वर्गे पंच दिव्ये करी अभिषेक करीने घोडो, हाथी, छत्र, चामर तथा कळस धारण करीने सौदास राजाने राज्यपदे स्थापन कर्यो. महापुरनुं राज्य करतां केटलाक दिवस गया पछी सौदास राजाए पोताना पुत्र सिंहरथनी पासे एक दूत मोकली तेने कहेवराव्युं के, तुं मारी आज्ञा मान. सिंहरथे तेनो तिरस्कार करीने तेने कहाडी मूक्यो. दूते आवीने सौदास राजाने त्यांनी हकीकत जणावी तेथी ते पोतानुं सर्व सैन्य सजी सिंहरथनी साथे लडवाने अयोध्या समीपे आव्यो. सिंहरथ पण तेनी साथे युद्ध करवा माटे पोतानुं सर्व सैन्य लेइ नगर बहार निकळ्यो. पछी बाप दीकरानुं परस्पर युद्ध थवा लाग्युं. छेवटे सौदास राजाए सिंहरथनो हाथ झालीने तेने बन्ने राज्य सोंपी पोते दीक्षा लीधी.

अयोध्याना राजानी वंशावळी—दशरथराजानो जन्म तथा तेनुं गादीए बेसवुं विगेरे.

ए प्रमाणे अयोध्याना राज्य उपर सिंहरथ राजा पछी तेनो पुत्र ब्रह्मरथ थयो. तेना पछी तेनो पुत्र चतुर्मुख, तेनो पुत्र हेमरथ, तेनो पुत्र शतरथ, तेनो पुत्र उदय, तेनो पुत्र पृथु, तेनो पुत्र वारिरथ, तेनो पुत्र इंदुरथ, तेनो पुत्र आदित्यरथ, तेनो पुत्र मांधाता, तेनो पुत्र वीरसेन, तेनो पुत्र कुवेरदत्त, तेनो पुत्र कुंथु, तेनो पुत्र शरभ, तेनो पुत्र द्विरद, तेनो पुत्र सिंहदशन, तेनो पुत्र हिरण्यकशिपु, तेनो पुत्र पुंजस्थल, तेनो पुत्र ककुत्स्थ, ए रीते अनुक्रमे वंश परंपरागत राजा थया. पछी ककुत्स्थनो पुत्र रघु नामे राजा थयो. ते एवो तो धर्मात्मा थयो के, शरणार्थीओने कल्पवृक्षनी उपमा धारण करवा लाग्यो. ए राज्य उपर थएला केटलाएक राजा स्वर्गे अने केटलाएक मोक्षे गया त्यार पछी रघुनो पुत्र अनरण्य राजा थयो. तेनी पृथ्वी नामनी स्त्रीने पेटे अनंतरथ तथा दशरथ नामना बे पुत्रो थया.

एक वखते सहस्रांशु राजानो रावणे युद्धमां पराजय कर्याथी तेणे वैराग्य पामी दीक्षा लीधी. ते अनरण्यनो मित्र हतो, तेनी साथे तेणे अगाउ दिक्षा लेवानो निश्चय करेलो होवाथी तेणे पोताना एक मासना दशरथ नामना नाना पुत्रने राज्यगादीए बेसाडी अनंतरथ नामना पोताना पुत्र सहित मोक्ष मार्ग साधवाने दीक्षा लीधी. अनंतरथ तप करतो पृथ्वी उपर स्वेच्छाए विचरवा लाग्यो अने अनरण्य मोक्षे गयो. सहस्रांशुए दीक्षा लीधा पछी तेनी गादीए तेनो पुत्र श्रीकंठ बेठो. श्रीकंठ अने दशरथ समान वळीया थया थका वृद्धि पामवा लाग्या. दशरथ राजा जे दिवसथी राज्य

उपर बेठो ते दिवसथी कोइपण शत्रु तेना सामो आव्यो नहीं. ए नक्षत्रोमां चंद्र, ग्रहोमां सूर्य, तथा पर्वतोमां जेम मेरु अधिकी शोभा पामे छ, तेम सर्व राजाओमां अधिक शोभा पामवा लाग्यो. तेना राज्यमां उपद्रव तो आकाश फूलवत् थयो. ते याचक लोकोने द्रव्यालंकार यथेच्छ आपवा लाग्यो तेथी मंद्यंगादिक जे दश कल्प-वृक्ष छे तेमां ते अग्यारमो कल्पवृक्ष देखावा लाग्यो. ते परंपराए चाल्या आवता साम राज्य प्रमाणे अर्हत् धर्म पाळवा लाग्यो.

दशरथे कौशल्या तथा सुमित्रा साथे कीधेलुं लग्न.

दशरथे पहेलुं लग्न दभ्रस्थळ (कुशस्थळ) ना राजा सुकोशलनी स्त्री अमृतप्र-भाने पेटे जन्मेली महा रुपवान तथा अति लावण्यतावाळी कौशल्या (अपराजिता) नामनी कन्या साथे तथा बीजुं लग्न कमलसंकुल नामना नगरना राजा सर्वधुतिल-कनी स्त्री मित्रादेवीने पेटे जन्मेली सुमित्रा नामनी कन्या साथे कर्युं. ए बन्ने अपरा-जिता तथा सुमित्रा स्त्रीओनी साथे विवेकी, लोकोमां शिरोमणी दशरथ राजा पोतानो धर्मार्थ न मूकतां नाना प्रकारना सुखभोग भोगववा लाग्यो.



रामने हाथे रावणनुं मृत्यु थवानुं जाणवुं—विभीषणे जनकराजाने तथा दशरथने मारवानी करेली प्रतिज्ञा—नारदे ते बंनेने आपेली चेतवणी विगेरे.

एक वखते अर्द्ध भरतेश रावणे पोतानी सभामां बेठेला एक विद्वान ज्योतिषी (नैमित्तिक) ने पूछ्युं के, हे महाराज, अमरपणुं तो मात्र कहेवारुप छे. वास्तविक रीते कोइ वस्तु अमर नथी. संसारमां रहेला प्राणीनो जरुर नाश थशे, एम बधा जाणे छे. तथापि मारुं मृत्यु मारा पोताना परिणामथी थशे? के कोइ बीजाथी थशे? ते कोइपण प्रकारनो भय न राखतां साचेसाचुं कहो. साचुं बोलनारा पुरुषना मुख-मांथी जुठुं वेण निकळतुंज नथी. एवी रीतनुं रावणनुं बोलवुं सांभळी ते ज्योतिषी बोल्यो के, हे रावण सांभळ. हवे पछी उत्पन्न थनारी एक जानकी (जनकराजानी कुंवरी) ना निमित्ते दशरथ राजाना पुत्र रामने हाथे मृत्यु थशे. ए सांभळी त्यां बेठेलो विभीषण बोल्यो के, एनुं कहेवुं खरुं छे, पण ते हुं खोटुं करीश. कन्या अने पुत्र, ए बंनेनुं बीज जे जनक अने दशरथ छे, तेमने मारी नांखवाथी रावणनुं मृत्यु नहीं थाय. जे मूळथी बीजनी उत्पत्ति थाय ते मूळनोज नाश करीये तो बीज क्यांथी थाय? अने एम थवाथी आ नैमित्तिकनुं कहेवुं पण खोटुं थशे. रावणे तेनुं बोलवुं मान्य राख्युं अने सभामांथी उठी बंने भाइ घरमां गया. ए प्रसंगे नारद मुनि त्यां बेठेलो

हतो तेणे सभामां थएली सघळी हकीकत सांभळी हती ते त्यांथी निकळी दशरथ राजा पासे आव्यो. दशरथ राजा नारदने दूरथी आवतो जोइ आसन उपरथी उठी तेना सन्मुख जइ तेनो घणो आदर सत्कार करी तेने तेडी लावी, आसन उपर बेसाडी तेने नमस्कार करी पोते तेनी पासे नीचे बेटो; अने पूछ्युं के, हे मुनिराज, आप क्यांथी पधार्या? तथा आपने आववानुं प्रयोजन शुं छे? त्यारे नारदे जणाव्युं के, हे दशरथ, पूर्व विदेहमां पुंडरीकीणी नगरीमां सुरासुरे श्री सीमंधरस्वामीनो दीक्षा महोत्सव कर्यो ते जोवा सारु हुं गयो हतो. त्यांथी पाछो फरी मेरु पर्वत उपर जइने शाश्वत तीर्थनी वंदना करी हुं लंकामां गयो. त्यां शांतिनाथ भगवानना देरासरमां जइ दर्शन वीगेरे करीने हुं रावणने घेर गयो. त्यां तेनी सभामां रावणना पूछवाथी एक नैमित्तिके कह्युं के, तारुं (रावणनुं) मृत्यु जानकीना निमित्ते दशरथ राजाना पुत्र रामने हाथे थशे. आ वात सांभळी त्यां बेठेला तेना भाइ बिभीषणे एवी प्रतिज्ञा करी के, जानकी तथा रामना कारणभूत जे जनक तथा दशरथ राजा छे, तेमने मारवाथी रावणने मारनारज उत्पन्न नहीं थाय तो पछी तेने कोण मारनार छे? माटे ए बेने हुं मारीश. आ बधो वृत्तांत सांभळीने तुं मारो साधर्मिक भाइ छुं तेथी तने चेतववा सारु त्यांथी निकळी घणो उतावळो हुं तारी पासे आव्यो छुं. नारदनुं बोलवुं दशरथ राजाए सांभळी लेइ तेनो यथायोग्य सत्कार करी तेने रजा आपी. त्यांथी तेणे जनकराजा पासे आवीने तेने पण रावणनी सभामां बनेली सर्व बीनाथी वाकेफ कर्यो.

जनक तथा दशरथ राजानुं देशांतर जवुं–राज्यमां तेमनां पुतळां स्थापवां.

पछी दशरथ राजाए पोताना मंत्रिओने एकठा करी तेओने नारदे कहेलो सर्व वृत्तांत कही संभळावी राज्य तेमने स्वाधीन कर्युं, अने पोते योगीनी पेठे कालवंचना करवा सारु बहार चाली निकळ्यो. पछी मंत्रिओए शत्रुने फसाववा सारु दशरथ राजानी आकृतीनी एक माटीनी मूर्ति बनावरावीने ते राज्यगृहमां अंधारामां राखी. जनकराजा पण दशरथनी पेठे मंत्रिओने राज्य सोंपी चाली निकळ्यो. त्यां पण तेना मंत्रिओए दशरथ राजानी माफक जनकनी मूर्ति बनावी राखी. ए प्रमाणे राज्य छोडी दशरथ तथा जनकराजा पृथ्वीपर विचरवा लाग्या.

बिभीषणे कृत्रिम दशरथराजा (पुतळा) नो करेलो वध.

लंकामांथी बिभीषण पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करवा माटे मोटा वेगथी अयोध्यामां आव्यो, अने त्यां राजगृहमां राखेलुं दशरथ राजानुं पुतळुं न पीछानतां तेने खरो दशरथ समजी तेनुं माथुं कापी नांख्युं. ते वखते आखा नगरमां मोटो हाहाकार वर्ताइ रह्यो. जनानखानामां रडारोळ थइ रही. शूरवीर लोको मारनारनी शोध करता बोलवा लाग्या के, दशरथने कोणे मारी नाख्यो. ए प्रकारे कोइने पण वहेम न आवे तेटलामाटे त्यां दशरथना मरण माटे घणी काळजी अने धामधुम करवा लाग्या, तेमज छानी मसलतवाळा प्रधानोए दशरथ राजानी प्रेतक्रिया करी. इत्यादिक जोइने दशरथ मरी गयानो निश्चय करी. बिभीषण लंकामां पाछो आव्यो. जनकराजाने मारवानुं एना मनमां हतुं पण दशरथ मरी जवाथी एकलो जनकराजा शुं करनार छे ? तेमज एने मारवाथी हवे शो फायदो छे ? एवो विचार करी तेणे जनकने जतो मूक्यो.

दशरथराजानुं कैकेयी साथे पाणीग्रहण थवुं तथा तेणीने वर आपवुं.

प्रधानोने राज्य सोंपी निकळ्या पछी दशरथ तथा जनक राजा साथे फरता फरता उत्तर दिशामां गया. त्यां एक कौतुकमंगल नामना नगरना राजा शुभमतिनी स्त्री पृथ्वीने पेटे पेदा थएली द्रोणमेघनी बेन बहोतेर कळाए परिपूर्ण, एवी कैकेयी नामनी कन्या उपवर थएली होवाथी तेनो स्वयंवर रच्यो हतो. त्यां हरिवाहन प्रमुख घणा राजाओ आव्या हता. ते मंडपमां दशरथ तथा जनकराजा जइने एकज आसन उपर बेठा. ते सघळा राजाओमां कमळोमां जेम हंस शोभे तेम शोभवा लाग्या. एटलामां रत्नालंकारे करी भूषित, तथा सर्व कन्याओमां रत्न समान, कैकेयी कन्या पोतानी सखीना खभा उपर हाथ राखीने ते स्वयंवर मंडपमां आवी. पछी तेनी सखीए एक कोरेथी राजाओने ओळखाववा मांड्या. ते सर्वने चंद्रमा जेम नक्षत्रोनुं उल्लंघन करे तेम तेमने मूकीने, गंगानदी जेम सागरमां आवीने भळे तेम ते दशरथराजा पासे आवीने उभी रही, अने समुद्रमां मुकेला नागरवाळा वहाणनी पेठे ते अडिग थइ गइ. ते वखते तेना अंग उपरना सर्व रोमांच खडां थइ गयां. पछी तेणे पोतानी भूजारुप लतावडे दशरथराजाना गळामां वरमाळा आरोपी. ए प्रसंगे मंडपमां बेठेला, बीजानुं महत्व सहन न करनारा हरिवाहनादिक राजाओ कोपा ?

करीने लालचोळ थया थका बोलवा लाग्या. अरे ! आ कोइ कपटवेश धारण करीने आवेला दरिद्री धूतारामां शुं जोइने कैकेयीए वरमाळा घाली. एनी पासेथी एने अमे झुंटावी लेइशुं तो ए अमने शुं करनार छे ? एवी रीते गुस्सामां आवीने उपर प्रमाणे बोलता पोताना स्थानक उपरथी उठीने युद्ध करवानी तैयारी करवा लाग्या. ए वातनी खबर पडतांज दशरथराजा शुभमतिराजानी साथे मसलत करीने चतुरंग सैन्या सहित तेओनी साथे युद्ध करवाने तैयार थयो. ते वखते तेणे पोतानी पासे उभी रहेली कैकेयीने कीधुं के, हे मिया, आ शत्रुओने मारवाने तारे पण मारी सहायता करवी जोइये. राजानुं एवुं बोलवुं सांभळीने महा बुद्धिमान बहोतेर कळामां पूरी, एवी ते कैकेयी त्वराथी घोडानी लगाम हाथमां झालीने दशरथराजाने बेसवाना रथ उपर चडी गई. दशरथराजा पण धनुष्य बाण हाथमां लईने वैरीओने तृण समान गणतो रथ उपर आरुढ थइ हरिवाहनादिक राजाओनी सामे कमर कशीने युद्ध करवा उभो रह्यो. ते वखते कैकेयीए शेलाणीनी पेठे पोतानुं कळाचातुर्य शत्रुओना रथनी सामे एवी रीते बताव्युं के, जाणे तेओना रथोनी सामे अकेक रथ उभो कर्यो होयनी ! एवी रीतनी योजनाथी ते दशरथराजानो रथ फेरववा लागी. एटलामां महा पराक्रमी शीघ्रवेधी दशरथराजाए हरिवाहनादिक राजाओना रथोनो एक घडिकमां नाश करी तेओने जीती लीधा. त्यारपछी जंगम पृथ्वीनी पेठे दशरथराजाए कैकेयी साथे पाणीग्रहण कर्युं. ते वखते तेणे घणा हर्षावेशे करी कैकेयीने कीधुं के, हे मीया, तारी चालाकी तथा तारुं सामर्थ्य जोईने हुं घणो खुशी थयो छुं, माटे तेनो बदलो तुं मारी पासे मांगी ले. हुं तारा उपर प्रसन्न थयो छुं, तेथी तुं मारी पासे तारे जोइए ते वर मांग. त्यारे ते बोली के, हे प्राणनाथ, जे वखते मने जरूर पडशे ते वखते हुं मागी लइश. हाल ए वर हुं तमारी पासे अनामत राखुं छुं. तेनुं ए बोलवुं दशरथ राजाए मान्य कर्युं. त्यारपछी ते लक्ष्मी जेवी कैकेयीने साथे लेई पोताना सैन्य सहित पाछो आवी पोताना राजगृहमां गयो, अने जनकराजा पोतानी मिथिला नगरीमां गयो. कह्युं छे के, "समय जाणनारा बुद्धिमान पुरुषो कार्य शिवाय भळताज ठेकाणे रहीने वखत गुमावता नथी.

—०:०:०—

दशरथराजाए मगधदेश जीती त्यां रहेवुं--सुप्रभानुं परणवुं.

दशरथराजा प्रथम उपजेला भयथी अयोध्यामां न जतां मगधदेशना राजाने जीतीने तेज नगरमां राज्य करवा लाग्यो, अने पोतानी कौशल्या प्रमुख राणीओने

नुं राज्य छे." तेणे चोथुं लग्न सुप्रभा नामनी कन्या साथे कर्युं, सर्व स्त्रीओ सहित दशरथराजा ते नगरमां घणा दिवस रह्यो, केमके पोते मेळवेली पृथ्वी राजाने घणी प्रिय होय छे.

रामनो जन्मोत्सव.

एक वखत कौशल्याए पाछली रात्रे स्वप्नमां हाथी, सिंह, चंद्र तथा सूर्य, ए चार पदार्थ दीठा, ए बळदेवना जन्मना सूचक थया. ते प्रसंगे जेम पुष्करणीमां हंस उत्पन्न थाय, तेम ब्रह्मदेवलोकथी एक महर्द्धिक देव चवीने कौशल्याना उदरमां आवी अवतर्यो. गर्भना प्रभावे कौशल्यानुं तेज दीन परदीन वधवा लाग्युं अने तेनी मनोवृत्तिओ घणीज सारी थवा लागी. पूरे मासे तेणीए रंगमां पुंडरीक नामना कमळने पण लज्जायमान करे एवो कमळ जेवो, संपूर्ण लक्षणोए सहित दिव्य पुत्रने जन्म आप्यो. चंद्रना दर्शनथी जेम समुद्रने आनंद थाय छे, तेम कमळ जेवा नेत्रवाळा प्रथम पुत्रने जोतांज दशरथराजाने अति आनंद थयो. ते वखते राजाए अर्थी जनोने चिंतामणीनी पेठे अगणित दान दीधुं. मोटा पुरुषोने घेर पुत्रनो जन्म थएथी दान देवानो चालज होय छे. सर्व प्रजाए ए वात सांभळतांज अति राजी थइ मोटो उत्सव कर्यो. दुर्वा, फूल तथा फळादिके करी युक्त पूर्ण पात्रो प्रजाए राजाने घेर मोकलाव्यां. आखा नगरमा उत्तम प्रकारना गायन थवा लाग्या. केसरना छांटा नाखवा लाग्या. घेरघेर तोरणो बंधाया. केटलाएक राजाओनी तरफथी पुत्र जन्मनी वधाइमां दशरथराजाने करभार आव्या. लक्ष्मी वास करी रहेवाना हेतुथी, तथा कमळनुं नाम पद्म होवाथी तेनी बराबरीने माटे ते बाळकनुं नाम "पद्म" राख्युं तथा बीजुं "राम" एवुं नाम पाड्युं.

लक्ष्मणनो जन्मोत्सव.

त्यारपछी केटलेक काळे दशरथ राजानी बीजी स्त्री सुमित्राए रात्रना पाछला प्रहरे वासुदेवना अवतारने सूचन करनारा, हाथी, सिंह, सूर्य, चंद्र, अग्नि, लक्ष्मी अने समुद्र, ए सात पदार्थ दीठा. ते प्रसंगे देवलोकथी कोइ एक परम महर्द्धिक देव चवीने सुमित्राना उदरमां, गर्भपणे उत्पन्न थयो. दिवसे दिवसे गर्भ वधतां मास पूरा थयेथी सुमित्राए, श्यामवर्ण, सर्व लक्षण युक्त, तथा जगतना मित्ररूप पुत्रने प्रसव्यो. ते दिवसे दशरथराजाने तथा सर्व नगर जनोने अधिक आनंद थवाथी तेणे संपूर्ण चैत्योमांनी श्रीमदर्हत् प्रतिमाओने स्नात्रपूर्वक आठ प्रका-

ते छुटीने जेम तेम उडतो उडतो एक साधु पासे आवीने पड्यो. ते वखते मात्र तेना कंठमां श्वासोश्वास रह्येलो हतो. तेवा प्रसंगे ते महा करुणासागर मुनिए तेने (हंसना बच्चाने) नवकारमंत्र संभळाव्यो. तेना सामर्थ्यवडे ते मरीने दश हजार वर्षना आयुष्यवाळो किन्नरलोकमां एक देव थयो. त्यांथी चवीने ते विदग्ध नामना नगरना राजा प्रकाशसिंहनी स्त्री प्रवरा राणीने पेटे कुंडलमंडित नामनो पुत्र थयो.

उपभोगाशक्त कयान पण काळे करी मर्ण पामीने भवाटवीमां भटकतो भटकतो चक्रपुर नामना नगरना राजा चक्रध्वजना उपाध्याय धुम्रकेतुनी स्त्री स्वाहाने पेटे पिंग नामनो पुत्रपणे पेदा थयो. ते पिंग तथा चक्रध्वज राजानी कन्या अतिसुंदरी एकज गुरुनी पासे विद्याभ्यास करवा जता हता. त्यां तेओने परस्पर प्रीति बंधाइ, तेथी लाग फावतां अतिसुंदरीनुं हरण करीने पिंग त्यांथी नाशीने विदग्ध नामना नगरमां जइने रह्यो. त्यां ते घास तथा लाकडां वेचीने जेम तेम पोतानो निर्वाह करवा लाग्यो; केमके गुण रहित पुरुषोनुं पेट एवुं काम कर्या विना भरातुंज नथी. कोइ एक प्रसंगे ते नगरना राजपुत्र कुंडळमंडिते अतिसुंदरीने दीठी. ते बेनो द्रष्टिमेळाप थतांज तेमने परस्पर प्रीति बंधाइ. पछी पोताना बापना भये करीने कुंडळमंडित छानी रीते अतिसुंदरीने लइने त्यांथी नीकळी एक पर्वतपर जइ त्यां घर करीने रह्यो. पिंग अतिसुंदरीना विरहथी उन्मत्तनी पेटे पृथ्वीपर फरवा लाग्यो. तेने कोइ एक समये गुप्ताक्ष नामना आचार्य मळ्या. तेनी पासे धर्म सांभळीने तेणे दीक्षा लीधी. परंतु अतिसुंदरी विषेनी तेनी प्रीति गइ नहीं. ते काळ करी सौधर्म देवलोकमां देव थयो.

डुंगरमां रहेला कुंडळमंडिते कुत्रानी पेठे दशरथराजाना राज्यमां लुट करवानुं शरु कर्युं. तेने एक वाळचंद नामना सुभटे पकडीने दशरथराजा पासे बांधीने आण्यो. पछी दशरथराजाए तेने केटलाएक काळ सुधी बंधीखानामां राखी तेनी सारी वर्त्तणुक मालम पडवाथी तेनी दीनता जोइ छोडी मूक्यो. कह्युं छे के, "शत्रु दीन थयेथी मोटा पुरुषना कोपनी शांति थाय छे." कुंडळमंडित त्यांथी छुट्या पछी पोताना बापनुं राज्य लेवानी इच्छा करतो पृथ्वीपर विचरवा लाग्यो. फरतां फरतां कोइ एक वखत तेने मुनिचंद्र नामना साधुनो समागम थयो, तेनी पासे धर्मदेशना सांभळी ते श्रावक थयो. पछी आयुष्य पुरुं करी राज्य मेळववानी अभिलाषा करतो काळ करीने मिथिला नगरीना राजा जनकनी स्त्री विदेहाने पेटे अवतर्यो.

सरसा जे इशान देवलोकमां देवीपणे उपनी हती त्यांथी चवी घणा भव करी राजाना उपाध्यायनी वेगवती नामनी कन्या थइ. त्यांथी ते दीक्षा लेइ काळ करी

ब्रह्मदेव लोकमां एक देवी थइ. काळे करीने त्यांथी चवी ते जनकराजानी स्त्री विदेहाने पेटे कुंडळमंडितना जीवनी साथे कन्यारुपे अवतरी. मास पूरा थये विदेहाए पुत्र तथा पुत्री प्रसवी. ए वखते पिंगनो जीव जे सौधर्म देवलोकमां देव थयो हतो तेणे विभंगज्ञाने करी पूर्वभवना पोताना वैरी कुंडळमंडितने जनकराजानी स्त्री विदेहाने पेटे पुत्रपणे उत्पन्न थयेलो दीठो. तेथी ते तेनापर क्रोधायमान थइ जन्मतांवेंतज तेनुं हरण करी गयो अने मनमां विचार करवा लाग्यो के, आने शिला उपर पछाडीने मारुं ! अथवा में पूर्व जन्ममां करेलां दुष्कर्मनुं फळ घणा भव भटकी भोगव्युं, अने दैवयोगे मुनिनो समागम थये साधुव्रत अंगिकार करवाथी आ देवगति पाम्यो छुं. त्यांथी वळी आ बाळकने मारवानुं घोर कर्म करवाथी मारे घणा भव भटकवुं पडशे, माटे एने मुकी देउं ! ए रीते मन साथे विचार करतां ते देवे तेने मारी नाखवानुं मोकुफ राखी तेने अलंकारादिक पहेरावीने पोतानी कान्तिए करी चारे दिशाने भरी मुकेला बाळकने वैताढ्य पर्वत उपर रथनुपुर नगरना नंदन उद्यानमां रुनी पेठे हळवेथी पृथ्वी पर मुकी दीधो.

ए वखते ते नगरनो राजा चंद्रगति फरवा निकळ्यो हतो. तेनी दृष्टी ते तरफ ओचिंती जवाथी तेजना अंबार जेवुं जोइ आश्चर्य पामी ते बोलवा लाग्यो के, आकाशमांथी एकाएक आ तेजनो केवो भटको पड्यो ! पछी त्यां आगळ ते दोडतो आव्यो अने जोयुं तो दिव्यालंकारे करी भुषित एक बाळक जमीनपर पडेलो तेना दीठामां आव्यो. तेथी ते घणो राजी थयो अने पोताने पुत्र नहोतो तेथी तेने लेइ पुत्रपणे मानी घेर आवी पोतानी स्त्री पुष्पवतीने ते बाळक सोंप्यो. पछी ते दिवसे तेणे पुष्पवतीए पुत्र प्रसव्यो एवी आखा नगरमां थाळी पीटावी प्रीति सहित तेनो जन्मोत्सव कर्यो, अने भामंडळना योगे तेनुं नाम राजाए भामंडळ पाड्युं. विद्याधरोनी स्त्रीओने हाथे पालण पोषण थतां ते बाळक दिवसे दिवसे चंद्रनी पेठे वृद्धि पामवा लाग्यो.

जनकराजानी स्त्री विदेहा, पोताना पुत्रनुं कोइ हरण करी गयुं तेथी दीनस्वरे मोटेथी रडवा लागी. ते वखते तेनुं आखुं कुटुंब शोक समुद्रमां डुबी गयेलुं देखावा लाग्युं. जनकराजाए तेनी घणी शोध करावी तथापि तेनो कोइपण स्थळे पत्तो लाग्यो नहीं, तेथी सर्वे निराश थइ बेठा. पछी तेनी साथे जन्मेली अनेक गुण रुप निधानना अंकुरभूत कन्यानुं नाम तेओए सीता राख्युं. अनुक्रमे दिवसो जतां जनकराजा तथा विदेहाराणीने ते पुत्रनो शोक ओछो थयो. कह्युं छे के, " संसारमां मनुष्यने हर्ष अने शोक थाय छे तथा जाय छे."

जनकराजा सीताना वरनी शोधमा.



क्रमे करी सीता, रुप, लावण्य तथा अनेक गुणे करी युक्त थइ थकी चंद्रने खानी पेठे वधवा लागी. यौवन अवस्था प्राप्त थतां सुधीमां तो ते सर्व कळा संपूर्ण शिखी महा चतुर थइ अने ते वखते ए जाणे रुप तथा लावण्यतानी नदीज होय नहीं! एवी देखावा लागी. वळी कमळ पत्रना जेवा जेनां नेत्र छे, एवी ते कन्या, लक्ष्मी समान शोभवा लागी. तेने जोइ जनकराजाने निशदिन विचार थवा लाग्यो के, आ कन्याने योग्य वर कोण मळशे? पछी तेणे योग्य वर खोळी काढवा माटे घणा राजाना पुत्रोने पोताना दूतो मोकली जोवराव्या, तथापि तेमांनो कोइपण राजाने गम्यो नहीं, तेथी ते सीताने योग्य वर मेळववानुं चिंतवन करतो तेनी तपासमां रह्यो.



आतरंग म्लेच्छनुं जनकराजापर चढी आववुं—दशरथ राजानी मांगेली मदद.

त्यार पछी एक वखत जनकराजाना राज्यमां आतरंगादिक अर्द्धबर्बर नामना राजा आवीने घणो उपद्रव करवा लाग्या तथा कल्पांतकाळना समुद्रनी पेठे तेओ उछळवा लाग्या. जनकराजाए तेओनुं निवारण न करी शकयाथी पोताने मदद करवा सारु दशरथराजाने तेडी लाववा एक दूत तेना तरफ मोकल्यो. ते दूत अयोध्यामां आवी पहोंचतां ते बाबतनी दशरथराजाने खबर पडी के तरतज तेने बोलावी पोतानी पासे बेसाडी तेने कहेवा लाग्यो के, "मारो मित्र जनक माराथी दूर रहेलो छे, तेमज हुं तेनाथी दूर रहेलो छुं. अमारो बंनेनो मेळाप थवो तो दैव उपर आधार राखे छे, तथापि आज तारा आववाथी मने जनकनी भेट थइ एम हुं समजुं छुं. जनकना राज्यमां, तेना नगरमां, सैन्यमां तथा तेना कुटुंबमां सर्व सुखी छेना? तेमज ते पोते शरीरे साजो ताजो अने सुखी छेना? तेम छतां तारे अहीं आववानुं शुं कारण छे, ते कहे." त्यारे ते दूत कहेवा लाग्यो के, हे दशरथ राजा, मारा स्वामी जनकराजाना घणां सगांवहालां छे ते वधामां आपने ते सुहृत् हृदय, अने पोताना आत्मानी पेठे जाणे छे. सुख अथवा दुःखनी वखते ते तमारा विना बीजा कोइने याद करतो नथी. तमे केवळ तेना कुळ देवतारूप छो. मारा आववानुं प्रयोजन ए छे के, "वैताढ्य पर्वतनी दक्षिण दिक्षामां तथा कैलास पर्वतनी उत्तर तरफ घणा अनार्य जनपद छे. बर्बर कुळ जेवो एक अर्द्धबर्बर ना-

मनो देश छे. तेमां महा भयंकर पुरुषो रहे छे. तेमां ते देशना घरेणारूप एक मयूरमाल नामना नगरनो आतरंग नामनो एक महा म्लेच्छ राजा छे. शुकदेश, अंकनदेश, कांबोजदेश, वीगेरे केटलाएक देशोमां तेना हजारो पुत्रो राजा थइने त्यांना उपभोग भोगवे छे. एक एक अक्षोहिणी सैन्यना पति एवा तेना हजारो पुत्रो सहित ते आतरंग राजा जनकना देशमां आवीने तेनी पृथ्वीनो नाश करवा लाग्यो छे. वळी ते दुष्टबुद्धिए नगरमां आवीने चैत्यनो पण भंग कर्यो छे. आपणा धर्मनो नाश करवामां ते स्वधर्म माने छे. माटे हे धर्मिष्ट राजा, आपणा स्वधर्मनी तथा जनकराजानी जेम बने तेम जलदी आप रक्षा करवाने योग्य छो. हालमां ए बन्नेना प्राणभूत आपज छो." दूतनां एवां वाक्यो सांभळतांज दशरथराजाए तत्काळ प्रयाण भेरी वगडावी. कह्युं छे के, " सज्जन पुरुष सज्जननी रक्षा करवामां जरा पण विलंब करता नथी. "



रामनुं जनकराजानी मददे जवुं-म्लेच्छोनो पराभव—जनके रामने सीता आपवी.

ए प्रसंगे दशरथ राजानी पासे आवीने राम कहेवा लाग्यो के, हे तात, म्लेच्छोने मारवा सारु तमे पोते जशो तो (पोतानी सामे हाथ करीने) भाइओ सहित उभो रहेलो जे आ राम ते शा कामनो छे? जो तमे कहेशो के, पुत्रना स्नेहे करी तेओने शत्रुनी सामे मोकलवानी मारी हिम्मत चालती नथी, तो भरतराजाथी इक्ष्वाकु वंशमां जन्मसिद्ध पराक्रम छे. माटे आप अहींआंज रहो, अने म्लेच्छोनो नाश करवानी मने आज्ञा आपो. हे स्वामिन्, पोताना पुत्रना जयनी वात तमे थोडाज दिवसमां सांभळशो. एवी रीते घणा आग्रहथी दशरथराजानी रजा मागीने राम पोताना नाना भाइ सहित सैन्यने साथे लेइने मिथिला नगरी प्रत्ये आव्यो. त्यां महावनमां जेम हरण, वाघ, शार्दूल अथवा सिंह विगेरे महा भयंकर प्राणीओ देखाय तेम ते म्लेच्छोना सुभटोने रामे दीठा. तेमज तेओए पण रामने दीठा. तेवाज जेनी भुजाओ लडाइ करवाने कांपी रही छे तथा जेओने पोताना पराक्रमनो घणो गर्व छे, एवा ते सर्व म्लेच्छो रामना उपर तुटी पडी तेने दुःख देवा लाग्या. तेओए बाणोनी एवी तो वृष्टि करी के, तेथी उडेली धूळवडे जाणे आखुं जगतज आंधळुं थतुं होय नहीं! ए प्रकारे पोताना शस्त्रादिकोए करी ते म्लेच्छो रामना सर्व सैन्यने ढांकी दीधुं. ते वखते म्लेच्छो पोतानो जय थयो एम मानवा लाग्या अने जनकराजा पोताना सैन्यनो पराभव थतो जोइ बधा सैन्यनुं मरण आव्युं एम मानवा लाग्यो.

आ प्रमाणे थतां रामे पोताना धनुष्य घाण सज्जी तेनी कमान चडावीने एवो तो टणत्कार कर्यो के, जेथी बधानी आंखोनी पांपणो मटमटायमान थती बंध रही गइ. पछी पृथ्वीपर आवेला देवतानी पेठे राम, जेम पारधी मृगोने मारे तेम, पोताना अस्त्रादिके करी क्रोडो म्लेच्छोने मारवा मंडी गयो. ते वखते म्लेच्छो विचार करवा लाग्या के, जनकराजा तो केवल गरीब छे, तेमज तेनुं सैन्य पण मच्छर जेवुं छे. वळी तेनी सहायता करवा सारु आवेलां सैन्य पण नाश पामीने दशेदिशा तरफ नाशी गयां. तेम छतां आ आकाशने आच्छादन करनारवाळा गरुड पक्षीओना जेवा क्यांथी आवे छे. एवी रीते ते आतरंगादिक म्लेच्छो परस्पर भाषण करता कोपायमान थइने, एकदम साथे लागा राम उपर शस्त्र तथा अस्त्रनी वृष्टि करवा लाग्या. ते जोइने सिंह जेम हाथीने मारे तेम दृढ मार मारनारो, दूरथी अस्त्रोने पाडनारो, तथा शिघ्रवेध करनारो जे राम, तेणे लीलामात्रे करी एक क्षणमां तेओनो नाश करी दीधो. थोडा जीवता रहेला म्लेच्छो कागडाओनी पेठे दशेदिशा तरफ नाशी गया. ते वखते प्रजा सहित जनकराजा अति आनंद पाम्यो. पछी तेणे पोतानी रुप लावण्य गुणनी पेटी सीता नामनी कन्याने योग्य आ वरज छे, एम मन साथे निश्चय करी घणी खुशीनी साथे तेने रामने आपी. जनक राजाने राम आव्याथी पोतानी पुत्रीने वर तथा पोताने जय, ए बेऊ एकज वखते मळ्यो.

सीताने जोवा नारदनुं जवुं तेने पडेलो मार—भामंडळने नारदे बतावेलुं सीतानुं चित्र—ते जोइ भामंडळनुं कामातुर थवुं.

कोइएक समये लोकोना मुखथी जानकी (सीता) ना स्वरुपनी तारीफ सांभळीने कौतुकवडे नारद तेनुं स्वरुप जोवा सारु मिथिला नगरीमां आवीने ते कन्याना घरमां गयो. पीळां छे जेनां नेत्रो, पीळा छे जेना केश, वळी पीळी छत्री जेणे करमां धरी कोपीन पहेरेली छे, तथा जेनुं शरीर पातळुं छे अने जेना माथा उपर चोटली लपी रही छे, एवा महा भयंकर नारदने जोइने, सीता कंपायमान थती, हा मातः ! हा मातः ! ए प्रमाणे मोटा अवाजे बुम पाडती त्यांथी बीजा घरमां नाशी गइ. ते वखते त्यांनी द्वारपाळ दासीओए दोडी आवी कोइए नारदनुं गळुं पकड्युं, कोइए तेनी चोटली अने कोइए तेना हाथ झाल्या. ए प्रमाणे दासीओ तेना बुरा हाल करवा लागी. एटलामां ते कळकळाट सांभळीने जनकराजाना यमदूत जेवा क्रोधायमान राज्यपुरुषो हाथमां शस्त्र लेइ त्यां आवी बोलवा लाग्या के, आ

कोइ चोर छे, एने पकडो, बांधो, मारो. पछी दासीओए नारदने धक्को मुक्की करीने मुकी दीधो. एवी रीते महा संकटे करी नारद तेओना हाथमांथी छुटीने त्यांथी नाशी वैताढ्य पर्वत उपर आवी मन साथे विचार करवा लाग्यो के, जेम कोइ वाघणीना मुखमां आव्या पछी जीवतो रहे तेम हुं ते दासीओना हाथमांथी जीवतो छुटीने आ घणा विद्याधरोनो इश्वर जे वैताढ्य पर्वत, तेना उपर मोटा भाग्ये करीने आवी पहोंच्यो छुं. मने निभ्रंछी मार मारयानुं फळ मारे तेने अवश्य बताववुं जोइये. एम मन साथे मनसुबो करी तेणे धार्युं के:—आ पर्वतनी दक्षिण दिशा तरफ इंद्र जेवो पराक्रमी चंद्रगति राजानो पुत्र भामंडळ राजा छे. त्यां जइने कागळ उपर सीतानी छबी चित्री तेने बतावीश तो ते जोइने बळात्कारे पण ते तेनुं हरण कर्या वगर रहेशे नहीं. पछी जेम तेनी दासीओए मारी अवस्था करी एवीज हुं तेनी अवस्था करीश. एवो विचार करी नारदे पट उपर सीतानुं चित्र कहाडी भामंडळ राजा पासे जइने बताव्युं. त्रणे जगतमां अपूर्व एवुं सीतानुं चित्र जोइने भामंडळ राजा तेना उपर मोहित थयो अने तेने कामे करी पीडायमान थतां तेनामां एवी तो लय लागी के, रात्र दिवस जरा पण उंघ आवे नहीं. विंध्यापर्वत उपरथी लावेलो हाथी जेम खाय पिये नहीं, तेम भामंडळराजा खावुं पीवुं मूकीने, तथा मौन धारण करीने योगीनी पेठे तेनुंज ध्यान धरवा लाग्यो. आ प्रमाणे भामंडळनी स्थिति थएली जोइ तेनो पिता चंद्रगति तेने कहेवा लाग्यो के, हे पुत्र, तारा मनमां शुं दुःख छे? अथवा तारा शरीरे कांइ व्याधि उत्पन्न थइ छे? अथवा कोइए तारी आज्ञानो भंग कर्यो छे? अथवा कोइए तारुं अपमान कर्युं छे? अथवा कांइ बीजुं दुःख छे? जे होय ते मने कहे. ते वखते भामंडळ लज्जाथी महोडुं नीचुं करीने कांइपण प्रत्युत्तर न वाळतां मुगो बेशी रह्यो. कह्युं छे के, "कुलीन पुरुष गुरु (वडा) नी पासे तेवी वात कहेवाने समर्थ होता नथी."

—:o:—

नारदे चंद्रगतिराजा पासे करेलुं सीताना रुपनुं व्यान.

ते समये भामंळना मित्रे चंद्रगतिराजाने भामंळना दुःखनुं कारण जे नारदे बतावेला सीता चित्रपट उपरथी थयेलुं हतुं ते सर्व निवेदन कर्युं. ते सांभळीने राजाए घणी भक्ति सहित नारदने पोताने घेर बोलावी तेने पूछ्युं के, भामंडळने तें जे स्त्रीनुं चित्र बताव्युं हतुं ते स्त्री कोण छे? अने ते कोनी कन्या छे? त्यारे नारदे जणाव्युं के, हे राजा जनकराजानी कन्या सीतानुं चित्र कहाडीने में तारा पुत्रने बतावेलुं छे. ते जेवी स्वरुपवान छे, तेवुंज चित्र तो कहाडी बताववाने हुं अगर बीजो कोइ पण समर्थ थनार नथी. ए स्त्री शरीरे एवी तो सुंदर छे के, तेने बीजी

कोइपण उपमा देइ शकाय तेम नथी. तेना रुपना जेवुं बीजी कोइ स्त्रीनुं रुप नथी. नागकन्याओमां पण एवी कोइ रुपवान नथी. वळी गांधर्वनी कन्याओमां पण एनी बराबरी करनारी कोइ पण मळशे नहीं, तो पछी मनुष्यनी स्त्री ते तेनी आगळ शा हीसाबमां? सीताना यथास्थित रुपने धारण करवाने देव पण समर्थ थाय तेम नथी. तेनो वेश लेवाने देवोना नटोनी शुं विशाद छे? साक्षात् ब्रह्मदेव पण तेनुं रुप लेवाने समर्थ थनार नथी. तेनी आकृतिमां, तेना वचनोमां, तथा तेना कंठमां जे मधुरता छे, अने तेना हाथ पगमां जे रक्तता छे, तेनी एक जुदीज तरा छे. घणुं तो शुं, पण तेनुं स्वाभाविका रुप लखवाने अथवा बोलवाने हुं समर्थ थनार नथी. परमार्थपणे कहुं छुं के, ए कन्या आ भामंडळने योग्य छे. एवो मनमां विचार करीने मारी बुद्धिए करी में तेने चित्रपट उपर आलेखी बतावी. एवां नारदनां वचनो सांभळीने चंद्रगति राजाए पोताना पुत्र भामंडळने कीधुं के, हे पुत्र, ए तारी स्त्री थशे. तुं मनमां चिंता कर नहीं. एवी रीते भामंडळना मननुं समाधान कर्या पछी चंद्रगति राजाए नारदने विदाय कर्यो.



चंद्रगतिए जनकराजा पासे करेली सीतानी मांगणी.

पछी तेणे चपलगति नामना विद्याधरने बोलावीने आज्ञा करी के, तुं जलदी मिथिला नगरीमां जइने जनकराजानुं हरण करी तेने अहीं लेइ आव. राजानी आज्ञा थतांज ते विद्याधरे रात्रीना वखते मिथिला नगरीमां जइ कोइ न जाणे तेम जनकराजानुं हरण करी आवी तेने पोताना राजाने सोंप्यो. पछी चंद्रगति राजा तेने (जनक राजाने) भाइनी पेठे स्नेहवडे आलिंगन करी आसन उपर बेसाडी प्रेम सहित तेनी साथे भाषण करवा लाग्यो के, हे जनकराजा, लोकोत्तर गुणवाळी जे तारी सीता नामनी कन्या ते आ रूपसंपत्तिवान मारा भामंडळ नामना पुत्रने देवा योग्य छे. ए संबंधवडे आपण बेउ वच्चे मित्रभाव थशे. एवुं तेनुं बोलवुं सांभळीने जनकराजाए तेने कीधुं के, मारी कन्या हुं रामने आपी चुक्यो छुं. ते बीजाने केम आपुं? कन्या तो एकज वखत अपाय छे. त्यारे चंद्रगति बोल्योः—हे जनक, तारी साथे स्नेह वधारवा सारुज तने अहीं बोलावी मंगावी में कन्या विषे याचना करी, नहीं तो तेनुं पण हरण करवाने हुं समर्थ छुं. जो के ए कन्या तें रामने आपी छे, तोपण अमने जीत्या शिवाय राम तेने वरवाने समर्थ थनार नथी. माटे देवतानी आज्ञाथी अमारे घेर जेनुं हजारो यक्षोए करी रक्षण थइ रहेलुं छे, एवा महा तेजस्वी वज्रावर्त तथा अर्णवावर्त नामनां बे धनुष्य छे, जे अद्यापिपर्यंत कुळ देवतानी पेठे पूजाय छे, ते तुं ले. तेमांना









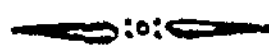
मनुष्य छे,

एक धनुष्यने जो रामे सज्ज कर्युं तो जाणे बधा राजा जीताया. एम जाणीने पछी तारी कन्यानी साथे राम सुखे लग्न करे.



सीता स्वयंवर.

चंद्रगति राजाए आ प्रमाणे करवानी जनकराजा पासे बळात्कारे प्रतिज्ञा करावीने, वज्रावर्त तथा अर्णवावर्त नामनां उपर जणाव्या मुजबनां वे धनुष्य सीतानो स्वयंवर मंडप रची त्यां तेमांना एकने सज्ज करी तेनी कमान चडावनारने सीता वरे एवो निश्चय करी तेना स्वयंवरमां मूकवा सारु ते वे धनुष्य लावीने मिथिला नगरीमां जनकराजाना राजगृहमां मूक्या तथा पोताना पुत्र भामंडळने पण त्यां लावी राख्यो अने पोते (चंद्रगति) परिवार सहित नगरनी बहार रह्यो. जनकराजाए चंद्रगति साथे बनेला बनावनी सर्व हकीत पोतानी स्त्री विदेहाने कही संभळावी. ते सांभळतां तेने हृदय उपर शल्य आवी पड्या जेवुं लाग्युं अने रुदन करती ते बोलवा लागी के, हे दैव, तुं, घणो निर्दय छुं, मारा पुत्रनुं जन्मतांवेंतज हरण कर्या छतां पण तारुं मन तृप्त थयुं नहीं! के जेथी हवे वळी मारी कन्यानुं पण हरण करवाने तैयार थयो छुं. दुनिआमां सर्व लोकमां पोतानी इच्छा मुजब वर वराय छे, पारकी इच्छानुसार वर थतो नथी; तथापि आ वखते पारकी इच्छानुसार वर करवो पडे छे. आ धनुष्य विषे करेलो पण जो रामे पूरो न कर्यो, अने बीजा कोइए पूरो कर्यो तो इच्छीत वरनी प्राप्ति थशे नहीं. हा! दैव!! एवां दीलगीरीना उद्गारो विदेहाना मुखमांथी निकळतां तेने जनकराजा कहेवा लाग्यो के, हे स्त्री, तुं धी मां. में रामनुं पराक्रम जोयुं छे. आ धनुष्य एनी पासे एक लता (वेल) जेवुं छे. ए प्रमाणे कही तेणे विदेहाना मननुं समाधान कर्युं. पछी तेणे बंने धनुष्योनी पूजा करी स्वयंवर मंडप तैयार कराव्यो हतो तेमां लावीने मुक्यां अने ते स्वयंवरमां बोलावेला विद्याधर राजाओ पोतपोतानी योग्यता मुजब त्यां मांडेला आसन उपर बेठा.



रामनुं वज्रावर्त अने लक्ष्मणनुं अर्णवावर्तनी कमाननुं चडाववुं-सीतानुं रामने वरमाळा आरोपवुं राम सीतानो लग्नोत्सव-विगेरे.

पछी पृथ्वी उपर फरनारी देवांगना जेवी सीता दिव्य अलंकार पहेरी पोतानी सखी सहित स्वयंवर मंडपमां आवीने धनुष्यनी पूजा करी अंतःकरणमां रामनुं ध्यान धरती उभी रही. ते वखते नारदे जेवुं जणाव्युं हतुं तेवुंज सीतानुं रूप

जोइने भामंडळ राजाने कामज्वर उत्पन्न थयो. पछी जनकराजानो द्वारपाळ बोल्यो के, हे स्वयंवर मंडपमां बीराजेला सर्व राजाओ सांभळो. अमारा जनकराजानी एवी आज्ञा छे के, जे कोइ पुरुष आ वे धनुष्योमांथी एक धनुष्यनी कमान चडावशे, तेने मारी कन्या परणशे. ए प्रमाणे प्रतिज्ञानी हकीकत सांभळतांज त्यां बेठेला महा पराक्रमी सर्व राजाओ धनुष्यनी कमान चडाववाना हेतुथी आसन उपरथी उठी धनुष्यनी पासे आवीने ऊभा रह्या. ते वखते मोटा मोटा सर्पो जेने वींटाइ वळेला छे, अने जेनुं तेज महा तीव्र छे, एवां ते धनुष्योने जोइने त्यां तेनी कमान चडाववाने सारु आवेला राजाओमांथी मात्र तेने अडकवानी पण कोइनी हिम्मत चाली नहीं, तो पछी तेने उपाडी कमान चडाववानी वात तो दूरज रही ! हाथ खंखेरता ते सर्व राजाओ ते धनुष्योमांथी निकळता अग्निना कणथी बळता थका आवी पोत-पोताने आसने वेसी गया. त्यार पछी जेणे सोनाना कुंडळ कानमां पहेर्यां छे, हाथीना जेवी जेनी चालवानी गति छे, चंद्रगत्यादिक राजाओ जेनी सामे मश्करीथी जोइ रह्या छे, अने वळी जेनी सामे जनकराजा शंका सहित जोइ विचार करतो बेठो छे, एवो लक्ष्मणनो मोटो भाइ रामचंद्र निःशंकपणे धनुष्यनी कमान चडाववा माटे तत्पर थइ आसन उपरथी उठ्यो, अने ते धनुष्यनी पासे जइ इंद्र जेम वज्र ग्रहण करे तेम तेणे वज्रावर्त धनुष्यने हाथथी उपाड्युं. ते वखते तेना प्रभावे करी धनुष्य उपरथी सर्प तथा अग्नि शांत थइ गयो. पछी तेणे ते वज्रावर्त धनुष्यने पृथ्वी उपर राखीने नेतरनी लाकडीनी पेठे तेने नरम करी तेनी कमान कान सुधी खेंचीने चडावी. तेनो टणत्कार एवो थयो के, जाणे रामना यशनी नोबतज गडगडाटमान थइ होय नहीं ! तेमज तेना गर्जारव शब्दवडे आकाश अने पृथ्वी वच्चे एकज ध्वनि थइ रह्यो. ते जोतांज तत्काळ जरापण विलंब न करतां सीताए रामना गळामां वरमाळा आरोपी. त्यार पछी रामचंद्रे धनुष्यनी प्रत्यंचा उतारी नांखी, लक्ष्मणने अर्णवावर्त्त धनुष्यनी कमान चडाववानी आज्ञा करवाथी, तरतज वासुदेवे ऊठी ते धनुष्यने सज्ज करीने कमान चडावी टणत्कार कर्यो. तेना शब्दे करी सर्व दिशाओ मुख शून्य दीसवा लागी. पछी लक्ष्मणे ते धनुष्यनी प्रत्यंचा उतारी तेने ठेकाणे मुक्युं. ते जोइने त्यां आवेला विद्याधर राजाओए अति विस्मय पामी देवांगना जेवी पोतानी अढार कन्याओ लक्ष्मणने आपी. पछी सीताने परणवानी अभिलाषाथी आवेलो भामंडळ राजा लज्जायमान थयो, तथा तेनो पिता चंद्रगति हाथ खंखेरतो त्यांथी विदाय थइ पोताना नगर प्रत्ये गया. तेमज बीजा राजाओ पण पोतपोताने स्थानके गया. पछी जनकराजाए अति प्रीतिवडे घणा आडंबर सहित अति उत्साह पूर्वक सीताने रामचंद्र साथे परणावी. दशरथराजाए पण रामना लग्नमां घणो उत्सव

कर्यो. ते वखते जनकराजाना भाइ कनकनी स्त्री सुप्रभाना उदरथी उत्पन्न थएली भद्रा नामनी कन्या तेओए भरतने आपी. ए बधुं कार्य थइ रह्या पछी दशरथराजा पोताना पुत्रो तथा तेमनी स्त्रीओने साथे लेइ अयोध्यामां आव्यो. त्यां तेणे पोतानी प्रजा सहित महोत्सव कर्यो.



कौशल्याने स्नात्रजळ न आववाथी मरवा करेल मनसुबो.

एक दिवस दशरथ राजाए मोटी रिद्धिए करी चैत्य महोत्सव करीने शांतिनाथनो स्नात्र महोत्सव कर्यो. तेनुं स्नात्रजळ प्रथम पटराणी कौशल्याने पहोंचाडवा माटे अंतःपुरना मोटा दरोगानी साथे सौथी पहेलां मोकलाव्युं. पछी बीजी स्त्रीओने पहोंचाडवा माटे दासीओनी साथे मोकल्युं. नाजर घरडो हतो अने दासीओ तरुण हती तेथी तेओ पाछळथी स्नात्रजळ लेइने निकळेली हती तोपण तेओए नाजरना करतां पहेलां राजानी बीजी स्त्रीओ पासे जइ पहोंची तेमने स्नात्रजळ आप्युं. तेनी तेओए वंदना करी पोताने मस्तके चढाव्युं. वृद्ध नाजर हळवे हळवे चाली जतो हतो तेथी कौशल्याने तेओनी साथे पण स्नात्रजळ मळ्युं नही. तेथी ते मनमां विचार करवा लागी के, राजाए सघी स्त्रीओने जिनेंद्र भगवानना स्नात्रजळवडे प्रसाद कर्यो, अने हुं पटराणी छतां मने सौथी प्रथम मोकलवुं जोइए ते तो रह्युं, पण बीजी स्त्रीओनी साथे पण मोकल्युं नहीं; माटे हुं मंदभाग्य छुं. तो हवे मारे आ जीव राखीने शुं करवानुं छे? कह्युं छे के, " अपमान थया छतां मनुष्ये जीववुं ए मरण करतां पण घणुं मातुं छे. "



कौशल्याए फासो खावा करेल तैयारी—दशरथराजानुं आवी पहोंचवुं—स्नात्रजळनुं मळवुं—वृद्धावस्थानां लक्षणो—दशरथराजाने उपजेलो वैराग्य.

ए प्रमाणे मन साथे विचारी, मरवानो निश्चय करी कौशल्या घरमां जइ पोताना वस्त्रवडे गळामां पास बांधवाने तैयार थइ, ते वखते अचानक दशरथराजा त्यां आवी चड्यो, अने जुवे छे तो कौशल्याए मरण आदरेलुं दीठुं. तेनो खरो हेतु न समजवाथी तथा तेना मरणना भयथी तेनी आवी अवस्था जोइ तेने एकदम

पोताना खोळामां बेसाडी पूछवा लाग्यो. हे कौशल्या ! तें आ अघटित कर्मनो आरंभ केम कर्यो छे ? शुं तारुं कोइए अपमान कर्युं छे ? अगर शुं दैवयोगे माराथीज तारो कांइ अपराध थयो छे ? अथवा तेनुं खरुं कारण शुं छे ? ते तुं मने कहे. एवुं राजानुं बोलवुं सांभळीने गद्गद वाणिये करी कौशल्या तेने कहेवा लागी. हे राजन् जिनेश्वर भगवंतनुं स्नात्रजळ सर्व राणीओने तमे जुदुं जुदुं मोकल्युं पण मने मोकल्युं नहीं. एटलुं कहेतामांज पेलो वुढो नाजर स्नात्रजळ लेइ त्यां आगळ आव्यो, अने कौशल्याने प्रणाम करी कहेवा लाग्यो के, राजाए आ जिन स्नात्रजळ तमारा सारु मोकल्युं छे. ते वखते राजाए तेना हाथमांथी स्नात्रजळ लेइ राणीना मस्तक उपर ढोळ्युं. अने कंचुकी (नाजर) ने पूछयुं के, तने आटलो बधो वखत केम थयो ? त्यारे ते बोल्यो के, हे स्वामी, सर्व कार्य करवाने असमर्थ एवी आ मारी वृद्धावस्थानो अपराध छे. आ मारा शरीर सामे जुओ. एवुं तेनुं बोलवुं सांभळीने तथा तेनी अवस्था सामे जोइने राजा मनमां विचारवा लाग्यो. मुमूर्षु (थोडा वखतमां मरणने शरण थनारा) नी पेठे चालतां जे ढगले डगले अटकी जाय छे, जेना मुखमांथी लाळ वर्षा करे छे, जेना अंगने सुकेला कोचलानी उपमा आपीए तो चाले, जेना सर्व अंग उपरना केश सफेद थया छे, भृकुटीना केशोवडे जेनां नेत्रो ढंकाइ गयेलां छे, जेना शरीरमां मांस अने रुधिरनो लेश पण मळे नहीं, वळी सर्व अंग जेनुं कंपी रह्युं छे, एवा आ कंचुकीनो जिनस्नात्रजळ मोडुं लेइ आववामां बीजो कांइपण दोप जणातो नथी. परंतु ज्यांसुधी मारी एवी अवस्था थइ नथी त्यांसुधी मारे मोक्षने माटे महेनत करवी जोइए, नहीं तो वृद्धावस्थामां उपर जणाव्या प्रमाणे हाल थतां ते कार्य सिद्ध करवुं महा मुश्केल थइ पडशे. एवी अभिलाषाए करीने मनना मनोरथ पूर्ण करवा माटे संसार उपरथी विरक्त थइ वैराग्य धारण करीने विषयभोग विरामी दशरथराजाए केटलाएक काळ कहाड्या.

—o:o:o—

भामंडळ जनक पुत्र होवानुं प्रगट थवुं. विगेरे.

कोइएक समये अयोध्या नगरीमां चार ज्ञाने सहित सत्यभूति नामना मुनि संघनी साथे आव्या. तेमने वांदवा माटे दशरथराजा पोताना परिवार साथे संघमां आव्यो. त्यां मुनिने वंदना नमस्कारादि करी परिवार सह ते देशना सांभळवा बेठो. ए वखते वैताढ्य पर्वत उपरथी सीताना अभिलाषे करी संतप्त थएला पोताना भामंडल नामना पुत्र सहित चंद्रगतिराजा विद्याधरोने साथे लेइ, रथावर्त पर्वत उपर श्री अर्हंत भगवानने वंदना करवा गयो हतो, त्यांथी आकाश मार्गे पाछा

आवतां तेणे अयोध्यामां मुनिने दीठा. तेथी ते पण विमानमांथी नीचे उतरी मुनिनी पासे आवी नमस्कारादि करीने तेमनी पासे धर्मोपदेश सांभळवा बेठो. ते वखते सर्वावसरना जाण ते सत्यभूति मुनिए सीतानी इच्छाथी भामंडळने तापे घेरी लीधेलो जाणीने तेओना पूर्व जन्मनुं प्रस्तावन करी तेओना पापनी निवृत्तिने अर्थे चंद्रगतिराजा, तेनी स्त्री पुष्पवती, भामंडळ तथा सीता, एमनी पूर्वजन्मनी कथा *कही संभळावी, आ जन्ममां सीता अने भामंडळ एकज काळे युग्म (जोडलां) थया. ते तथा भामंडळनुं जन्मतांवेंतज हरण थयुं ते, सघळो यथास्थित अधिकार कही संभळाव्यो. मुनिना मुखथी ए सघळो वृत्तांत सांभळ्याथी भामंडळने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. तेथी ते मुर्छा खाईने पृथ्वीपर ढळी पड्यो. पछी केटलीक वारे ते सावध थइ उठीने सत्यभूति मुनिए कहेलो सर्व वृत्तांत कहेवा लाग्यो. ते सांभळीने, चंद्रगत्यादिक राजा परम संवेगने पाम्या. पछी महा बुद्धिमान भामंडळे सीता मारी बेन छे एम जाणीने तेने नमस्कार कर्यो. तेमज सीताए पण जन्मती वखते हरण थयेलो आ भामंडळ मारो भाइ छे एम जाणी आनंद पामीने तेने आशीर्वाद आप्यो. पछी जेना अंग उपर आनंदे करी सर्व रोमांच खडां थइ गयेलां छे, अने तत्काळ जेने सुहृद् भाव उपन्यो छे, एवा ते भामंडळे, भूमि उपर माथुं टेकीने रामने नमस्कार कर्यो. चंद्रगतिराजाए दूतद्वारा जनकराजाने विदेहा सहित बोलावीने कह्युं के, आ भामंडळ तमारो पुत्र छे. ए वखते जनकराजा तथा विदेहा राणीने मेघनी गर्जनाए करी मोरने जेम आनंद थाय तेम अति आनंद थयो. पछी विदेहाना स्तनोमांथी दूधनी धारा छुटवा मांडी तेथी भामंडळे आ मारा माता पिता छे एम निश्चय जाणीने तेओने नमस्कार कर्यो. पछी तेओए (जनक तथा विदेहाए) पोताना पुत्र भामंडळनुं मस्तक चुंबन कर्युं. ए बधुं जोइने संसारथी विरक्त थइ चंद्रगतिराजाए भामंडळने पोताना राज्यनी सोंपरत करी मुनि पासे दीक्षा लीधी. त्यारपछी भामंडळराजा सत्यभूति मुनिने, पोताना पिता चंद्रगति मुनिने, पोताना पिता जनकराजाने तथा विदेहा माताने, सीताने, दशरथराजाने तथा रामचंद्रने नमस्कार करी तेओनी रजा लेइ वैताढ्य पर्वत उपर पोताना नगर प्रत्ये गयो. पछी दशरथराजा सत्यभूति मुनिने नमस्कार करी पोताना पूर्व जन्मनो वृत्तांत पूछवा लाग्यो. त्यारे मुनिए तेने नीचे प्रमाणे यथास्थित हकीकत जणावी.

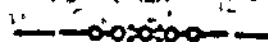
---

* आ कथा पाछळ पाने ९८ थी ९७ सुधीमां आवी गइ छे तेथी जाणी लेवी.

दशरथराजानुं पूर्वभव वृत्तांत-जनकादिनो संबंध.

पूर्वे तुं सेनापुर नामना नगरमां एक महात्मा भावन नामना वाणीआनी स्त्री दीपीकाना उदरथी उपास्ति नामनी कन्यापणे उत्पन्न थयो हतो. ते कन्या साधुनी निंदा करनारी थइ. ते पापना योगे मरीने तेनो जीव पश्वादिक योनीओ पाम्यो. ए प्रमाणे भव भमतां कोइ एक समये चंद्रपुर नामना नगरमां धन्य नामना एक व्यापारीनी स्त्री सुंदरीने पेटे तारो जीव वरुण नामनो पुत्र थयो. ते घणो उदार थयो. ते भवमां पोताना उदार स्वभावे करी साधुओने इच्छा करतां पण ते वधारे दान देवा लाग्यो. त्यांथी काळे करी मरण पामीने तुं एक देवलोकमां देवपणे उपन्यो. त्यांथी चवीने तुं पुष्कला नामनी नगरीमां नंदिघोष राजानी स्त्री पृथ्वीदेवीना उदरथी नंदिवर्द्धन नामे पुत्र थयो. नंदिघोषराजा तने राज्य उपर बेसाडीने यशोधर नामना मुनि पासे दीक्षा लेइ आयुष्य पूर्ण करी, काळ करीने ग्रैवेयक देवलोकमां देव थयो, अने तुं श्रावक धर्म पाळीने आयु पूर्ण थये काळ करी ब्रह्मदेवलोकमां देव थयो. त्यांथी चवीने तारो जीव पूर्व महाविदेह क्षेत्रमां वैताढ्य पर्वतनी उत्तर दिशा तरफ शशिपुर नामना विद्याधरोना स्वामी रत्नमालीनी स्त्री विद्युल्लताने पेटे महा पराक्रमी सूर्यजय नामनो पुत्र थयो. एक समये ते रत्नमाली नामना राजाए अति गर्वित विद्याधरोना स्वामी वज्रनमन राजाने जीतवा सारु सिंहपुर नामना नगरमां आवी, बाळ, वृद्ध, स्त्री, पशु तथा उपवन सहित ते नगरने बाळवानो आरंभ करवा मांड्यो. ते वखते एक पूर्व जन्ममां उपमन्यु नामनो उपाध्याय हतो तेनो जीव सहस्रार देवलोकमां देव थयो हतो, ते त्यांथी आवीने रत्नमाली राजाने कहेवा लाग्यो के, हे रत्नमाली, आ महा पाप तुं कर नहीं. पूर्वजन्ममां तुं भूरिनंदन नामनो राजा हतो, ते वखते तें मांस खावानो निषेध कर्यो हतो. ए प्रतिज्ञा तें पाळी नहीं तेथी केटलाक भव भटकी कोइ पुन्यानुयोगे तुं आ रत्नमाली राजा थयो छुं. माटे घणा भव भटकवावाळुं आवुं घोर कृत्य करवुं तने योग्य नथी. ए प्रमाणे ते देवना वचनो सांभळी रत्नमाली मुगेमुगो बेसी गयो. पछी ते देव पोताना पूर्वजन्मनो वृत्तांत कहेवा लाग्यो—हे राजा, पूर्वे हुं एक उपमन्यु नामनो उपाध्याय हतो. ते वखते एक स्कंद नामना पुरुषे मने मार्यो. त्यांथी मरी हुं हाथी थयो. तेने पकडीने भूरिनंदन राजा पोताने घेर लाव्यो. त्यां केटलोक काळ रह्या पछी एक वखत संग्राममां जवाथी त्यां हुं मरायो. त्यांथी तेज भूरिनंदन राजानी स्त्री गंधाराने पेटे मारो जीव अरिसुदन नामनो पुत्र थयो. ते भवमां मने (अरिसुदनने) जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं, तेथी आ संसारथी विरक्त थइ दीक्षा लीधी. त्यांथी काळ करीने सहस्रार नामना देवलोकमां आ हुं देव

थयो छुं, अने भूरिनंदन राजा मुवा पछी एक वनमां मोटो अजगर थयो. त्यां ते दावानळमां बळी मरीने नर्कमां गयो. त्यांथी निकळी तुं आ रत्नमाली राजा थयो छुं. तारी साथे पुर्वभवनो मारो स्नेह होवाथी में आवीने तने बोध कर्यो. पुर्वे भूरिनंदनना भवमां मांस न खावानी प्रतिज्ञानो तें भंग कर्यो हतो तेथी तें नर्कनुं दुःख दीठुं ने एटला भव कर्या. त्यारे हवे अनेक दुःखने उत्पन्न करनारुं आ नगरने बाळवानुं अघोर कृत्य करवानुं तुं मुकी दे. एवां ते देवनां वचनो सांभळीने रत्नमाली राजाए नगर बाळवानुं बंध राखी, तथा ते युद्धथी परावृत्त थइने, कुलनंदन नामना पोताना पुत्रने राज्य सोंपी सूर्यजय नामना पोताना बीजा पुत्र सहित तेज वखते एक तिलकसुंदराचार्य पासे दीक्षा लीधी. पछी ते बेउ पिता, पुत्र, मुनिओ आयु पूर्ण थये काळ करी महाशुक्र देवलोकमां देव थया. त्यांथी चवी रत्नमालीनो जीव जनक राजा, अने सूर्यजयनो जीव आ तुं दशरथ राजा थयो छुं. तें उपमन्यु उपाध्यायनो जीव सहस्रार देवलोकमांथी चवी जनकराजानो भाइ कनक नामे थयो छे अने नंदिवर्धनना भवमां तारो पिता जे नंदिघोष ते हुं ग्रैवेयक देवलोकमांथी चवीने आ सत्यभूति नामे थयो छुं. एवी रीते पोताना पूर्वभवनी कथा तथा जनक विगेरेनो संबंध सांभळीने दशरथ राजा समकित पाम्यो. पछी ते मुनिने नमस्कार करीने दीक्षा लेवानी इच्छाथी दशरथ राजा त्यांथी उठी पोताने घेर आव्यो.



कैकेयीए भरतने राज्य आपवा करेली मागणी--तेनो स्वीकार--रामे वनवास जवा जणावेल विचार विगेरे.

पछी दशरथ राजाए पोतानी स्त्रीओ, पुत्रो, तथा मंत्रियो विगेरे सर्वने बोलावी पोतानी दीक्षा लेवानी इच्छा विषे जणाव्युं. ते वखते भरत तेने नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, हे राजा, तमारी साथे हुं पण दीक्षा लेइश. तमारा शिवाय हुं एक घडी पण रहेनार नथी. हे स्वामिन्, तमारा चरणोनो विरह, ने बीजी आ संसारनी खटपट, ए बे महा मोटां दुःख माराथी केम सहन थशे? एवां भरतनां वेण सांभळीने कैकेयी विचार करवा लागी के, जो ए बंने जण दिक्षा लेशे तो हुं तेज दिवसथी पुत्र तथा पति रहित थइश. एम धारी ते बोली के, हे स्वामिनाथ, पूर्वे स्वयंवरोत्सवमां में तमारुं सारथ्य कर्म कर्युं हतुं, तेथी प्रसन्न थइने तमे मने जे वर आप्यो छे, तेनी तमने याद छे के? कह्युं छे के, "महात्मा पुरुषनी प्रतिज्ञा पत्थर उपरनी रेखनी बराबर छे." एवुं तेनुं बोलवुं सांभळीने दशरथ राजा तेने कहेवा लाग्यो के, पूर्वे में जे अंगी-

कार करेलुं छे तेनुं मने हजी स्मरण छे. तेने वदले एक दीक्षाना निषेध शिवाय जे तारी इच्छामां आवे ते मांगी ले. त्यारे कैकेयीए कीधुं के, हे प्राणनाथ, जो आप दीक्षा ल्यो, तो पृथ्वीनुं राज्य मारा पुत्र भरतने आपो. त्यारे दशरथ राजाए कह्युं के, ले, आ पृथ्वी आजथीज में एने आपी. एम कहीने ते लक्ष्मण सहित रामनी साथे बोलवा लाग्यो के, पूर्वे एना सारथ्य कर्म करीने राजी थइने में एने वर आप्यो हतो. ते आज एना भरत पुत्रने राज्य देवा विषे मांगी लीधो. त्यारे रामचंद्र बोल्यो कैकेयी माताए ए घणुं सारु कर्युं. परंतु मारो भाइ जे भरत एने राज्यदान करवा विषे पिताए मने पूछ्युं एथी मात्र मारुं मन खिन्न थाय छे. राजाए संतुष्ट थइने कोइएक चाकरने राज्य आप्युं होय, तोपण तेना निषेधमां अथवा अनुमतिमां हुं समर्थ थनार नथी; केमके, मने तो पितानी आज्ञा पालन करवा योग्य छे, अने एज मारो धर्म छे. भरत जे छे ते हुंज छुं अने तमने अमे बन्ने सरखा छीए, माटे अति आनंदवडे भरतने राज्यगादीए बेसाडो. एवुं रामनुं बोलवुं सांभळीने विस्मित थइ दशरथराजा पोताना प्रधानोने कहेवा जाय छे, एटलामां भरत बोल्यो के, हे स्वामिन्, तमारी साथे दीक्षा लेवा माटे में प्रथमज प्रार्थना करेली छे, ते हवे कोइना पण कहेवाथी अन्यथा थनार नथी. एवुं तेनुं बोलवुं सांभळीने दशरथराजा तेने कहेवा लाग्यो के, हे वत्स, मारी प्रतिज्ञा तुं खोटी ना कर. तारी माताने में आपेलो वर तेणे आज दिवस सुधी मारी पासे अनामत राख्यो हतो, तेनो बदलो आज तेणे तने राज्य देवानो मांग्यो. ते तारी मातानी आज्ञा फेरववा तुं योग्य नथी; त्यारे पासे बेठेलो राम पण तेने कहेवा लाग्यो के, जो के तने गर्व नथी तोपण पितानी प्रतिज्ञा पाळवा सारु तुं आ राज्य कर. एवुं रामनुं बोलवुं सांभळीने, जेनी आंखोमां पाणी भराइ आव्युं छे, एवो ते भरत, रामना पगमां माथुं मूकीने बे हाथ जोडी गद्गद स्वरे बोलवा लाग्यो. आ राज्य देवाने पिता तथा तमे योग्य छो, पण मने ए राज्य लेवाने योग्य नथी. तमे पिताना पुत्र छो अने शुं हुं एमनो पुत्र नथी के? हुं पण तमारोज नानो भाइ तेमनो पुत्र छुं. आ निंद्य कर्म जो हुं करुं तो मारा जेवो मुर्ख बीजो कोइपण न कहेवाय? एवुं तेनुं बोलवुं सांभळीने दशरथराजाने राम कहेवा लाग्यो के, हे पूज्यपिता, हुं अहीं छतां आ भरत राज्य करनार नथी, तेथी हुं वनवास जाउं छुं. ए प्रमाणे कहीं भरतने रुदन करतो छतां तेमज मूकीने रामचंद्र पोताना पिता दशरथराजानी रजा लेइ तथा तेने भक्तिवडे नमस्कार करीने पोताना धनुष्य बाण हाथमां लेइ वनवास जवा सारु बहार निकळ्या.

कौसल्याने समजावी रामनुं वनवास जवा निकळवुं.

———:o:———

रामने वनवास जवा सारु तैयार थएलो जोइने दशरथराजा वारंवार मूर्छा खाई पृथ्वीपर पडवा लाग्यो. पछी राम कौशल्याने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के, हे माता, हुं जेवो तारो पुत्र छुं तेवोज तने भरत छे. पोतानी प्रतिज्ञा साची करवा सारु मारा पिताए तेने राज्य आप्युं, परंतु हुं अहीं छतां ते राज्य लेतो नथी. ते कारण माटे मारे अवश्य वनमां जवुं छे. जेवी मारा उपर तारी अमृत दृष्टी छे, एवीज तुं भरत उपर राखजे. मारा वियोगथी तुं कदीपण खेद करी दुःखी थईश नहीं. एवी रामनी वाणी सांभळीने कौशल्या मूर्छित थइने पृथ्वीपर ढळी पडी. दासीओए शीतळ जळ छांटी तथा पवन नांखी तेने सावध करी, त्यारे ते बोलवा लागी के, मने कोणे सावध करी? आ मूर्छाज सुखे करी मृत्युने माटे छे. रामना विरहथी थता दुःखने हुं जीवती रहीने केम सहन करी शकुं? पुत्र वनमां जशे, अने पति दीक्षा लेसे, ए सांभळीने मारुं हृदय केम विदारण न थाय? त्यारे राम तेने फरीथी कहेवा लाग्यो. हे माता, तुं महा पराक्रमी मारा पितानी पत्नी छतां बीकण स्त्रीओने योग्य एवां कामनो आरंभ तें केम कर्यो छे? सिंहनो पुत्र एकलो वनमां फरवा जाय छे ते वखते तेनी माता सिंहणनुं चित्त स्वस्थ होय छे, ते कदी पण मनमां भय पामती नथी; तेम तारे पण भय पामवो जोइये नहीं. कैकेयी माताने आपेलो वर ए मारा पिताने माथे मोटुं ऋण हतुं, तेथी आजे तें छूट्यो, ए घणुं सारुं थयुं छे. हुं जो अहीं रहुं तो हे माता! मारो पिता करजथी केम मूकाशे. इत्यादिक अनेक युक्तिओनां वचनोथी कौशल्याना मननुं समाधान करीने तेने तथा बीजी माताओने नमस्कार करी राम वनवास जवा सारु त्यांथी निकळ्यो.

—oo:ooo:oo—

सीतानुं राम साथे वनवास जवा निकळवुं.

ए बधुं जोइने सीताए दूरथी दशरथ राजाने नमस्कार करी कौशल्या पासे आवी तेने विनयपूर्वक नमस्कार करीने रामना अनुलक्षे जवा सारु आज्ञा मांगी. ते वखते कौशल्या, जानकीने पोताना खोळामां बेसाडी पोताना नेत्रोमांथी निकळता उष्ण (गरम) पाणीथी तेने स्नान करावती थकी कहेवा लागी के, हे वत्से, रामचंद्र पोताना पितानी आज्ञाए वनमां जाय छे. ए नृसिंहने वनमां रहेवुं कठिण नथी. परंतु जन्मथी वाहनादिके करी लालित एवी तुं देवी जेवी छतां पगे करी चाली

जवानी पीडा शी रीते सहन करीश? कमळ नाळ जेवुं तारुं कोमळ अंग, वनमां ता-पादिकना योगे करी क्षीण थएलुं जोइने रामने पण दुःख थशे. तथापि तुं पोताना पतिनी साथे जवानी जीज्ञासा राखे छे, तेमज त्यां जवामां तारे घणुं कष्ट वेठवुं पडे तेम छे, ए बे बाबतो मनमां आव्या थकां तने रामनी साथे मोकलवाने तेमज रोक-वाने हुं समर्थ थइ शकती नथी. एवुं पोतानी सासूनुं बोलवुं सांभळीने शोक रहित सीता फरी तेने नमस्कार करी बोली के, हे कौशल्या माता, मारी शक्ति तमारा आधीन छे, तेना योगे मार्गमां तेमने कल्याणकारक थशे. विद्युल्लता (वीजळी) जेम मेघ बराबर जाय छे, तेम हुं रामनी साथे जाउं छुं. एम कही वळी फरी कौशल्या माताने नमस्कार करीने सीता मनमां रामनुं ध्यान धरती वनमां जवा सारु निकळी. ते वखतनी तेनी अनहद पति भक्तिने लीधे पतिव्रता स्त्रीओने प्रथमज जानकी उदा-हरणरुप थइ. दुःखथी डर न पामनारी, पतिव्रतामां शिरोमणी जे आ सीता, ते पोताना शीळगुणवडे करीने पोताना पतिना कुळने पावन करे छे, माटे एने धन्य छे; वळी ए वनवास जतां जरापण संकोच न पामतां उल्लास सहित रामनी साथे घणो आग्रह करी तैयार थइ चालवा लागी छे, पण वनमां विक्राळ फाळो मारनारा सिंहादिक पशुओना शब्दोए कोमळांगी शी रीते सहन करी शकशे, वीगेरे वीगेरे वनवासमां पडतां दुःखो मनमां लावी शोके करी गद्‌गद वाणीवडे वर्णन करनारी नगरनी स्त्रीओ वनमां जवावाळी सीताने मोटा संकटथी जोवा लागी.

———— :o: ————

रामनी साथे वनवास जवा सारु लक्ष्मणे आवी मळवुं.

रामचंद्र खचीत वनमां जवा वास्ते निकळ्या, एम जाणीने धखधखायमान अग्निनी माफक महा क्रोधायमान थइ लक्ष्मण मनमां विचार करवा लाग्यो के, पिता तो स्वभावे करी सरल छे, परंतु स्वभाविक रीते स्त्रीओमां कुटीलतापणुं कहेवाय छे, तेवीज रीते तेनी स्त्री कैकेयी महा कुटील स्वभावनी छे. आटला दिवस सुधी वर पोताना मनमां राखीने हमणां आ अनुचित मांगी लीधुं. राजाए तेना मांग्या मुजब भरतने राज्य आपी पोतानुं करज फेडयुं अने तेथी अमे पण तेना करजना भयथी मुक्त थया. परंतु हवे आ मारो क्रोध समाववा सारु निर्भय थइने कुळने दुषण कर-नारा आ भरत पासेथी राज्य खुंचावी लेइने रामने गादीए वेसाडुं? अथवा आ राम महा सत्यवादी छे. तेणे राज्यने तृणसम त्याग कर्युं. तेमज ए विषे एने कांइ पण दुःख लाग्युं नहीं, तेथी जवा देउं? एवा संकल्प विकल्प करतो वळी लक्ष्मण विचारवा लाग्यो के, जो हुं भरत पासेथी राज्य छीनावी लेइश तो पिताने

दुःख थशे. माटे भरत राजा थाओ, वीगेरे गमे तेम थाओ. हुं तो रामनी चाकरी करवा सारु तेनी साथेज वनमां जइश. एवो निश्चय करीने लक्ष्मण पोताना पिताने नमस्कार करी तेनी रजा लेइने सुमित्रानी आज्ञा लेवा सारु तेनी पासे गयो. पछी सुमित्राने नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, हे माता, राम वनमां जाय छे तेनी साथे हुं पण जाउं छुं. मर्यादशील जे राम ते विना लक्ष्मण एकलो रहेवाने समर्थ नथी. एवुं तेनुं बोलवुं सांभळीने किंचित धैर्य धारण करी सुमित्रा बोली, हे बाळक लक्ष्मण, तुं मोटा भाइनी पाछळ जाय छे ते घणुं सारुं छे. तुं मारो पुत्र छुं, माटे ए कामथी हुं राजी थाउं छुं. मने नमस्कार करीने अहींथी रामने गयाने घणो वखत थइ गयो. माटे हवे तुं विलंब न करतां ताकीदे जा, एवां मातानां वचनो सांभळीने लक्ष्मण कहेवा लाग्यो के, हे माता, तें घणुं सारुं कर्युं. तुं मारी साची माता छुं. एम कहीने तेने नमस्कार करीने कौशल्यानी आज्ञा लेवा सारु लक्ष्मण गयो. तेने नमस्कार करी ते कहेवा लाग्यो के, हे कौशल्या माता, मारो मोटो भाइ राम एकलो वनमां जवा सारु चाली निकळ्यो, तेनी पाछळ हुं पण जवा सारु निकळवानी आगमच आज्ञा लेवा आव्यो छुं. एवुं लक्ष्मणनुं बोलवुं सांभळीने तेने कौशल्या कहेवा लागी के, हुं मोटी मंदभाग्य छुं. केमके, तुं पण मने मूकीने वनमां जवा तत्पर थयो छुं. मने धैर्य देवा सारु तुं एकलो तो अहीं रहे. त्यारे लक्ष्मणे तेने कीधुं के, तुं रामनी जनेता छुं. माटे सामान्य स्त्रीओनी पेठे तारे धैर्य मूकवुं ए योग्य नथी. मारा भाइने वनमां जवा निकळे घणो वखत थयो तेथी ते दूर गयो हशे, माटे मारे विलंब न करतां तेनी पाछळ उतावळे जवुं जोइये. तेमां विघ्न करवुं ए तने योग्य नथी. हुं रामनेज आधीन छुं. एवुं कहीने तेने नमस्कार करी लक्ष्मण पोताना धनुष्यबाण हाथमां लेइने त्यांथी निकळी महा त्वराए रामने आवी मळ्यो.



राम, लक्ष्मण अने सीतानुं वनवास प्रयाण.

पछी वनमां जवाने तत्पर थएला राम, सीता अने लक्ष्मण, जेमनां मुखकमळ विकसीत थएला छे एवा, क्रीडा वनमां जवानी पेठे अयोध्या नगरमांथी बहार निकळ्या. ते वखते जेम देहमांथी प्राण निकळती वखते दुःख थाय, तेम राम, लक्ष्मण अने जानकी वनवास जवा सारु निकळवाथी नगरना तमाम स्त्री पुरुषो दुःख पामवा लाग्या अने आ कैकेयी घणी क्रुर छे, आ विधाता दुष्ट छे, एम बोलता थका सर्व प्रजाजन शोक करता करता मोटा वेगथी राजानी पाछळ दोड्या. तेमज जेनी आंखोमां आंसु भराइ आव्यां छे एवो दशरथ राजा पण पोतानी स्त्रीओ सहित तेओनी

पाछळ निकळ्यो. ते वखते आखी अयोध्या नगरी उजडमय थइ गइ. सर्व नगर जन पोतानी पासे आवेलुं जोइ तथा तेमां पोताना मावाप पण छे, एम जाणी राम चालतां उभो रह्यो. पछी विनय सहीत वाणीए करी पोताना माता पिताने समजावी रामे पाछा वाळ्या. तेमज नगर लोकोनी साथे पण यथोचित उच्चारण करी तेओने समजावी नगरमां मोकल्या. पछी ते उतावळो लक्ष्मण तथा सीताने साथे लेइने वननी तरफ चालवा लाग्यो. रस्तामां जे जे गाम आवे, त्यांना मोटा मोटा लोको तेओने रहेवा माटे घणी प्रार्थना करवा लाग्या परंतु तेओ क्यांय पण रह्या नहीं. फक्त वखतोवखत विश्रामार्थे ज्यां ज्यां जरुर पडे त्यां त्यां रही तेओ आगळ वधवा लाग्या.



भरते राम विगेरेने पाछा बोलावी लाववा प्रधानोने मोकलवुं.

अयोध्यामां भरते पोताना भाइनो विरह सहन न थयाथी राज्य ग्रहण न करता कैकेयीनी निंदा करीने पोताना पितानी साथे दीक्षा लेवाने तैयार थइ लक्ष्मण तथा सीता सहित रामने बोलावी लाववाने सारु पोताना प्रधानोने मोकल्या. तेओए त्यांथी निकळी जेम बने तेम ताकीदथी रामनी पासे आवी घणी प्रार्थना करी तेओने पाछा फरवानुं कह्युं तथा घणी युक्तिओ करी तेने समजाववा लाग्या, तोपण राम पाछो फर्यो नहीं. कह्युं छे के, "मोटा पुरुषनी प्रतिज्ञा कदी पण फरती नथी." पछी रामचंद्रे तेमने पाछा फरवानुं घणुं कह्युं तोपण तेओ पाछा न फरतां रामनी साथे चालवा लाग्या. चालतां चालतां जेमां मोटा व्याघ्रो विचरी रह्या छे, कोइ मनुष्य मात्रनो तो जेमां पग पण मळे नहीं, ज्यां जुवे त्यां झाड विना बीजुं कांइपण दीठामां आवे नहीं, एवी विंध्याटवीमां राम, लक्ष्मण तथा प्रधानो विगेरे सर्व साथ आव्यो. तेमां चालतां जेनो मोटो प्रवाह छे, जेना पाणीमां मोटा मोटा चक्रावर्त्त थइ रह्या छे, एवी एक नदी आवी. ते जोइने तेना कांठा उपर आवी रामचंद्र पोताना प्रधानादिकोने कहेवा लाग्यो के, हवे अहींथी तमे पाछा जाओ; आगळ रस्तो घणो कठण आवे छे, अमारी कुशळ–वार्ता अमारां मावापने जइने कहेजो तथा अमारी माताओ तथा भरतनी सारी पेठे सेवा चाकरी करजो. एवां रामनां मुखमांथी निकळतां वचनो सांभळीने ते प्राधानादिकोना मनमां करुणाभाव उत्पन्न थयाथी तेओनी आंखोमां आंसु आव्यां जेथी तेओनां वस्त्र भींजाइ गयां, तथा तेओनां गद्‌गद कंठ थएथी मुखमांथी शब्द उचारवानुं पण सामर्थ्य तेमनामां रह्युं नहीं तथा आ रामना चरणकमळनी पासे रहेवानी अमारी योग्यता क्यांथी? रामनो वियोग थयो माटे

धर्मने धिःक्कार छे. एम जेम तेम बोलीने महा संतापे करी तेओए त्यांथी पाछा फरवानो विचार जणाव्यो.



प्रधानोनुं पाछुं आववुं–भरत तथा कैकेयीनुं रामने तेडी लाववा जवुं–रामे भरतने राज्याभिषेक करवो–दशरथे दीक्षा लेवी विगेरे.

त्यारपछी राम, लक्ष्मण तथा सीता ते नदी ऊतरीने पेली तरफ गया, त्यांथी वनमां आगळ जतां ज्यांसुधी तेओ देखाया त्यांसुधी पेला प्रधानादिक सर्व तेमने जोतांज ऊभा रह्या. ज्यारे तेओ बीलकुल देखावा ना लाग्या, त्यारे तेओ त्यांथी पाछा फरी अयोध्या तरफ चालवा लाग्या. त्यां आवीने तेओए सर्व वृत्तांत राजाने कह्यो. त्यारे दशरथराजा भरतने कहेवा लाग्यो के, राम पाछो आव्यो नहीं. तुं राज्य अंगीकार कर. जो तुं एम नहीं करे तो मारा दीक्षाकार्यमां विघ्न थशे, माटे तेम करवुं तने योग्य नथी. त्यारे भरत कहेवा लाग्यो के, हे पिता, मारे राज्य जोइतुं नथी. हुं पोते रामनी पासे जइ तेने राजी खुशीने पाछो बोलावी लावीश. एम कहीने त्यांथी भरत चाली निकळ्यो, त्यारे तेनी माता कैकेयी दशरथराजाने कहेवा लागी के, हे राजा, तमे भरतने राज्य आप्युं, तेथी तमारी प्रतिज्ञा पूरी थई. हवे आ तमारो विनयी पुत्र राज्यने ग्रहण करतो नथी, तेमज तमारी बीजी सर्व स्त्रीओने घणुं दुःख थाय छे, केमके में ए काम करतां कांइ पण विचार कर्यो नहीं. तेथी तमे पुत्र सहित छतां राज्य अराज्यरूप थयुं. कौशल्या, सुमित्रा तथा सुप्रभानुं रडवुं कोइथी पण सहन थतुं नथी. तेओनुं रुदन सांभळीने मारुं हृदय फाटी जाय छे, माटे हवे हुं आ भरत साथे जइने लक्ष्मण तथा सीता सहित रामने अहीं पाछो तेडी लावुं के जेथी सर्वने सुख थशे. माटे मने भरत साथे रामने तेडवा जवानी आज्ञा आपो. एवां कैकेयीनां वचनो सांभळीने दशरथराजा घणो राजी थयो अने तेमने जवानी रजा आपी. तेथी ते बन्ने मा दीकरो अयोध्यामांथी निकळी छ दिवसे ज्यां राम हतो त्यां आवी पहोंच्यां. ते वखते राम, लक्ष्मण तथा जानकी, ए त्रणे जण एक झाडना थड पासे बेठां हतां. तेमने जोइने कैकेयी रथमांथी नीचे ऊतरी तेमनी पासे आवी प्रेमपूर्वक तेमने कहेवा लागी. हे वत्स, हे वत्स, एटलामां रामे आवी तेने नमस्कार कर्यो. त्यारे ते तेनुं मस्तक चुंबन करवा लागी. तेमज सीता तथा लक्ष्मणे आवी तेने नमस्कार कर्यो त्यारे तेओने छाती सरसा दाबीने चाद स्वरे

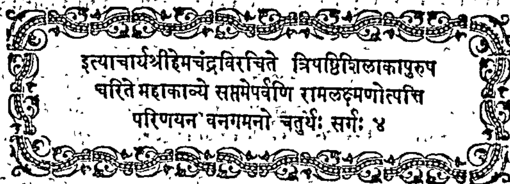
रडवा लागी. त्यारपछी भरत रामने नमस्कार करतां वेंतज घणो स्नेहमां आव्याथी मूर्छा खाइ जमीनपर पड्यो. तेने रामे सावध करी उठाड्यो, त्यारे ते कांइक शुद्धिमां आवी रामने कहेवा लाग्यो.

हे मारा वडिल प्रिय बंधु अभक्तनी पेठे मने मूकीने तुं आ अरण्यमां केम आव्यो? "माताना दोषवडे भरत राज्यनो अर्थी थयो." एवो मारा उपर लोकापवाद लाग्यो छे, ते तुं मारी साथे आवीने दूर कर, अने अयोध्यानी राज्यलक्ष्मीनो उपभोग ले. हे भ्राता, एम कर्या शिवाय मारा उपर आवेलो लोकापवाद टळवानो नथी. तुं राज्यासन पर विराजेथी जगतनो मित्र जे आ लक्ष्मण ते तारो प्रधान थशे, अने हुं तारो द्वारपाळ तथा शत्रुघ्न छत्र धारण करनारो थशे. एवा दिनता भरेला भरतना बोलो सांभळी तेने टेको आपवा सारु कैकेयी बोली—हे वत्स, तुं सदा भाइयो विशे दयाळु छे, माटे आ भरतनुं बोलवुं तुं मान्य करवाने योग्य छुं. आ कृत्यमां तारा पितानो तेमज भरतनो दोष नथी. ए केवळ आ मज अभागिणीनोज दोष छे. स्त्राओनो एवो दुष्ट स्वभावज होय छे, माटे तेओने धिक्कार छे. आ कृत्यथी एक व्यभिचार शिवाय बीजा सर्व दोष मारामां संभवे छे. लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, कौशल्या, सुमित्रा, तथा सुप्रभा विगेरेने आ कामे करी में जे कांइ दुःख दीधुं छे ते तुं सहन कर. तने हुं मारो प्रिय पुत्र समजुं छुं, अने एवा हेतुथीज आ मारुं बोलवुं छे, ते तुं मान्य कर. एवुं कैकेयीनुं करुणात्मक बोलवुं सांभळीने तेने राम कहेवा लाग्यो. हे कैकेयी माता, हुं दशरथ राजानो पुत्र थइने मारी करेली प्रतिज्ञाने केम मुकुं? तेणे मारी सलाहथी भरतने राज्य आप्युं छे. ते दशरथ मारो पिता, आ मारो भाइ भरत, ए बंने जण जीवतां छतां मारुं वचन हुं केम फेरवुं? भरतने राज्य करवा विशे अमारी बंने पिता पुत्रनी आज्ञा छे. तेम छतां पोताना पिता प्रमाणे मारी आज्ञा पण भरतने फेरववी योग्य नथी. एटलुं राम बोल्या के ते वखते सीता पाणी भरी आवी, तेवडे त्यां आवेला सर्व सामंतोनी साक्षीए रामे भरतने राज्याभिषेक कर्यो. ते वखते नाइलाजे रामने कांइपण कह्या विना सर्व मुगा रही गया. पछी रामे अति आनंदवडे कैकेयीने नमस्कार करी, भरतनो यथायोग्य आदरसत्कार कर्यो. पछी तेओनी साथे समयानुसार मधुर वाणीए भाषण करी तेओने घणी रीते समजावी पाछा अयोध्या तरफ विदाय कर्या, अने पोते सीता लक्ष्मणने साथे लेइ दक्षिण दिशा तरफ चाल्या. भरत अयोध्यामां आवी पोताना पिता तथा भाइनी आज्ञाथी जेम तेम राज्य करवा लाग्यो, अने दशरथ राजाए सत्यभूति मुनि पासे दीक्षा लीधी. पछी भरत राजा पोताना मोटा भाइना वनवासना दुःखे करी पीडातो

अर्हत् पूजामां तत्पर थइ एक पारेकरी (वीगारी) नी पेठे राज्य करवा लाग्यो. लक्ष्मण तथा सीता सहित राम नाना प्रकारना महा विकट वन तथा पर्वतो उल्लंघन करता चित्रकूट नामना पर्वत उपर जइ पहोंच्या. त्यां केटलाएक दिवस रही तेओ अवंति नामना नगरना प्रदेशमां आव्या.

हरिगीत छंद.

शृंगार अने करुणारसे करि सर्ग चोथो संस्तव्यो,
जनक दशरथ रायनी उत्पत्ति अधिकर वर्णव्यो;
रुडो राम सीता जन्म लग्न वनवास लक्ष्मण चालीया,
भरत भळावी राज्य दशरथ दीक्षाए मन भावीया. १.


इत्याचार्यश्रीहेमचंद्रविरचिते त्रिषष्ठिशिलाकापुरुष चरिते महाकाव्ये सप्तमेपर्वणि रामलक्ष्मणोत्पत्ति परिणयन वनगमनो चतुर्थः सर्गः ४

अथ श्री पंचम सर्गः प्रारभ्यते.

रामनुं अवंती प्रदेशमां आववुं.

ए अवंती नगरीना प्रदेशमां लक्ष्मण तथा सीता सहित रामचंद्रने चालतां सीताने थाक लागवाथी तेने वीसामो खवरावबा सारु तेओ एक वडना झाड नीचे बेठा. त्यां रामचंद्रजी सर्व दिशाओ तरफ पोतानी दीर्घदृष्टीथी जोइ लक्ष्मणने कहेवा लाग्या के, आ बधो देश उजड जणाय छे, ते कोइना भय शिवाय थाय नहीं; माटे अहीं कोइनो भय हशे ? चारे तरफ उद्यानोमां पाणी भरयुं छे, धान्यना खळामां धान्यना ढगला जेमना तेम पडेला दीठामां आवे छे. ए उपरथी एम मालम पडे छे के, ए देश हमणांज शून्य थयेलो छे. एटलामां त्यां आगळ थइ एक वटेमार्गु जतो तेमना जोवामां आव्यो, तेथी तेने बोलावी तेमणे पूछयुं के आ देश शुन्य थवानुं कारण तारा जाणवामां होय तो ते तुं कहे. त्यारे ते वटेमार्गुए रामचंद्रने नीचे प्रमाणे त्यांनो सर्व वृत्तांत कह्यो.

वज्र कर्णनो प्रबंध विगेरे.

आ अवंति नामना देशमां अवंति नगरनो स्वामी सिंहनी पेठे शत्रुओने दुःसह सिंहोदर नामे राजा छे. तेनी आणमां वर्तनार (सेवक) एक दशांगपुरनो स्वामी वज्रकर्ण नामनो सुभट एक दिवस वनमां गयो हतो, त्यां तेणे एक कायोत्सर्ग धारण करनारा प्रीतिवर्द्धन नामना मुनिने दीठा. तेमने जोइ ते कहेवा लाग्यो के, हे मुनि ! आ विकट वनमां तुं झाडनी पेठे शा सारु ऊभो छुं ? त्यारे मुनिए कह्युं के, हुं मारा आत्माना कल्याणार्थे अहीं उभो छुं. जेथी वज्रकर्णे तेने फरी पूछयुं के, जेमां खावा पीवानुं कांइ पण न मळे एवा आ भयानक जंगलमां तारा आत्मानुं कल्याण केवी रीते थवानुं छे ? मुनिए तेनुं बोलवुं सांभळी ते धर्म सांभळवाने योग्य छे एम धारी तेने आत्महितरुप धर्म संभळाव्यो. ते सांभळवाथी वज्रकर्ण प्रतिबोध पामी श्रावक थयो. अने तेणे श्री अर्हत्देव, तथा जैन साधु शिवाय बीजा कोइने पण नमस्कार न करवा विशे ते मुनि पासे पाको निग्रह कर्यो. पछी मुनिने यथाविध नमस्कार करी ते पोताना दशांगपुर नगरमां आवी श्रावक धर्म पाळवा लाग्यो. पछी

तेणे पोताना मन साथे विचार कर्यो के, में श्री अर्हदेव तथा जैन साधु शिवाय बीजा कोइने नमवुं नहीं एवो निग्रह कर्यो तो खरो, परंतु सिंहोदर राजाने जो हुं नमस्कार नहीं करुं तो ए मारो वैरी थशे, माटे मारो लीधेलो नियम बरोबर पळे अने तेने मारे शत्रुवट न थाय एवो योग्य उपाय योजवो जोइए. एम निश्चय करी तेणे एक रत्ननी वींटी करावी तेमां श्री मुनि सुव्रत स्वामीनी प्रतिमा राखीने ते वींटी पोताना हाथनी आंगळीमां घाली. एवा हेतुथी के ज्यारे सिंहोदर राजाने नमस्कार करवो पडे त्यारे पोतानो हाथ ऊंचो करी वींटी सन्मुख दृष्टी करी नमस्कार करवाथी श्री जिनेंद्र भगवाननेज नमस्कार करुं छुं एम पोते मानी लींधुं. पछी ज्यारे ज्यारे सिंहोदर राजाने नमस्कार करवो पडे त्यारे त्यारे ते पोतानी धारणा प्रमाणे तेने अनुसरी वींटीमां राखेली श्री मुनिसुव्रत स्वामीनी प्रतिमाने नमस्कार करवा लाग्यो. कह्युं छे के, "बळवाननी पासे हरेक कार्य युक्तिथी साधी शकाय छे. तेमज तेवा कार्य प्रसंगे कपट कर्या विना छुटकोज थतो नथी." ए प्रमाणे करतां केटलाएक दिवस गया पछी कोइ एक माणसे सिंहोदर राजाने वज्रकर्णे नमस्कार करवामां कपट केळवी राख्यानी सर्व हकीकत कही. ते सांभळीने सर्वनी पेठे मोटा श्वासोश्वास लेतो थको ते सिंहोदर राजा वज्रकर्णना उपर महा कोपायमान थयो, अने तेने मारवानो तेणे निश्चय कर्यो. ए सघळी वात कोइएक पुरुषे वज्रकर्णनी पासे जइ कही. त्यारे ते तेने पूछवा लाग्यो के, सिंहोदर राजा मारा उपर कोपायमान थइ मने मारवानो इरादो राखे छे, ते वात तें शा उपरथी जाणी. त्यारे ते पुरुषे तेने जणाव्युं केः—

कुंडपुर नगरमां एक समुद्रसंगम नामनो श्रावक वाणीयो वसे छे. तेनी स्त्री यमुनाने पेटे पेदा थयेलो हुं विद्युद्वेग नामनो श्रावक वाणीयो छुं. मने यौवन अवस्था प्राप्त थये एक वखत हुं वस्त्र पात्रादिक लेइने वेचवा सारुं उज्जयिनी नगरीमां गयो. त्यां एक मृगना जेवा नेत्रोवाळी कामलता नामनी वेश्याने देखी हुं कामबाणे करी पीडाणो. पछी मारी मनकामना पुरी करवा माटे हुं तेनी पासे एक रात्र रहेवाना मनसुबाथी तेने घेर गयो. त्यां मृग जेम लालचे करी पासमां बंधाइ जाय छे तेम हुं ए वेश्याना प्यारमां पडी तेनी प्रीतिना आवेशथी फशी पड्यो. तेनी साथे एक मास रहेतां में मारा पिताए आखा जन्मपर्यंत मेळवेलुं द्रव्य उडावी दीधुं. एक दिवस ते वेश्याए मने कह्युं के, सिंहोदर राजानी स्त्री श्रीधरानां काननां कुंडलोनां जेवा कुंडळो तुं मारे माटे लेइ आव. ते वखते मारी पासे बीलकुल द्रव्य रह्युं नहोतुं, तेथी ते राणीना कुंडळो चोरी लावीने वेश्याने अपाववाना इरादाथी तेज राते हुं चोरी करवा सारु राजाना महेलमां कोइ न जाणे तेम पेठो. ते वखते शयनगृहमां सिंहोदर राजाने राणी कहेती हती के, हे नाथ, "चितातुर पुरुषनी पेठे आज आपने उंघ

केम आवतो नथी?" त्यारे राजाए तेने कीधुं के, "ज्यांसुधी मने नमस्कार न करनारा वज्रकर्णने में मार्यो नथी, त्यांसुधी मने ऊंघ क्यांथी? सवार थतांज तेना पुत्र, बंधु, परिवार सहित तेने मारीने पछी हुं सुखे ऊंघीश. एवुं तेनुं बोलवुं सांभळीने तेज वखते हुं मारुं धारेलुं काम पडतुं मूकीने तुं मारो साधर्मी भाइ छे तेथी जेम बने तेम जलदी त्यांथी निकळी हुं तारी पासे ए वातनी तने जाण करवा माटे आव्यो छुं. ए वृत्तांत सांभळतांज वज्रकर्णे पोतानो सरंजाम तैयार कराव्यो. एटलामां बहारथी आवेला कोइ बीजा लश्करनी धुळ उडती आकाशमां तेणे दीठी. ते जुए छे तेटलामां तो जेम चंदनना झाडने सर्प घेरो घाले, तेम सिंहोदर राजाना सैन्य आवी दशांगपुर नगरने घेरो घाल्यो. पछी सिंहोदर राजाए वज्रकर्णनी पासे पोतानो एक दूत मोकल्यो, ते तेनी पासे आवी कहेवा लाग्यो के, हे वज्रकर्ण, अमारा राजाए एवी आज्ञा करी छे के, आज दिवस सुधी तें मारी कपटे करी वंदना करी ते में जाण्युं. तोपण हजु हुं तारा उपर रहेम लावी तने जणावुं छुं के, तुं जे वींटी हाथमां घाली कपटवडे मने बतावबानो नमस्कार करतो हतो, ते वींटी हाथे न घालतां (ते वींटी पेहेर्या वगर) तारे आवीने मने नमस्कार करवो, नहीं तो आज हुं तने कुटुंब सहित यमपुरीमां पहोंचतो करीश. एवुं दूतनुं बोलवुं सांभळी वज्रकर्णे तेने कह्युं के, श्री अर्हत् परमात्मा तथा तेनी मूर्ति अने जैन मुनि विना बीजा कोइने पण हुं नमस्कार करनार नथी. एवो मारो पण (निग्रह) छे, ते पराक्रमनुं अभिमान नथी, पण धर्मनुं अभिमान छे. ते माटे एक नमस्कार शिवाय बीजुं जे कांइ मारा घरमां छे, तेनी तने इच्छा होय तो ते लेइ जा. मने मात्र धर्मनो द्वार आप. धर्म सारु अहींथी हुं बीजे ठेकाणे जइने रहीश. ए मारी हकीकत तुं सिंहोदर राजाने निवेदन करजे. दूते तेनी पासेथी आवी सिंहोदरराजाने ते सघळो वृत्तांत कही संभळाव्यो. ते वात तेणे कबुल राखी नहीं. कह्युं छे के, "मानी पुरुषो धर्म अथवा अधर्मने कदी पण मानता नथी."

पछी सिंहोदरराजाए वज्रकर्ण सहित तेना दशांगपुर नगरने घेरी लेइ बहार रहीने आखा देशने लुटवानुं शरु कर्युं. तेना भये करी आ देश उजड थइ गयो छे. हुं पण तेना भयथी मारा कुटुंब सहित त्यांथी नाशी गयो. आ नगरमांना सर्व घरो आज बळी गयां. मारुं घर घणुं जुनुं छे ते जोइने क्रूर बुद्धिवाळी मारी स्त्रीए मने शाहुकारोनां बळेलां घरोमांथी सामान लेइ आववाने मोकल्यो छे. तेनां ते दुष्ट वचनोना योगे आ तमारा दर्शनरूप शुभ फळ मने प्राप्त थयुं. मोटा प्रारब्धना योगे देवनी पेठे में आज आपने दीठा.

ए प्रमाणे ते दरिद्र पुरुषे दीनताथी रामचंद्रने कह्युं तेथी तेना उपर रामचंद्रने

इया आव्याथी तेमणे तेने पोतानो सोनानो कंदोरो आपी तेने जवानी आज्ञा करी. पछी लक्ष्मण तथा सीता सहित रामचंद्र त्यांथी चाल्या दशांगपुर समीप आवी श्री चंद्रप्रभ अर्हत्‌ना चैत्यने नमस्कार करीने त्यांज रह्या.

पछी रामचंद्रनी आज्ञा लेइने लक्ष्मण दशांगपुरमां वज्रकर्णनी पासे गयो. तेने कोइ उत्तम पुरुष जाणीने वज्रकर्णे कह्युं के, हे महाभाग, तमे आज मारे घेर अतिथी थइने भोजन करो. त्यारे तेने लक्ष्मण कहेवा लाग्यो के, पोतानी स्त्री सहित मारो स्वामी बहार उद्यानमां बेठेला छे. प्रथम तेमने भोजन करावीने पछी हुं जमीश. त्यारे वज्रकर्णे सीता सहित रामचंद्रने बोलावीने व्यंजनो सहित भोज्य पदार्थ तेमनी पासे लावी राख्या. तेनुं आनंद सहित बधाए भोजन कर्युं. पछी रामचंद्रनी आज्ञा वडे लक्ष्मण अवंति नगरमां आवी त्यांना सिंहोदर राजाने मधुर वाणीए करी कहेवा लाग्यो के, जेने सर्व राजा आधीन छे, एवा भरत राजानी एवी आज्ञा छे के, तुं वज्रकर्णनी साथे वेर कर नहीं.



लक्ष्मण तथा सिंहोदरराजानुं युद्ध—वज्रकर्ण तथा सिंहोदरराजाने करी आपेल सलाह.

एवुं सांभळीने सिंहोदर राजा बोल्यो के, हे लक्ष्मण, भरत राजा पण पोताना भक्त उपर अनुग्रह करे छे; बीजाना उपर करतो नथी. ए मारो सेवक वज्रकर्ण महा दुष्ट छे. ए मने नमस्कार करतो नथी. तेना उपर हुं केम अनुग्रह करुं ? त्यारे तेने लक्ष्मणे कीधुं के, ए तारो अभक्त नथी. एने नमस्कार करवानो निग्रह (नियम) धर्मना अनुरोधे करी छे, माटे एना उपर कोप करवो तने योग्य नथी. समुद्र सुधी पृथ्वीनो स्वामी भरतराजा छे, तेनी आज्ञा तुं मान्य कर. एवुं सांभळीने सिंहोदर राजा क्रोधमां आवी बोल्यो. अरे ! भरतराजा कोण छे ? जे मारा आधीन छतां वायुवाळा माणसनी पेठे अमस्ती बडबड करी रह्यो छे ! त्यारे कोपे करी नेत्रो रातां करीने तथा होठ पीसीने लक्ष्मण बोल्यो. अरे ! भरतने तुं जाणतो नथी के ? हवे तेनी हुं तने जल्दीज जाण करुं छुं. उठ मारी सामेज युद्ध करवाने उभो रहे. आ मारी भुजारूप वज्रे करी तुं ताडित थएथी गोधाना (घोरपड—पाणीमां थतुं एक जातनुं जानवर) जेवी तारी अवस्था थशे. एवा लक्ष्मणना वचनो सांभळतांज बालक जेम राखमां ढांकेली अग्निने अडकवाने तैयार थाय तेम सिंहोदर राजा पोताना सर्व सैन्य सहित लक्ष्मणने मारवाने तैयार थयो. लक्ष्मण पण एक हाथीना स्तंभने उखेडीने

यमनी पेठे शत्रुनी सामे आवी मारवा मंडी गयो. पछी तेणे कुदको मारी हाथी उपर बेठेला सिंहोदर राजानुं गळुं पकडी, तेनाज कपडाथी तेने बांधी लेइ सर्व लोकना देखतां तेने गायनी पेठे खेंचीने रामनी पासे आण्यो. ते वखते सिंहोदर राजा रामचंद्रने जोइ तेने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के, हे रामचंद्र आप अहीं आव्या छो तेनी मने खबर नथी. अथवा हे देव, आ मारी परीक्षा लेवाने तमे कर्युं के ? अज्ञाने करी माराथी आ अपराध थयो छे तेनी मने क्षमा करो. तमारुं जे कांइ काम होय ते करवाने मने आज्ञा करो. जेम गुरुनो शिष्य उपर कोप थाय, ते प्रमाणे आ सेवक उपर आपनो कोप थयो एनी आटली शिक्षा बस छे. एवां तेनां दीनता भरेलां वचनो सांभळीने रामचंद्र तेने कहेवा लाग्या के, हे सिंहोदर, वज्रकर्णनी साथे तुं सलाह कर. ए बोलो सिंहोदरे पोताना मस्तके चडाव्या (कबुल कर्युं). पछी वज्रकर्णने पण त्यांज बोलावी लीधो. ते आवीने बे कर जोडी नमस्कार करी बोल्यो के, हे स्वामिन्, ऋषभदेव स्वामीना वंशमां तमे बे राम, लक्ष्मण उत्पन्न थयानी मने घणा दिवसथी खबर हती. परंतु आज मारा मोटा भाग्ये करीने आपनां दर्शन मने थयां. हुं अने बीजा सर्व राजा तमारा चाकरज छे. आ सिंहोदर राजा मारो स्वामी छे तेने तमे छोडी दो. अने हवे पछी एने एवी आज्ञा करो के, आ तारो सेवक तने नमस्कार करतो नथी. ए एना धर्मना निग्रहने तुं सहन कर. केमके साधु मुनिराज तथा अर्हत् भगवाननी प्रतिमा शिवाय बीजा कोइने नमस्कार करवो नहीं, एवो में प्रीतिवर्द्धन नामना मुनि पासे निग्रह लीधो छे. एवुं सांभळीने सिंहोदर राजाए आंखना अणसारे ते मान्य कर्यानी सान कर्याथी लक्ष्मणे तेने छोडी दीधो. पछी तेणे अति प्रीति सहित वज्रकर्णने आलिंगन करी रामचंद्रनी साक्षीए भाइनी पेठे तेने पोतानुं अडधुं राज्य आप्युं. पछी वज्रकर्णे सिंहोदर राजानी स्त्रीनां कुंडळो तेनी पासेथी मागी लेइ विद्युद्वेग नामना वणीकने आप्यां. पछी वज्रकर्णे लक्ष्मणने पोतानी आठ कन्याओ आपी. तेमज सुभट सहित सिंहोदर राजाए लक्ष्मणने त्रणसें कन्याओ आपी. ते वखते लक्ष्मणे कह्युं के, ए तमारी कन्याओ हमणां तमारे घेरज रहेवा द्यो. अमारा पिताए हाल राज्य उपर भरतने बेसाड्यो छे, अने अमने वनवास छे, हमणां अमे मलयाचल पर्वत उपर जवाना छीए, माटे समय आव्याथी हुं एमने अंगीकार करीश. ए वात सर्वेए मान्य करी. पछी सिंहोदर तथा वज्रकर्णादिक सर्वे रामचंद्रनी आज्ञा लेइने पोतपोताने स्थानके गया.

लक्ष्मणने स्त्री छतां पुरुष वेशे कुबरपुरना राजा कल्याणमल (कल्याणमाला कुंवरी) नो मेलाप विगेरे.



राम ते रात त्या रही सवारे उठी चाली निकळ्या. त्यांथी केटलेक दूर एक वनमां जतां सीताने तृषा लागी, परंतु त्यां पाणी मळ्युं नहीं, तेथी तेने वीसामो खवराववा सारु त्रणे जण एक झाडनी नीचे बेठा. पछी रामनी आज्ञा लेइने लक्ष्मण पाणी तथा अन्न लाववा सारु त्यांथी निकळ्यो. फरतां फरतां अनेक कमळे करी शोभित एवुं एक सुंदर सरोवर तेना जोवामां आव्युं. ते वखते जेम घणे दिवसे मित्रनो मेळाप थवाथी आनंद थाय छे, तेम तेने घणो आनंद थयो. आ वखते एज सरोवर उपर कुबरपुरनो स्वामी कल्याणमल नामनो राजा वनक्रीडा करवा सारु निकळेलो पण फरतां फरतां आवी चढ्यो. ते सरोवर उपर लक्ष्मणने निहाळी काम विकारे पीडातो तेनापर मोहित थवाथी तेने नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, हे लक्ष्मण, तुं आज मारे घेर परोणो छे, माटे भोजन करवाने चाल. तेना बोलवा उपरथी तेना सर्व कामना चिन्ह लक्ष्मणे जाणी लीधा. तेथी ते पोताना मन साथे विचारवा लाग्यो के, आ पुरुषना वेष कोइ स्त्री छे. एने वेश लेवानुं कांइपण जुदुंज कारण होवुं जोइए. पछी ते बोल्यो के, हे राजा, पोतानी स्त्री सहित मारो स्वामी साथे छे, ते अहींथी पासेज एक झाड तळे बेठो छे. तेना जम्या शिवाय हुं जमतो नथी. त्यारे ते राजाए पोताना प्रधानोने मोकलीने सीता सहित रामने बोलावी लेइ तेने नमस्कार करी तेओने रहेवा माटे गाम बाहार एक तंबु उभो कराव्यो. ते ठेकाणे तेमने स्नान भोजनादि करावी तेणे तेओनो सारी रीते आदरसत्कार कर्यो.

पछी ते राजा (कल्याणमल) गुप्तपणे पुरुषनो वेश काढी नाखी स्त्रीनो पोशाक पहेरी लज्जायमान थती पोताना मंत्रीने साथे लेइ रामनी पासे आवी उभी रही. त्यारे राम तेने कहेवा लाग्या के, हे भद्रे ! पुरुषना वेशे करीने पोताना स्त्री पणाने ढांकवानुं कारण शुं छे ? त्यारे तेणे कह्युं के, आ कुबरपुर नगरना स्वामी वालिखिल्य राजाने कोइ महा शूरवीर म्लेच्छ लोको आवीने हरण करी लेइ गया. ते वखते तेनी स्त्री पृथ्वी गर्भवंती हती, तेणे पूर्ण मास थये एक पुत्री जन्मी. तेनो प्रधान महा बुद्धिमान हतो, तेणे पुत्रीनो जन्म थतां एवी थाळी पीटावी के राणीने पुत्र जन्म्यो छे. तेमज सिंहोदर राजाने पण पुत्र थयानी खबर आपी त्यारे तेणे कीधुं के, आ कुबरपुर नगरनुं राज्य ए बाळक करशे. एज हुं वालिखिल्य राजानी

पुत्री कहेला हेतुथी राज्य चलाववा सारु बाळपणथीज मारी माताए तथा प्रधाने मने एवो वेश (पुरुष वेश) दीधाथी ते हजी सुधी कायम छे. ज्यारे वालिखिल्य राजा आवशे त्यारे हुं ए वेश उतारी (बदली) नाखीश. ए वेशनी मारी माता तथा प्रधान शिवाय बीजा कोइने खबर नथी. मारुं नाम कल्याणमाळा छे. ज्यारथी हुं उम्मर लायक थइ, त्यारथी आ राज्य करवा लागी छुं. मारा पितानुं हरण करी गयेला म्लेच्छोने हुं घणुं द्रव्य आपुं छुं, तोपण ते तेने छोडता नथी. माटे हे राम, मारा उपर कृपा करीने पूर्वे जेम सिंहोदर राजाना भयथी वज्रकर्णने आपे मुक्त कर्यो, तेम मारा बापने म्लेच्छोना हाथमांथी छोडावी आपो. त्यारे रामे तेने कीधुं के, ज्यां लगण हुं तारा बापने म्लेच्छोनी पासेथी छोडावुं नहीं, त्यां लगण तुं आ पुरुषवेश मुकीस नहीं, अने प्रथमनी पेठे राज्य चलावजे. ज्यारे तारो पिता घेर आवे त्यारे पुरुषवेश बदलजे. ते वात तेणे मान्य करीने बोली के, तमारी मारा उपर कृपा थइ तेथी हुं धन्य छुं. ए वखते तेनो महा बुद्धिमान मंत्री विनंती करवा लाग्यो के, हे महाबाहो, आ कन्याने योग्य वर लक्ष्मण छे. त्यारे तेने रामचंद्रे कह्युं के, अमारा पितानी आज्ञाथी अमे पोतानो देश मुकीने देशांतर (वनवास) निकळ्या छीए, माटे त्यांथी ज्यारे पाछा फरीशुं त्यारे लक्ष्मण एने जरुर परणशे. ए वात प्रधाने कबुल करी. पछी त्रण दिवस त्यां रहीने चोथे दिवसे सवारना लक्ष्मण तथा सीता सहित राम त्यांथी निकळ्या. ए वखते ते स्त्री (कल्याणमाला)ना मनमां घणुं माठुं लाग्युं. पछी ते प्रथमनी पेठे राज्य चलाववा लागी.



रामादिनुं विंध्याटवीमां जवुं--म्लेच्छो पासेथी कल्याणमालाना पिता वालिखिल्य राजाने मुक्त कराववी–कुबरपुर मोकलवुं.

रामचंद्रे त्यांथी चाल्या नर्मदा नदी उतरीने विंध्याटवीमां प्रवेश कर्यो. ते जंगलमां पेसतांज दक्षिण दिशा तरफ एक कांटाना झाड उपर एक कागडो खराब शब्द बोलवा लाग्यो, तेमज एक बीजा क्षीरना झाड उपर एक कागडो मीठा स्वरे बोलवा लाग्यो. तेनो रामने कांइपण हर्ष अथवा शोक थयो नहीं. कह्युं छे के, "दुर्बळ पुरुषने शुकन तथा अपशुकन थाय छे, सबळने कांइपण थतुं नथी." पछी तेओ रस्ते चालवा लाग्या. एटलामां केटलाएक भील लोको हाथमां हथीआर लेइने देशोनो नाश करवा सारु असंख्य हाथी, घोडा, तथा रथवाळा सैन्य सहित

सामे आवता तेमनी नजरे पड्या. भील लोकोए पण तेओने दीठा. ते वखते भीलनो एक तरुण सैन्याधिपति सीताने जोइने कामातुर थयो थको पोताना म्लेच्छो सैनीकोने कहेवा लाग्यो के, आ कोई बे वाटपाडु आवे छे, तेमने मारीने अथवा हरेक युक्तिथी हठावीने तेमनी पासे एक उत्तम स्त्री छे तेने मारी पासे लेइ आवो. एवो सैन्याधिपतिनो हुकम थतांज ते म्लेच्छ लोको मोटा वेगथी दोडी आवी राम लक्ष्मण उपर हथीआरोनो वरसाद वरसाववा लाग्या. ते जोइने लक्ष्मणे रामने कीधुं के, तमे सीता सहित अहीं उभा रहो. कुतरानी पेठे एमने हुं जइने मारुं छुं. पछी लक्ष्मणे पोतानुं धनुष्य सज्ज करीने मोटेथी टणत्कार कर्यो, ते सांभळतांज सिंहना नादवडे जेम हाथी नाशी जाय, तेम ते सर्व म्लेच्छो ज्यां त्यां नासवा लाग्या. अने विचार करवा लाग्या के, जेना धनुष्यनो टणत्कार पण आपणाथी सहन थतो नथी; तो पछी तेनां बाणो तो दूरज रह्यां. माटे एनी साथे युद्ध करवामां आपणे फावी शकवाना नथी तेथी तेने मळवुं एज श्रेष्ठ छे. एम निश्चय करी ते म्लेच्छोना राजाए पोताना हथीआरो एक कोराणे मुकी, रथमांथी नीचे उतरी रामनी पासे आवी तेने नमस्कार कर्यो. त्यारे लक्ष्मण गुस्सामां आवी तेने सामे जोवा लाग्यो.

पछी ते म्लेच्छोनो राजा रामचंद्रने कहेवा लाग्यो के, हे देव, कौशांबी नामनी नगरीमां एक वैश्वानर नामना ब्राह्मणनी स्त्री सावित्रीने पेटे रुद्रदेव नामनो हुं पुत्र थयो. कर्मयोगे जन्मथीज हुं चोरी, व्यभिचारादिक खोटां कर्म करवा लाग्यो. तेनो आज दिवस पर्यंत अंत आव्यो नथी. एवुं कोइ कर्म नथी के जे माराथी थयुं नही होय. एवा दुराचार सेवता कोइ एक वखत मने चोरी करतां राजाना सीपाइए पकड्यो. त्यां दरबारमां न्याय थतां राजानी आज्ञाथी मने शूळीए देवानो हुकम थयो. ते समये कोइएक श्रावक वाणीओ त्यांथी जतो हतो, तेणे मने शूळीए देवानी हकीकत जाणी तेथी दया लावी राजाए ठरावेलो दंड आपी मने छोडाव्यो. अने कह्युं के, आजथी तुं कदी पण चोरी करीश नहीं. त्यारपछी हुं ए देश छोडीने कोइएक काक नामनी चोरोनी वस्तीमां गयो. त्यां प्रारब्धना योगे ते वस्तीनुं राज्य मने मळ्युं. पछी त्यां रहीने हुं मारा जेवा बीजा केटलाएक लोकोने भेगा करीने लुट करवा लाग्यो. कोइ राजा अमने दुःख देतो होय तो तेने छळे करी बांधीने लाववा लाग्यो. एवो हुं छुं. हे स्वामिन्, ते हुं आ वखते व्यंतरनी पेठे तमारे वश थइ गयो छुं. माटे आपनी इच्छानुसार जे कांइ आज्ञा मने करवी होय ते करो हुं तमारो चाकर छुं. में आपनो जे अपराध कर्यो तेनी मने क्षमा करो. एवुं ते म्लेच्छ राजानुं बोलवुं सांभळीने रामे तेने कह्युं के, वालिखिल्य राजाने तुं छोडी दे. रामनो हुकम थतांवेंतज म्लेच्छ राजाए वालिखिल्यने छोडी दीधो. ते वखते वालिखिल्य राजाए बे कर जोडी रामने नम-

स्कार कर्यो. त्यारपछी रामे आज्ञा कर्याथी ते म्लेच्छ राजाए पोताना दूतो काक-भिल साथे वालिखिल्य राजाने तेना कुबरपुर नगरमां पोहोंचतो कर्यो. ते काकभिल तेने सहीसलामत पोहोंचाड्यानी तेनी पावती लइने पोतानी वस्तीमां पाछो आव्यो. वालिखिल्य राजाए पोताना कुबरपुर नगरमां राज्य करती पुरुषनो वेश धारण करेली पोतानी कन्याने दीठी. तेने रामनो सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. तेमज ते कन्याए पण पोताना पिताने राम त्यां आवेला ते वखतनो सर्व हेवाल कही संभळाव्यो.

रामादिनुं अरुण गाममां कपील ब्राह्मणने त्यां जवुं.

वालिखिल्य राजाने मुकवा गयेला भिल पाछा आव्या पछी राम त्यांथी चाल्या, ते केटलेक दिवसे विंध्याटवी वटावीने तथा तापी नदी उतरीने एक अरुण नामना गाममां गया. त्यां सीताने तृषा लाग्याथी जळ माटे लक्ष्मण सहित राम सीताने साथे तेडी एक कपिल नामना अग्निहोत्री ब्राह्मणने घेर गया. ते महा क्रोधी हतो पण आ वखते ते घरमां नहीं होवाथी तेनी सुशील सुशर्मा नामनी स्त्रीए तेमने बेसवाने जुदां जुदां आसनो आपी निर्मळ, स्वादु तथा शीतल जळ लावी आप्युं. एटलामां पिशाचनी पेठे महा भयंकर ते कपिल घरमां आव्यो ते राम विगेरेने त्यां आसनो उपर बेठेला जोइ पोतानी स्त्रीने कहेवा लाग्यो के, अरे ! आ महा मलीन पापी मनुष्यो मारा घरमां केम आव्या ? एमने बेसवाने जगा कोणे आपी ? हे पापिणी, तें एओने घरमां बेसाडीने मारा अग्निहोत्रने अशुद्ध कर्यो. एवी रीते ते कपिल ब्राह्मणने तेनी स्त्रीने निर्भ्रंछतो तथा शोक अने गडबड करतो जोइ लक्ष्मणने क्रोध चड्यो तेथी तेणे जेम कुतराने हाथी पकडे तेम तेने पकडीने उचकी लीधो, अने मनमां विचार करवा लाग्यो के, आने आकाशमां फेंकी दउं ? ए वखते रामे तेने कीधुं के, आ कीडी उपर आटलो बधो कोप शो ? ए अज्ञान ब्राह्मण छे माटे एने तुं मुकी दे, जेथी लक्ष्मणे तेने मुकी दीधो.

गोकर्ण यक्षे रामपुरी नगरनी रचना करी राम विगेरेने राखवुं.

पछी ते अरुण गाम छोडीने लक्ष्मण तथा सीता सहित रामचंद्र त्यांथी निकळ्या. ते चालता चालता केटलेक दिवसे काजळ जेवा काळा रंगवाळा वर्षा-

काळमां एक मोटा वनमां आवी पहोंच्यां. त्यां एक वडना झाड नीचे रही तेओ विचार करवा लाग्या के, आ चोमासाना चार महीना आपणे अहींज रहीये. ए वात ते वडना उपर रहेनारा एक इभकर्ण नामना यक्षे सांभळी. तेथी ते भय पामीने पोताना स्वामी गोकर्ण नामना यक्ष पासे जइ तेने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो. हे स्वामिन्, मारा झाडनी नीचे कोइ तेजस्वी पुरुषो आव्या छे. तेमणे मने त्यांथी कहाडी मुक्यो. माटे हवे आ मारा प्राणनुं रक्षण तुं कर. आ वर्षाकाळ सुधी तो तेओ ते झाडनी नीचे रहेसे. एवुं ते इभकर्ण यक्षनुं बोलवुं सांभळीने गोकर्ण यक्षे अवधी ज्ञानवडे उपयोग दीधो, तो त्यां कोण आव्युं छे वीगेरे सर्व हकीकत जाणी लीधी. पछी तेणे इभकर्णने कीधुं के, ए आपणे घेर परोणा आव्या छे. ए कोइ साधारण मनुष्य नथी. आठमा वासुदेव, बळदेव आपणने पूज्य छे. माटे एमनी बने तेटली भक्ति करवी योग्य छे. एम कहीने गोकर्ण यक्षे तेज रात्रे राम लक्ष्मण जे जगोए हता त्यां आवीने, एक नव योजन लांबी, बार योजन पहोळी, धन धान्ये करी परिपूर्ण, मोटा मोटा घरो तथा किल्लाए करी सुशोभित, नाना प्रकारनी रत्नादिक वस्तुए करी भरेली, मोटी बजारोए करी देदीप्यमान, एवी रामपुरी नामनी एक नगरीनी रचना करी. सवारमां उठती वखतेज नाना प्रकारनां मंगळकारक शब्दो रामना सांभळवामां आव्या. वळी ते वखते तेमणे एक वीणा धारण करेला यक्षने दीठो, तेथी ते मनमां विस्मित थया. पछी ते यक्ष रामनी पासे आवीने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामिन्, मारुं नाम गोकर्ण यक्ष छे. तमे मारे घेर परोणा छो, तेथी तमारो आदर सत्कार करवो ए मारो धर्म छे. आपने रहेवा माटे राते में आ रामपुरी नामनी नगरी निर्माण करी छे तेमां तमे रहो. हुं मारा परिवार सहित नित्य तमारी चाकरी करीश. माटे तमारी मरजीमां आवे त्यां सुधी तमे अहीं सुखेथी रहो. ए प्रमाणे ते गोकर्ण यक्षे रामनी प्रार्थना कर्या पछी रामचंद्र, लक्ष्मण तथा सीता सहित त्यां सुखे करी रह्या.



रामपुरीमां कपील ब्राह्मणनुं आगमन—दीक्षा ग्रहण विगेरे.

ते वनमां कोइएक समये पेलो अरुण गामनो रहेवासी कपिल ब्राह्मण लाकडां कापवा सारु खभा उपर कुवाडो लइने आव्यो. त्यां नवीन नगरी जोइने विस्मय पामी ते मनमां विचार करवा लाग्यो के, आ ते मायावी छे? के कोइ इंद्रजाल छे? अथवा गांधर्व नगर छे? एवो संकल्प विकल्प करतो आश्चर्यवडे आम तेम जुए छे! एटलामां एक सुंदर मनुष्यनुं रूप धारण करेली यक्षणी जेना अंग उपर नाना प्रकारना

घरेणांदिक आभुषणो शोभी रहेलां छे, एवी तेना दीठामां आवी. तेने ते पुछवा लाग्यो के, आ नवीन नगरी कोनी छे? त्यारे तेणीए कह्युं के, ए नगरी गोकर्ण नामना यक्षे, राम, लक्ष्मण तथा सीताने रहेवा सारु निर्माण करी छे, अने तेथी तेनुं नाम पण रामपुरी पाड्युं छे. ए राम मोटो दयानिधि छे. याचकजनोने ए घणुं द्रव्य आपे छे. दरिद्री लोकोनी मनकामना ए पूरी पाडे छे. एवुं सांभळीने ते कपिल ब्राह्मण पोताना माथा उपरनो लाकडानो बोजो नीचे पटकी ते स्त्रीने नमस्कार करी तेने कहेवा लाग्यो, हे सौभाग्यवती, ए राम मारी नजरे शी रीते पडे? अने तेनो मेळाप मारे केम करी थाय? त्यारे ते यक्षणीए तेने जणाव्युं के, आ नगरीने चार दरवाजा छे, त्यां मोटा मोटा यक्षो पहेरेगीर छे, तेथी नगरीमां पेसवुं अति कठिण छे. जो तारे आ नगरनी अंदर जवुं होय तो हुं कहुं ते युक्ति कर, के जेथी तुं तेमां जइ शकीश. त्यारे कपिले कह्युं के, ते युक्ति शी छे ते बतावो. यक्षणी बोली, सांभळ. ए नगरनी पूर्व दिशा तरफ एक दरवाजो छे. तेमां एक चैत्य छे. तेने वंदना करीने जो तुं श्रावक थइश तो तुं एमां पेशी शकीश. ए हकीकत सांभळी ते लालचु ब्राह्मण पूर्व दिशा तरफना दरवाजे आवी ते देवालयमां गयो. त्यां चैत्यनी वंदना वीगेरे करीने त्यांना साधु पासे आवी, तेने नमस्कार करी तेनी पासे धर्मदेशना सांभळवा बेठो. ते सांभळतां तेना अंतःकरणना परिणाम फर्याथी ते विशुद्ध श्रावक थयो. पछी त्यांथी उठीने ते पोताने घेर आव्यो. त्यां तेणे पोतानी सुशर्मा स्त्रीने पण धर्मनो बोध करी श्राविका करी. पछी ते ब्राह्मण जन्मथी दरिद्री होवाथी रामनी पासेथी द्रव्य लेवानी आशाए पोतानी स्त्री सहित रामपुरीमां आवी पूर्वे बतावेला चैत्यनी वंदना करीने राजगृहमां गयो. त्यां राम, लक्ष्मण तथा सीताने जोइने तेने प्रथमनी पोताना घरनी वात याद आवी तेथी ते भय पामी त्यांथी नाशी जवानो विचार करवा लाग्यो. ए वखत लक्ष्मण तेने कहेवा लाग्यो के, हे ब्राह्मण, तुं बीक नहीं राख. तने जो द्रव्यनी इच्छा होय तो मांगी ले. एवुं सांभळीने ते निर्भय थइ रामने आशीर्वाद देवा लाग्यो. एटले एक यक्षे तेने आसन आपी बेसाड्यो. पछी रामे तेने पुछ्युं के, हे महाराज, आप क्यांथी आव्या छो? त्यारे ब्राह्मण बोल्यो के, हुं अरुण गाममां रहुं छुं, अने मारी अग्निहोत्री ब्राह्मणनी ज्ञाती छे, ते शुं तमे नथी जाणता? तमे ज्यारे मारे घेर आव्या हता त्यारे में तमने घणां खराब वेण कह्यां हतां. तेनो लेश मात्र द्वेष न राखतां तमे कृपापात्र होवाथी आज मने उलटुं विशेष मान देवा लाग्या छो, माटे तमे धन्य छो. तेनी स्त्री सुशर्मा सीतानी पासे जइने बेठी. तेने पूर्वनी सर्व वात कही संभळावीने आशीर्वाद आप्यो. पछी रामे तेओने अगणित द्रव्य आप्युं ते लइने तेओ रामचंद्रनी आज्ञा मागी पोताने

घेर आव्यां. सुभकर्मना योगे ते ब्राह्मणने सारु ज्ञान थयुं अने वैराग्य पामवाथी तेणे इच्छानुसार दान देइ एक नंदावतंस नामना सुरी पासे जइ दीक्षा लीधी.

रामचंद्रने रामपुरीमां रहेतां वर्षाकाळ पूरो थयो तेथी हवे तेओ जशे एम जाणीने गोकर्ण यक्ष तेमनी पासे आवी हाथ जोडीने कहेवा लाग्यो के, हे देव, हवे तमे अहींथी जनार छो, एम जाणीने हुं तमारी पासे मांगी लेउं छुं के, माराथी जो आपनो कांइपण अपराध थयो होय तो ते माफ करो. तेमज मारा उपर कृपा राखजो. तमारो योग्य सत्कार करवाने कोण समर्थ छे? एम कहीने स्वयंप्रभ नामनो हार तेणे रामने आप्यो. तथा दिव्य रत्नोनां करेलां जडाउ बे कुंडळ तथा एक मुकुट लक्ष्मणने आप्या. तेमज सीताने इच्छाए करी वागनारी एक वीणा आपी. त्यारे राम तेनो घणो उपकार मानीने पोतानी इच्छाथी त्यांथी निकळ्या. राम गया पछी यक्षे ते नगर समावी दीधुं.



राम आदिनुं विजयपुर समीपे आववुं—लक्ष्मणने वनमाळानो मेळाप विगेरे.

त्यांथी चालतां वाटमां महाभयंकर वनो आव्यां तेओने वटावीने सांजे एक विजयपुर नामना नगर पासे आवी वाव्य दिशा तरफ एक वडना झाड नीचे रामे मुकाम कर्यो. ए विजयपुर नगरना राजा महीधरनी स्त्री इंद्राणीने पेटे जन्मेली एक वरमाला नामनी कन्याए बाल्यावस्थामां लक्ष्मणना गुण तथा रूप सांभळीने तेने वरवा वीशे पण कर्यो हतो, ते हाल उमर लायक हती. कोइएक समये दशरथराजाए दीक्षा लीधानी तथा राम, लक्ष्मण वनवास गयानी महीधर राजाने खबर पड्याथी तेणे मनमां घणुं कचवाइने श्रीऋषभदेव स्वामीना वंशमां उत्पन्न थएला चंद्रनगरना राजा सुरेंद्ररूपने पोतानी वरमाला नामनी कन्या आपवानो विचार नकी कर्यो. ते वातनी वरमालाने खबर पडतांज ते मरवानो निश्चय करी एज रात्रे घरथी बहार कोइ न जाणे तेवी रीते निकळीने एकली दैव योगे ते वनमां आवी. त्यां ते वनदेवतानी पूजा करीने कहेवा लागी के, आ जन्ममां ते मारो पण पूरो थयो नहीं. पण आवता जन्ममां मने लक्ष्मणज वर मळजो. एम बोली फांसी खावा सारु तेज वडना झाडनी नीचे आवी, ते वखते राम अने सीता सुता हता तेमनो पहोरो करवा सारु लक्ष्मण जागतो हतो. ते तेने जोइने आश्चर्य पाम्यो. अने विचार करवा लाग्यो के, आ शुं वनदेवता छे? अथवा आ झाड उपर रहेवावाळी कोइ यक्षणी छे?

एटलामां तो ते वडना झाड उपर ते चडवा लागी. ते जोइने आ झाड उपर ए शा सारु चढे छे, ते जोवा सारु लक्ष्मण पण तेनी पाछळ झाड उपर चड्यो. वनमाला उपर चढीने पोताना बे हाथ जोडीने बोली के, हे माता, हे वनदेवता, हे दिग्देवी, हे व्योम देवी, तमे सर्व मारुं बोलवुं सांभळो. आ जन्ममां मने लक्ष्मण पति मळ्यो नहीं, परंतु जन्मांतरमां ए मारो पति थाय एवी मारापर कृपा करो. मारी तेनामां घणी प्रीति छे. एम बोली तेणे पोताना गळामां वस्त्र घालीने तेने ते वडनी डाळ साथे बांध्युं. अने पोते उपरथी पडीने अधर लटकवा लागी. ते वखते लक्ष्मण बोल्यो के, हे भद्रे, आ अघटित कर्म तुं कर नहीं. आ हुं लक्ष्मण तारा सामेज उभो छुं. तेम छतां तारे मरवानुं कारण शुं छे? एम कहीने तेना गळामांथी फांशी कहाडीने तेने लेइ लक्ष्मण झाड उपरथी नीचे उतर्यो. एटलामां पाछली राते सीता तथा राम ऊंघ लेइ उठ्या. लक्ष्मणे तेमने वनमालानो सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. वनमालाए लज्जा पामी, माथा उपर वस्त्र लेइने राम तथा सीताना चरणोने नमस्कार कर्यो.

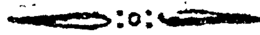
विजयपुरमां महीधर राजानी स्त्री इंद्राणी वनमाला न देखायाथी आक्रंद करी करुणास्वरे रडवा लागी. तेनी शोध करवा सारु चारे तरफ माणसो मोकली महीधर पोते पण निकळ्यो. ते फरतो फरतो वडनी झाड नजीक आवी आम तेम जुए छे त्यां ते झाडना नीचेज पोतानी कन्या तेना जोवामां आवी ते वखत ते कन्यानी पासे बेठेला माणसोने जोइने ए मारी कन्याने चोरनारा लोको छे एम भ्रांती लावी महीधर राजा पोताना माणसोने कहेवा लाग्यो के, एमने मारो. ते सांभळतांज लक्ष्मणे क्रोधायमान थइने धनुष्य सज्ज करी पोताना शत्रुनो अहंकार दूर करवा सारु प्रत्यंचा चडावी टणत्कार कर्यो ते अवाज योगे केटलाएक लोको जमीन उपर पडी गया, तेमज केटलाएक त्यांथी नाशी गया त्यारे महीधर राजा पासे आवी लक्ष्मणने जोइने तेने कहेवा लाग्यो के, हवे तुं धनुष्यनी प्रत्यंचा उतार. दैव योगे मारी कन्याना पुन्य वडे अकस्मात् तुं अहीं आवी पहोंच्यो छुं. अने मारा मोटा भाग्ये तुं आज मारी नजरे पड्यो. एवुं सांभळीने लक्ष्मणे कमान उतारी नांखी. एटले महीधर राजा रामनी पासे आवी तेने नमस्कार करी बोल्यो. आ मारी कन्या तमारा भाइ लक्ष्मणने आपवानो में निश्चय कर्यो हतो. तेमां कांइ विघ्न जेवुं जणायाथी मारी पुत्रीने घणुं दुःख थतुं हतुं. परंतु ए बंनेनो अकस्मात मेळाप थयो, तेथी हुं मारुं मोटुं भाग्य समजुं छुं. लक्ष्मण जेवा जमाइ अने राम जेवा वेवाइ क्यांथी मळे? ए प्रमाणे कही तेणे लक्ष्मण तथा सीता सहित रामने पोताने घेर तेडी लावी तेमनो घणो आदरसत्कार करी राख्या.

—:o:—

अतिवीर्य अने भरतनुं युद्ध-रामनुं साथे जवुं विगेरे.

राम वीगेरेने त्यां आगळ रहेतां केटलाएक दिवस थया पछी एक दिवस सभामां महीधर राजा, तथा राम, लक्ष्मण वीगेरे बेठा छे, ते वखत नंद्यावर्त नामना नगरमां राजा अतिवीर्यनी तरफथी आवेलो एक दूत त्यां आवी कहेवा लाग्यो के, हे राजा, मारा स्वामी अने भरत राजानी वच्चे युद्ध चाले छे, तेमां भरत राजानी तरफ घणा राजा आव्या छे, अने मारा स्वामी अतिवीर्यनी तरफ थोडा छे. तमने महा पराक्रमी जाणीने पोतानी सहायता करवा सारु मारा स्वामीए बोलाव्या छे. ते सांभळीने लक्ष्मण ते दूतने पूछवा लाग्यो के, ए बेउमां द्वेष थवानुं कारण शुं? दूत बोल्यो:-मारो स्वामी भरतने पोताना हुकममां राखवा मांगे छे, तेमज भरत राजा मारा स्वामीने तेना हुकममां राखवा चहाय छे. ए बंने वच्चे द्वेष थवानुं अने युद्ध थवानुं कारण एज छे. दूतनुं एवुं कहेवुं सांभळीने रामचंद्र कहेवा लाग्यो के, भरत शा सारु तेनी आज्ञा मानतो नथी? अतिवीर्य राजानी साथे लडवाने भरत समर्थ छे के शुं? त्यारे ते दूत बोल्यो. मारो स्वामी महा पराक्रमी तेमज बळवान पण छे. तथापि भरत राजा पण तेवोज छे, ए कांइ सामान्य नथी. ए बेमां कोण कोने जीतशे, ए कांइ कळ्यामां आवतुं नथी. त्यारे महीधर राजाए ते दूतने कह्युं के, तुं जा, हुं पाछळथी आवुं छुं. एटले दूत विदाय थयो. पछी महीधर राजा रामने कहेवा लाग्यो के, आ राजा केवो मूर्ख छे? अमारी सहायता लेइने ते भरतनी साथे युद्ध करवा मांगे छे! माटे हवे हुं मारा सैन्य सहित त्यां जइने तेने शत्रुभाव न बतावतां तेनीज हार कराबुं. अने आप अहींज रहो. त्यारे तेने रामे कीधुं के, तारे जवानी जरुर नथी. हुंज त्यां जाउं छुं. मारी साथे तारा पुत्रने सैन्य सहित मोकल. एटले जे जे कंइ करवुं हशे ते हुं करीश. ते वात महीधर राजाए कबुल करीने रामने पोतानो पुत्र तथा सैन्य सोंप्युं. पछी तेमने साथे लेइने लक्ष्मण तथा सीता सहित राम त्यांथी निकळ्यां. केटलेक दिवसे तेओ नंद्यावर्तपुर पासे आवी पहोंचतां बहार उपवनमां रह्या. त्यांनो क्षेत्रदेवता रामने जोइने कहेवा लाग्यो के, हे महाभाग, तमारी हुं शी साज्य करुं? त्यारे रामे तेने कह्युं के, आ वखते मारी साज्य करवानी कांइ जरुर नथी. तथापि ते देवे कीधुं के, आप अहीं पधार्या तेथी साज्य करवी एज मारी लायकी छे, माटे हुं आ प्रमाणे करुं छुं:—

सैन्य सहित रामनुं कामिक स्त्रीनुं रूप–अतिवीर्य साथे थयेल तेमनुं युद्ध–अतिवीर्यनुं पकडावुं तथा दीक्षा लेवी विगेरे.



आ अतिवीर्य राजाने स्त्रीओए जीत्यो, एवी तेनी अपकीर्त्ति थवा सारु तमारा सर्व सैन्य सहित तमारु कामिक स्त्रीनुं रुप करुं छुं. एम कहीने ते क्षेत्र देवताए राम, लक्ष्मण तथा तेमना सर्व सैन्यनु रुप पालटी नांखी स्त्रीरुपे तेमने बनावी मुक्या. पछी रामचंद्रे दूत मोकली अतिवीर्य राजाने कहाव्युं के तारी सहायता करवा सारु महीधर राजाए पोतानुं सैन्य मोकल्युं छे. दूते नंद्यावर्त नगरमां आवी अतिवीर्य राजाने रामचंद्रे कहावेलो संदेशो कह्यो. ते सांभळीने राजाए तेने पुछयुं के, महीधर राजा पोते शा माटे न आव्यो ? तेना सैन्यनुं मारे शुं काम छे ? हुं एकलोज भरतने जीतवाने समर्थ छुं. मारे बीजानी सहायता शा सारु जोइये ? ए अश्कर सैन्यने मारा नगर पासेथी कहाडी मुको. अतिवीर्य राजा एटलुं वोल्यो ते वखते त्यां आगळ बेठेला एक माणसे तेने कह्युं के, महीधर राजा पोते आव्यो नहीं, तो नहीं, एतो रह्युं, पण उलटी तारी मस्करी करवा सारु तेणे स्त्रीओनुं सैन्य मोकल्युं छे. ए साभळतांज अतिवीर्य राजा अति क्रोधायमान थयो. अने तेणे स्त्री रुप सैन्यने पोतानी नजरे जोयुं. एटले तरतज तेणे पोताना योद्धाओने हुकम कर्यो के, आ दासी जेवी स्त्रीओना गळा पकडीने तेमने हांकी कहाडो. ते सांभळतांज तेना सुभटो ते स्त्री रूप रामना सैन्यने दुःख देवा लाग्या. तेथी रामचंद्रे एक हाथीना स्थंभने पोताना हाथेवती जमीनमांथी उखेडीने तेणे वती अतिवीर्यना सुभटोने मारी पाछा हठाव्या. ए वृत्तांत अतिवीर्य राजाए सांभळ्यो तेथी ते महा क्रोधायमान थयो थको हाथमां खडग लेइने तेमने मारवाने दोड्यो. तेने आवतो जोइने लक्ष्मणे तेना हाथमांथी खड्ग छीनवी लइ, तेना केश पकडी तेने वस्त्रथी ताणी बांधी, वाघ जेम हरणने लेइ जाय तेम ते नृव्याघ्र लक्ष्मण तेने लेइने चाल्यो. ते जोइने सीताने तेनी दया आव्याथी तेणे लक्ष्मणने कह्युं. जेथी लक्ष्मणे ते अतिवीर्य राजाने छोडी मुकी कह्युं के, आजथी तुं भरत राजानी सेवा करजे. ए वखते पेला क्षेत्र देवताए तेमनो स्त्री वेश हरण करी लीधो तेथी तेओ पोताना मुळ रुपे थया. ते जोतांज अतिवीर्य राजाए जाणी लीधुं के, आ राम, लक्ष्मण छे. पछी तेणे तेमनो यथायोग्य आदरसत्कार कर्यो. अने पोते मान भंग थवाथी मनमां वैराग्य धारण करी वोल्यो के, हुं हवे बीजानी सेवा करुं के? ए मने योग्य नथी. हुं तो मोक्ष साधन रुप संयम ग्रहण करीश. एवा अहंकारे

करी पोताना पुत्र विजयरथने पोतानुं राज्य सोंपी दीक्षा लेवा तत्पर थयो. त्यारे रामे तेने कह्युं के, मारे तुं बीजा भरतनी बराबरनी छे, प्रथमनी पेठे तुं तारु राज्य सुखे कर. एवा अभिप्रायथी दीक्षा लेवानुं कांइ प्रयोजन नथी. तथापि ते मानता तेणे दीक्षा लीधी. पछी तेना पुत्र विजयरथे पोतानी रतिमाला नामनी बेन लक्ष्मणने आपी. त्यार पछी राम तथा लक्ष्मण सैन्य सहित विजयपुर नगरमां पाछा आव्या. अने विजयरथ राजाए भरतनी सेवा करवा सारु तेनी पासे जइ बनेलो सर्व बनाव तेने कही संभळाव्यो. भरत राजाए तेनो घणो आदर सत्कार कर्यो. कह्युं छे के, "जे सत्पुरुषो छे ते पोताने नमनारा पुरुषो प्रत्ये घणा दयालु होय छे" पछी विजयरथे पोतानी रतिमालाथी नानी बेन विजयसुंदरीने भरत वेरे परणावी. ए समये अतिवीर्य मुनि विहार करता फरता फरता त्यां आवी पोहोंच्या. तेने भरते भक्ति पुर्वक नमस्कार करीने तेनी पासे पोताना निर्मीते तेने माठुं लाग्या विशेनी क्षमा करावी. पछी ते मुनि त्यांथी विहार करी गया. अने विजयरथ राजा खुशी थइने पोताना नंद्यावर्त नगरमां गयो.



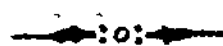
राम लक्ष्मणनुं क्षेमांजली नगरे जवुं—जितपद्माए लक्ष्मणने वरमाळा आरोपवी विगेरे.

विजयपुरमांथी महीधरराजानी रजा लेइने वनमां जवा सारु राम तैयार थया ते वखते लक्ष्मणे वनमाळा पासेथी जवानी रजा मांगी. त्यारे ते महा चिंतातुर थइने तेने कहेवा लागी के, हे स्वामी, प्राणत्याग करती वखते तमे जे मारी रक्षा करी ते परिश्रम व्यर्थ थयो. हे प्राणवल्लभ, ते वखते जो हुं मरी गइ होत तो आ विरहनुं दुःख देखवानो दिवस आवत नहीं. हे नाथ, ए तो साराने बदले उलटुं नरसुं थयुं. हे प्राणप्रियपति, तारा वियोगनी संधी जोइने मने कोइ बीजोज लेइ जशे. माटे हमणांज तुं मारी साथे लग्न करीने मने तारी साथे लेइ चाल. त्यारे लक्ष्मणे तेने कीधुं के, हुं भाइनो सेवक छुं. जा तुं मारी साथे आवीश तो तेनी सेवामां विघ्न थशे. माटे हाल तुं तने ज्यां योग रहेवानुं लागे त्यां रहे. हुं तने एक घडी पण भूलनार नथी. ज्यारे हुं वनवासथी पाछो फरीश त्यारे तने हुं मारी साथे लेइ जइश. ते तारे खचीत मानवुं. वळी एने माटे तुं मने जे सोगन आपे ते लेवाने हुं तैयार छुं; अने कहुं छुं के, जो हुं फरीथी अहीं पाछो ना आवुं तो रात्रि भोजन करनाराने जेटलुं पाप लागे छे, तेटलुं पाप मने लागो एवी रीते वनमाळानुं मन मनावीने तेने खुशी करी ते रात त्यां रही सवारमां लक्ष्मण तथा सीता सहित राम त्यांथी निकळ्या.

तेओए चालतां चालतां केटलेक वखते वन वटावीने एक क्षेमांजली नामनी नगरी पासे आवी बहार भागोळे मुकाम कर्यो. पछी भोजन वेळा थवाथी लक्ष्मण वनमां जइ फळ लाव्यो ते जानकी ए सुधारी तैयार करी आप्या एटले राम तथा लक्ष्मणे आरोग्यां अने पछी सीताए खाधा एवी रीते केटलाएक दिवस त्यां रहेतां थया पछी एक दिवस रामनी आज्ञा लेइने ए नगर जोवा सारु लक्ष्मण वस्तीमां गयो. त्यां रस्तामां चालतां थाळी पीटाती सांभळी तेनुं कारण जाणवा माटे ते शुं बोले छे ते सांभळवा सारु लक्ष्मण तेनी नजीक गयो त्यां ते थाळीवाळो एम बोलतो हतो के, "जे कोइ पुरुष आ राजानो शक्ति प्रहार सहन करशे, तेने राजा पोतानी कन्या परणावशे" ए प्रमाणे तेने बोलतो सांभळीने कोइ पासे उभेला पुरुषने तेणे पुछयुं के, आ थाळीवाळो बोल्यो तेनो मर्म शो छे? त्यारे ते कहेवा लाग्यो के आ नगरना राजा शत्रुदमननी स्त्री कनकावतीने पेटे पेदा थएली एक कमळ जेवां नेत्रोवाळी साक्षात लक्ष्मी जेवी एक जितपद्मा नामनी कन्या छे. ते उपवर थवाथी तेने परणावतां पहेलां वरनुं सामर्थ्य जोवा सारु राजा नित्य आ प्रमाणे थाळी पीटावे छे. परंतु आज दिवस सुधी एनी धारणा पार पाडनार कोइपण पुरुष मळ्यो नथी.

लक्ष्मण उपर प्रमाणे हकीकत सांभळतां तरतज त्यांथी राज सभामां गयो त्यां शत्रुदमनराजाए तेने जोइ पूछयुं के, तुं कोण छे! अने क्यांथी आव्यो छुं? त्यारे लक्ष्मणे कह्युं के, हुं भरतराजानो दूत छुं. तेना कोइ एक काम सारु जतां तारा नगरमां थाळी पीटाती सांभळी तारी कन्या साथे परणवा सारु हुं अहीं आव्यो छुं? त्यारे राजाए तेने पुछयुं के, तुं मारो मार सहन करीश? लक्ष्मणे कह्युं, एक तो शुं पण पांच मार हुं सहन करीश. ए वखते राजकन्या जितपद्मा लक्ष्मणने जोइने तेना उपर आशक्त थइ थकी तथा कामे करी पीडाती थकी राजाने कहेवा लागी के, हे पीता, तुं ए पुरुषने मार नहीं तथापि ते मानतां पोतानुं पण साचुं करवा सारु तथा तेनी परीक्षा जोवा सारु राजाए लक्ष्मणने पांच शक्ति प्रहार कर्या ते लक्ष्मणे बे हाथमां, बे काखमां, अने एक दांतमां लीधो तेज वखते तत्काळ जितपद्माए आवी लक्ष्मणना गळामां वरमाळा घाली. त्यारे राजाए कीधुं के, आ तने योग्य वर मळ्यो छे. एनी साथे सुखे करी तुं लग्न कर. तेनुं एवुं बोलवुं सांभळतां लक्ष्मण तेने कहेवा लाग्यो के, मारो मोटो भाइ पोतानी स्त्री सहित बहार उपवनमां बेठेलो छे. तेना तावामां हुं हमणा छुं, माटे ते जेम कहेशे तेम हुं करीश. शत्रुदमन राजाए तेना एवा बोलवा उपरथी जाणी लीधुं के, ए राम लक्ष्मण छे. पछी पोते बहार उपवनमां ज्यां राम हता त्यां जइ तेमने नमस्कार करी, घणा आदर सत्कार पूर्वक सीता सहित रामने पोताना नगरमां तेडी लाव्यो. त्यां तेणे मोटा आडंबरथी

रामनी पूजा करी. कह्युं छे के, "सामान्य अतिथी पण पूजा करवा लायक छे, तो पछी पुरुषोत्तमनी पूजा करवा विशे पुछवानुंज शुं छे?"



राम लक्ष्मणनुं वंशस्थळ समीपे आववुं-त्यांनी स्थिति विगेरे.

यथा इच्छा लक्ष्मण तथा सीता सहित राम त्यां रह्यां पछी त्यांथी निकळती वखते लक्ष्मणे शत्रुदमन राजाने कह्युं के, हुं पाछो आवती वखत तारी कन्याने परणीश. ते वात तेणे कबुल करी पछी रातना समये तेओ त्यांथी चाली निकळ्या, चालतां चालतां केटलेक दुर गया पछी एक दिवस सांजना तेओ वंशस्थळ नामना नगर समीपे आवी पहोंच्या. त्यां तेओए उपवनमां जइ विश्राम कर्यो. ते वखते आमतेम फरतां त्यांना सर्व लोकोने भय पामेला तथा तेमना चेहेरा निस्तेज तेमना दीठामां आव्या, तेथी राम तथा लक्ष्मण ते नगरना लोकोने पूछवा लाग्या के, तमारी आवी दशा थवानुं कारण शुं? त्यारे एक पुरुषे तेमने जणाव्युं के, आज त्रण दिवस थयां रातना आ पर्वत उपर एक भयंकर शब्द थाय छे, तेना भयथी अहींना सर्व लोको रात्रे बीजे ठेकाणे जइ रहे छे, अने सवार थतां आवे छे. एवी आ नगरना लोकनी नित्य स्थिति छे.

एवी हकीकत सांभळतांज रामनी आज्ञा लेइने लक्ष्मण ते पर्वत उपर चड्यो. त्यां तपास करी जोतां जोतां कायोत्सर्ग करी रहेला बे साधु तेना दीठामां आव्या. तेमने वंदनादि करी नमस्कार करे छे, एटलामां राम तथा सीता पण त्यां आवी पहोंच्यां. तेओए पण ते मुनिओने वंदनादि करी नमस्कार कर्यो. पछी ते साधुओनी सामे राम गोकर्ण यक्षे आपेली वीणा वगाडवा लाग्यो; लक्ष्मण ग्राम तथा राग सहित मनोहर गायन करवा लाग्यो, तेमज सीता हावभाव सहित नाचवा लागी. पछी सूर्य अस्त पाम्यो के रात्र थतांज कोइएक अग्नि जेवी कान्तिवाळो वेताल त्यां आवीने ते मुनिओने उपद्रव करवा लाग्यो. तेने जोइने, सीताने ते साधुओनी पासे बेसाडी राम तथा लक्ष्मण बंने भाइओ ते वेतालने मारवा सारु जवाने तैयार थया. ते वखतनुं तेमनुं तेज ते देव (वेताल) थी सहन न थयुं तेथी ते भय पामीने त्यांथी नाशी गयो. तेज वखते ते मुनिओने केवलज्ञान उपन्युं. तेमने रामे नमस्कार करी पूछ्युं के, ए उपद्रव थवानुं कारण शुं छे? त्यारे तेओ मध्येना एक मुनिए तेनी हकीकत नीचे प्रमाणे जणावी.

कुलभूषण अने देशभूषण मुनि तथा अनलप्रभ देवना पूर्व भव वैर संबंध-वृत्तांत.

" पद्म नामना नगरमां विजय पर्वत नामे राजा राज करतो हतो. तेना अमृतस्वर नामना एक दूतनी स्त्री उपयोगाने पेट जन्मेला उदित तथा मुदित नामना बे पुत्रो हता. ए अमृतस्वरना एक वसुभूति नामना ब्राह्मण मित्रनी साथे उपयोगानी प्रीति बंधाइ तेथी तेने कहेवा लागी के, मारा पतिने तुं मारी नांखे तो आपणे निर्भय थइये. ए वात वसुभूतिए स्वीकारी अमृतस्वरने मारवानो लाग जोतो हतो. कह्युं छे के " कामी पुरुष शुं अकार्य न करे ? " केटलेक दिवसे कोइएक राजाना कामने वास्ते अमृतस्वर तथा वसुभूति देशांतर जवा साथे निकळ्या. त्यां लाग मळवाथी वसुभूतिए मार्गमां जतांज अमृतस्वरने मारी नांख्यो अने पोते नगरमां पाछो आवीने लोकोने कहेवा लाग्यो के, अमृतस्वरे एक काम साथे मने पाछो मोकली दइ ते देशांतर गयो अने तेनी स्त्री उपयोगाने जणाव्युं के, आपणा संभोगमां विघ्न करनाराने तारा कहेवा प्रमाणे में रस्तामां मारी नांख्यो छे. त्यारे तेणीए कह्युं के, घणुं सारुं कर्युं; परंतु हजी आ मारा बे पुत्रो ज्यांसुधी जीवता छे, त्यांसुधी आपणे सुखे करी मनमानती मोज मारी शकवाना नथी. ए बे जणा जो मरे तो पछी आपणने कोइनी पण अडचण रहे नहीं. त्यारे वसुभूतिए कह्युं के, तुं चिंता न कर. हुं एमने पण मारी नाखीश. दैवयोगे तेमनी आ वातनी वसुभूतिनी स्त्रीने खबर पडी; तेथी तेने इर्षा आववाथी उपयोगाना पुत्र मुदित तथा उदितने ए वात तेणे कही दीधी. ते सांभळतांज उदितने घणो क्रोध चड्याथी लाग साधी वसुभूतिने ठार कर्यो. ते मरीने नलपल्लीमां एक म्लेच्छ थयो. त्यारपछी कोइएक समये विजयपर्वत राजाए एक मतिवर्द्धन नामना मुनि पासे धर्म सांभळीने दीक्षा लीधी. तेमज उदित अने मुदित ए बे भाइओए पण दीक्षा ग्रहण करी. ए बंने साधु साथे विहार करता एक वखत चैत्यनी वंदना करवा सारु जतां रस्तो चुकी भुला पडवाथी कर्मयोगे पेली नलपल्ली नामनी म्लेच्छनी वस्तीमां जइ चड्या. त्यां जे वसुभूतिनो जीव म्लेच्छ थयेलो छे तेने आ बे मुनिओने जोतां जाति स्मरण ज्ञान थयुं, तेथी पूर्व भवनी वात तेना जोवामां आववाथी ते पूर्वनुं वैर याद करीने मुनिओने मारवा दोड्यो. त्यां म्लेच्छना राजाए तेमने बचाव्या. ते म्लेच्छ राजा तथा आ मुनिओनो पूर्वनो तेवो संबंध ए हतो के, म्लेच्छ राजा पूर्व जन्ममां एक मृग हतो, तेने कोइएक पारधी मारतो हतो, त्यां उदित तथा मुदितनो जीव पूर्व जन्ममां खेडुत हता, तेमणे तेने (मृगने) पार-

धीना हाथथी मरतो बचाव्यो हतो. ते हेतुथी म्लेच्छ राजाए अहीं एनुं रक्षण कर्युं. त्यांथी निकळीने ते बंने साधुओ चैत्य वंदना वीगेरे करीने अंते अनशन व्रत लेइने काळ करी महाशुक्र नामना देवलोकमां सुंदर अने सुकेश नामना बे देव थया. वसुभूतिनो जीव म्लेच्छ योनी भोगवीने मुवा पछी घणा काळ सुधी जुदी जुदी योनीओमां घणां दुःखो सहेतो एक समये शुभ कर्मना उदयथी घणा कष्टवडे मनुष्य जन्म पाम्यो. ते भवमां ते तापस थइने मुवा पछी ज्योतिष्क नामना देवलोकमां एक धूमकेतु देव थयो. तदनंतर उदित तथा मुदितना जीव महाशुक्र नामना देवलोकथी चवीने भरत क्षेत्रमां अरिष्ट नामना नगरना राजा प्रियवंदनी स्त्री पद्मावतीने पेटे रत्नरथ अने चित्ररथ एवे नामे बे पुत्र थया. ज्योतिष्क देवलोकथी धूमकेतु भ्रष्ट थइने तेज राजानी कनका नामनी बीजी स्त्रीने पेटे अनुद्धर नामनो पुत्र थयो. ते रत्नरथ तथा चित्ररथनी साथे वैर करवा लाग्यो, पण एमणे तेनी साथे कदीपण द्वेष कर्यो नहीं. केटलाएक काळ पछी प्रियंवद राजाए रत्नरथने राज्य उपर बेसाडीने बाकीना बे पुत्रोने यौवराज्य (राजाना हाथ तले) पद आप्युं अने पोते छ दिवसनुं अनशन करीने काळ करी देवलोकमां देव थयो अने रत्नरथ राजा राज्य चलाववा लाग्यो. कोइ एक वखत अनुद्धरे कोइएक राजानी कन्यानी मांगणी कर्यां छतां ते राजाए तेने कन्या नहीं परणावतां रत्नरथने परणावी तेथी अनुद्धर अति क्रोधमां आवी ते राजानो देश लुटवा लाग्यो. तेने शत्रुए पकडीने घणो मारी कुटी मूकी दीधो. त्यार पछी ते तापस थयो त्यां तेने कोइ एक स्त्रीनो संग थयो तेथी ते तपस्यानुं फल व्यर्थ गयुं. तेथी मुवा पछी घणा काल संसारमां भटकीने कोइक कर्मना उदयथी फरी मनुष्य भव पाम्यो. ते भवमां पण तेणे तापस थइ अज्ञान कष्ट कर्युं तेथी ते काळ करी गया पछी ज्योतिष्क नामना देवलोकमां अनलप्रभ नामनो देव थयो. रत्नरथ अने चित्ररथ ए बे भाइओ धर्म पामी दीक्षा लेइ काळ करी अच्युतकल्प नामना देवलोकमां अतिबल तथा महाबल नामना बे महर्द्धिक देव थया, त्यांथी चवीने सिद्धार्थ नामना नगरमां क्षेमंकर नामना राजानी स्त्री विमलादेवीने पेटे कुलभूषण तथा देवभूषण नामना अमे बे भाइ पुत्रपणे उत्पन्न थया. क्रमे करी मोटा थया त्यारे अमारा पिताए पोताना घोष नामना उपाध्याय पासे अमने भणाववा सारु मोकल्या. तेने बेर बार वर्ष सुधी रहीने अमो बंने भाइओए विद्याभ्यास कर्यो. तेरमां वर्षनो आरंभ थतां अमे सर्वे कळामां निपुण थया. त्यारे घोष उपाध्याय अमने तेडीने राजमंदीर पासे आव्यो; त्यां राज मेहेलनी बारीमां बेठेली एक राज कन्याने जोइ तेनी लावण्यताने लीधे अमने काम विकार जाग्यो अने अज्ञाने करी तेना विषे अमारी बुरी नजर थइ. पछी राजा पासे आवीने अमे शिखेली सर्व

कळा वतावी. तेथी राजाए खुशी थइ उपाध्यायने सारी पेठे शिख आपीने विदाय कर्यो. त्यारपछी अमे पितानी आज्ञा लेइने अमारी माताने नमस्कार करवा सारु अंतःपुरमां गया. त्यां अमे एपेली कन्याने अमारी माताए पासे बेठेली दीठी. ते वखते अमोने अमारी माताए कीधुं के, आ कनकप्रभा तमारी बेन छे. तमे बे भाइ उपाध्यायने घेर भणवा गया त्यार पछी आ कन्यानो जन्म थयो छे, ते वात हजी तमे जाणता नथी हो. मातानां मुखथी ते हकीकत सांभळी अमे लज्जायमान थया. अज्ञाने करीने पोतानी बेन विशे काम भोगनी इच्छा थइ तेथी अमने धिःकार छे. एम जाणीने अमे वैराग्य पामी तरतज त्यांथी निकळी गुरु पासे आवी दीक्षा लीधी. त्यार पछी केटलेक दिवसे शरीरनी अपेक्षा मुकीने तथा अहंकार रहित थइने अमे आ पर्वत उपर आवी कायोत्सर्ग ध्याने रह्या. अमारो पिता क्षेमंकर राजा अमारा वियोगथी अनशन व्रत लेइने काळ करी गया पछी गरुड देवलोकमां एक महालोचन नामनो देव थयो. कोइएक समये तेनुं अंग कंप्याथी अमने उपद्रव थवानुं जाणीने पूर्व जन्मना स्नेह वडे ते पीडित थयो थको अमारी पासे आव्यो. तेनी साथे अनलप्रभ तथा बीजा देवो आव्या हता, ते बधा एकठा थइने अनंतवीर्य नामना महामुनि पासे गया. ते वखते ते धर्म देशना देवा बेठा हता. तेनी समाप्ति थया पछी तेना कोइ एक शिष्ये तेने पूछ्युं के, महाराज, तमारी पाछळ केवली कोण थशे ? त्यारे तेणे कह्युं के, हुं काळ करी गया पछी कुळभूषण अने देवभूषण ए बे भाइओ केवल ज्ञान पामशे. एवुं सांभळी बधा पोतपोताने स्थानके गया. अनलप्रभ विभंग ज्ञाने करी अमे कायोत्सर्ग ध्याने छीये एम जाणीने अनंतवीर्य मुनिनां वचनो मिथ्या करवा सारु तथा अमारी साथेना तेना पूर्व जन्मना वैरे करी अमने महा दुःख देवा लाग्यो. तेना उपद्रवने आज चोथो दिवस थयो. आजे तमे बेउ भाइओ आव्याथी ते भय पामीने अहींथी नाशी गयो अने ए निमित्तथी अमने केवल ज्ञाननी उत्पत्ति थइ. यद्यपि ए देवे अमने दुःख देवाना घणा उपायो कर्या तथापि ते अमारा कर्म क्षयना सहायता रुप थया. ए प्रमाणे कुळभूषण तथा देवभूषण नामना मुनिओनो तथा तेमने उपसर्ग करनार अनलप्रभ देवनो पूर्व जन्मनो सघळो संबंध ते मुनिए राम लक्ष्मणने कह्यो."



रामगीरी नाम स्थापन—दंडक वनमां रामादिनुं आववुं.

ते वखते त्यां आवेलो महालोचन देव रामने कहेवा लाग्यो के, हे राम, आजे तें घणुं श्रेष्ठ काम कर्युं. हुं तारा पर प्रसन्न थयो [illegible]. माटे मारी पासेथी तने गमे ते मांगी ले. त्यारे रामे तेने कीधुं के, मारे [illegible] इतुं नथी, मने कोइ पदार्थनी

इच्छा नथी. त्यारे देव कहेवा लाग्यो के, जो के तने कांइ वांच्छा–गरज नथी तो पण हुं तारा उपर उपकार करीश, एम कहीने ते देव अंतरध्यान पाम्यो. एटलामां वंशस्थळ नगरना राजा सुरप्रभे त्यां आवीने रामने नमस्कार करी तेनी यथायोग्य पूजा करी, पछी तेणे ते पर्वत उपर रामनी आज्ञाथी एक अर्हत् चैत्य कराव्युं. ते दिवसथी ए पर्वतनुं नाम रामगिरी पड्युं छे. त्यार पछी सुरप्रभ राजानी रजा लेइने लक्ष्मण तथा सीता संहित रामचंद्र दंडक नामना वनमां गया. त्यां एक गुफामां घरनी पेठे वास करीने रह्या.



त्रिगुप्त तथा सुगुप्त मुनी अने रत्नजटी विद्याधर तथा जटायुनो रामने थएलो मेळाप.

रामने दंडक वननी गुफामां रहेतां केटलाएक दिवस थया तेवामां एक वखत भोजन वेळाए तेमनां दरवाजा उपर आकाश मार्गथी त्रिगुप्त तथा सुगुप्त नामना बे चारण मुनिओ मासोपवासना पारणा करवा सारु आवी उभा रह्या. तेमने जोइने राम सहित लक्ष्मण तथा सीताए नमस्कार कर्यो. पछी सीताए यथोचित अन्न दानादिक आपीने तेमने पारणुं कराव्युं. ते वखते त्यां आगळ देवोए रत्नो तथा सुंगधी जळनी वृष्टी करी. तेमज कंबुद्वीपना स्वामी रत्नजटी विद्याधर राजा तथा बीजा बे देव, मळी त्रगे जणाए त्यां आवी राम उपर प्रसन्न थइने तेमने घोडा सहित रथ आप्यो. ए वखते ते स्थळे एक झाड उपर रहेनार गंधाभिध (गीध) नामनो रोगी पक्षी देवे करेली सुगंधी जळनी वृष्टी घणी थएली जोइने नीचे उतरी आवी उभो रह्यो. तेने मुनिओनां दर्शन थतां जाति स्मरण ज्ञान उपन्युं, तेथी ते मूर्छा खाइने पृथ्वीपर पड्यो. तेना उपर शीतल जळ रेड्याथी ते सावध थतांज ते पक्षी रोग रहित थइ गयो. तेनी पांखो सोनानी थइ, चांच परवाळानी थइ, पग लालमणीना थया, तथा रत्न जेवी कांति अने रत्नांकुर जेवी तेनी जटा थइ. ते दिवसथी ते पक्षीनुं नाम जटायु पड्युं. एवो चमत्कार जोइने रामचंद्र ते मुनिने पूछवा लाग्या के, आ महाक्रोधी तथा मांसाहारी गीध पक्षी तमारा चरणो पासे आवी अडकतांज शांत थयो, तथा एना अंगना अवयवो विरुप हतां ते घडीकमां सुरुप थयां. तेमज एना शरीरनी कांति रत्नो जेवी थइ गइ एनुं शुं कारण हशे ते कृपा करी कहेशो. त्यारे सुगुप्त मुनिए रामने कह्युं के सांभळः—

जटायुनो पूर्व भव संबंध विगेरे.

पूर्वे आ स्थळे कुंभकारकट नामनुं एक नगर हतुं. तेमां दंडक नामे राजा राज्य करतो हतो. तेमज ते काळे श्रावस्ती (सावत्थी) नामनी नगरीमां जितशत्रु नामे राजा राज्य करतो हतो. तेनी स्त्री धारणीना उदरथी स्कंदक नामनो एक पुत्र तथा पुरंदरयशा नामनी एक कन्या पेदा थइ. ए कन्या उपवर थतां जितशत्रुराजाए तेने दंडकराजा साथे परणावी. त्यारपछी एक वखत दंडकराजाए कांइ काम सारु पालक नामना ब्राह्मणने जितशत्रुराजा पासे सावत्थी नगरीए मोकल्यो. ते त्यां पोहोंच्यो ते वखते राज सभामां अर्हत् धर्म विशे भाषण चालतुं हतुं. ते सांभळीने कुटिल बुद्धिवाळा पालके तेनी निंदा करवानो आरंभ कर्यो. त्यारे जितशत्रुराजाना पुत्र स्कंदके तेने युक्तिथी समजावीने तेना मननुं समाधान कर्युं. ते प्रसंगे त्यां सर्व सभास्थ लोको तेना उपर हस्या. तेथी स्कंदक उपर पालक घणो क्रोधायमान थयो. परंतु तेनुं कांइ चाल्युं नहीं, ते वात मनमां राखी राजानी आज्ञा लेइ ते पाछो कुंभकारकट नगरमां गयो. केटलोक काळ वित्या पछी स्कंदके वैराग्य पामवाथी पांचसें राजपुत्रो सहित मुनिसुव्रत स्वामी पासे जइ दीक्षा लीधी. संयम पाळतां एक दिवस स्कंदक मुनिसुव्रत भगवानने पूछयुं के, पुरंदर यशादिकने बोध करवा सारु कुंभकारकट नगरमां जवानी हुं इच्छा राखुं छुं! ते विशे आपनी केवी आज्ञा छे? त्यारे प्रभुए कीधुं के, जो तुं त्यां जइश तो आ परिवार सहित तने मरणांतक उपसर्ग (दुःख) थशे. स्कंदक बोल्यो, तथापि आराधक थइशुं के नहीं? भगवाने जणाव्युं के, एक तारा शिवाय बीजा बधा आराधक थशे त्यारे ते कहेवा लाग्यो के, एम थएथी हुं घणो खुशी छुं. एम बोलीने तथा भगवानने नमस्कार करीने पांचसें मुनिओ सहित स्कंदकाचार्य कुंभकारकट नगर प्रत्ये जवा सारु निकळ्या. ए वातनी पेला महाक्रुर पालकने खबर पडी तेथी तेणे प्रथमनुं वैर याद करीने साधुओने उतरवा योग्य उद्यानोमां जमीन खोदीने घणी जातना हथीआरो दाटी राख्या. स्कंदकाचार्य विहार करतां करतां पांचसें मुनिओना परिवार सहित ए उद्यानोमां आवी उतर्या. दंडकराजा पोताना नगरना उपवनमां स्कंदकाचार्य आवी उतर्या छे ए वात जाणीने पोताना परिवार साथे तेमने वांदवा सारु आव्यो; त्यां नगरजनो सहित राजाए स्कंदकाचार्य तथा बीजा मुनिओने वांदी नमस्कार करी आचार्यना मुखथी धर्मदेशना सांभळी तेथी दंडकराजा तथा सर्व नागरिको आनंद पाम्या, अने पाछा पोतपोताने घेर गया.

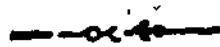
स्कंदकाचार्यनुं वैर वाळवाने उतावळे थयेलो पालक, राज महेलमां राजानी पासे जइने तेने एकांत स्थलमां कहेवा लाग्यो के, आ स्कंदकाचार्य जो के बहारथी उजळो हंस जेवो दीठामां आवे छे, परंतु अंदरखाने जोतां तो ए बग भक्त (बगला) जेवो जणाय छे. ए महा पाखंडी छे. ए सर्वेए कपटवेश लीधेलो छे. आपणने मारीने राज्य छीनावी लेवा सारु ए सर्वे अहीं आव्या छे. एवी मारी संपूर्ण खात्री थइ छे. तेम छतां जो ए वातनो आप राजा साहेबने विश्वास ना आवतो होय तो में घणी चतुराइथी तेनी खबर मेळवेली छे तेनो तपास आप पोते करी जुओ, एटले तेमनुं कपट जणाइ आवशे. ते ए के जे ठेकाणे एमणे पोतानां हथीआरो जमीनमां छाना दाटी राख्यां छे. पालकनो प्रपंच राजा जाणी शक्यो नहीं अने तेना बोलवा उपर विश्वास लावी राजाए ज्यां मुनियोनुं स्थान हतुं त्यां जमीन खोदावी जोइ तो तेमां नाना प्रकारना चित्र विचित्र हथीयारो दीठामां आव्यां ते जोइने दंडक राजा महा शोकातुर थइ गयो अने कांइ पण विचार न करतां तेणे पालकने कह्युं के, आजे तें घणुं सारुं काम कर्युं. तारा कहेवाथीज मने ए वातनी खबर पडी. जो तें मने प्रथमथी जाण करी नहोत तो कोण जाणे तेनुं शुं परिणाम आवत ! माटे हवे ते दुर्मतिने तारुं दील चाहे तेम तुं कर, बीजुं कांइपण एमना विषे मने पूछवानी जरुर नथी. तुं जाणे ने ए जाणे. एवी राजानी आज्ञा थतांज ते महा क्रुर बुद्धि पालक मनमां राजी थतो उतावळो दोडीने स्कंदकाचार्यनी पासे आव्यो अने एकदम क्रोधावेशे धुंधवातो तेमना स्थाननी सामे एक लोढानी घाणी (पीलवानुं यंत्र) उभी करी तेमां एक एक साधुने शेरडीनी पेठे स्कंदकाचार्यनी सन्मुख पीलवा लाग्यो. ए महा क्रुर कर्म स्कंदकाचार्यथी सहन न थवाथी तेमणे पालकने कह्युं के, आ कर्म माराथी जोयुं जतुं नथी, माटे पहेलां मने पीली नांख, पछी तारे गमे तेम करजे. आ बाळकोनुं दुःख माराथी सहन थतुं नथी. एवुं सांभळीने घोरकर्म करनार दुर्बुद्धि पालक आचार्यने अतिशय दुःख उत्पन्न करवाने माटे बालक मुनिओनेज तेमनी सामे पीलवा लाग्यो, तोपण ते दृढ प्रणामी मुनिओ जरापण संकोच न पामतां धर्म उपर श्रद्धा राखी शुक्ल ध्यान ध्याता सर्व केवलज्ञान पामी काळ करी मोक्षपद पाम्या. स्कंदकाचार्य ते बालक मुनिओने यंत्रमां पीलातां सन्मुख उभा रही सुबोध देता हता. ए प्रमाणे सर्व मुनिओ खलास थया पछी छेल्ले स्कंदकाचार्यने पीलवानी बारी आवी. तेनो तेमने कांइ पण शोक थयो नहीं. परंतु एमनी सन्मुख बीजा मुनिओने पीलवामां आव्या हता तेनो त्रास तेमणे खमी न शकवाथी क्रोधमां आवी एवुं नियाणुं कर्युं के, ए दंडक राजानो, आ पालक ब्राह्मणनो, एमना कुळोनो तथा एना देशनो मारा तपना प्रभावे हुं नाश करीश. एटलामां ते आचार्यने पण घाणीमां घालीने पीली नाख्या. ए काळ करी अग्निकुमार नामना देव थया.

स्कंदक मुनिने घाणीमां घाली पीलती वखत तेमनो रत्नकंबलनो कटको त्यां रही गयो हतो; ते लोहीमां खरडायाथी तेने एक पक्षिणी पुरुषना हाथनी भ्रांतिए करी उपाडीने पोताना बे पगमां पकडीने आकाश मार्गे लेइ जती हती, ते ज्यां आगल पुरंदरयशा (आचार्यनी बेन) बेठी हती त्यां आगळ अकस्मात् पक्षिणीना पगमांथी नीकळीने आवी पड्यो. पुरंदरयशाए ते कटको ओळख्यो अने जाण्युं के, आ मारा स्कंदक भाइनी विपत्तिनुं कारण छे. तेथी ते पोताना पतिने कहेवा लागी के, हे पापिन्–पापबुद्धि, आ तें केवुं पापकर्म कर्युं? एम कही ए महाशोक करवा लागी. ए वखते शासन देवताए आवीने तेने लइ जइ श्री मुनिसुव्रत स्वामीनी पासे मूकी त्यां वैराग्य पामीने तेणे दीक्षा लीधी.

स्कंदकाचार्य जे अग्निकुमारदेव थया हता तेमणे ज्ञान वडे पूर्वजन्मनी सर्व वात जाणीने करेलुं नियाणुं पूरुं करवा सारु पालक ब्राह्मण तथा कुंभकारकट नगरीना लोक सहित दंडक राजाने बाळी नाख्यो. ते दिवसथी त्यां बधुं शून्य थइ गयुं अने दंडक राजाथी आनुं नाम दंडकवन पड्युं. दंडक राजा मुवा पछी घणो काळ संसाराटवीमां भटकीने घणां दुःख सहन करतो कर्मना योगे आ महारोगी गंधाभीध नामनो पक्षी थयो. हमणां अमारा दर्शने करी एने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं अने अमारा चरण स्पर्शरूप औषधी मळ्याथी एनो रोग जतो रह्यो. ए बधो वृत्तांत सांभळीने ते पक्षी घणो राजी थयो. पछी मुनिओने नमस्कार करी धर्म सांभळीने ते श्रावक थयो. मुनिए तेने जीवघात, मांसभक्षण, रात्रि भोजन विगेरे दुष्कृत्यनुं प्रत्याख्यान (बाधा—पच्चख्खाण) कराव्युं, अने ते बंने मुनिओए रामने कीधुं के, ए तमारो साधर्मिक छे, माटे एनुं प्रतिपालन करो. "साधर्म वात्सल्य सुभ कारक छे," एवुं श्री जिनेंद्र वचन छे. त्यारे रामे एने अमे अमारा भाइ बरोबर गणी एनी सुश्रुखा करीशुं एम कही घणी प्रीति सहित बंने मुनि महाराजने नमस्कार कर्यो. पछी ते मुनिओ आकाश मार्गे उडी गया, अने लक्ष्मण तथा सीता सहित राम त्रणे जणा रत्नजटी विद्याधर राजा तथा बीजा बे देवोए आपेला दीव्य रथमां बेशीने जटायु (गंधाभिध पक्षी) सहित क्रीडा करवा लाग्या.

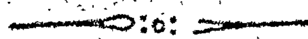
—:o:—

शंबुकनुं सूर्यहास खड्गनी विद्या साधवा सारु दंडकवनमा जवुं--लक्ष्मणे सूर्यहास खडग लेवुं--शंबुकना मस्तकनुं कपावुं विगेरे.



ए समये पाताल लंकामां खरराजानी स्त्री रावणनी बेनने पेटे शंबुक अने सुंद नामना बे पुत्र थएला यौवन अवस्थामां आव्या हता. तेमांनो शंबुक सूर्यहास नामना खड्गनी विद्या साधवा सारु त्यांथी निकळ्यो. ते वखते तेना पिताए तेने वार्यो, तथापि तेनुं कहेवुं न मानतां ते विद्या साधवा सारु दंडकवनमां आवी कौंचरवा नदीना तीरे एक वांसनुं वन जोइने तेमां पेशीने कहेवा लाग्यो के, जे कोइ मने अहींथी कहाडशे तेने हुं मारी नाखीश. एम कहीने ब्रह्मचर्य व्रतनो पाळनारो, ते अल्पाहारी, अंतःकरण जेना निर्मळ थया छे, इंद्रियो जेणे जीती छे, एवो शंबुक एक वडनी डाळी साथे पग बांधीने ऊंधे मस्तके रही बार वर्ष अने छ दिवसे सिद्ध थवावाळी विद्या सूर्यहास खड्ग मळवा सारु साधवानो आरंभ करवा लाग्यो. ते वखतनी तेने वडवागरण नामना पक्षीनी ऊपमा देइए तो तेमां अतिशयोक्ति जेवुं कांइपण नथी. एवी रीते ते शंबुकने वडनी डाळे लटकतो रहेतां बार वर्ष ने चार दिवस थया त्यारे सूर्यहास खड्ग मळनारी विद्या सिद्ध थवाना समये एक म्यान सहित, सूर्यना जेवी कान्तिवाळो, अने जेनी चारे तरफ सुगंधी व्यापी रही छे, एवो ते दीव्य खड्ग त्यां आव्यो. ए अरसामां क्रीडा करतो करतो लक्ष्मण ते वांसना वनमां आव्यो. त्यां तेणे सूर्यना जेवा तेजवाळो ते सूर्यहास नामनो खड्ग दीठो. तेथी ते लेइ तेने म्यानमांथी कहाडीने जोवा लाग्यो, तो ते अति अपूर्व दीठामां आव्यो. तेथी तेने कौतुक लाग्युं के, आवा विकट जंगलमां आ महा मनोहर शस्त्र क्यांथी! कह्युं छे के, "अपूर्व शस्त्र जोइने क्षत्रियोने अति आश्चर्य थाय छे." एम विचारी आमतेम जोयुं, तो त्यां कोइपण दीठामां आव्युं नहीं, तेथी तेनी धारनी परीक्षा करवा सारु ते खड्गे करी पासेनी वंशजाळने कमलनी नालनी पेठे तेणे कापी नाखी, तेथी तेमां उंधे मस्तके लटकेला शंबुकनुं माथुं पण तेनी साथे कपाइने जमीन उपर पडयुं ते लक्ष्मणे दीठुं. त्यारे तेनी पासे आवी जोवा लाग्यो, तो तेनुं धड ऊंचे वडनी शाखामां लटकतुं मालम पडयुं. जेथी ते महा शोक करतो पोताना मन साथे कहेवा लाग्यो के, आ निरपराधी तथा हथियार रहित कोइक पुरुपने में नाहक मार्यो, ए कर्मना योगे मने धिःक्कार छे. एवी रीते पोतानी निंदा करी लक्ष्मणे रामनी पासे जइ सर्व बनाव

तेमने कही संभळाव्यो. तेमज ते खड्ग पण तेमने बताव्यो. त्यारे रामे तेने कीधुं के, आ सूर्यहास खड्ग छे. एनी साधना करनाराने तें मार्यो जणाय छे, पण एनो कोइ उत्तर साधक आटलामांज होवो जोइए.



चंद्रनखाए मोहीत थइ धारण करेलुं नाग कन्यानुं रूप—तेणीए राम लक्ष्मणने छळवा करेला उपाय—खरादिक विद्याधरो साथे थएलुं लक्ष्मणनुं युद्ध.

पणे रावणनी बेन (शंबुकनी मा) चंद्रनखाए विद्या साधननी अवधी पूरी थवा आव्याथी जाण्युं के, मारा पुत्रने सूर्यहास खड्ग आज मळशे, तेथी ते उमंगभेर पूजा विगेरेनी सामग्री लेइने उतावळी उतावळी ते वनमां आवी. ज्यां ऊंधे मस्तके विद्या साधतो हतो ते वंशजाळ तरफ दोडती गइ तो त्यां पोताना पुत्रनुं कुंडले करी शोभायमान कापेलुं माथुं तेना जोवामां आव्युं तेथी ते महा शोकातुर थइ रडती रडती वारंवार विलाप करती बोलवा लागी के, हे वत्स शंबुक, तुं क्यां छे? हुं तने क्यां जोऊं. एटलामां त्यां जमीन उपर पडेलां लक्ष्मणनां पगलां जोइने ते बोली के, जेणे मारा पुत्रने मार्यो तेनांज आ पगलां छे. एम जाणीने ते *पगलां लेइने तेनी शोध करवा सारु ते त्यांथी चाली नीकळी. केटलेक दूर गइ एटले राम, लक्ष्मण तथा सीताने एक झाडनी नीचे बेठेला तेणीए जोया, तेज वखत रामनुं स्वरूप जोइने तेने काम विकार उपन्यो. कह्युं छे के, "कामिनी स्त्रीओने शोकना समयमां पण कामनो आवेश थाय छे." तेथी ते एक तरुण नागकन्यानुं रूप धारण करीने कामे करी पीडाती छतां कांपती कांपती रामनी पासे आवी. तेने जोइने राम पूछवा लाग्या के, हे भद्रे, यमसदन (काळना घर जेवा) आ दंडक नामना महा भयंकर वनमां तुं शा सारु आवी छे? त्यारे तेणे जवाब दीधो के, हुं अवंतीना राजानी पुत्री छुं. एक दिवस रात्रे मारा शयनगृहमां हुं सूती छतां एक विद्याधर आवीने मने हरण करी आ वनमां लेइ आव्यो. तेने हाथमां मोटुं खड्ग धारण करेला कोइ बीजा पुरुषे जोइ कह्युं के, चिल्लपक्षी जेम हारलतानुं हरण करे छे, तेम आ स्त्रीरत्ननुं हरण करीने हे पापी! तेने तुं क्यां लइ जाय छे? तारुं मोत आणनारो आ हुं सामेज उभो छुं, तेम छतां तुं आगल केम जइ शकीश? एवुं तेनुं बोलवुं सांभळीने मारुं

* पगलानुं माप लइ पगी लोको ते कोनां पगलां छे अने ते क्यां सुधी, कये ठेकाणे गयो ते शोधी काढे छे.



चंद्रनखा
राम.
लक्ष्मण.
सीता.

सीता
सीताहरण.
रावण.
जटायु.

हरण करी लावनार विद्याधर मने अहीं मूकीने पेला पुरुपनी साथे लडवा लाग्या. परस्पर तेओए जेम वनना हाथीओ पोतपोतामां लडीने अंते प्राण गमावे, तेम ते बन्ने जणा लडतां मरण पाम्या; अने हुं आ जंगलमां फरतां फरतां कोइ पुन्यानुयोगे तडकामां छायावृक्षनी पेठे तमारा आशरे आवी छुं. हुं मोटा कुळमां उपनी छुं. माटे आप मने अंगीकार करो; एवी मारी इच्छा छे. कह्युं छे के, "महा पुरुषो पासे अर्थी जनोनी प्रार्थना व्यर्थ जती नथी." तेनुं एवुं बोलवुं सांभळीने रामे विचार कर्यो के, आ कोई मायावी नटना जेवो वेश धारण करनारी कूटनाटक उत्पन्न करीने अमने ठगवा सारु अहीं आवी छे. एम जाणीने राम तथा लक्ष्मणे एक बीजानी सामे जोयुं. पछी रामचंद्रे कह्युं के, मारे तो स्त्री छे, आ लक्ष्मणने स्त्री नथी, माटे तुं तेनी पासे जा, त्यारे ते लक्ष्मणनी प्रार्थना करवा लागी. एटले तेणे कीधुं के, प्रथम तुं मारा वडील रामनी पासे गइ तेथी तेनी पेठे तुं पण मारे पूज्य ठरी माटे अंगीकार करवानी वात मारी पासे बोलीश नहीं. ए प्रमाणे बन्ने ठेकाणे याचना करता पण तेनी आशा सफळ थइ नहीं, तेथी ते क्रोधायमान थइ पोताना पुत्रने याद करीने खरादिक विद्याधरो पासे गइ अने लक्ष्मणे शंबुकने मार्या संबंधी सर्व वृत्तांत तेओने कह्यो. ते सांभळीने चौद हजार विद्याधरो सहित खरादिक त्यां (दंडक वनमां) आवी हाथी जेम पर्वतने उपद्रव करे, तेम ते रामने दुःख देवा लाग्या. ते जोइने लक्ष्मण रामने कहेवा लाग्यो के, हुं पासे छतां तमारे युद्ध करवानुं कांइ कारण नथी. हुं पोते एमनो संहार करीश, त्यारे रामे तेने कह्युं के, जा, एमनी साथे तुं युद्ध कर अने कदाच संकट पडे तो ते वखते मने बोलाववा सारु एक मोटो सिंहनाद करजे. एवं रामनुं बोलवुं मान्य करी, तथा तेनी आज्ञा लेइने, धनुष्य बाण सज्ज करी, गरुड जेम सर्पादिकोने मारे ते प्रमाणे लक्ष्मणे खरादिकोने मारवानो आरंभ कर्यो.



रावणनुं दंडक वनमां जवुं—तेणे करेलो सिंहनाद—रामनुं लक्ष्मणनी मदद जवुं.

लायक दिवसथी राम पोताना तथा पोताना नाना भाइ लक्ष्मणना बळे करी या थयो थको विलास करे छे, तेनी स्त्री सीता रूप लावण्यनी केवळ सीमा छे. ए जेवी कोइ देवी पण हशे नहीं! नागकन्या एना पागे शा हीसाबमां! एटली ए जेवी मनुष्यमां ते क्यांथीज होय? एनुं रूप जाणे सुरासुरनी स्त्रीओना रूपने ति रस्कारज करतुं होय नहीं! वाणीथी एनुं वर्णन थइ शके नहीं. आ जगतमां ए अपूर्व रत्न छे, ते तने योग्य छे, तारा घरमां एनुं कोइ स्त्री रत्न नथी, माटे तुं हरण करी लइ आव. पोतानी बेननुं एवुं बोलवुं सांभळीने तत्काळ रावण पोता पुष्पक नामना विमानमां बेसीने दंडकवनमां आव्यो. पण रामना तेजने लीधे जेम आंखना तेजथी दूर रहे तेम तेमना आश्रम नजीक आवी शक्यो नहीं. राम भय, अने सीतानुं हरण, ए कार्य जेम एक कोरे तट अने बीजी कोरे तेनी पेठे रावणने थयुं. त्यारे तेणे अवलोकनी नामनी विद्यानुं स्म कर्युं. एटले ते रावणनी सामे आवी हाथ जोडी उभी रही. तेने रावणे क के, आ सीतानुं हरण करवामां तुं मने सहायता कर. त्यारे ते कहेवा लागी मोटा नागना माथामांनुं रत्न लेवाने समर्थ थवाय, पण रामनी सामे (समक्ष सीतानुं हरण करवाने देवता पण असमर्थ छे. परंतु एक उपाय छे, ते करवाथी ता मनोरथ पूर्ण थशे. ते ए के, खरादिक विद्याधरोनी साथे युद्ध करवाने लक्ष्मण गये छे तेनो रामने बोलाववानो सिंहनादनो संकेत छे. तेथी तुं त्यां जइ सिंहनाद क एटले राम त्यां जशे, पाछळथी तुं सीताने लइने चालतो थजे. एवुं तेनुं कहेवुं सां भळीने रावणे ज्यां लक्ष्मण हतो त्यां जइ बराबर लक्ष्मणना जेवो सिंहन कर्यो. रामे ते सांभळ्यो तोपण ते मनमां विचार करवा लाग्यो के, आ ज हाथी मल्लनी पेठे लक्ष्मण जेवो बीजो कोइ प्रतिमल्ल नथी ते एटला वधा संक आवी न पडे, तथापि संकेत प्रमाणे सिंहनाद तो थाय छे. एवी रीते राम वितर्क करे छे, ए वखते सीता लक्ष्मण उपर दया आणीने राम प्रत्ये कहेवा ल के, हे आर्य, वत्स लक्ष्मण हमणा संकटमां पड्यो जणाय छे. तेम छतां हजी केम विलंब करी रह्या छो? जलदी जइने तेनुं रक्षण करो. इत्यादिक तेनुं वो सांभळीने लक्ष्मणनी पासे जवा निकळतां रामने अपशकुनादिक थया, परंत गणकारतां ते त्वराए दोडीने तेनी (लक्ष्मणनी) पासे गया.

—:०:—

रावणे करेलुं सीतानुं हरण-जटायुनी पांखोनुं कापवुं-रत्नजटीनी विद्याओ हरण करवो विगेरे.



पछी रावण विमानमांथी नीचे उतरीने सीताने विमानमां बेसाडवानी युक्ति ा लाग्यो. ते वखते सीता रुदन करवा लागी. तेना विलाप सांभळतां पासेथी शब्द थयो के, हे स्वामिनी, हे जानकी, तमे भय पामशो नहीं. एम कहीने, हे ाचर, उभो रहे, उभो रहे, एवी रीते क्रोधे करी बोलतां दूरथी जटायुए रावण धसी आवी खेडूत जेम हळे करी जमीन खणी नाखे तेम तेणे पोतानी चांचवडे ानी छाती वींखी नाखी. त्यारे रावणे तेना उपर क्रोधायमान थइ पोताना करी तेनी पांखो कापी नाखी. तेथी ते पृथ्वीपर पड्यो. एटले रावण निःशं- सीताने पोताना पुष्पक विमानमां बेसाडीने तथा पोतानो मनोरथ पूर्ण थयो ाणीने आकाश मार्गे चालतो थयो. ते वखते सीता बोलवा लागी के, हे राम, , हे वत्स लक्ष्मण, हे तात जनक, हे भ्रात, भामंडळ, कागडो जेम बली हरण करे, तेम तमारी सीताने आ हरण करी लेइ जाय छे. एम कहेती अति रे ते रडवा लागी. एटलामां तेओ समुद्र उपर आवी पहोंचतां अर्कजटि विद्याधरना पुत्र रत्नजटीए सीतानुं रुदन सांभळ्युं. तेथी ते पोताना मनमां करवा लाग्यो के, आ स्वर रामनी स्त्री सीतानो छे, ए उपरथी एम मालम के, राम लक्ष्मणने ठगीने रावणे एनुं हरण कर्युं छे. माटे मारे भामंडळ राजा पकार करवो जोइए. एम विचारी हाथमां खड्ग लेइ ते रावण उपर तेने जोइ रावण हस्यो, अने पोतानी विद्याना सामर्थ्ये करी तेनी सर्व रण करी लीधी. ते वखत पांखो कपायाथी पक्षी जेम नीचे पडी जाय, तेम द्या गयाथी ते जमीन उपर पड्यो. त्यांथी ते (रत्नजटी) कंबुद्वीपना कंबु र्वत उपर जइ रह्यो.



रावणे सीताने लंकामां लइ जइ देवरमण उद्यानमां राखवी विगेरे.

पतिनी विमानमां बेसाडी सीताने लेइ जतां रस्तामां समुद्र उपर रावण आव्यो कोइ ? करी पीडाणो थको ते सीताने कहेवा लाग्यो के, सर्व विद्याधरोनो (मारुं, तेनी तुं स्त्री थइ, तेम छतां शा सारु रडे छे ! आ आनंदने ठेकाणे शोक सहितपिए मंदभाग्य रामनी साथे तारी योजना करी, ते योग्य कर्युं नहीं.

तारी योजना तो मारी साथे करवी जोइती हती. ते दैवयोगे थयेथी हवे हे देवी, तुं मने पति मान. एवी सेवाए करी हुं तारो दास थयो एम समज. वली हुं तारे आधीन थयेथी सर्व विद्याधर तारा दास थशे, तेमज तेमनी स्त्रीओ तारी दासीओ थइ रहेशे. ए प्रमाणे रावणनुं बोलवुं सांभलीने सीता नीचुं मुख करीने अति भक्ति सहित रामनुं नाम जपवा लागी. एटलामां कामे करी अंध थएला रावणे सीताना पग उपर माथुं मूक्युं. ते परपुरुषनो स्पर्श थवाना हेतुथी सीताए खशेडी दूर कर्युं, अने क्रोध करी बोली के, हे रावण, तुं महा निर्लज्ज छे. आ परस्त्रीनी कामनाए करी तने जलदीज मृत्यु प्राप्त थशे. एवो तेणे रावणने शाप दीधो. एटलामां सारणादि मंत्रीओ तथा बीजा राक्षसो तेनी सामे आव्या. तेमनी साथे ते अति दुर्धर लंकामां गयो. ते वखते सीताए एवो नियम लीधो के, राम तथा लक्ष्मणनो कुशल वृत्तांत ज्यांसुधी मारा सांभलवामां आवशे नहीं त्यांसुधी हुं जमनार नथी. रावण एम जाणीने लंकानी पूर्व दिशामांना देवरमण नामना उद्यानमां एक रक्त अशोक नामना झाडनी नीचे चित्रजटा अने बीजा राक्षसो सहित सीताने बेसाडीने राजी थतो पोताने घेर गयो.

चोपाइ.

रसिक रच्युं आ राम चरित्र, पूरण पंचम सर्ग पवित्र;
लक्ष्मण सीता राम सहित, वन दुःख सह्यं परस्पर मित. १
विष्णु कर शंबुक कुमार, सूर्यहास खड्गे संहार;
रामचंद्रनुं निरखी रुप, सुर्पनखा डुबी स्मर कुप. २
अचला पामीने अपमान, उश्केर्यो रावण अज्ञान;
खरादिक खग करी चढाइ, लक्ष्मण साथे लडे लडाइ. ३
सिंहनाद कपटीए करी, दशकंधे सीताने हरी;
लंकामां लावीने धरी, इत्यादिक वातो उच्चरी. ४
कलिकाल सर्वज्ञ सुरीश, अधिक कर्या जैनी अवनीश;
हेमचंद्र कृत्य ग्रंथ गवाय, सुणतां कर्ण कृतारथ थाय. ५

इत्याचार्यश्रीहेमचंद्रविरचिते त्रिषष्ठिशिलाका पुरुष
चरित्राधिकारे सप्तमेपर्वणि सीताहरणो
नाम पंचम सर्गः ५

अथ श्री षष्ठ सर्ग प्रारंभः

रामनुं पाछुं आववुं अने सीतानी शोधमां फरवुं.

अहीं दंडकवनमां ज्यां लक्ष्मण खरादिक खगोनी साथे युद्ध करतो हतो त्यां आगळ रामचंद्र गया. त्यारे तेने लक्ष्मणे कह्युं के, हे आर्य, सीताने वनमां एकली मूकीने आपने अहीं आववानुं शुं कारण हतुं? त्यारे रामचंद्र बोल्या के, तारो सिंहनाद सांभळीने हुं अहीं आव्यो छुं. तेने लक्ष्मणे कह्युं के, में सिंहनाद कर्यो नथी, तेम छतां तमे ते सांभळ्यो; तेथी आपणने कोइए ठग्या होय एम जणाय छे. वळी हुं धारुं छुं के, सीतानुं हरण करवा सारु कोइए आ उपाय योज्यो छे, माटे सीतानुं रक्षण करवा माटे आप अहींथी तेनी पासे जलदी जाओ. पाछळथी हुं पण आ शत्रुओने मारीने जेम बनशे तेम ताकीदथी आवुं छुं. एवुं लक्ष्मणनुं बोलवुं सांभळीने रामचंद्र त्यांथी पाछा आवी जुवे छे तो त्यां जानकी जोवामां आवी नहीं, तेथी ते मूर्छीत थइने पृथ्वीपर पड्या. केटलोक वखत गया पछी ते सावध थइ उठीने जुए छे तो मोतनी अणीपर आवेलो जटायु तेमनी नजरे पड्यो. तेने जोइने ते मनमां विचार करवा लाग्या के, कोइक पुरुषे छळे करी सीतानुं हरण कर्युं; तेनो अपहार करवा सारु क्रोधमां आवीने आ तेने आडो आव्याथी तेणे आने मार्यो होय एम जणाय छे, माटे मारे एना उपर प्रत्युपकार करवो जोइए. एवो विचार करीने ते जटायु पक्षी श्रावकने परलोक जतां रामचंद्रे भातारुप नमस्कार (नवकार) मंत्र सभळाव्यो. पछी ते जटायु मरीने माहेंद्र देवलोकमां एक देव थयो. रामचंद्र सीताने शोधवा सारु वनमां फरवा लाग्या.

विराधनुं लक्ष्मणने मळवुं--लक्ष्मणे करेलो खरादिक राजाओनो नाश--लक्ष्मणनुं रामने मळवुं--

रणांगणमां महा शूरवीर लक्ष्मणनी साथे खर विद्याधर युद्ध करतो हतो छतां तेने पाछळ करीने तेनो नानो भाइ त्रिशिरा रथमां बेसीने लक्ष्मणनी साथे युद्ध करवा सारु तेना सामे आव्यो. तेने एक क्षणवारमां लक्ष्मणे मारी नाख्यो. ते वखते पाताललंकाना माजी राजा चंद्रोदरनो पुत्र विराध पोताना सैन्य सहित त्यां आवी लक्ष्मणने नमस्कार करी, हाथ जोडी कहेवा लाग्यो के, हुं तमारा शत्रुनो शत्रु, अने

तमारो भक्त छुं. मारा पिता चंद्रोदरने राज्य उपरथी उठाडी मुकीने रावणे आ पोताना सेनानीने पाताललंकानुं राज्य आप्युं छे, तेथी ते अमारा शत्रु छे. यद्यपि आ शत्रुओनो नाश करवाने जेम अंधकारनो नाश करवा माटे एकलो सूर्यज समर्थ छे, तेम तमे एकलाज समर्थ छो; तथापि हुं तमारो दास होवाथी एमनी साथे युद्ध करवानी मने आज्ञा आपो. ते समये हसीने लक्ष्मण तेने कहेवा लाग्यो के, हे विराध, आ सर्व शत्रुओने हमणांज में मार्या एम तुं जाण. कह्युं छे के, " पराक्रमी पुरुषने बीजानी सहायता लेवी ए लज्जा भरेलुं कहेवाय छे." माटे तुं हमणां उभो रहे. आजथी मारो मोटो भाइ राम तारो स्वामी छे, तेमज तुं पाताललंकाना राज्य उपर बेठो एम समज.

पोतानो शत्रु विराध, लक्ष्मणनी पासे आव्यो छे, एम जाणीने अति क्रोधमां आवी खर विद्याधर पोतानुं धनुष्य सज्ज करीने आगळ आवी लक्ष्मणने कहेवा लाग्यो के, हे विश्वासघातक, मारा शंबुक नामना पुत्रने मारनार तुंज के ? हवे तारुं रक्षण आ वापडो विराध करनार छे के ? त्यारे तेने लक्ष्मण कहेवा लाग्यो के तारा पुत्रनी उत्कंठाए करी तारा भाइ त्रिशिराने में तेनी पाछळ मोकली दीधो, तेमज तेनी पेठे जो तारे पण तेनी पाछळ जवानी जीज्ञासा घणी होय तो तने पण तेनी पासे पोहोंचाडवाने हुं तैयार छुं. जेम कुंथुवा प्रमुख बारीक जीव सहज पग नीचे आव्याथी कचराइ जाय, तेम तारो पुत्र माराथी मरायो खरो, परंतु एथी मोटो अपराध कर्यो कहेवाय नहीं. हवे जो तुं पोताने शूरवीर मानतो होय, तो कांइ चमत्कार बताव जोउं ! जो हुं हमणा वनवासमां छुं, तोपण तारो भक्ष आपीने हुं यमराजाने राजी करीश, एवा लक्ष्मणना बोलो सांभळीने हाथी जेम पर्वतना शीखरपर प्रहार करे तेम खर खग लक्ष्मणने मारवा मंडी गयो. तेनी सामे लक्ष्मणे पण सूर्य जेम किर्णोए करी आकाशने भरी नांखे छे, तेम बाणोवडे ते वनाकाश भरी मुकयुं. एवी रीते लक्ष्मण खर विद्याधरनुं परस्पर युद्ध थतुं हतुं, ते वखते आकाश वाणी थइ के, " विष्णु (वासुदेव–लक्ष्मण)नी शक्ति सहन करवाने प्रतिविष्णु पण समर्थ थाय नहीं, तेम छतां आ खर राक्षस हजी सुधी तेनी शक्ति केम सहन करी शके छे ? ते सांभळीने हवे एने वधारे वखत रहेवा देवो नहीं, एम निश्चय करी एक हथीआरे करी क्षणवारमां लक्ष्मणे खरनुं माथुं कापी नाख्युं. एटले तेनो भाइ दूषण सैन्य सहित तेनी साथे युद्ध करवा आव्यो. ते जेम वननी अग्निमा हाथी पोताना परिवार सहित बळी जाय, तेम ते पोताना सैन्य सहित नाश पाम्यो एवी रीते वधा खलास थइ गया पछी विराधने साथे लेइने लक्ष्मण त्यांथी पाछो फरयो. तेणे आवता दूरथी एक झाड नीचे सीता विना एकला रामने बेठेला दीठा, तेथी ते घणो दीलगीर थइ

शोक करतो रामचंद्रनी पासे आव्यो. परंतु सीताना विरहथी पीडित थइ बेठेला रामे तेना सामु जोयुं नहीं अने आकाश तरफ नजर करी बोलवा लाग्या केः—

—:०:—

रामे सीता माटे करेलो विलाप-विराधे सीतानी शोधमां सुभटोनुं मोकलवुं-तेमनुं नासीपास थइ पाछा आववुं.

आ आखुं वन हुं हुंढी वळ्यो तोपण मन जानकी जडी नहीं. हे वनदेवता ! तमे क्यांय पण तेने जोइ होय तो कहो ! भूतो तथा भयंकर जानवरोए करी भरेला वनमां जानकी एकली मुकीने हुं लक्ष्मणनी पासे गयो. त्यां त्यां हजारा राक्षस योद्धाओनी सामे तेने एकलाने लडतो मुकीने त्यांथी पाछो फरी आवी हुं जोउं छुं तो ते मारी दृष्टीए पडी नहीं. अरे ! एनुं शुं थयुं हशे ! अने ए क्यां हशे ! एने एकली मुकीने जतां मारी बुद्धि क्यांय गइ हशे ! हा सीता ! आ निर्जन वनमां में तने एकली केम मुकी ? हा वत्स लक्ष्मण ! तने रणना संकटमां में केम नाख्यो ? एवी रीते बोलतां बोलतां रामचंद्रने मूर्छा आव्याथी ते जमीन उपर ढळी पड्या. रामने आवो शोक थतो जोइने जाणे पक्षीओ पण मोटा शब्दोवडे रडता होयनी ! तेमज ते घधा रामचंद्रनी तरफ शोकमय चेहेरे जोता होयनी ! एवो बनाव बन्यो ए वखते लक्ष्मण तेनी पासे आवी कहेवा लाग्यो के, हे आर्य, हे आर्य, आ शुं ! आ हुं तमारो आज्ञांकित लक्ष्मण भाइ शत्रुओने जीती आवीने तमारा सन्मुख उभो छुं. एवी अमृत सरखी मीठी वाणी सांभळीने रामे जरा सावध थइ लक्ष्मणने आलिंगन कर्युं, एटले लक्ष्मण आंखोमां पाणी आणीने बोल्यो के, "थएला सिंहनादनुं कारण कोइ कपटी पुरुषनो कृत्य छे, अने तेणेज जानकीने हरण करी छे. हवे तेना प्राण सहित तेनो प्राण कहाडीने जलदीथी सीताने पाछी तेडी लावुं छुं. तमे लगारे चिंता करो नहीं, तेने शोधवाना उपायो करवा जोइए. आ विराधने एना पिताना पाताललंकाना राज्य उपर बेसाडवो एवी खरखगनी साथे थता संग्राममां में प्रतिज्ञा करी छे, माटे ते कार्य पण सिद्ध करवुं छे." ए प्रमाणे लक्ष्मणे रामचंद्रने कह्युं ते वखते विराधे पोताना विद्याधर सुभटोने सीतानी शोध करवा सारु त्यांथी रवाने कर्या, अने महा शोकसागरमां गरकाव थएला राम तथा लक्ष्मण क्रोध करी पोताना होठ चावतां मोटा मोटा श्वासोश्वास लेता थका त्यांज रह्या. विराधे मोकलेला विद्याधरो सीतानी घणी शोध करता तेनो क्यांय पण पत्तो न मळवाथी पाछा आवी नीचुं मुख करी रामचंद्रने नमस्कार करी बेठा. राम तेओने उतरी गएला मुखे शरमींदा थइ बेठेला जोइने कहेवा लाग्या के, स्वामीना कार्य सारु पो-

तानी शक्ति प्रमाणे महेनत करतां छतां ते कार्यनी सिद्धि न थयाथी सेवक उपर कांइ पण दोष नथी. हे सुभटो! तमे घणी महेनत करी छतां सीतानी भाळ मळी नहीं तेमां तमारो शो दोष छे? दैव फरयाथी कोइनुं कांइ चालतुं नथी. तमे शुं! ने बीजा शुं!

—:o:—

राम लक्ष्मणनुं पाताललंकामां जवुं–विराधने पातालंकानुं राज्य आपवुं.

एवुं रामनुं बोलवुं सांभळीने विराध तेमनी पासे आवी नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, हे रामचंद्र, तमे खेद करो नहीं कह्युं छे के, "चिंता थकी रहित रहेवुं ते लक्ष्मी मळवानुं कारण छे." हुं तमारो दास छुं. मारी पातालंकामां रहेवा सारु आप आवो. त्यां आववाथी सीतानो शोध सहज मळी शकशे. विराधनुं कहेवुं मान्य करीने रामचंद्र सैन्य सहित लक्ष्मणने साथे लेइ विराधनी साथे तेनी पाताल-लंका पासे आव्या. एटले खरनो पुत्र सुंद तेमनी साथे युद्ध करवा सारु सैन्य सजीने पुर बहार आवी तेना पूर्वना शत्रु विराधनी सन्मुख उभो रह्यो. परस्पर तेमनुं युद्ध चालतां चंद्रनखाना (सुर्पनखाना) कहेवाथी सुंद त्यांथी नाशीने रावणने शरण रहेवा सारु लंकामां गयो. पछी राम तथा लक्ष्मण वीगेरे विराधने लेइने पातालंकामां गया. त्यां राम तेने राज्यगादीए बेसाडी, पोते खरराजाना महेलमां रहेवा लाग्या, अने विराधराजा युवराजनी पेठे सुंदना घरमां रह्यो.

—o-o-:-o-o—

साहसगति अने सुग्रीव वच्चे थएलुं युद्ध–सुग्रीवनो पराजय.

ज्योतिषपुर नगरना विद्याधरराजा ज्वलनसिंहनी तारा नामनी कन्या उपर चक्रांक विद्याधरना पुत्र साहसगतिए आशक्त थवाथी तेनी मांगणी करेली पण तेने ते कन्या न आपतां तेना पिताए किस्किधा नगरीना राजा सुग्रीव (वालीराजाना भाइ)नी साथे ताराने परणावी हती, तेथी ते साहस गति ताराने हरेक प्रकारे मेळ-ववानी इच्छाथी हिमवान पर्वतनी गुफामां विद्या साधवा सारु गयो हतो, ते केटलेक काळे प्रतारणी विद्या साधीने तेना योगवडे सुग्रीवनुं रूप धारण करीने ताराने मेळववानो लाग शोधतो हतो. ए विद्याना योगे ते जाणे बीजो सूर्यज होयनी एवो दीपवा लाग्यो. कोइ एक वखते सुग्रीव राजा क्रीडा करवा सारु उद्यानमां गयो हतो, ते लाग जोइने सुग्रीवनुं रूप लेइ फरनारो साहसगति किस्किधा नगरीमां जइ

तेना अंतःपुरमा जवा लाग्यो. एटलामां साचो सुग्रीव उद्यानमांथी पाछो फरी दरवाजा पासे आव्यो तेने द्वारपाळे अंदर आवतो अटकावी कह्युं के, सुग्रीव राजा हमणांज अंदर गयो. तुं कोण छे? ए उपरथी साचा सुग्रीवे जाण्युं के, मारुं रूप धारण करी कोइ कपटी सुग्रीव थइ आवी घुसेलो जणाय छे, एम धारी ते अंतःपुरनुं रक्षण करवा सारु ते दरवाजा उपरज उभो रह्यो. ए वातनी वालीराजाना पुत्रने खवर पडतांज अंतःपुरमां जइने जेम नदीना वेगने पर्वत अटकावे तेम तेणे ते कपटी जार सुग्रीवने रोक्यो. पछी ए राज्यनुं चौद अक्षोहिणी सैन्य किस्किंधा नगरीमां मळ्युं. साचा सुग्रीवनी तपास करवा मांडी, परंतु ए वेमांथी खरो कयो? अने खोटो कयो? ते नक्की थइ शक्युं नहीं. सैन्यमां ए वातनो मतभेद थतां अर्धुं सैन्य एक तरफ अने अने अर्धुं बीजी तरफ थवाथी ते बंनेनी वच्चे मांहोमांहे दारुण युद्ध थयुं. घोडेस्वारनी सामे घोडेस्वार, हाथीनी सामे हाथी, रथनी सामे रथ, अने पाळानी सामे पाळो, एम चतुरंग सैन्यमां परस्पर लडाइ चाली. ते वखते प्रौढप्रिय समागमे करी जेम मुग्धा नायका कंपायमान थाय, तेम पृथ्वी कंपवा लागी. साचो सुग्रीव क्रोधमां आवी कहेवा लाग्यो के, पारका घरमां चोरनी पेठे पेसनारा, हे कपटी! मारी सामे आव. शुं मों संताडी उभो छे? एम कहीने तेने पोतानी साथे लडाइ करवा सारु पासे बोलाव्यो. त्यारे ते जार सुग्रीव मातेला हाथीनी पेठे गर्जना करतो तेनी सामे आवी उभो रह्यो. पछी ते बेउ मांहोमांहे लडवा लाग्या. ते जाणे यमना भाइनी पेठे त्रणे जगतने दुःख देवा लाग्या. लडवामां ते बंने कुशळ हता, तेथी तेओ एक बीजाना हथीआरो सुका वासनी पेठे तोडवा लाग्या. पाडानी लडाइमां जेम झाडना कटके कटके उडी जाय, तेम तेओनी लडाइमां हथीआरोना कटका थइने उड्या, तेथी आकाशमां रहेली विद्याधरोनी स्त्रीओ अति भय पामवा लागी. ज्यारे तेओना बधा हथीआरो नाश पाम्या, त्यारे तेओ क्रोधायमान थइने चालनारा पर्वतनी पेठे मल्लयुद्ध करवा लाग्या. घडीकमां आकाशे उडे, तो घडीकमां जमीन उपर लोटे. एवा ते बंने शूरवीरो चूडामणी कूकडानी पेठे मांहोमांहे जीतवा सारु एक बीजाथी दूर थइने वेलनी पेठे उभा रहे, फरी बाथ भीडीने लडवा मंडी जाय, पण कोइ कोइने जीते नहीं. त्यारे साचो सुग्रीव पोतानी मदद करवा सारु हनुमानने बोलावीने फरी खोटा जार सुग्रीवनी साथे लडवा लाग्यो. परंतु साचा जूठानो भेद मालम न पडवाथी हनुमान कोइनी पण मददे लडाइमां न उतरतां बीजाओनी माफक जोतोज उभो रह्यो. एटलामां खोटा सुग्रीवे साचा सुग्रीवने कुटी पाड्यो, तेथी ते लाचार थइने मनमां चिंता करतो नगरनी वहार जइ रह्यो, अने खोटो जार सुग्रीव बीकनो मार्यो पोताने ठकाणे गयो. वालीना पुत्रे तेने अटकाव्याथी ते अंतःपुरनी अंदर जइ शक्यो नहीं.

देवरमणउद्यान.
मंदोद
रावण.
सीता.
हनुमान.
लंका.

डाए पीडाती थकी मंदोदरी राणी तेज वखते देवरमणोद्यानमां सीतानी पासे जइ तेने कहेवा लागी.

——:o:——

मंदोदरीए सीतानी याचना करवी–तेनो सीताए करेलो तिरस्कार.

मंदोदरीः–हे सीता, हुं रावणनी स्त्री मंदोदरी छुं. आजथी तारी दासी थवानी इच्छा करी हुं तने बोलाववा आवी छुं, माटे मारी साथे आवीने तुं रावणनी सेवा कर. तुं धन्य छे, केमके मारो पति रात्र दिवस तारी सेवा करवानी इच्छा करे छे. रावण तारो पति थएथी भूचर, तपस्वी तथा पगे चालनारो राम तने गमशेज नहीं, तेमज तेने शुं करीश?

(एवुं मंदोदरीनुं बोलवुं सांभळीने सीता क्रोधयुक्त थइ थकी तेने कहेवा लागी.)

सीताः—अरे! सिंह क्यां! ने कोलो क्यां! गरुड क्यां! ने कागडो क्यां! तेमज तारो पति रावण क्यां! ने मारो पति राम क्यां! हे मंदोदरी, तारो पति पापिष्ट जे रावण, अने तेनी दुष्ट स्त्री जे तुं, ए बन्नेनुं दंपतीत्व (स्त्री पुरुषपणुं) योग्य छे; केमके तारो पति परस्त्रीलंपट छतां तुं तेनुं कुटणपणुं करवा निकळी छुं. माटे तारुं मुख पण जोवा योग्य नथी; तो पछी मळवुं तो दूरज रह्युं, हे *हले! मारी नजर सामे उभी रहेवुं तने योग्य नथी. हवे अहींथी जलदी जती रहे.

(आटलुं सीता बोली एटलामां तो त्यां आगळ आवी रावण बोलवा लाग्यो.)

—∞•:•∞—

रावणनुं आववुं अने सीताने कहेवुं–सीताए रावणनो तिरस्कार करवो विगेरे.

रावणः—हे सीता, तुं शा सारु कोपायमान थइ छुं. आ मंदोदरी तारी दासी छे, तेमज हुं पण तारो दास छुं. हे देवी, हवे मारा उपर कृपादृष्टी कर. हे जानकी, मारा सामे तुं नजरथी पण जोती नथी के?

* नाटकमां नीच स्त्रीने बोलाववानी वखते संस्कृत भाषामां "हले" शब्द वापरवामां आवे छे.

(एवुं रावणनुं बोलवुं सांभळतांज सीता पोतानुं मुख फेरावी बेसीने तेना प्रत्ये बोली.)

सीताः—हे पापी, रामनी स्त्री जे हुं, तेना उपर तें कुदृष्टि कर्याथी, हुं तारा उपर कालदृष्टिए जोउं छुं. अप्रार्थितनी प्रार्थना करनारो जे तुं, तेनी आ नष्ट आशाने धिःकार छे. अरे! दुराचरणी विचार कर के, शत्रुओनो नाश करनारो जे मारो पति राम, ते जीवतो छतां तुं केम जीवतो रहीश?

ए प्रमाणे जानकीए रावणनो वारंवार तिरस्कार कर्यो तोपण ते फरी फरी तेमज बोलवा लाग्यो, माटे तेने धिःकार छे. कह्युं छे के, "कामावस्था महा बळवान छे."

ए वखते दुःख पामती सीतानी सामे जोवाइ नहीं शकवाने लीधेज जाणे पश्चिम क्षार समुद्रमां सूर्य पेसी गयो होयनी! अने महा घोर रात्री आवी पडी. एटले रावण सीताने उपद्रव करवा लाग्यो. उलूक पक्षीना महा भयंकर शब्दो, जंबूकना पुकार, वृकनी बुमो, वाघनुं जमीन उपर पूछडांनुं पटकवुं तथा मोटा मोटा सर्पोना फुंफवाटा त्यां आगळ थवा लाग्या. वळी भूत, प्रेत, पिशाच, वेताल विगेरे नाचवा अने उडवा लाग्या. तेमज ते निशाचरो पासे विकराळ रुपो लेवरावी तेणे सीतानी पासे आण्या. तोपण सती सीता पोताना अंतःकरणमां पंच परमेष्टीरुप नवकार मंत्रनुं ध्यान धरती थकी निर्भय थइने जेमनी तेम अडग रही, पण रावणनी सेवा करी नहीं.



बिभीषणनुं सीता पासे आववुं—सीताए तेने सर्व वृत्तांत निवेदन करवो.

बीजे दिवसे सवारना विभीषण रामनो वृत्तांत जाणीने रावणनी पासे आव्या पछी सीता पासे जइने तेने पूछवा लाग्यो. हे भद्रे, तुं कोण छे? क्यांथी आवी छे? अने क्यां रहे छे? भय न राखतां जे वात होय ते मने कहे. ए प्रकारना तेनां मीठां वचनो सांभळीने, आ कोइ मध्यस्थ छे, एम जाणीने नीची दृष्टी करी सीता तेने कहेवा लागीः—मारुं नाम सीता छे, हुं जनक राजानी कन्या, भामंडळ राजानी बेन, रामचंद्रनी स्त्री अने दशरथ राजानी वहु छुं पति अने देवर लक्ष्मण सहित हुं दंडकमां आवी रह्या पछी एक वखत मारो देवर क्रीडा करवा सारु ते वनमां आमतेम फरतो हतो. तेणे आकाशमां एक मोटो खड्ग जोइने कौतुके करीने ते वती पासेनी एक वंशजाळ छेदन करी. तेमां खड्गने साधनारनुं माथुं

अजाणतां कपाइ गयुं. त्यारे ते पश्चाताप करवा लाग्यो के, आ अयुध्यमान तथा निरपराधी छतां तेने में अज्ञाने करी मारी नाख्यो, एम दीलगीर थतो ते रामनी पासे आव्यो. तेनी पाछळ ए खड्गनी उत्तर साधक कोइएक स्त्री पण त्यां आवी. ते मारा पतिने जोइ कामातुर थइ थकी तेनो अंगीकार करवाने विनववा लागी. तेनो रामे निरादर कर्याथी ते कोपायमान थती त्यांथी चाली गइ. त्यार पछी राक्षसोनुं सैन्य युद्ध करवा सारु आव्युं. ते जोइने रामनी साथे सिंहनादनो संकेत करीने लक्ष्मण युद्ध करवा माटे गयो. त्यां एक राक्षसे कपटे करी सिंहनाद करीने मारा पतिने माराथी दूर कहाडीने पोतानो प्राण आपवा सारु मारुं हरण कर्युं.

(विभीषण आ प्रकारनुं सीतानुं बोलवुं सांभळीने दीलगीर थइ रावण पासे आवी तेने नमस्कार करी कहेवा लाग्यो.)

---:o:---

सीता पाछी आपवा संबंधमां विभीषण अने रावण वच्चे थएलो संवाद.

विभीषण—हे स्वामी, तें आ काम कर्याथी आपणा कुळने कलंक लाग्युं. ज्यां सुधी भाइ सहित राम आपणने मारवा माटे अहीं आव्यो नथी त्यां सुधीमां (तेनी आगमज) सीताने लेइ जइने तेने पाछी आपवाथी आपणुं सारुं थशे.

रावण—(क्रोधयुक्त थइने) हे विभीषण, तुं आ शुं बोले छे? शुं मारा पराक्रमनी तने खबर नथी? अलबत में सीतानुं हरण कर्युं छे. ते मारी स्त्री थशे. बचारा गरीब ते राम लक्ष्मण जो अहीं आव्या तो तेओने तेज वखते मारी नांखीश. मारी पासे तेमनुं शुं चालवानुं छे?

विभीषण—हे रावण, "रामनी स्त्री सीताना योगे आपणां कुळनो क्षय थशे." एवां जे ज्ञानी पुरुषोनां वचनो छे, ते तारा आ कृत्यथी खरां थवानां छे. थवानुं छे ते अवश्य थाय छे. तथापि हुं तने प्रार्थना करुं छुं के, कुळनो घात करनारी जे आ सीता, तेने तुं मुकी आव.

(एवी रीते विभीषणे कह्यां छतां तेनी वाणीनो अनादर करीने रावण सीताने पोताना पुष्पक विमानमां बेसाडी त्यांथी चाली निकळी रस्तामां तेने नीचे प्रमाणे देखाडवा लाग्यो.)

---:o:---

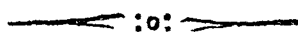
सीताने चळाववा रावणे पुष्पक विमानमां सीताने पोतानी साथे लइ फेरवतां करेली प्रार्थना विगेरे.



रावणः—(सीताने पोतानी आंगळीथी बतावीं कहेवा लाग्यो) आ रत्नोनां शिखरोनो क्रीडा पर्वत छे; आ नंदन उद्यान जेवां उपवन छे; आ पाणीना फुवारानां घरो छे; आ क्रीडा करवानी नदीओ छे; आ स्वर्ग समान रतिभोग करवानां घरो छे; हे स्त्री, अहीं तुं मारी साथे रममाण था.

ए प्रमाणे रावण तेने भोगववा सारु विमानमां बेठा थका बधुं बतावीं थाक्यो तथापि ते सिंहिणी जेवी सीताए निश्चळ मनथी एक रामनुं ध्यान धरती तेनुं बोलवुं लेशमात्र पण न गणकारतां मौन धारण करी तेना सन्मुख दृष्टि सरखीए करी नहीं, तेमज तेनो भय न धरावतां क्रोध लाव्या विना छानी मानी सांभळी रही. आखरे सर्व रम्यस्थानोमां फरी फरीने रावणे सीताने बताव्याथी पण तेनुं मन पीगळ्युं नहीं, त्यारे तेणे तेने फरी अशोकवनमां जइ मुकी.

(रावणने एवी उन्मत्त दशामां आवेलो जोइने विभीषण पोताना प्रधानोनी साथे मसलत करवा लाग्यो.)



बिभीषण अने प्रधानो साथे थएली वातचीत.

विभीषण—हे अमात्यो! कामादिक जे अंतर्शत्रु छे तेओमांनो एक तो प्राणीओने भूतनी पेठे उन्मत्त करी नाखे छे. तेथीज आपणो राजा रावण कामातुर थइ रह्यो छे. ए एकलोज अति दुर्जय छे, तो पछी तेने सहायता मळेथी शुं कहेवुं ? आ रावण परस्त्रीनी अभिलाषाए करी महा दुःखमां पडनार छे.

मंत्रियो—भाइ, अमे तो नामना मंत्रियो छीये, खरो मंत्रि तो तुं छे. जेनी एवी दूर दृष्टि छे !

विभिषणः—मिथ्यादृष्टि जनोने जैन धर्मना उपदेशनी पेठे कामाधीन जे आ रावण तेने विषे शुं उत्तम विचार करुं ! सुग्रीव हनुमानादिक जे सुभटो तेओ रामने मळेला छे. कह्युं छे के, "न्यायवडे चालनारा पुरुषोनो पक्ष कोण अवलंबन न करे!" सीता थकी अमारा कुळनो नाश थवानुं तो ज्ञानीए कह्युं छे, तथापि समयोचित कर्तव्य पुरुषाधीन छे.

(एम कहीने ते प्राकारो उपर यंत्रादिकोनी योजना करवा लाग्यो अने मंत्रियो आगळ उपर थवाना कार्यने जोवा लाग्या.)

सुग्रीवनुं सीतानी शोधमां जवुं.

पाताललंकामां लक्ष्मणे रामचंद्रनो विरह वेठतां केटलाएक दिवस कहाड्या पछी ते तेमनी पासे आवी सुग्रीवे सीताना शोध संबंधे कांइपण प्रयत्न न करेलो होवाथी तेमनी आज्ञा मांगी हाथमां धनुष्य बाण लेइने तेनी पासे जवा सारु निकळ्यो. ते वखतना तेना आवेशथी पृथ्वी चूर्ण थवा लागी, पर्वतो कंपायमान थवा लाग्या, तेमज तेना उतावळा वेगवडे रस्ताना झाडो पण पडी जवा लाग्या. एवी रीते लक्ष्मण पोतानी भ्रकुटी चहडावीने सुग्रीवना महेल पासे आव्यो. तेने जोतांज त्यां रहेला द्वारपाळे आनाकानी कर्या वगर तेने अंदर जवानी वाट आपी एटले ते महेलमां गयो. ए वातनी सुग्रीवने खबर पडतांज ते अंतःपुरमांथी बहार आवीने भये करी कांपतो थको तेना सामे हाथ जोडीने उभो रह्यो. त्यारे क्रोधायमान थयो थको लक्ष्मण तेने कहेवा लाग्यो केः—हे वानर, तारुं काम थयुं एटले तुं निःशंकपणे अंतःपुरमां रहेवा लाग्यो; अने राम तो बहार झाडनी नीचे बेशीने पर्वतनी पेठे दिवस कहाडे छे, तेनी तने शुद्धि क्यांथी होय! तुं जे प्रथम बोल्यो हतो ते शुं भूली गयो के? हे सुग्रीव, हवे विलंब न करतां सीताना शोधने सारु जलदी तैयार था, नहीं तो साहसगतिनो रस्तो जोवो पडशे. एवुं लक्ष्मणनुं बोलवुं सांभळीने सुग्रीव तेने नमस्कार करी कहेवा लाग्यो केः—हे लक्ष्मण, कोप न करतां मारा आ पहेला अपराधनी क्षमा करो. प्राणपणे ए काम करवाने हुं तैयार छुं. एवी रीते लक्ष्मणने शान्त पाडी सुग्रीव तेने साथे लेइने रामचंद्रनी पासे आवी विनयपूर्वक नमस्कार करी पोताना सैनिकोने आज्ञा करवा लाग्यो के, तमे सर्वत्र अकुंठित छो. माटे हमणां सीतानो शोध करवा सारु जाओ. विलंब करवानुं काम नथी. एवी रीते सुग्रीवनी आज्ञा थतांज ते सर्व वानरो सीतानो शोध करवा सारु नीकळी सर्व द्वीपोमां, पर्वतोमां तथा अटवीओमां फरतां फरतां जवा लाग्या तथा सुग्रीव पोते पण गयो.

सीतानुं हरण थयानी वात सांभळीने तेनो भाइ भामंडळ राजा रामनी पासे आवी अति शोक करवा लाग्यो.

विराध राजा पण पोताना सैन्य सहित आवीने रामचंद्रनी सेवा करतो तेनी पासेज रह्यो.

सुग्रीवे सीतानी मेळवेली शोध—लक्ष्मणनुं कोटीशिला उपाडवुं—हनुमाननुं सीतानी शोधमां लंकामां जवुं.



सीतानी शोध करतां फरतो फरतो सुग्रीव ज्यारे कंबुद्वीपमां आव्यो त्यारे रत्नजटी विद्याधर मनमां विचार करवा लाग्यो के, रावणे मारा अपराधनुं स्मरण करीने मने मारवा सारु तेने अहीं मोकल्यो होय एवुं जणाय छे. पूर्वे रावणे मारी विद्या हरण करी, अने आ वखते सुग्रीव मारा प्राण हरण करशे. एवी ते चिंता करे छे, एटलामां सुग्रीव तेनी पासे आवी कहेवा लाग्यो के, तुं मने जोइने केम उठ्यो नहीं? आकाशमार्गे गमन करवाने तुं आळसु (अशक्त) थयो छे के शुं? त्यारे ते बोल्यो के, रावणे मारी सर्वे विद्या हरण कर्याथी हुं असमर्थ थयो छुं. जे वखते रावणे जानकीनुं हरण कर्युं ते वखते तेनी साथे युद्ध करवाने हुं तेनी सामे गयो तेथी मारी एवी अवस्था थइ छे. एवुं तेनुं बोलवुं सांभळीने सुग्रीव तेने रामनी पासे लेइ आव्यो. त्यां तेने सीताना समाचार पुछवाथी तेणे जणाव्युं के:—हे देव, दुरात्मा जे रावण, तेणे सीताने अने मारी विद्याने हरण करी सीताने विमानमां बेसाडी लेइ जतां, हा राम, हा! वत्स लक्ष्मण! हा! भामंडळ बंधु! एवो सीतानो आक्रोश सांभळतां मने रावण उपर क्रोध चडवाथी हुं तेनी साथे लडवा गयो, तेथी तेणे मारी आवी दशा करी. सीताना समाचार सांभळीने रामे राजी थइ रत्नजटी विद्याधरने आलिंगन कर्युं अने फरी फरी ते सीतानो वृत्तांत पूछवा लाग्याथी तेने रत्नजटी कह्यो. पछी सुग्रीवादिक महा शूरवीरोने रामे पूछ्युं के, ते राक्षसनी लंका नगरी अहींथी केटली दूर छे? त्यारे तेओए जणाव्युं के, लंका नगरी दूर अथवा पासे होवाथी शुं करवानुं छे? जगतने जीतवावाळो जे रावण, तेनी सामे अमे सर्व तरखला जेवा छीए. तेओने रामे कीधुं के, जय अथवा पराजयनो विचार हुं पूछतो नथी, पण लंका नगरी तेमज ते राक्षस क्यां छे? ते बतावो. एक वखत मने बताव्या पछी मारा सामर्थ्यनी तमने खबर पडशे. त्यारे लक्ष्मण बोल्यो के, ते रावण कोण छे? तेणे कपट करी सीतानुं हरण कर्युं तेथी ते कुत्रा जेवो निर्बळ जणाय छे. मारा क्षत्रिय धर्मे करी हुं तेनुं माथुं काप्या विना रहीश नहीं. तमे सभ्य थइने मात्र संग्राम नाटक जुओ. एटले जांबुवान बोल्यो:—तमे कहो छो ते योग्यज छे, परंतु अनंतवीर्य मुनिए एवुं भाखेलुं छे के, "जे पुरुष कोटिशिला उखेडशे तेज रावणने मारशे." माटे अमने धैर्य आववा सारु आप ते शिलानुं उत्पाटण करो. लक्ष्मणे ते कबुल करवाथी

जांबुवानादिक विद्याधर सुभटो तेने लेइ आकाश मार्गे थइ ज्यां कोटिशिला हती त्यां आव्या. लक्ष्मणे ते शिलाने लतानी पेठे उखेडी नाखी. ते समये देवताओए तेना उपर फुलोनी वृष्टि करी विद्याधरो, रावणने मारनार आज छे एवो मुनि वचनानुसार निश्चय थवाथी धैर्य धरी लक्ष्मणने लेइ फरी आकाश मार्गे उडीने किष्किंधा नगरी प्रत्ये आव्या. रामने नमस्कार करी लक्ष्मण तेमज विद्याधरो यथायोग्य स्थानके बेठा; ते वारे त्यां आवेला मोटा वानर बोलवा लाग्या के, लक्ष्मणने हाथे रावणनो नाश थशे; ए वात खरी. परंतु यत्न करतां पहेलां शत्रु पासे दूत मोकलवानी नीति छे. तेथी जो कार्य सिद्धि थइ तो यत्न शा सारु करवो ? माटे त्यां एक महा पराक्रमी दूतने मोकलो, केमके लंकामां जवा आववानुं काम घणुं कठण संभळाय छे. ते दूते लंकामां जइने सीता पाछी देवा विषे बिभीषणने कहेवुं, कारण के राक्षस कुळमां ए वजनदार छे. सीताने मुकी देवाने ते रावणने बोध करशे. छतां जो रावण तेनुं कहेवुं मान्य नहीं करे ते तेनो पक्ष छोडी ते तमारी तरफ थशे. रामे तेनुं कहेवुं मान्य राख्युं. एटलामां हनुमानने बोलाववा सारु सुग्रीवे श्रीभूति नामना एक वानरने मोकल्याथी ते त्यां आवी सुग्रीवादिक सहित बेठेला रामने नमस्कार करी उभो रह्यो त्यारे सुग्रीव रामने कहेवा लाग्यो के, आ महा पराक्रमी हनुमान विपत्ति समये परम बांधव छे. आ सर्व विद्याधरोमां आनी बराबरी करनारो बीजो कोइ नथी. माटे हे स्वामीन्, सीतानो शोध करवा सारु आने आज्ञा करो. त्यारे हनुमान कहेवा लाग्यो के, मारा जेवा हजारो वानर छे, परंतु मारा उपर सुग्रीवनो प्रेम होवाथी ए मारी तारीफ करी रह्यो छे. गव, गवास, गवय, शरभ, गंधमादी, नील, द्रिविद, जांबवान, अंगद, नल अने बीजा पण हजारो श्रेष्ठ वानर छे. तेओनी संख्या पुरी करनारामांनो एक हुं तमारी कार्यसिद्धिने अर्थे कहो तो राक्षस द्वीप सहित लंकाने उखेडीने अहीं लावुं ? कहो तो भाइओ सहित रावणने बांधी लावुं ? अथवा कुटुंब सहित रावणने त्यांज मारीने जानकीने अहीं लेइ आवुं एवुं सांभळीने रामे तेने कीधुं के, तारा विशे सर्व संभवे छे. तथापि हाल तुं लंकामां जलदी जइने सीतानी शोध लाव. मारा तरफथी शोध सारु आव्यानी एंधाणी माटे आ मारा हाथमांनी मुद्रिका तुं लेइ जा. ते जानकीने आपीने तेनी खरी शुद्धिनी नीशानी माटे तेनो चूडामणी मने लावी आप. तेमज मारा तरफथी तेने एम कहेजे के, हे देवी, तारा वियोगथी पीडित थया थका राम रात्र दिवस तारुंज ध्यान धरी रह्या छे. मारा वियोगे करी तुं पोतानो प्राणत्याग करीश नहीं. लक्ष्मणे मारेलो रावण तुं थोडाज दिवसमां देखीश, ए सघळुं सांभळीने हनुमान बोल्यो के, हे प्रभु, आपनी आज्ञा शीरपर चढावी हुं लंकामां जइने सीतानो परिपूर्ण पत्तो मेळवी तथा आपे कहेली हकीकत

लंकामां जवानुं पण जणाव्युं. पछी ते विद्याधर कुमारिकाओए पोताना पिता पासे आवी हनुमाने कहेली सर्व हकीकत कही संभळावी तेथी ते गांधर्वराज पोतानुं सर्व सैन्य लेइने तत्काळ त्यांथी नीकळी रामनी पासे आव्यो.

हनुमाननुं लंकामां जवुं--तेनुं वज्रमुख तथा लंकासुंदरी साथे थएलुं युद्ध--हनुमाने लंकासुंदरी साथे करेलो गांधर्व विवाह.

हनुमान त्यांथी विमान लेइ आकाश मार्गे उडतो लंका नगरी समीप आव्यो. त्यां तेणे काल रात्रनी पेठे लंका पुरीने किल्लो करी रहेली आशालिका विद्या जोइ. पछी ते तेनी पासे आव्यो, त्यारे ते विद्या तेने कहेवा लागी के, हे कपी, तुं क्यां चाल्यो ? आज मने तुं भक्षण मळ्यो एम कहीने ते विद्याए पोतानुं महोडुं पसार्युं. एटले हाथमां गदा धारण करनारो हनुमान तेमां पेसी सूर्य जेम वादळांने दूर करी, नीकळे, तेम तेनुं पेट फाडीने ते बहार निकळ्यो. पछी तेणे ते विद्याए करेला लंका नगरीना किल्लाने पोतानी विद्यावडे ठीकराने फोडी नाखवानी पेठे कटके कटका करीने तोडी नाख्यो. त्यारे त्यां रखेवाली करवा रहेलो वज्रमुख नामनो राक्षस तेनी साथे लडाइ करवा लाग्यो. तेने क्षण मात्रमां मारी नाखी ते आगळ चालवा गयो के लंकासुंदरी नामनी ते राक्षसनी कन्या क्रोधायमान थइ थकी लडवाने तैयार थइ तेने अटकावी बोली के, मारी सामे आव. पछी आकाशमां विजलीनी पेठे ते रणभूमिमां आवीने, पर्वतने मारवानी पेठे हनुमानने मारवा लागी त्यारे तेना सर्व हथियारोने हनुमाने पोताना हथियारोथी लीला मात्रे तोडी नाख्या, तेथी पांदडा विनानी लतानी पेठे ते हथियार विनानी देखावा लागी. पछी ते पोताना मनमां आ ते कोण छे ? एवुं विचारती आश्चर्य पामीने तेना सामे जोवा लागी. तेथी तेने काम-विकार उपन्यो; त्यारे तेने कहेवा लागी के, मारा बापनुं मृत्यु थयाथी क्रोधावेशे करी वगर विचारे हुं आपनी साथे युद्ध करवा लागी. पूर्वे एक साधुए मने कह्युं हतुं के, जे तारा पिताने मारशे ते तारो पति थशे. माटे हे नाथ, तमे मारी साथे लग्न करो. आ जगतमां तमारा जेवो शुरविर कोण छे ? तमारी पत्नि थएथी हुं सर्व स्त्रीओमां गर्वित रहीश. लंकासुंदरीनुं एवुं बोलवुं सांभळीने हनुमाने तेनी साथे गांधर्व विवाह कर्यो.

रात्रि स्वरुप.



ते समये आकाशमां फरतां थाकी गयाथी स्नान करवा सारुज जाणे पश्चिम समुद्रमां सूर्ये डुबकी मारी होयनी! ज्यारे पश्चिम दिशानो उपभोग लइने सूर्य जवा लाग्यो, त्यारे ते (दिशा) संध्याभ्रना मिशे करीनेज जाणे लंकासुंदरीनां रातां वस्त्र लेइ गइ होयनी! मारो स्वामी सूर्य कांइ अपमानने लीधे मने मूकीने नवरागा जे पश्चिम दिशा तेनी सेवा करवा लाग्यो. एवा हेतुथीज पूर्व दिशानुं मुख उतरी गयुं छे के शुं? क्रीडानुं स्थान जे भूमि, तेनो त्याग करवाथी दुःखित थइने त्यां रहेवावाळा पक्षीओ कोलाहल शबना मिशे मोटेथी पोकारवा लाग्या. पतिने न अडकनारी रजस्वाला स्त्रीनी पेठे चराकिका (चकवी) नामनी पक्षिणी शोकने पामी पतिव्रताना मतनी पेठे सूर्य आथमी गयाथी कमलिनीए मुखनो संकोच कर्यो. वाछडांने मळवानी इच्छाथी गायो वनमांथी उतावळी पाछी फरी ब्राह्मण लोको वाव्य दिशामां बेशीने हर्षे करी संध्यादिक कर्म करवा लाग्या. पृथ्वीपति जेम युवराजने पोतानी राजसंपत्ति सोंपे, तेम सूर्ये अग्निने पोतानुं तेज आप्युं. आकाशना नक्षत्रोनां लक्षणने हरण करनारा दीवाओने दरेक स्त्री सळगाववा लागी. सूर्य अस्त थया पछी अंधारुं पसरवा लाग्युं. तेथी अंजनना पर्वतने तोडीने वखारो भरवानी पेठे आकाश अने पृथ्वीरुप मोटी वखारो भराइ गइ. ते वखते स्थल, जळ, दिशा, आकाश, अने पृथ्वी आदिक पदार्थो न देखावा जेवा थया. घणुं शुं कहेवुं! पोताना हाथ पण देखाय नहीं, एवुं थयुं. एवा समये जुगटी लोको जुगार खेलवा लाग्या. काजळ जवुं श्याम वर्ण आकाश, नक्षत्रोना योगे, कमल सहित कालिंदीना तीरनी पेठे देखावा लाग्युं. अंधकारनो प्रसार थवाथी, जेमां प्रकाशनुं नामज नहीं, एवा पातालनी पेठे घट पटादिक पदार्थो अदृश्य थया. होदमानी मच्छीनी पेठे अंधारामां, कामी पुरुषोना मेळापनी लालची दूतीओ भय मुकीने गमे तेम फरवा लागी. तमाल पत्र जेवा काळा रंगना जेनां वस्त्रो छे, अंग उपर जेणे कस्तुरीनुं लेपन करेलुं छे, अने जेना पगमां तोडा शोभी रह्या छे, एवी अभिसारिका जेवी स्त्रीओ फरी रही छे. त्यारपछी उदयाद्रिरुप प्रासा. दनी उपर सोनाना कळसनी पेठे चंद्र उदय थयो. त्यारे स्वभाविक वैरना चिन्हना मिशे अंधकार देखावा लाग्यो, ते जाणे चंद्रनी साथे बाहु युद्धज करतो होयनी! गायोना गोठामां तेमनी साथे जेम सांढ क्रीडा करे, तेम आकाशमांना तारागणो सहित चंद्रमा क्रीडा करवा लाग्यो. कस्तूरी युक्त रुपाना पात्रनी पेठे मृग रूप कलंक युक्त चंद्रमा शोभवा लाग्यो. विरही पुरुषो पडवा लाग्याना समये तेने हाथ दीधाथी जेम कस्त

वाण पेठे ते संचार करे छे, ते प्रमाणे चंद्रना किरणो पसर्या. घणा काळ भोगवेली पद्मीनीने मूकीने भृंग कुमुदवतीनुं सेवन करवा लाग्या. एवी नीच मित्रताने धिक्कार छे, अने पोतानो मित्र जे काम तेना वाण सज्ज करवा माटेज जाणे शेफाली नामनी वेलीना फूलो, चंद्रे पोताना किरणोवडे पाडी नांख्या होयनी! इंदुकांत नामनी मणिओनी उपर किरणोनो वरसाद करीने नवा तळावो उपजाव्या, पद्मिनी जेवी फरनारी जे कुलटा स्त्रीओ तेओनां मुख म्लान थयां. एवी ते रात्र निःशंकपणे लंकासुंदरीनी साथे रममाण थइने हनुमाने कहाडी.

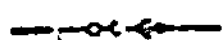


हनुमानने विभीषण साथे थएली वातचीत.

पछी सोनाना तंतु जेवा पोताना किरणोवडे प्रकाश करतो थको सूर्य उदय थयो. विकासित कुमुदनीनी उपर सूर्यना किरणो पड्याथी ते संकोचावा लागी. स्त्रीओए माथामांना फूलो कहाडी नांख्या. रात्रना जागरणथी नेत्रो जेनां रातां थयां छे, एवी जे गणिकाओ, ते कामी पुरुषोना घरोथी पाछी फरी. जेम मुखमांथी श्वास नीकळे छे, तेम विकसित कमळना कोशमांथी भमरा नीकळ्या. सूर्यना तेजे करी लता तंतूनी पेठे चंद्रमा कांति रहित देखावा लाग्यो. मोटा वायुथी (वंटोळीया)थी जेम मेघनो नाश थाय छे, तेम आखा ब्रह्मांडमां न समनारो अंधकार सूर्यना किरणोवडे नाश थयो. रात्रनी पेठे निद्रा गया पछी सर्व लोक पोतपोतानुं काम करवा लाग्या. ते समये लंकासुंदरीने पूछीने हनुमान लंकामां विभीषणने घेर गयो. विभीषणे तेनो सत्कार करीने आववानुं कारण पूछयुं, एटले तेणे गंभीर वाणीथी कह्युं केः—हे विभीषण, तुं रावणनो भाइ छे माटे तेना कल्याणनो विचार करीने रामनी पतिव्रता स्त्री जे सीता, तेने रावणना हाथथी मुकाव. सीतानुं हरण करनारो तारो भाइ जोके बळवान छे, तोपण ते तेने आलोकमां अने परलोकमां अने परलोकमां दुःखकारक छे. ते सांभळीने विभीषण बोल्यो—हे हनुमान, तें घणुं सारुं कह्युं. सीताने मूकी देवानुं में पूर्वेज एने कह्युं हतुं, तेमज फरीथी पण हुं ते विषे तेनी प्रार्थना करीश. मारुं कहेवुं मान्य करी जो ते सीताने मुक्त करशे तो ठीकज छे. एवुं विभीषणनुं बोलवुं सांभळीने हनुमान त्यांथी उठी देवरमण उद्यानमां गयो.



हनुमाननुं सीताने जोवुं अने तेना खोळामां मुद्रिकानुं नाखवुं--रावणनुं मंदोदरीने सीता पासे मोकलवुं.



त्यां तेणे अशोक वृक्षनी नीचे उदास चहेरे बेठेली, जेना माथाना विखराएला वाळ उपर पसरेला छे, जेना नेत्रोमांथी पाणी वहे छे, तेना जोगेज जाणे पृथ्वी उपर नानां तळावो थयां होयनी! महोडुं जेनुं उतरी गयुं छे, शरीर जेनुं सुकाइ गयुं छे, उनाश्वासे करीने जेनां होठ फीका थइ गया छे, योगिनीनी पेठे मुखथी जे राम राम जपी रही छे, अंग उपरना वस्त्र जेना मलीन थया छे, रंच मात्र पण जेने देहनी अपेक्षा नथी, एवी सीताने दीठी. तेनी आवी अवस्था जोइने हनुमान पोताना मनमां चिंतवन करवा लाग्यो के, आ सीता महा पतिव्रता छे. आना दर्शनथी सर्व प्राणी पवित्र थाय ए निःसंदेह वात छे. तेना विरहे करीने रामचंद्र खिन्न थाय छे, ए योग्य छे. केमके, रुपमां तेमज शीलमां आना जेवी पवित्र स्त्री कोनी छे? आ रावण, पोताना पापने योगे रामचंद्रना प्रतापे करी अति कष्ट भोगवशे. एवी रीते विचारी हनुमाने अंतरिक्ष रहीने सीताना खोळामां रामना हाथनी वींटी नांखी. अकस्मात् रामचंद्रनी मुद्रिका नजरे निहाळीने सीता मनमां राजी थइ तेथी तेनुं वदन कांइक प्रफुल्लित थएलुं जणावाथी तेज वखते त्रिजटाए जइने रावणने कह्युं के, आटला दिवस सुधी तो सीता शोकसागरमां डुबेली हती, परंतु आज ए आनंदमां आवेली जणाय छे. एवुं सांभळीने रावणे मनमां विचार्युं के, हवे ए रामने भूली गई; माटे मारी साथे रममाण थशे. एम धारी ते मंदोदरीने कहेवा लाग्यो के, तुं जइने सीताने उपदेश कर. ते सांभळी पतिनुं दूतपणुं कबूल करीने सीताने फसाववा सारु मंदोदरी तेनी पासे आवी.



सीताए मंदोदरीनो करेलो तिरस्कार.

मंदोदरीः–हे सीता! सांभळ. ऐश्वर्य करी तथा सौंदर्य करी रावण श्रेष्ठ छे, तेमज तुं पण रूप, लावण्य, संपत्तिवडे अप्रतिरूप छुं. जो के अज्ञ विधाताए तमो बन्नेनो संयोग कर्यो नहीं, तथापि संयोग करवानी आ वेळा छे, तो हे सीता, हवे तुं अहींथी उठ; अने रावणनी सेवा कर. हुं तेमज तेनी बीजी बधी स्त्रीओ तारी आज्ञामां रहेशे, माटे तारा श्रेय सारु मारुं कहेवुं मान्य राखी जरु जवा दइ जल्दी उठ.

सीता:—हे दुष्टे, पतिनुं कुटणपणुं करनारी, हे पापिणी, तारा पतिनी पेठे तारुं मुख जोवाथी पण पाप लागे, माटे तारुं मों संताड. हे पापे, तुं जरूर समज के, हुं रामनी पासेज बेठी छुं. खरादिकोनी पेठे भाइओ सहित तारा पतिने मारवा सारु लक्ष्मण आव्या एम समज. हे पापिष्टे, अहींथी उठ! तारी साथे बोलवानो मने अधिकार नथी. (तारुं मुख जोवुं तथा तारी साथे बोलवुं ए पण अयोग्य छे.)

ए प्रमाणे सीताए, मंदोदरीनो तिरस्कार कर्याथी ते कोपायमान थइने बीले महोडे त्यांथी जती रही.



हनुमाननुं सीताने मळवुं–तेणीए तेने आपेलो चूडामणी–हनुमान तथा अक्षयकुमार वच्चे थएलुं युद्ध–हनुमाने अक्षयकुमारने मारी नांखवुं–इंद्रजिते हनुमानने नागपाशथी बांधी लेवुं विगेरे.

त्यारपछी हनुमान प्रगट थइ, सीताने नमस्कार करी हाथ जोडी सन्मुख उभो रही कहेवा लाग्यो के, हे देवी, लक्ष्मण सहित राम कुशळ छे. तमारी शोध सारु रामनी आज्ञाथी हुं अहीं आव्यो छुं. मारा गया पछी शत्रुनो नाश करवा सारु रामचंद्र अहीं आवशे. एवुं सांभळी आंखमां आंसु आणीने सीताए तेने पूछ्युं के, तुं कोण छे? अने शी रीते तुं आ समुद्र उल्लंघन करीने आव्यो? लक्ष्मण सहित मारा प्राण-नाथ सुखी छे के? तें तेमने क्यां जोया? त्यारे तेणे कह्युं के, मारुं नाम हनुमान छे. पवन अने अंजनानो हुं पुत्र छुं. विद्याना बळथी आकाश मार्गे थइ समुद्र उल्लंघन करी हुं अहीं आव्यो. सर्व वानरोनो अधिपति जे सुग्रीव, तेना शत्रु साहसगतिने मारीने लक्ष्मण सहित राम किस्किधा नगरीमां छे. दावानळे करी तपेला पर्वतनी पेठे तमारा वियोगथी राम तपेला छे. गाय विनाना वाछडानी पेठे तमारा विना लक्ष्मणने पण रंच मात्र सुख नथी. सर्व दिशाओ जेमने शून्य दीठामां आवे छे, एवा राम अने लक्ष्मण क्षणमां शोक पामे, तो क्षणमां क्रोधायमान थाय छे. जो के सुग्रीव तेमनुं आश्वासन करे छे, तथापि तेओ सुख पामता नथी. जेम सर्व देव इंद्र (सौधर्म)नी अने इशान (इंद्र)नी सेवा करे छे, तेम भामंडळराजा, विराध तथा बीजा महेंद्रादिक विद्याधरो राम लक्ष्मणनी सेवा करे छे. तमारी शोध करवा सारु सुग्रीवे बतावेलो जे हुं, तेने पोतानी वींटी आपीने रामे मोकल्यो छे, अने तमने मळी

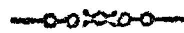

हनुमान
सीता.


हनुमान
अक्षकुमा


रावणनीकचेरी.
हनुमान नागपाशमा

ते आप्यानी एधानीमां तमारो चूडामणी लेइ आववा कह्युं छे. ए नीशानी युता-न्यायी ए मारा प्रभुने विश्वास आवशे. एटलुं कही तेणे सीताने पारणुं करवानी विनती करी; तेथी तथा रामचंद्रनो कुशळ वृत्तांत सांभळीने राजी थयाथी सीताए एकवीस दिवसना उपोषण छोडी आनंदे करी आरोग्युं. पछी तेणे हनुमानने कह्युं के, आ मारो चूडामणी लेइने तुं जलदी जा. वधारे वार रह्याथी कांइपण उपद्रव थशे. अहीं तुं आव्यो छुं, एवी जो रावणने खबर पडशे तो तने मारवा सारु यमनी पेठे ते आवशे. ते सांभळी हनुमान हाथ जोडी हसीने कहेवा लाग्यो के, मारा उपर तमारी कृपा होवाथी भीतिए करी एम बोलो छो ते तमने योग्य छे. पण हे माता, हुं राम लक्ष्मणनो सेवक छुं. ए तपस्वी रावण तथा तेनुं सैन्य मारा सामे शा हिसा-बमां छे ! हे स्वामिनि, सैन्य सहित रावणनो पराभव करीने, तमने मारा खभा उपर बेसाडी हमणांज हुं रामनी पासे लेइ जवाने समर्थ छुं. एवुं सांभळी सीता हसीने बोली के, राम लक्ष्मणनो सेवक जे तुं, तेमां सर्व संभवे छे. परंतु परपुरुषनो स्पर्श थोडो पण मने योग्य नथी, माटे तुं जलदी जा. तुं गयाथी सर्व कार्य जेवुं थशे. राम पण उद्योग करशे. त्यारे हनुमाने कीधुं के, आ हुं चाल्यो. पण राक्षसोने कांइक पराक्रम बतावुं छुं. आ रावण बीजा कोइना पराक्रमने जाणतो नथी, माटे तेने रामना सेवकनुं पराक्रम बतावबुं जोइये. ते सांभळी सीताए कह्युं के, ठीक छे. पछी तेणीए हनुमानने पोतानो चूडामणी आप्यो. ते लेइ सीताने नमस्कार करी हनुमान त्यांथी चाली नीकळ्यो. जेम वन हस्ती उन्मत्त थइने अरण्यमां फरे, तेम ते उद्यानमां फरवा लाग्यो. ते रक्ताशोक वृक्ष विषे दया रहित थयो. बकुल वृक्ष विषे अनाकूळ, आंबाना वृक्ष विषे करुणा रहित, चंपक वृक्ष विषे कंप रहित, मंदारवृक्ष विषे अधिक क्रोधी, कदली वृक्ष विषे निर्दय, ए प्रमाणे सर्व वृक्षोनो लीला मात्रे करी तेणे भंग कर्यो. तेथी ते उद्यानना चारे दरवाजानी रक्षा करनारा राक्षसो हाथमां मुद्गरादिक हथीआरो लेइने तेने (हनुमानने) मारवा सारु दोड्या. किना-राना पर्वत उपर जेम समुद्रनां लाट व्यर्थ थाय छे, ते प्रमाणे हनुमान उपर तेओना सर्व हथीआरो व्यर्थ थया. पछी हनुमाने कोपायमान थइने त्यांना झाडो उखेडीने तेवडे राक्षसोने मारी वृक्षोनी पेठेज तेमनो नाश कर्यो. त्यारे बीजा राक्षसो रावण पासे जइने कहेवा लाग्या के, उद्यानना चारे दरवाजाना राक्षसोने हनुमाने मारी नाख्या. ए हकीकत सांभळीने रावणे हनुमानने मारवा सारु पोताना पुत्र अक्षकुमा-रने आज्ञा करी. तेथी ते त्यां गयो, त्यारे हनुमान तेने कहेवा लाग्यो के, भोजनमां जेम फळ तेम आ रणमां तुं पहेलो आव्यो छुं. त्यारे ते बोल्यो के, तुं व्यर्थ गर्जना शुं करे छे ? एम कही तेणे तीक्ष्ण बाणे करी हनुमानने प्रहार कर्यो. एटले हनुमाने

तेना उपर बाणोनी वृष्टि करी तेने ढांकी दीधो. पछी केटलोक वखत तेओनी अस्त्र शस्त्रनी लडाइ चालतां हनुमाने पशुनी पेठे तेने (अक्षकुमारने) मारी नाख्यो. त्यारे भाइ मुवाना क्रोधे करी रावणनो मोटो पुत्र इंद्रजित त्यां आवी, हे मारुते (हनुमान) उभो रहे ! उभो रहे ! एम कहेवा लाग्यो. पछी ते बंनेनुं कल्पांतनी पेठे महा भयंकर युद्ध थयुं. जळनी धारा प्रमाणे ते बंने वीरो हथीआरो नाखवा लाग्या. ते वखते आकाशमां पुष्करावर्त मेघनी पेठे देखावा लाग्युं, तथा तेमना हथीआरोवडे क्षणमात्र पण आकाश देखातुं नहोतुं. हनुमान इंद्रजितना आवता हथीआरोवडे अंग चूर्ण करवा लाग्यो. त्यारे तेना सुभटो लोहीनी नदीओ जोवा लाग्या. पछी मारुं सैन्य नष्ट थयुं, मारां हथीआरो व्यर्थ गयां, एम जाणीने इंद्रजिते हनुमान उपर नागपाश अस्त्र मूकीने तेने पगथी ते माथा सुधी जेम चंदनना झाडने नाग वांधी ले, तेम नागपाशे करी बांधी लीधो. ते नागपाशनुं बंधन सहन करीने कौतुक जोवा सारु हनुमान ते बंधनमां पड्यो, एटले इंद्रजित तेने रावणनी पासे लेइ गयो. त्यारे रावण हनुमानने कहेवा लाग्यो.



रावण अने हनुमान वच्चे थयेलो संवाद—हनुमाननुं नागपाश तोडी नांखवुं—विगेरे.

रावण—हे दुष्ट, आ तें शुं कर्युं ? जन्मथी मारो आश्रय कर्या छतां आजे तपस्वीनो आश्रय कर्यो के ? ते वनवास करनारा, फळो खानारा मलीन, अने वनना भील जेवा प्रसन्न थइने तने शुं लक्ष्मी देशे ? जेना कह्याथी तुं अहीं आवतांज तने प्राण जवा जेवुं थयुं, तेना विश्वासथी तुं अहीं आव्यो ? ते राम अने लक्ष्मण पृथ्वीपर फरनारा छे, माटे महा कुशळ छे. तेणे आ तने दुःखमां नाखवानो उपाय कर्यो छे. प्रथम तुं मारो सेवक हतो ते हवे बीजानो थयो तेथी तुं मारवा योग्य नथी. पण शिक्षा करवा सारु मात्र तने नीशानी करुं छुं.

हनुमान—हे रावण, हुं तारो सेवक क्यारे हतो ? तेमज तुं मारो स्वामी क्यारे हतो ? एवुं बोलतां तने लाज पण नथी आवती ? एक वखत मारा बापे बंधाइ गयेला तारा प्रिय सामंत खरने तारा कहेवाथी वरुण पासेथी मूकाव्यो हतो, तथा तारी सहायता करवा सारु आवीने वरुणनां पुत्रोना हाथथी में तारुं रक्षण कर्युं हतुं, परंतु आ वखते तुं पाप करवाने तत्पर थयो छुं तेथी सहायता करवाने योग्य नथी. परस्त्रीनुं हरण करनारो जे तुं, तेनी साथे बोल्याथी

पण पाप लागे. आ वखते एकला लक्ष्मण थकी तारुं रक्षण करनारो तारा सैन्यमां कोइपण दीठामां आवतो नथी.

रावणः—(क्रोधायमान थइ दांते करी होठ चावतो) मारा वैरीनो आश्रम करीने तें मने पोतानो शत्रु कर्याथी तारी मरजी मरवानी मालम पडे छे, पण कोढवडे गळेला अंगवाळा पुरुपने मोतनी नजीक आवेलो जोइने हत्याना भये करी जेम कोइ मारतुं नथी तेम तुं शत्रुनो दूत छूं, माटे तने कोण मारशे? तोपण गधेडा उपर बेसाडीने माथामां पांच पाटा करी, सर्व लोकना देखतां लंकाना रस्ते रस्ते तने फेरवीश.

एवुं सांभळतांज क्रोधमां आवी मारुतिए नागपाश तोडी नाख्युं. कमलिनीना नादे हाथी बांधेलो केटली वार रहे? पछी तेणे वीजळीनी पेठें कुदको मारीने पोताना पगे करी रावणनो मुकुट तोडी नाख्यो. तें वारे एने मारो, एवी रीते रावण पुकार पाडवा लाग्यो. एटलामां हनुमाने जइ तेनी आखी नगरीने अनाजनी पेठे भंग करी नाखी, परंतु तेने झालवाने कोइपण राक्षस समर्थ थयो नहीं.



हनुमाननुं रामने मळवुं विगेरे.

एवी रीति क्रीडा करीने लंकामांथी गरुडनी पेठे आकाशमार्गे उडीने हनुमान रामचंद्रनी पासे किस्किया नगरीए आव्यो. पछी तेमने नमस्कार करीने सीतानो चूडामणी आप्यो. ते जोइ जाणे साक्षात सीताज आवी होयनी! एम राम जाणवा लाग्या अने ते चूडामणीने पोताना हृदयनी साथे दावीने तेमणे तेनुं वारंवार आलिंगन करीने तेने त्यांनो वृत्तांत पूछ्यो. त्यारे हनुमाने विभीपणने मळी सीतानो शोध करी तेने मळ्याथी मांडीने रावणनो पराभव करी लंका नगरीनो भंग कर्या संबंधी सर्व हकीकत अथ इति करी संभळावी.

दोहरा.

खर खग खांते मारीने, गया लंक पाताल;
विराध गादी स्थापियो, आवीने तत्काल. १
सुमित्र सहाय करी वळी, किस्किधा मुकाम;
साहसगति तस शत्रुने, मार्यो रामे ठाम. २
सीता शोध सारु सुभूर, दूर फर्या बहु देश;
पण पत्तो पाम्या नहीं, लाखेणो लवलेश. ३

सुग्रीवे सोंदाडीओ, हनुमंत वडवीर;
आज्ञा पामी रामनी, लंक गयो रणधीर. ४
आशालिका विद्यातणुं, प्रतक्ष फोड्युं पेट;
परण्यो लंकासुंदरी, मारी रक्षक नेट. ५
गयो विभीषणने मळी, देव रमण उद्यान;
जोइ जानकी झट जइ, आप्युं राम एधान. ६
कुशळ वात करी वळ्यो, चूडामणि लेइ हाथ;
दारुण युद्ध तिहां थयुं, मार्यो राक्षस साथ. ७
प्राभव रावणनो करी, आव्यो राम हजूर;
मांडी अथ इति कही, सघळी वात सनूर. ८
छट्ठो सर्ग इम संस्तव्यो, पंडित हेम महान;
श्रोता जन सावध थइ, शूणो ए आख्यान. ९

इत्याचार्यश्रीहेमचंद्रविरचिते त्रिषष्टिशिलाकापुरुष
चरित्रे महाकाव्ये सप्तमे पर्वणि सीताप्रवृत्त्य
नयनो नाम षष्ठः सर्गः ६

अथ श्री सप्तम सर्ग प्रारभ्यते.



राम लक्ष्मणादिनुं प्रयाण तथा तेमनुं हंसद्वीपे पडाव करी रहेवुं.

त्यारपछी लंकाविजय यात्रा सारु सुग्रीव, भामंडळ, नल, नील, महेंद्र, हनुमान, विराध, सुषेण, जांबवान, अंगद, तथा बीजा कोटी विद्याधरोने पोतपोताना सैन्य सहित साथे लइने राम लक्ष्मण त्यांथी आकाशमार्गे चाल्या, ते वखते सर्व विद्याधरोए वाजां वगाड्यां, तेना शब्दे करी आकाश भराइ गयुं. पछी विमानो, रथो, घोडाओ अने बीजा पोतपोताने अनुकुळ पडता वाहनो उपर विद्याधरो बेशीने आकाश मार्गे गमन करवा लाग्या. क्षणमात्रमां सर्व सैन्यसहित तेओ आकाशमार्गे समुद्र उपर चालता वाटमां वेलंधर नामना पर्वत उपर वेलंधर नगरमां आव्या. त्यारे समुद्रनी पेठे दुर्धर त्यांना राजा समुद्र अने सेतु आवीने रामना सैन्य साथे युद्ध करवा लाग्या. तेमां नले समुद्रराजाने तथा नीले सेतु राजाने पकडी बांधी लावी रामनी पासे रजु कर्या. तेमणे माफी मागवाथी रामे तेमना उपर कृपा करीने फरी तेमना राज्य उपर बेसाड्या. कह्युं छे के, " मोटा पुरुषो जीताएला शत्रु विषे पण कृपालु होय छे. " पछी समुद्रराजाए पोतानी त्रण कन्याओ लक्ष्मणने आपी. ते रात्रे त्यां रहीने बीजे दीवसे सवारना समुद्र तथा सेतुराजाने साथे लेइ तेओ आगळ चाल्या. थोडाक वखतमां सुवेलादि पर्वत उपर आवी त्यांना सुवेल नामना राजा साथे लडी तेने जीती लीधो. ते रात्र त्यांज रहीने फरी त्रीजा दीवसनी सवारमां नीकळ्या. चालतां रस्तामां लंका नगरीना पडोशमांना हंसद्वीपना राजा हंसरथने जीतीने तेओ सर्व सैन्य सहित त्यां पडाव करी रह्या. मीन राशीने शनिश्चरनी पेठे सैन्य सहित राम पासे आव्याथी लंका नगरीने मोटो क्षोभ थयो. ते जोइने हजारो राक्षसो जेवा के, हस्त, प्रहस्त, मारीच, तथा सारणादिक रावणना सामंत शूरवीर लोको युद्ध करवा सारु तैयार थया. त्यारे शत्रुने मारवामां महा पंडित, एवा रावणे पोताना अनुचरो पासे वाजां वजडाव्यां. ए सर्व वृत्तांत जाणीने बिभीषण रावणनी पासे आवी तेने नमस्कार करी हाथ जोडी कहेवा लाग्योः—

——:o:——

बिभीषणे रावणने दीधेलो बोध.

बिभीषण—हे मारा मोटा भाइ, हजी सुधी पण संतोष कर. मारां वचनो विचार करवा योग्य छे. पूर्वे विचार न करतां ते वेउ लोकोने नाश करनारुं सीतानुं हरण कर्युं, तेथी तारा कुलने कलंक लाग्युं. हवे राम पोते सीताने लेवा तैयार थइ आव्यो छे, तेनो आदर सत्कार करीने तथा तेने अतिथिनी पेठे मानीने तुं तेने सीता पाछी सोंप. मारुं आ कहेवुं जो तुं मान्य नहीं करे तो तारो कुल सहित नाश करीने राम पोतानी स्त्री सीताने लेइ जशे. साहसगति अने विद्याधर विगेरेनो नाश करनारा राम लक्ष्मण तो दूर रह्या, पण तेना सेवक हनुमानने शुं तें जोयो नथी के? आजे इंद्रनी लक्ष्मीथी तारी लक्ष्मी अधिक छे, ते आ परस्त्री सीताने सारु गमावो नहीं.

(एवुं विभीषणनुं बोलवुं सांभळीने तेनी पासे बेठेलो रावणनो पुत्र इंद्रजित केहेवा लाग्यो.)

इंद्रजित तथा बिभीषण वच्चे थएलो संवाद—रावणनुं बिभीषणने नगर बहार काढी मूकवुं.

इंद्रजितः—हे विभीषण काका, तुं जन्मनो बीकण छे. तुं मारा पितानो भाइ छतां आपणा सर्व कुळने कलंक लगाडे छे. इंद्रराजाने जीतनारो तथा सर्व संपत्तिनो नायक जे मारो पिता रावण, तेने तुं मारवाने मांगे छे! माटे हे मुर्ख, तुं मरवा लायक छे. प्रथम पण तें खोटुं बोलीने दशरथराजाने मारवानी प्रतिज्ञा कर्या पछी तेने मार्यो नहीं अने हुं मारी आव्यो एम कहीने अमने ठग्यो. हवे अहीं आवेला रामने मारा पिताना हाथथी बचाववानी इच्छा करे छे के! उलटो तेनो भय अमने बतावे छे, माटे तुं महा निर्लज्ज छे. तेमज तुं पाकी रीते रामनो पक्षपाती जणाय छे. मारा ध्यानमां तो एवुं आवे छे के, तुं अमारी मसलेहतमां कांइपण कामनो नथी. कह्युं छे के, "हित करनारा मंत्रथी मंत्र सुखदायक थाय छे."

विभीषणः—हे इंद्रजित, हुं शत्रुनो लगारे पक्षपाती नथी, पण कुळनाश करनारो पुत्ररुपे तुं शत्रु उत्पन्न थयो छे. जन्मांधनी पेठे आ ऐश्वर्य कामे करी तारो पिता आंधळो थयो छे. मूर्खा, तुं दूध पीवावाळो बाळक छे. हजी तने कांइ पण समज नथी.

ए प्रकारे इंद्रजितने कह्या पछी विभीषणे रावणने कीधुं के, हे राजन्, आ पुत्रनी शीखामणथी तथा तारा पोताना चरित्रोथी तुं थोडाज दिवसमां नाश पामीश, तेथी मात्र मने दुःख थवानुं देखाय छे. एवुं सांभळीने अति क्रोधमां आवी हाथमां खड्ग लेइने रावण मारवा उठ्यो. विभीषण पण तेनी सामे भृकुटी चडावीने हाथी जेवो एक स्तंभ उखेडीने लडवा उठ्यो. ते जोइने कुंभकर्ण तथा इंद्रजिते वचमां पडी तेमने लडाइ करवा दीधी नहीं. पछी जेम हाथीओने पकडीने गजशाळामां लेइ जाय, तेम तेमने पोतपोताने ठेकाणे लेइ गया. त्यारे रावण बोलवा लाग्यो के, अरे ! तुं मारी नगरीथी बहार निकळ. तुं अग्निनी पेठे सर्प खानारो छे.

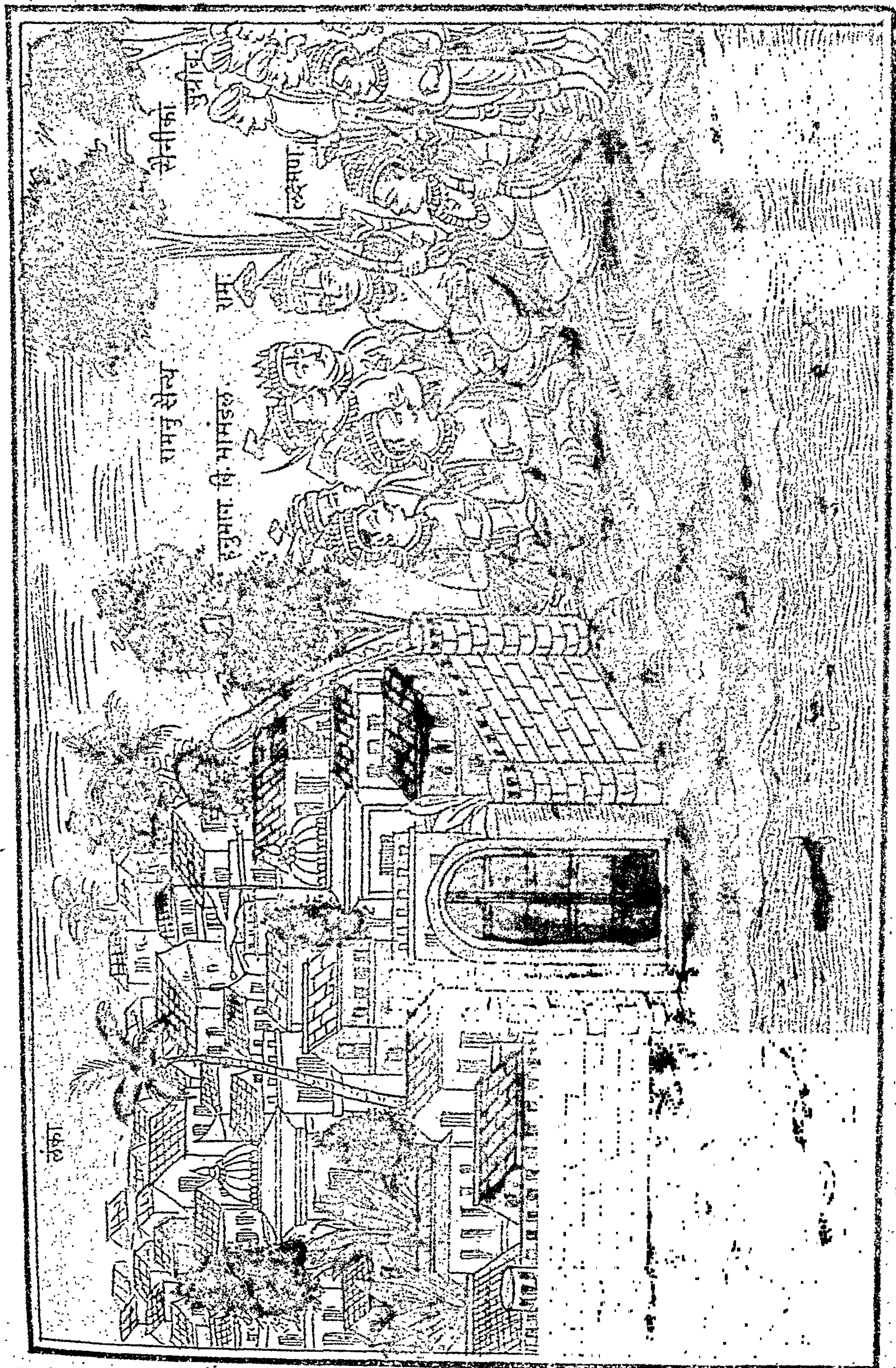
विभीषणनुं रामने मळी जवुं.

रावणनुं कहेवुं सांभळीने तरतज त्यांथी निकळी त्रीश अक्षोहिणी राक्षस विद्याधरोनुं सैन्य लेइ विभीषण रामनी पासे गयो. तेने आवतो जोइने सुग्रीवादिक क्षोभ पामवा लाग्या. कह्युं छे के, " डाकणीनी पेठे शत्रुमां विश्वास करवो नहिं. " पछी विभीषणे पोताना एक दूतने रामनी पासे मोकली कहेवराव्युं के, रावणनो त्याग छोडी हुं तमारी तरफ आव्यो छुं. एवी प्रार्थना कर्याथी सुग्रीवने विश्वासपात्र जाणी रामे तेनी तरफ जोयुं. त्यारे तेणे कीधुं के, जोके स्वभावे करी राक्षसो क्षुद्र, तथा जन्मथी कपटी छे, तोपण एने आववा देवो. ए मित्रस्वभाववाळो छे, के शत्रुस्वभाववाळो छे ! ए विषे एनो अभिप्राय जाण्या पछी जे करवानुं होय ते करवुं. ते वखत तेना स्वभावने जाणवावाळो विशाळ नामनो एक महात्मा, धार्मिक राक्षस कहेवा लाग्यो के, एकलो ए विभीषण राक्षस सीताने सोंपी देवानुं बोलवा लाग्यो, त्यारे तेना उपर क्रोध करी रावणे तेने कहाडी मुक्यो, तेथी ते तमारे शरणे आव्यो छे. मारुं बोलवुं खोटुं नथी. एवुं ए राक्षसनुं बोलवुं सांभळीने पोताना सेवकने आज्ञा आपी रामे विभीषणने बोलाव्याथी तेणे आवीने रामने नमस्कार कर्यो. रामे तेने आलिंगन कर्युं. पछी विभीषण बोल्यो के, दुर्जय जे रावण, तेने मूकीने हुं तमारी पासे आव्यो छुं. हुं तमारो भक्त छुं. माटे मने पण सुग्रीवनी पेठे आज्ञा करो. विभीषणना एवा बोल सांभळी रामे प्रतिज्ञा करी के, आ लंकानुं राज्य तने आपीश. कह्युं छे के, "महान पुरुषोने करेलो नमस्कार व्यर्थ जतो नथी."

———:०:———

रामनुं लंका समीप आववुं-राम तथा रावणना सैन्यनुं युद्धभूमिमां आववुं.

इन्द्रजीतनो एक दिवस पछीने [illegible] पासेथी [illegible] शत्रुनुं भागवुं राम लंका पासे आव्या. त्यां ते सैन्य सहित पोतानुं गुप्तपणे रही मुकाम कर्यो हतो; अने तेमां पछी ते राम ने एक रावणनी साथे युद्ध करवा माटे तैयार थईने आवीने रह्या. रावणना सैन्यना सरदारोए सामुं जवा माटे [illegible] आवी पहोंची मोटुं थई गयुं. पछी मोटे मदमत्तादिक राक्षसना सैन्यादिक मुख्यो युद्धभूमिमां पधारे [illegible] कराव्यो उपर थई, कोई हाथी उपर, कोई घोडा उपर, कोई सिंह उपर, कोई गधेडा उपर, कोई रथ उपर, कोई वाघादिक उपर, कोई ऊंट उपर, कोई सूवर तथा पाडा उपर, कोई विमानमां, एवी रीते केटलाएकनी फोजना [illegible] करीने [illegible] पूर्वोक्त रावणनी आज्ञा प्रमाणे, [illegible] हथियारो ते ओथी, एवा रथ उपर चडीने, [illegible] शूल हाथमां लईने रावणनी साथे [illegible] रह्या. [illegible] रावणना युद्ध पण ते भूमिमां [illegible] तथा शूर, भामंडल, सुग्रीव, [illegible] युद्ध करवाने तैयार थया, [illegible] सामे युद्ध करवा माटे संग्रामनी वात निकळी. तेमां कोईनी ध्वजा उपर सिंह, कोईनी ध्वजा उपर ऊंट, कोईनी ध्वजा उपर हरिण, कोईनी ध्वजा उपर हाथी, कोईनी ध्वजा उपर मोर, कोईनी ध्वजा उपर गरुड, एवा जुदा जुदा चिह्नो हता. कोई कोईनी जातीनी ध्वजा हती. कोईना हाथमां धनुष्य बाण, कोईना हाथमां खड्ग, कोईना हाथमां भुशुंडी, कोईना हाथमां मुद्गर, कोईना हाथमां त्रिशूल, कोईना हाथमां कुहाडो, अने कोईना हाथमां गदा, एवा जुदी जुदी जातनां हथियारो लईने आव्यां हतां. तेमांना केटलाक वीरो शत्रुने पोतानी साथे लडवा तैयार थईने राम तथा तेनी साथेना कहेवा लाग्या के, तुं आने मार, हुं आने मारुं छुं. एवी रीते बोलता बोलता युद्धभूमिमां आव्या. पछी रावणनुं सैन्य [illegible] सामे लडाई करवा माटे तैयार थई रह्युं. तेमांना केटलाक वीरो पोताना नायकनी तारीफ करता शत्रुना नायकोनी निंदा करता हता.


लंका
राम
लक्ष्मण
सुग्रीव

राम तथा रावणना सैन्यनुं परस्पर थएलुं युद्ध.

पछी राम अने रावणनुं सैन्य सामसामुं थतां लडाइ शरु थई. सैनीको एक बीजाना नामो लेइने परस्पर शस्त्र मारवा मंड्या. अस्त्रोवडे शस्त्रोने तोडवा लाग्या. त्यारपछी बंने सैन्यनी नजीकमां भेटमभेटा थतां जा जा, उभो रहे, वी नहीं, वी नहीं, आयुद्ध मूक, आयुद्ध मूक, हाथमां हथीआर पकड, हाथमां हथीआर पकड, एवी शूरवीरनी वाणी थवा लागी. जंगलमांना पक्षीओनी पेठे शल्य, शंकु, बाण, चक्रो, परिघ तथा गदा विगेरे आयुद्धो बेउ सैन्योमां पडवा लाग्या, केटलाएकना खड्गे करी कपाएला माथा उडवा लाग्याथी आकाशमां ते राहु तथा केतुनी पेठे देखावा लाग्या. केटलाएक सुभटो मुद्गरना मारथी हाथीओने जमीन पर पाडवा लाग्या तेथी जाणे लाकडीवडे दडानी रमत करता होयनी! एवा शोभवा लाग्या. जेम झाडोनी डाळीओ तुटी पडे, तेम कुहाडाना मारवडे केटलाकना हाथ तुटी पडवा लाग्या. भूख्या यमने योग्य ग्रासनी पेठे केटलाएक वीरोना मस्तको तोडीने जमीन उपर नाखवा लाग्या. दावाबाळा कुटुंबीने पेठे वानर वीरोने राक्षसोए घणा काळे जीत्या. वळी जेवी रीते हाथी वननो नाश करे छे, ते प्रमाणे वानरोए राक्षसोना बळनो नाश कर्यो. राक्षसोनुं सैन्य नाशभाग थया पछी हस्त अने प्रहस्त नामना बे राक्षसो वानरोनी साथे युद्ध करवा सारु तेमनी सामे आव्या. तेमनी साथे नल अने नील बे वानर वीर युद्ध करवा लाग्या. वक्रावक्र ग्रहनी पेठे प्रथम हस्त अने नल, ए बेउ रथोमां बेशीने एक ठेकाणे मळी पोतपोताना धनुष्य सज्ज करी टणत्कार शब्द करता परस्पर एक बीजाना उपर बाणोनो वरसाद वरसाववा लाग्या. तेमणे बाणोए अने त्रिशुलोए करी एक बीजाना रथोने ढांकी लीधा. तेमने घडीकमां शस्त्रोनो अने घडीकमां हाथोनो जय तथा पराजय थवा लाग्यो. युद्धमां महा प्रवीण जे अन्य वीरो उभा रही जोता हता, तेओने पण तेमना बळनी समज पडी नहीं. एवुं युद्ध चालतां नले मोटा लाघवथी क्षुरप्र बाणवडे हस्तनुं माथुं तोडी नाख्युं. तेमज नीलनी साथे प्रहस्त लडतो हतो तेमां नीले घणी बहादुरी बतावी प्रहस्तनुं माथुं कापी नांख्युं; ते वखते नल अने नीलना उपर आकाशमांथी फुलोनी वृष्टि थइ.

एवी रीते हस्त तथा प्रहस्त पड्या पछी रावणना सैन्यमांथी क्रोधायमान थता मरीच, सिंहजघन, स्वयंभू, सारण, शुक्र, चंद्रार्क, उद्दाम, वीभत्स, कामाक्ष, मकरज्वर, गंभीर, सिंहरथ, विगेरे राक्षसो लडाइने मोखरे आवी उभा रह्या, त्यारे वानर सैन्यमांथी, मदनांकुर, संताप, प्रथित, आक्रोश, नंदन, दुरित, अनघ, पुष्पास्त्र,

विघ्न, प्रीतिकर, विगेरे वानर वीरो तेमनी साथे आवी लडवा लाग्या. जेम कुकडा कुकडानी उपर उडे, ते प्रमाणे ते एकमेक उडवा लाग्या. मारीच राक्षसनी सामे संताप वानर, नंदन अने ज्वर, उद्दाम अने विघ्न, शुक्र अने दुरित, सिंहजघन अने प्रथित, एओ परस्पर लडाइ करीने मांहोमांहे मार मारवा लाग्या. एटलामां सूर्य अस्त पाम्यो. पछी बंने सैन्योवाळा पोतपोताना मुवेला माणसोने शोध करवा लाग्या.



बीजे दिवसे थयेलुं युद्ध -हनुमाने राक्षस वीरोनो नाश करवो.

बीजे दिवसे सवार थतां राक्षसोना योद्धा युद्ध करवा सारु रामना सैनीकोने बोलाववा लाग्या. मेरु पर्वतना जेवो अचळ रावण, हाथी अने घोडा सहित रथ उपर बेशीने सैन्यमां चाल्यो. ते वखते यमथी पण भयंकर पोतानी दृष्टीए करी शत्रुने बाळतोज होयनी ! एवो देखावा लाग्यो. नाना प्रकारना अस्त्र तथा शस्त्रोने धारण करनारा पोताना दरेक सेनानीने जोतो शत्रुने तणसलानी पेठे माननारो रावण संग्राममां आव्यो. ते समये रामना सेनानीओ सैन्यो सहित संग्रामभूमीमां आवीने युद्ध करवा लाग्या. ते ठेकाणे लोहीनी मोटी नदीओ वही नीकळी. पर्वतो जेवा पडेला हाथीओ दीठामां आव्या. क्यांक मगरमच्छ जेवा मोटा रथो भांगेला पड्या देखाया. कबंधो (माथा विनाना माणसो) नाचवा लाग्या. ते वखते रावणना सैन्ये अति आवेशमां आवी बहु बळवडे युद्ध करीने वानराओना सैन्यनो भंग कर्यो. ते जोइने क्रोधायमान थयो थको सुग्रीव धनुष्य सज्ज करीने सैन्य सहित पोते युद्ध करवाने जवा लाग्यो; त्यारे तेने हनुमान कहेवा लाग्यो के, हे राजा, तुं अहींज उभो रहे अने मारुं पराक्रम जो. एवी रीते सुग्रीवने वारी पोते आगळ चाल्यो. महा समुद्रमां मंदार पर्वतनी पेठे हनुमान राक्षस सैन्यमां जइने युद्ध करवा लाग्यो. तेनी सामे मेघना जेवी गर्जना करीने माली नामनो राक्षस आव्यो. ते बंनेनी वच्चे संग्राम शरु थयुं. तेमां सिंहनां पूंछडांने दूषण देनारा जेवा धनुष्योना टणत्कार करनारा ते बंने शोभवा लाग्या. तेओ परस्पर एक बीजाना हथीआरो तोडवा लाग्या. एवी रीते घणो वखत युद्ध चालतां जेम ग्रीष्म ऋतुनो सूर्य नाना सरोवरने जळ रहित करे तेम हनुमाने महा पराक्रमी माली राक्षसने अस्त्र रहित कर्यो अने कह्युं के, हे नकामा राक्षस, हवे तुं अहींथी जा. तने मारीने हुं शुं करुं ? तुं हनुमाननुं बोलवुं सांभळीने तेनी पासे उभेलो वज्रोदर राक्षस बोल्योः—अरे, हे , आवुं तुच्छ शुं बोले छे ? तुं हमणांज मरीश. आव मारी साथे युद्ध कर. पाछो

आ नहीं. एवुं सांभळी, सिंहनी पेठे गर्जना करीने हनुमाने तेने बाणे करी ढांकी दीधो. त्यारे जेम वर्षाकाळे मेघ सूर्यने ढांकी दे, तेम वज्रोदरे तेनी बाणवृष्टि दूर करीने पोताना बाणे करी तेने ढांकी दीधो. ते समये आकाशमां देववाणी थइ के, अहो आ वज्रोदर वीर हनुमाननी साथे युद्ध करवा योग्य छे, तेमज आ हनुमान वीर वज्रोदरनी साथे युद्ध करवा योग्य छे. ते शब्दो हनुमानथी सहेवाया नहीं, तेथी तेणे एकज वखते उत्पात मेघनी पेठे अस्त्रोनो वरसात वरसावीने सर्व राक्षसोना देखतां वज्रोदरने मारी नाख्यो. त्यारे जंबुमाली नामनो रावणनो पुत्र मारुतीनी (हनुमाननी) साथे युद्ध करवा लाग्यो. परस्पर मारवानी इच्छा छे जेमने, एवा महा पराक्रमी ते बंने वीरो सर्प अने नोळियानी पेठे बाण युद्ध करवा लाग्या. जंबुमाली एक बाण मारे तो तेने मारुती बे मारे, एम परस्पर बाण वृष्टि करीने लडवा लाग्या. पछी हनुमाने क्रोधमां आवी एके तडाके तेनो रथ तोडी नाखी, मुद्‌गरवडे तेने सारी पेठे मार्यो, तेथी जंबुमाळी मूर्छित् थइने मरी गयो. एटले महोदर नामना राक्षसे हनुमान उपर बाण वृष्टि करी अने कुतरा जेम डुक्करने घेरी ले, तेम राक्षस भटोए तेने घेरी लीधो तथा बाणे करी मारवा मंडी गया. कोइ बाहु उपर, कोइ मुख उपर, कोइ पग उपर, कोइ हृदय उपर, कोइ कुखी उपर, एम शरीरना जुदा जुदा भागो उपर राक्षस भटो मारवा लाग्या. ते समये वनमां अग्निनी पेठे, तथा समुद्रमां वडवानलनी पेठे, ते राक्षस सैन्यमां मारुती शोभवा लाग्यो. पछी सूर्य जेम अंधकारनो नाश करे, तेम हनुमाने राक्षसोनो नाश कर्यो. त्यारे कुंभकर्ण हाथमां त्रिशूळ लेइने इशान इंद्रनी पेठे पोते युद्ध करवा दोड्यो.



सुग्रीव तथा कुंभकर्ण वच्चे थयेलुं युद्ध–कुंभकर्णनुं मूर्छित थवुं.

कोइने पगना मारे, कोइने मूठना प्रहारे, कोइने बाहुथी, कोइने मुद्‌गरवडे, कोइने त्रिशूळथी, अने केटलाएकने एक बीजा उपर लोटीने कुंभकर्णे वानराओने मार्या. ते वखते कल्पांत समुद्रनी पेठे महा पराक्रमी कुंभकर्णने जोइने, सुग्रीव, भामंडल, दधिमुख, महेंद्र, कुमुद, अंगद, इत्यादिक रामना योद्धाओए, पारधी जेम सिंहने अटकावे, तेम तेने रुद्ध कर्यो, अने तेना उपर शस्त्रास्त्रनो वरसात वरसाववा लाग्या. त्यारे कुंभकर्णे प्रस्वापन नामनुं अस्त्र मूकीने दिवसने कुमुदखंडनी पेठे रामना तमाम सैन्यने उंघमां नाखी दीधुं. ते जोइने सुग्रीवे प्रबोधिनी विद्यानुं स्मरण करीने सर्व सैन्यने जागृत करी उठाड्युं. पछी ते बोलवा लाग्यो के अरे! कुंभकर्ण क्यां? त्यारे रात्र गया पछी पक्षीओ दोडे तेम वानर भटो दोडीने

कुंभकर्णनी साथे युद्ध करवा लाग्या. वळी वैद्य जेम रोगनो नाश करे, तेम ते वखते सुग्रीवे गदाना मारथी कुंभकर्णना सारथी, रथ, तथा घोडानो नाश कर्यो. ते जोइने कुंभकर्ण हाथमां मुद्गर लेइने एक शृंगी पर्वतनी पेठे सुग्रीव उपर दोडयो. तेना शरीरना वायुवडे जेम हाथीना अडकयाथी वृक्षो पडी जाय, तेम केटलाएक वानर पडवा लाग्या. नदीना वेगनी पेठे कुंभकर्णे मुद्गरथी अश्व सहित सुग्रीवना रथने चूर्ण करी नाख्यो. ते वखते इंद्र जेम पर्वत उपर वज्र नाखे, तेम सुग्रीवे आकाशमां उडीने कुंभकर्ण उपर एक मोटी शिला नाखी. औत्पातिकी रजो वृष्टी वानराओने बतावतो छतां मुद्गरे करी ते शिलाना कुंभकर्णे कटका करी नाख्या. सुग्रीवे तडतड शब्द करनारुं तडितद्दंड नामनुं अस्त्र कुंभकर्ण उपर नाख्युं. कुंभकर्णे ते अस्त्रनो नाश करवा सारु घणां अस्त्रो नाख्या, पण ते सर्व व्यर्थ गयां अने तेना प्रहारे करी कुंभकर्ण पर्वतनी पेठे पृथ्वीपर पडयो. कुंभकर्णने मूर्छित थयो जाणीने साक्षात्, काळना जेवो रावण युद्ध करवा सारु चालवा लाग्यो. एटले इंद्रजित तेने नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, हे स्वामीन्, तमारा आगळ यम, वरुण, कुबेर, इंद्र, विगेरे उभा रहे नहीं तो आ वानराओनी शुं विशाद छे? तमे अहींज उभा रहो. हुं जइने मुर्कुटनी पेठे तेमने मारुं छुं. एवी रीते रावणने रोकीने वानराओना सैन्यनी साथे युद्ध करवा सारु इंद्रजित तैयार थयो. ते वखते जेम तळावमां सर्प पेसतां देडकां नाशी जाय, तेम वानरा नासवा लाग्या. त्यारे तेओने इंद्रजित कहेवा लाग्यो के, रे, रे, उभा रहो, युद्ध न करनाराने हुं मारनार नथी. हुं रावणनो पुत्र छुं. ते हनुमान अने सुग्रीव क्यां छे? ते राम लक्ष्मण क्यां छे? एवुं तेनुं बोलवुं सांभळीने सुग्रीवे रावणने तथा भामंडळे मेघवाहनने बोलावीने तेओ परस्पर युद्ध करवा लाग्या.



सुग्रीव तथा भामंडळनुं नागपाशथी बंधावबुं.

ते वखते चार दिग्पाळ तथा चार समुद्रनी पेठे, त्रणे लोकने भयंकर धनुष्यो-नो मार मारनारा ते चारे शोभवा लाग्या, तेमना रथोना जवा आववाथी पृथ्वी अने पर्वतो कंपायमान थया. समुद्र क्षोभने पाम्यो. बाणो नाखवामां महा कुशळ, तेओना बाणो क्यारे जाय आवे छे, ते पण जाण्यामां आवे नहीं. एवी रीते बाणोवडे घणा वखत सुधी तेओए युद्ध कर्युं. परंतु कोइए कोइने जीत्यो नहीं. पछी अने मेघवाहने नागपाश अस्त्र नाखीने भामंडळ अने सुग्रीवने बांध्या. त्यारे

ते श्वासोश्वास मूकवाने असमर्थ थया. एटलामां कुंभकर्णे सावध थइने हनुमानना वांसामां एवी तो जोरथी गदा मारी के, ते तत्काळ मूर्छित थइने जमीन पर पड्यो. एटले कुंभकर्णे तेने काखमां घाल्यो. ते जोइने बिभीषण बोल्यो के, हे राम, तमारा सैन्यमां महा पराक्रमी, मुखने विषे नेत्रोना जेवा सारभूत, भामंडळ अने सुग्रीवने रावणना पुत्रे जीतीने नागपाशे करी बांध्या छे; तेमने ज्यांसुधी लंकामां लेइ गया नथी त्यांसुधीमां हुं मूकावुं छुं. कुंभकर्णे हनुमानने बाहवडे बांध्यो छे, ते ज्यां लगण लंकामां गयो नथी त्यां लगण छोडाववा योग्य छे. हे स्वामिन्, सुग्रीव, भामंडळ तथा हनुमान विना आपणुं सैन्य निर्वीर छे. माटे मने रजा आपो, हुं जाउं. एवी रीते बिभीषण बोले छे, एटलामां वालीनो छोकरो अंगद कुदको मारी दोडी जइने कुंभकर्णने बोलावी तेनी साथे युद्ध करवा लाग्यो. त्यारे क्रोधे करी आंधळा थएला कुंभकर्णे पोतानी भुजामांथी हनुमानने छोड्याथी ते पींजरामांना पक्षीनी पेठे उडी गयो. भामंडळ अने सुग्रीवने छोडाववा सारु रावणना पुत्रोनी साथे युद्ध करवा बिभीषण दोड्यो. तेने जोइने इंद्रजित मेघवाहनने कहेवा लाग्यो के, आ आपणो काको आपणी साथे युद्ध करवा सारु आवे छे. पोतानो नानो भाइ होवाथी ए आपणा बाप जेवो छे, माटे एनी साथे युद्ध केम करिए ? हवे अहींथी जवुं सारुं छे. कह्युं छे के, " पूजनीक पुरुषथी भय पामनार पुरुषोनी लेश मात्र लाज जती नथी. " पाशथी बांधेला आ शत्रुओ (सुग्रीव अने भामंडळ) निश्चे करी मरशे, माटे तेओने अहींज रहेवा देवा, जेथी बिभीषण पासे आवशे नहीं. एवो विचार करीने तेमने पडता मूकी ए बंने भाइओ रणमांथी नाशी गया. बिभीषण तेमनी पाछळ न जतां सुग्रीव तथा भामंडळने जोइने त्यांज उभो रह्यो. राम तथा लक्ष्मणना मुख तेमने जोइने हेम पडवानी वखते सूर्य अने चंद्रमानी पेठे सुकाइ गया, अने चिंता करता थका तेओ पण त्यांज आवी उभा रह्या.



सुग्रीव तथा भामंडळनुं नागपाशथी छूटा थवुं.

पछी पूर्वे पोताने वर आपनार महालोचन नामना देवनुं रामे स्मरण कर्युं, तेथी ते देव अवधिज्ञानवडे जाणीने त्यां आव्यो. राम लक्ष्मणने शोकातुर देखी तेमनुं दुःख निवारवार्थे ते देवे, सिंहनिनदा नामनी विद्या, मुशल, रथ तथा शत्रुनो नाश करनारी विद्युद्वदना नामनी गदा लक्ष्मणने आपी तथा वारुणेय, आग्नेय, वायव्य प्रमुख अस्त्रो अने छत्रो बंने भाइओने (राम तथा लक्ष्मण) आपी ते अंतर्ध्यान थइ गयो. पछी गरुड उपर बेठेला लक्ष्मणने जोइने सुग्रीव तथा भामंडळना

नागपाश नाशी गयां. ते समये रामना सैन्यमां जय जय शब्दो थवा लाग्या अने राक्षसोना सैन्यनी पेठे सूर्य आथमी गयो.

——:०:——

त्रीजे दिवसे थयेलुं युद्ध--राम लक्ष्मणनुं रावण साथे थयेलुं युद्ध-लक्ष्मणनुं रावणनी अमोघविजया विद्याथी मूर्छित थवुं विगेरे.

त्रीजे दिवसे सवारमां फरी बेउनां सैन्य तैयार थइने रणांगणमां आव्या. त्यारे यमना दांतो जेवा देदीप्यमान अस्त्रो वडे, प्रलयकाळना वायुनी पेठे महाभयंकर संग्राम थवा लाग्यो. मध्याननना समये तापेला डुक्करोना योगे सरोवरनी पेठे, राक्षसोना वीरोए वानरसैन्य अकळाव्याथी ते नाशभाग करी वीखरावा लाग्युं. त्यारे पोतानुं सैन्य वीखराइ गयेलुं जोइने बीजा शरीरमां पेसनारा योगीओनी पेठे रामना सुग्रीवादिक भटो राक्षसोना सैन्यमां पेठा. जेम गरुडने जोइने सर्पो नासे, तेम वानराओने जोइने राक्षसो नाठा. त्यारे रथमां बेशीने तेना संचारवडे पृथ्वीने कंपावतो थको रावण पोते दोड्यो. दावानळ जेवा रावणने जोइने वानरना सैन्यमांनो कोइपण उभो रह्यो नहीं. एटले रामचंद्र पोते युद्ध करवा सारु जवा लाग्या. तेमने वारीने विभीषणे लगार वारमां जइने रावणने अटकाव्यो, त्यारे तेने रावण कहेवा लाग्यो.

रावण—रे ! रे विभीषण ! तें कोनो आश्रय कर्यो ? आ संग्राममां ग्रासनी पेठे तुं मारा मुखमां पड्यो. पारधी जेम कुतराओने डुक्कर उपर मोकले, ते प्रमाणे मारा उपर तने मोकलवाने रामे सारो विचार कर्यो. पोताने रक्षण करनारा पुरुषोने ए योग्यज छे. हे वत्स, हजी सुधी तारा उपर मारी कृपा छे. तुं अहींथी जा, हुं सैन्य सहित राम लक्ष्मणने मारुं छुं. आ मरनारानो संख्यापूर्ण तुं था नहीं. पाछो पोताने ठेकाणे आव. तारी पीठपर मारो हाथ छे.

विभीषण—हे रावण, काळना जेवो राम, पोतेज तारा उपर आवतो हतो. तेनुं निवारण करी युद्धना मिषे तने बोध करवा सारु हुं अहीं आव्यो छुं. हजी पण मारां वचन मान्य करीने सीताने मूक, अने संतोष कर. में मृत्युना भयथी, अथवा राज्यना लोभथी, रामनो आश्रय कर्यो नथी, फक्त अपवाद भयथी आश्रय कर्यो छे. माटे तुं सीता आपीने अपवाद दूर कर, एटले हुं रामने मूकीने तारा आश्रये आवुं.

रावण—(क्रोधातुर थइने) हे दुर्बुद्धि विभीषण, हजी मने भय बतावे छे, के ?
मारुं कहेवुं केवळ भाइनी हत्याना भयथी छे, शिवाय मारो बीजो हेतु नथी.

ए प्रमाणे कहीने रावणे धनुष्यनो टणत्कार कर्यो. तेनी सामे विभीषणे पण तेवोज जवाब देवाने धनुष्यनो टणत्कार कर्यो. पछी ते बंने भाइ युद्ध करवाने तैयार थइ परस्पर एक बीजा उपर शस्त्र तथा अस्त्रनी वृष्टी करवा लाग्या. ते वखते इंद्रजित, कुंभकर्ण, तथा बीजा राक्षसो स्वामीनी भक्तिए करी यमना किंकरनी पेठे युद्ध करवा उलट्या. एटले वानर सैन्यमांथी तेमनी सामे थवाने सुभटो तैयार थइ गया. पछी राम अने कुंभकर्ण, लक्ष्मण अने इंद्रजित, नील अने सिंहजघन, दुर्मुख अने घटोदर, स्वयंभु अने दुर्मति, नल अने शंभु, गद अने मय, स्कंद अने चंद्रनख, चंद्रोदरात्मज अने विघ्न. भामंडळ अने केतु, जंबुमाली अने श्रीदत्त, हनुमान अने कुंभकर्णनो पुत्र कुंभ, सुग्रीव अने सुमाल, कुंद अने धूम, वालीनो पुत्र चंद्ररश्मी अने सारण राक्षस, एवी रीते योग्यताथी परस्पर युद्ध करवा लाग्या. तेमज बीजा राक्षसो अने वानराओ मुसर जातिना मत्सनी पेठे युद्ध करी मची गया. एवी रीते महा भयंकर संग्राम चालतां इंद्रजिते लक्ष्मण उपर तापस नामनुं अस्त्र नाख्युं. तेवारे लक्ष्मणे तपन नामना अस्त्रवडे तेनो नाश कर्यो. पछी लक्ष्मणे जेम जळमांना तंतु जनावरथी हाथी बंधाइ जाय, तेम नागपाश अस्त्र नाखीने इंद्रजितने बांधी लीधो, तेथी ते वज्रनी पेठे पड्यो. एटले लक्ष्मणनी आज्ञाथी विरुद्ध तेने बंदीवाननी पेठे पोताना रथमां नाखीने पोताना रहेठाणे लेइ गयो. तेमज रामे पण कुंभकर्णने नागपाशथी बांध्यो. तेने रामनी आज्ञाथी भामंडळ लेइ गयो. रामना बीजा सैनीको मेघवाहन प्रमुख राक्षसोने बांधीने रहेठाण उपर लेइ गया. ए बधुं जोइने क्रोधमां आवी रावणे जयश्रीनुं मूळ जे त्रिशूळ, ते विभीषण उपर नांख्युं. लक्ष्मणे बाणे करी केळीनी पेठे त्रिशूळना आकाशमांज कटका करी नाख्या. त्यारे धरणेंद्रे आपेली अमोघविजया नामनी शक्ति रावणे लीधी. धग् धग् वडे जाज्वल्यमान, तथा तडतड शब्द करनारी, विजळी जेवी ते शक्ति आकाशमां फरवा लागी. तेने जोइने आकाशमांना देव पाछा फरवा लाग्या. सैनीकोना नेत्रो मीचाइ गया तथा कोइ पण स्थीर रह्यो नहीं. त्यारे राम कहेवा लाग्यो के, हे लक्ष्मण, आजे आपणो परोणो विभीषण मार्यो जाय छे. आश्रीतनो घात करावनारा आपणने धिःकार छे. रामनुं एवुं सांभळी, लक्ष्मणे विभीषणनी आगळ थइने युद्ध करवा सारु रावणने हांक मारी. गरुड उपर बेठेला लक्ष्मणने आगळ आवेलो जोइने रावणे तेने कीधुं के, में तारा उपर शक्ति लीधी नथी. माटे तुं बीजाना मृत्युमां मर नहीं, तेम छतां तारे मरवुं होय तो मर. एम कहीने रावणे ते शक्तिने फेरवीने

प्रधानोनुं रावणने सीता पाछी आपवा कहेवुं-रावणनुं बहु रुपा विद्या सिद्ध करवा श्रीशांतिनाथना चैत्यमां बेसवुं-बहुरुपा विद्यानुं सिद्ध थवुं.

एवी रीते लक्ष्मणे दुतने कह्युं, के तरतज वानराओए तेनुं गळुं पकडी त्यांथी तेने कहाडी मुक्यो. दुते रावणनी पासे जइने राम लक्ष्मणनुं सर्व बोलवुं तेने कही संभळाव्युं. त्यारे रावण पोताना प्रधानोने बोलावी तेओने पूछवा लाग्यो के, हवे केम करवुं ? ते कहो. प्रधानोए जणाव्युं के, सीता आपवी एज योग्य छे. सीता लावीने व्यतिरेकवडे सर्व कार्यनी परीक्षा थाय छे. हे दशानन, तुं एकलो व्यतिरेकवणे रह्यो. हजी तारा पुत्र, बंधु घणा जीवता छे. सीता अर्पण करवाथी ते बधा बांधव छुटशे. पछी तेमनी साथे सुखे करी राज्य संपत्तिनो उपभोग कर. प्रधानोनुं एवुं बोलवुं सांभळीने रावण मनमां अति दुःखी थयो, अने विचार करवा लाग्यो के, मनकामना सिद्ध करवा सारु बहुरुपा विद्यानुं साधन करवुं. एवो मनने विषे निश्चय करीने ते विद्या साध्य करवा सारु कषाय रहित थइने रावण श्रीशांतिनाथभगवानना चैत्य प्रत्ये गयो. त्यां तेणे इंद्रनी पेठे भक्तिवडे श्रीशांतिनाथ स्वामीनी जळना कलशथी स्नात्र पूजा करी, गोरोचन, इत्यादिके करी अंगने अर्चन कर्युं, अने फूलादिके पूजा करीने स्तुति करवा लाग्यो:—हे देवोना देव, जगतना रक्षक, परमात्मा, श्रीमान्, सोळमा तीर्थंकर शांतिनाथ, हुं तने नमस्कार करुं छुं. हे श्रीशांनाथ, हे भगवन्, हे भव समुद्रतारक, सर्वार्थ सिद्धिमंत्र स्वरुप, तारा नामने नमस्कार होज्यो. हे परमेश्वर, हे पुरुषोत्तम, जे तारी अष्टविध पूजा करे छे, तेमना हाथोमां अष्ट अणिमादि सिद्धि छे. नेत्रोवडे जे नित्य तने जुए छे, तेनां नेत्रो धन्य छे, नेत्रे करी जोएलो जे तुं तेने जे हृदयमां धारण करे छे, तेनां हृदय नेत्रोथी धन्य छे. हे देव, स्पर्शवेधि रसना योगे जेम सुवर्ण थायछे, तेम तारा चरण स्पर्शे करी जन पवित्र थाय छे. हे प्रभो, तारा चरण कमळने नमस्कार कर्याथी तथा तारी पासे लोट्याथी मारा कपाळनी गांठ शृंगारतिलक थशे. पवित्र चंदनादिक पदार्थ तने अर्च्याथी मारी राजसंपत्तिरूप वेलीने निरंतर फळ आवो. ए प्रकारे वारंवार प्रार्थना करीने कहे छे के, हे जगत विभो, जन्म जन्नमां तारा विशे मारी भक्ति होज्यो. एवी रीते रावणे श्रीशांतिनाथ स्वामीनी स्तुति करीने तेमनी सामे रत्ननी शिला उपर बेसी हाथमां अक्षमाळा लेइने बहुरूपा विद्या साधन करवानो आरंभ कर्यो. ते

वखते मंदोदरीए यमदंड नामना द्वारपालने आज्ञा करी के, आजथी आठ दिवस सुधी लंकामां ब्धाओए अष्टाहिक महोत्सव करवो; जे नहीं करे तेनुं माथुं कापी नाखवामां आवशे, एवी थाळी पीटाव. पछी द्वारपाळे आज्ञा प्रमाणे थाळी पीटावी. ए सर्व हकीकत एक जासुसे जाणी लेइ सुग्रीवनी पासे जइने निवेदन करी. ते सांभळीने सुग्रीव रामने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामीन्, ज्यां सुधी दशाननने बहुरुपा विद्या सिद्ध थइ नथी, त्यां सुधी ते साध्य छे. एवुं सांभळी, राम हसीने कहे लाग्यो के, शांतिनाथना ध्यानमां बेठेला रावणने केम पकडुं ? हुं तेना जेवो क नथी. रामनां एवां वचनो सांभळीने, खबर ना पडे तेम तेमने जणाव्या शिव रावणनी विद्यानो नाश करवा सारु अंगदादिक लंकामां गया. त्यां तेओए घ उपद्रव कीधो, तथापि रावण ध्यानथी लगारे डग्यो नहीं. त्यारे अंगद बोल्यो के, रावण, रामथी डरीने तेने शरणे न आवतां आ शुं पाखंड करवा बेठो छुं ? महा मता मारा स्वामीनी स्त्री सीतानुं तें कपट करी हरण कर्युं. परंतु हमणां तारी स तारी स्त्री मंदोदरीनुं हुं हरण करुं छुं. एम कहीने अंगद क्रोधे करी मंदोदरीना पकडी तेने खेंचवा लाग्यो. त्यारे ते अनाथनी पेठे करुणा स्वरे करी रडवा ल तथापि ध्यानमां बेठेला रावणे तेमनी सामे पण जोयुं नहीं ते वखते ते विद्या सिद्ध तेना योगे आकाश प्रकाशमान थयुं. ते विद्या आवीने कहेवा लागी के, हे र हुं तने सिद्ध थइ तारुं शुं काम छे ? ते कहो; त्यारे रावण तेने कहेवा लाग.. तुं सर्व करीश, परंतु जे वखते तारुं स्मरण करुं त्यारे तुं आवजे. आ वखते तुं त... ठेकाणे जा. एवुं सांभळतांज तत्काळ ते अंतर्धान थइ. पछी त्यां आवेला सर्व वानरो पोतपोताने स्थानके गया.



रावणनुं सीता पासे जवुं–राम रावण वच्चे युद्धनो समारंभ थवो.

त्यार पछी अंगदे मंदोदरीना केश पकडी खेंच्या संबंधी सर्व वृत्तांत रावणे सांभळ्यो, तेथी तेणे अहंकारे करीने मोटो हुंकारो कर्यो. पछी स्नान भोजन करी ते देवरमणोद्यानमां सीतानी पासे जइ तेने कहेवा लाग्यो के, में घणा दिवस विनयवडे तारी प्रार्थना करी, परंतु तुं एकनी बे ना थइ. तो हवे हुं विनय तारा पतिने तथा देवरने मारीने बळात्कारे तारो उपभोग लेइश. एवी वि तेनी वाणी सांभळीने, मूर्छित थइ तेनी आशानी पेठे जानकी पृथ्वी उप पछी केटलीक वारे सावध थइने तेणीए एवो नियम कर्यो के, "कदाचि लक्ष्मण मुवा तो ते दिवसथी हुं अनशन व्रत लइश" एवुं सांभळीने रावण